प्राकृत-मार्गोपदेशिका

मूल लेखक :
अध्यापक बेचरदास जीवराज दोशी

हिन्दी में अनुवादिका
पं० साध्वी श्री सुव्रताजी
शिष्या
पं० साध्वी श्रीमृगावतीजी
शिष्या
स्व० साध्वी श्रीशीलवतीजी
श्री विजयवल्लभसूरि जी की
आज्ञानुवर्तिनी

प्रकाशक :
मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली वाराणसी पटना

प्रकाशक :

श्री सुन्दरलाल जैन,

मोतीलाल बनारसीदास

चौक, वाराणसी

बेंग्लो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-७

अशोक राजपथ, पटना

हिन्दी प्रथम संस्करण

ईस्वी सन्—१९६८

विक्रम वर्ष—२०२५

वीर संवत्—२४९५

मूल्य— MLBD

800.00

मुद्रक :

केशव मुद्रणालय

पाण्डेयपुर पिसनहरिया, वाराणसी कैण्ट।

श्री साध्वीजी शीलवतीजी

जन्म वप—विक्रम सवत् १९५० पौष शु दि ११।

जन्मस्थल—राणपरडा (चीतल-काठियावाड)।

निर्वाण वप—विक्रम सवत् २०२४ महा व दि ४ शनिवार।

निर्वाणस्थल—बम्बई-श्री महावीर स्वामी देरासर, पायधुना।

सर्व आयु—७४ वप।

यथा नाम तथा गुणों से विभूषित मेरी मातामही
गुरुणीजी श्री स्व० श्री शीलवती जी
महाराज के चरणकमलों में

अनुगामिनी
प्रशिष्या
सुव्रता

प्रस्तावना

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के अध्ययन में प्राकृत का अध्ययन संस्कृत जैसा ही अपरिहार्य है। प्राकृत के अध्ययन के बिना आधुनिक आर्य भाषाओं की चर्चा पूर्ण नहीं हो पाती, इसलिए संस्कृत के साथ ही साथ मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं जैसे पालि, विभिन्न प्रकार की प्राकृत तथा अपभ्रंश का अवश्य अध्ययन किया जाना चाहिए। पालि की चर्चा भारतवर्ष में कई शतकों से लुप्त हो गई थी, लेकिन आजकल भारत में पालि के अध्ययन की व्यवस्था प्रारम्भ हो गई है। कलकत्ता विश्वविद्यालय इस विषय में पथ प्रदर्शक बना था। अब पालि की चर्चा भारत के अन्य विश्वविद्यालयों में पूर्णतया चालू हो गई है। पालि के मुख्य ग्रंथों के नागरी-लिपि में संस्करण निकल गये हैं और हिन्दी में पालि के लिए विशेष उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, जैसे आनन्द कौसल्यायन जी की पुस्तकें और श्री लक्ष्मीनारायण तिवारी की पुस्तकें।

परन्तु हिन्दी संसार में प्राकृतों की चर्चा प्राय उतनी नहीं फैल पाई है। इसका एक मुख्य कारण यह था कि पालि जैसी ही प्राकृत की आलोचना भी हिन्दी भाषियों में प्राय बन्द हो गई थी। संस्कृत नाटकों के अध्ययन के समय प्राकृत के अध्ययन की कुछ आवश्यकता अवश्य पड़ती थी परन्तु हमारे संस्कृत के विद्वान् केवल संस्कृत छाया के सहारे किसी प्रकार काम चला लेते थे। प्राकृत का गम्भीर अध्ययन कहीं भी नहीं दिखाई पड़ता था। इसका एक अन्य कारण यह भी है कि पंजाब और राजस्थान को छोड़कर अन्य हिन्दी भाषी प्रदेशों में ऐसे जैन लोग संख्या में बहुत कम हैं जिनकी धार्मिक भाषा प्राकृत मानी जाती है, परन्तु राजस्थान तथा गुजरात में जैन लोग संख्या में गरिष्ठ न हों, परन्तु भूयिष्ठ हैं और इनमें जैन यति और मुनि तथा अन्य विद्वान् बहुत संख्या में मिलते हैं, जो अपने धार्मिक विचार और शास्त्राध्ययन में निरन्तर व्यापृत रहते हैं और इन विषयों में जैसे प्राकृत धार्मिक तथा साहित्यिक ग्रंथों के संशोधन

और प्रकाशन में संलग्न रहते हैं और प्राकृत भाषा के व्याकरण की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ प्रकाशित कराते हैं। इन विषयों में गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र के जैन पण्डितों की देन अपरिसीम है।

प्राकृत भाषा, विशेषकर अर्द्धमागधी, संस्कृत और पालिके साथ ही साथ एक मुख्य प्राचीन भाषा के रूप में छात्रों के अध्ययन के लिए नियत की गई थी, इसलिए प्राकृत के प्राध्यापकों ने अंग्रेजी में दो-चार अच्छी पुस्तकें प्रकाशित की थी। इसके अतिरिक्त गुजराती में जो मौलिक विचार के साथ ग्रंथ निकलते जाते हैं वे गुजरात के बाहर लोगों को दृष्टिगोचर नहीं होते।

हमारे श्रद्धास्पद मित्र पण्डित बेचरदास जीवराज दोशी गुजरात के प्रमुख भाषातात्त्विकों में गिने जाते हैं। आप गुजराती, संस्कृत, प्राकृत, मराठी, हिन्दी प्रभृति भाषाओं के प्रकाण्ड पण्डित हैं। गुजराती में आपने बहुत वर्ष पहले "गुजराती भाषा नी उत्क्रान्ति" नामक एक भाषाशास्त्रानुगत विचारपूर्ण ग्रन्थ लिखा था। मुझे इनके साथ परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और जब उनसे मेरा पहला साक्षात्कार हुआ तभी से मैं उनका गुणग्राही रहा हूँ और उनके साथ पत्र-व्यवहार करता आया हूँ। "पुत्रे तोये यशसि च नराणाम् पुण्य-लक्षणम्" यह शास्त्रवचन इनके लिए सार्थक बना है। आप के सुपुत्र चिरंजीव प्रबोध ने अपने पिता के द्वारा अनुसृत वाक्तत्त्व विद्या को अपनाया है और इस विद्या में अनन्य साधारण योग्यता दिखाई है। जब श्री प्रबोधजी पूना के डेकन कॉलेज के भाषातत्त्व विभाग में अध्ययन, गवेषणा और अध्यापन करते थे उसी समय से उनसे मेरा गहरा परिचय रहा है। बाद में वे अमरीका जाकर आधुनिक अमरीकी शैली में पूर्ण रूप से निष्णात बन कर लौट आये और आजकल दिल्ली विश्वविद्यालय में भाषातत्त्व के मुख्याध्यापक नियुक्त किये गये हैं। इस प्रकार पिता की परम्परा पुत्र ने सुरक्षित रक्खी है।

प्रस्तुत पुस्तक श्रीमान् दोशीजी की गुजराती पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है। इसके द्वारा हिन्दी संसार तथा छात्र-समाज का एक अभाव दूर हुआ। इसमें प्राकृत भाषा का साधारण विचार भली भाँति किया गया है और विभिन्न

प्राकृतों का वैशिष्ट्य दिखाया गया है। जैसे, उन्होंने लिखा है—"प्रस्तुत पुस्तक में प्राकृत, पालि, शौरसेनी, मागधी, पैशाची तथा चूलिकापैशाची और अपभ्रंश भाषा के व्याकरण का समावेश किया गया है, अत प्राकृत भाषा से उक्त सभी भाषाएँ समझनी चाहिए।" ऐसे इस पुस्तक को पिशेल के वृहत् प्राकृत व्याकरण* (जो जर्मन भाषा में लिखित इस विषय का सबसे प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है) का एक गुटका सम्करण कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी।

मेरे विचार मे इस पुस्तक का प्रकाशन हिन्दी का महत्त्व बढायेगा और हिन्दीभाषी इससे प्रचुर लाभ उठा सकेंगे और ग्रन्थकर्ता के आभारी रहेंगे। इस काम के लिए वाक्तत्वविद्या के एक अनुरागी की हैसियत से मैं भी पडित बेचरदासजी का आभारी हूँ। आशा है कि आप भविष्य में ऐसे और भी उपयोगी ग्रन्थ या निबंध प्रकाशित करावर देश में शिक्षा और ज्ञान फैलाने के काम में लगे रहेंगे और इसलिए हम सब उनके स्वस्थ दीर्घायुष्य की कामना करते हैं।

राष्ट्रीय ग्रन्थालय
कलकत्ता
वैशाखी पूर्णिमा (बुद्ध पूर्णिमा)
१२ मई १९६८

सुनीति कुमार चाटुर्ज्या

---

* पिशेल के जर्मन ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद डा॰ सुभद्र झा ने किया है और इसका हिन्दी अनुवाद डॉ॰ हेमचन्द्र जोशी ने।

मूल लेखक के दो शब्द

बनारस श्री यशोविजय जैन संस्कृत पाठशाला में जब मैं पढ़ रहा था तब की यह बात है अर्थात् आज से करीब ६० बरस पहले की बात है अतः थोड़े विस्तार से कहने की जरूरत महसूस होती है।

स्व० श्री विजयधमसूरिजी ने बड़े कड़े परिश्रम से उक्त संस्था काशी में स्थापित की थी। उसमें डॉ० पंडित सुखलालजी, पाइअसद्दमहण्णवो नामक प्राकृत शब्दकोश के रचयिता मेरे सहाध्यायी मित्र स्व० पं० हरगोविंददासजी सेठ और मैं उसी पाठशाला में पढते थे।

शुरू में मैंने आचार्य हेमचंद्ररचित सिद्धहेमशब्दानुशासन लघुवृत्ति को पढ़ा, बाद में उसी व्याकरण की बृहद्वृत्ति को। उस व्याकरण में सात अध्याय तो केवल संस्कृत भाषा के व्याकरणसंबंधी है, आठवाँ अध्याय मात्र प्राकृत भाषा के व्याकरण का है। सात अध्याय पढ़ चुकने के बाद मेरा विचार आठवाँ अध्याय को पढ़ने का हुआ। आठवाँ अध्याय को वहाँ कोई पढ़ाने वाला न था अतः उसके लिए मैं ही अपना अध्यापक बना। जब आठवाँ अध्याय को पढ़ रहा था तब ऐसा अनुभव हुआ कि कोई विशिष्ट कठिन परिश्रम किये बिना ही आठवाँ अध्याय मेरे हस्तगत और कंठाग्र हो गया, फिर तो काशी में ही कई छात्रों को तथा मुनियों को भी उसे भली भांति पढ़ा भी दिया और प्राकृत भाषा मेरे लिए मातृभाषा के समान हो गई।

उन दिनों में संस्कृत को सरलता से पढ़ने के लिए स्व० रामकृष्णगोपाल भाण्डारकर महाशय ने संस्कृत मार्गोपदेशिका अंग्रेजी में बनाई थी। उसका गुजराती अनुवाद गुजरात की पाठशालाओं में चलता था। संस्कृत का प्राथमिक अध्ययन मैंने भी इसी पुस्तक द्वारा किया था। इससे मुझे ऐसा विचार आया कि संस्कृत मार्गोपदेशिका की तरह इसी शैली में प्राकृत मार्गोपदेशिका क्यों न

बनाई जाय ! इस काम को मैंने हाथ पर लिया और तीन-चार महिने में गुजराती प्राकृत मार्गोपदेशिका की एक पाडुलिपि तैयार कर दी ।

फिर पाठशाला के व्यवस्थापकों ने उस पाडुलिपि को प्रकाश में लाने का निर्णय किया तब मैंने उसको सशोधित करके समुचित रूप से ठीक ठीक तैयार कर दी, बनारस से प्रकाशित प्राकृत मार्गोपदेशिका क सस्करण में ही मैंने अन्त में सूचित किया है कि विक्रम सवत् १९६७, ज्येष्ठ मास, पूर्णिमा, शुक्रवार के दिन यह पुस्तक सपन्न हो गया । इस प्रकाशन की प्रस्तावना में भी वीर सवत् २४३७ मैंने लिखा है अतः आज से करीब ५६-५७ वर्ष पहले यह प्रथम प्रकाशन हुआ ।

प्राकृत भाषा को गुजराती भाषा द्वारा सीखने का सबसे यह प्रथम साधन तैयार कर सका इस हेतु मुझे प्रसन्नता हुई थी। यह प्रथम प्रकाशन मेरी विद्यार्थी अवस्था की कृति है और सबसे प्रथम मौलिक कृति है । इसमें कहीं भी सस्कृत भाषा का आश्रय नहीं लिया गया था । इसी प्रकाशन की दूसरी आवृत्ति यशोविजय जैन ग्रथमाला के व्यवस्थापकों ने की है ऐसा मुझे स्मरण है। प्रथम और दूसरे प्रकाशन में कोई भेद नहीं है। गुजरात देश की जैन पाठशालाओं में इसका उपयोग होता है तथा कई साधु-साध्वी भी इसे पढ़ते रहे ।

बाद में जब मैंने न्यायतीर्थ और व्याकरणतीर्थ परीक्षा पास की तथा पालि भाषा में भी पंडित की परीक्षा लका (कोलबो) जाकर लका के विद्योदय कालेज से पास की और सशोधन-सपादन इत्यादि व्यावसायिक प्रवृत्ति में लगा तब गुजराती प्राकृत मार्गोपदेशिका का नया सस्करण करने का प्रयत्न किया । उसमें सस्कृत भाषा का तुलनात्मक दृष्टि से पूरा उपयोग किया और नये सस्करणों में उत्तरोत्तर विशेष विशेष परिवर्तन करता गया । गुजराती प्राकृत मार्गोपदेशिका के कुल पाच सस्करण आज तक प्रकाशित हुए हैं । ये सब सस्करण अहमदाबाद के गुर्जर ग्रथरत्न कार्यालय के मालिकों और मेरे मित्र स्व० श्री शभूलाल भाई तथा उनके बंधु स्व० श्री गोविंदलाल भाई ने किये हैं, उसमें सस्कृत भाषा के उपयोग के उपरात पालि भाषा के तथा शौरसेनी, मागधी वगैरह प्राचीन प्राकृत भाषा के नियमों का भी तुलनात्मक दृष्टि से यथास्थान निर्देश किया है तथा आचार्य हेमचद्र के व्याकरण के सूत्राक भी नियमों को समझने के लिए टिप्पण में दे

दिये हैं तथा पालि भाषा के नियमों को दिखाने के लिए सर्वत्र स्व० आचार्य श्री विधुशेखर भट्टाचार्यजी रचित पालिप्रकाश का ठीक ठीक उपयोग किया है।

प्रस्तुत हिन्दी संस्करण में भी प्राकृत, पालि, शौरसेनी, मागधी, पैशाची तथा अपभ्रंश के पूरे नियम बताकर संस्कृत के साथ तुलनात्मक दृष्टि से विशेष परामर्श किया है और वेदों की भाषा, प्राकृतभाषा तथा संस्कृतभाषा—इन तिनों भाषाओं का शब्द समूह कितना अधिक समान है इस बात को यथास्थान दिखाने का भरसक प्रयास किया है तथा पृ० ११० से १३७ तक का जो खास संदर्भ दिया है वह भी उक्त तीनों भाषाओं की पारस्परिक समानता का ही पूरा सूचक है।

गुजराती प्राकृतमार्गोपदेशिका का यह हिन्दी संस्करण कैसे हुआ? यह इतिहास भी रोचक होने से संक्षेप में निर्देश कर देता हूँ:—

करीब छः वर्ष पहले पं० साध्वी श्री मृगावतीजी (जो अभी बंबई में विशिष्ट व्याख्यात्री के रूप में सुविश्रुत हैं) मेरे पास ही पढ़ने के लिए दिल्ली से अमदाबाद में आई। वह और उनकी शिष्या श्री सुव्रताजी मेरे पास करीब दो-अढाई वर्ष पढ़ती रहीं। जैनागम, तर्क के उपरांत प्राकृत व्याकरण भी पढ़ने का प्रसंग आया था। अमदावाद में उनकी (श्री मृगावतीजी की) जन्म-माता तथा गुरुणी श्री शीलवतीजी तथा सहधर्मिणी साध्वी सुज्येष्ठाजी भी साथ में आई थीं। ये दोनों सरल प्रकृति तथा धर्म विचार की बड़ी जिज्ञासु रहीं। अवसर पाकर मैंने श्री मृगावतीजी से निवेदन किया कि गुजराती प्राकृत मार्गोपदेशिका का हिन्दी अनुवाद श्री सुव्रताजी कर देवें यही मेरी नम्र प्रार्थना है, सौभाग्यवश मेरी प्रार्थना उन्होंने स्वीकृत कर ली और यह हिन्दी अनुवाद तैयार भी हो गया।

अनुवाद तो हो गया पर प्रकाशक भी मिले तभी अनुवाद का साफल्य हो, दिल्लीवाले मोतीलाल बनारसीदास एक सुविख्यात पुस्तक प्रकाशक हैं और खास करके प्राच्यविद्या के ग्रन्थों के प्रकाशक हैं। वे श्री मृगावतीजी के गुणानुरागी श्रावक हैं। मेरा प्रथम परिचय उनसे वहीं पर श्रीमृगावतीजी के निमित्त से हुआ और मेरा भी उनसे संपर्क हो गया, उक्त फर्म के प्रतिनिधि भाई श्री सुन्दर-लालजी को मैंने सूचित किया कि इस हिन्दी प्राकृतमार्गोपदेशिका को आप क्यों

न प्रकाशित करें ? मेरी बात को उन्होंने मानली और इस हिन्दी प्राकृतमार्गोपदेशिका का प्रस्तुत संस्करण प्राकृतभाषा के अभ्यासी सज्जनों के करकमलों में रखने का मेरा मनोरथ पूर्ण हुआ।

मेरा निवास अहमदाबाद में, पुस्तक के मुद्रण प्रवृत्ति का केन्द्र काशी। शुरू शुरू में तो दूसरे फारम से दो-चार फारम अहमदाबाद मगाये गये पर प्रूफ का जाने-आने में अधिक समय लगता रहा और कार्य में भी विलम्ब होने लगा। फिर तो काशी के पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोधसंस्थान (जैनाश्रम) के कार्यकर्ता (शोध-सहायक) भाई कपिलदेव गिरिजी को इसके संशोधन का भार सौंपा गया सो उन्होंने बड़े परिश्रम से निबाहा। एतदर्थ वे भाई धन्यवाद के विशेष अधिकारी हैं। अनुवादिका श्रीसुव्रताजी भी धन्यवाद के योग्य हैं। और श्रीमृगावतीजी तथा भाई श्री सुन्दरलालजी का सहयोग न होता तो यह कार्य बन ही नहीं सकता अतः उन दोनों का भी नामस्मरण विशेष आभार के साथ कर रहा हूँ।

इस छोटी सी पुस्तक की प्रस्तावना हमारे स्नेही मित्र गुणानुरागी डा० श्री सुनीतिकुमार चटर्जी (नेशनल प्रोफेसर—कलकत्ता) ने हिन्दी में हो लिख देने की महती कृपा की है। उनका आदरपूर्वक नामस्मरण करता हुआ इसके लिए उन्हें विशेष धन्यवाद देता हूँ।

मेरे बड़े पुत्र डा० भाई प्रबोध पंडित का भी इस प्रस्तावना लिखवाने में बड़ा सहयोग रहा है अतः भाई प्रबोध का भी नामस्मरण करना आवश्यक समझता हूँ।

पालिप्रकाश का इसमें विशेष उपयोग किया गया है अतः उसके प्रणेता और मेरे मित्र स्व० श्री विधुशेखर भट्टाचार्यजी का अनुग्रहीत हूँ।

पुस्तक के अन्त में शब्दकोश तथा विशेष शब्दों की सूची भाई कपिलदेव गिरिजी ने तैयार कर दी है और इस सारे काम को उन्होंने बड़े प्रयत्न से पार पहुँचाया है अतः इनका नाम फिर फिर स्मरण में आ रहा है।

शुरू में शुद्धिपत्रक, अनुक्रमणिका तथा निर्दिष्ट संकेतों की सूची दे दी है।

मेरी आंख अच्छी नहीं, काशी और अहमदाबाद में काफी दूरी, अतः इसमें बहुतसी गलतियाँ रह गयी होगी, अभ्यासीगण इनको सुधार करके पढ़ेंगे और कष्ट के लिए मुझे क्षमा प्रदान करेंगे।

मेरे मित्र और पाटण (उत्तर गुजरात) आर्टकालेज के अर्द्धमागधी के प्रधान अध्यापक भाई कानजीभाई मंछाराम पटेल एम० ए० ने ही शुद्धिपत्रक वगैरह तैयार कर दिया है अतः उनका भी नामस्मरण सस्नेह कर देता हूँ।

हिन्दी भाषा द्वारा प्राकृतभाषा को पढ़ने का यह एक विशिष्ट साधन तैयार करके प्राकृतभाषा के अध्यापक तथा छात्रों के सामने सविनय रख रहा हूँ। यदि सुधी पाठक इसका उपयोग करके मुझे उत्साहित करेंगे और देश में प्राकृतभाषा के अभ्यास को इससे थोड़ी-बहुत सहायता मिलेगी तो मेरा और अनुवादिका का परिश्रम सफल समझा जायेगा।

अन्त में, इस संस्करण के संबन्ध में जो कुछ सूचना या सुझाव देने हों तो मुझे नीचे के पते पर भेजने की कृपा करें यही मेरी प्रार्थना अध्यापक तथा विद्यार्थिबन्धुओं से है।

शिवमस्तु सर्वजगतः

बेचरदास दोशी

रिसर्च प्रोफेसर ला० द० भारतीय
संस्कृति विद्यामंदिर—
—स्कूल ओफ इंडोलोजी
अमदाबाद ९

१२।३, भारतीनिवास
सोसायटी
अमदाबाद ६

विषय-सूची

संकेतों का स्पष्टीकरण

संकेत :—

धा०=धातु

अप०=अपभ्रंश

क्रि० क्रिया०=क्रियापद

स०=संस्कृत

शौ०=शौरसेनी

वै०=वैदिक

स० भू० कृ०, स० कृ०=सम्बन्धक भूत कृदन्त

मा०=मागधी

पै०=पैशाची

ना० धा०=नामधातु

गुज०=गुजराती

टि०=टिप्पण

चू०=चूलिका

प्रा०=प्राकृत

हे० प्रा० व्या०=हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण

पा० प्र०=पालिप्रकाश

नि०=नियम

पृ०=पृष्ठ

। पितरौ वन्दे ।

प्राकृतमार्गोपदेशिका

(अक्षरपरिवर्तन-व्याकरणविभाग)

वर्णविज्ञान

[1]प्राकृत-भाषा में प्रयुक्त होनेवाले स्वरों और व्यञ्जनों का परिचय इस प्रकार है :—

स्वर		उच्चारण-स्थान
ह्रस्व	दीर्घ	
अ	आ	कण्ठ—गला
इ	ई	तालु—तालु
उ	ऊ	ओष्ठ—होठ
ए[2]	ए	कण्ठ तथा तालु
ओ	ओ	कण्ठ तथा ओठ-होठ

१. प्रस्तुत पुस्तक में प्राकृत, पालि, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, तथा चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश भाषा के व्याकरण का समावेश किया गया है अतः प्राकृत भाषा से उक्त सभी भाषाएँ समझनी चाहिए।

२. एक्क, तेल्ल आदि शब्दों का 'ए' और सोत्त, तोच आदि शब्दों का 'ओ' ह्रस्व है।

१. प्राकृत-भाषा में स्वरों का प्लुत-उच्चारण नहीं होता है।

२. ऋ[1] तथा ऌ स्वर का प्रयोग नहीं होता है।

३. ऐ[2] तथा औ स्वर का प्रयोग नहीं होता है।

व्यञ्जन		उच्चारण-स्थान
क् ख् ग् घ् ङ्	(क वर्ग)	कण्ठ
च् छ् ज् झ् ञ्	(च वर्ग)	तालु
ट् ठ् ड् ढ् ण्	(ट वर्ग)	मूर्धा
त् थ् द् ध् न्	(त वर्ग)	दन्त–दाँत
प् फ् ब् भ् म्	(प वर्ग)	ओष्ट–होट

अन्तस्थ–अर्धस्वर	य्	तालु
	र्	मूर्धा
	ल्	दन्त
	व्	दन्त ओष्ट
	स्	दन्त
	ह्	कण्ठ
य् ल् व् ङ् ञ् ण् न् म्		नासिका

४. प्राकृत-भाषा में कोई भी व्यञ्जन स्वर के बिना क् च् ट् त् प् रूप से अकेला प्रयुक्त नहीं होता। जो व्यञ्जन समान-वर्ग अथवा

१. अपभ्रंश-प्राकृत में 'ऋ' स्वर का उपयोग होता है। जैसे; तृण, सुकृत आदि।

२. केवल 'अयि' अव्यय के स्थान पर ही 'ऐ' का प्रयोग होता है। याने 'ए' सम्भावना अथवा कोमल सम्बोधन का सूचक है (हे० प्रा० व्या० ८।१।१६६।)।

समान आकार के होते हैं, वे विना स्वर के भी संयुक्त रूप से प्रयुक्त होते हैं। समान वर्ग, जैसे —चक्क, वच्छ, वट्ट, तत्त, पुप्फ, अङ्क, कन्ना[1] मञ्च, कण्ठ, तन्तु, चम्पग आदि। समान आकार, जैसे :—अय्य[2], कल्लाण, सव्व, सिस्स इत्यादि।

५ किसी भी प्रयोग में अकेला स्वर सहित ङ अथवा दोहरा (संयुक्त) 'ङ्ङ' प्रयुक्त नहीं होता।

६ सामान्यत क्य, म्र, ल्ल, क्व, स्त ऐसे विजातीय संयुक्त व्यञ्जन प्राकृत भाषा में प्रयुक्त नहीं होते। लेकिन अपवादरूप से कुछ विजातीय संयुक्त व्यञ्जन प्राकृत अपभ्रंश, पालि और मागधी भाषा में प्रयुक्त होते हैं। इसके विषय में उदाहरण सहित निर्देश व्यञ्जनविकार के प्रकरण में दिये गये हैं।

७ प्राकृत भाषा में श तथा ष और विसर्ग का प्रयोग बिलकुल नहीं है।

८ 'ळ' व्यञ्जन का प्रयोग पालि तथा पैशाची भाषा में प्रचलित है।

९ संस्कृत के किस संयुक्त अक्षर के स्थान पर प्राकृत में साधारणत. कौन-सा अक्षर प्रयुक्त होता है। उदाहरणों सहित उनका प्रयोग इस प्रकार है—

(१) क्क, क्त, क्य, क्र, र्क, ल्क, क्ल और क्व के स्थान पर शब्द के

---

१ शब्द के अन्दर 'ञ्ञ' का प्रयोग पालि, मागधी और पैशाची भाषा में प्रचलित है।

२ अय्य (आर्य) शब्द केवल शौरसेनी और मागधी में ही प्रयुक्त होता है।

अन्दर डबल 'क्क' का और शब्द[१] के आदि में 'क' का प्रयोग होता है। जैसे :—उत्कण्ठा—उक्कण्ठा, मुक्त—मुक्क, वाक्य—वक्क, चक्र—चक्क, तर्क—तक्क, उल्का—उक्का, विक्लव—विक्कव, पक्व—पक्क, क्वचित्—कचि, क्वणति—कणति।

(२) त्ख, ख्य, क्ष, त्क्ष, च्य, ष्क, स्क, स्ख, :ख के बदले क्ख तथा ख होता है। जैसे:—उत्खण्डित—उक्खण्डिअ, व्याख्यान—वक्खाण, क्षय—खय, क्षण—खण, अक्षि—अक्खि, उत्क्षिप्त—उक्खित्त, लक्ष्य—लक्ख, शुष्क—सुक्ख, आस्कन्दति—अक्खंदइ, स्कन्द—खंद, स्खलित—खलिअ, स्खलन—खलण, स्खलति—खलइ, दुःख—दुक्ख।

(३) ङ्ग, ग्ण, द्ग, ग्न, ग्म, ग्य, ग्र, र्ग, ल्ग के बदले ग्ग तथा ग का प्रयोग होता है। जैसे :—खड्ग—खग्ग, रुग्ण—रुग्ग, अथवा लुग्ग, मुद्ग—मुग्ग, नग्न—नग्ग, युग्म—जुग्ग, योग्य—जुग्ग, अग्र—अग्ग, ग्रास—गास, ग्रसते—गसते, वर्ग—वग्ग, वल्गा—वग्गा।

(४) द्घ, घ्न, घ्र, र्घ, के स्थान में ग्घ तथा घ होता है। जैसे :—उद्घाटित—उग्घाडिअ, विघ्न—विग्घ, शीघ्रम्—सिग्घं, घ्राण—घाण, अर्घ—अग्घ।

(५) च्य, र्च, श्च, त्य के स्थान पर च्च तथा च होता है। जैसे :—अच्युत—अच्चुअ, च्युत—चुअ, अर्चा—अच्चा, निश्चल—निच्चल, सत्य—सच्च, त्याग—चाय, त्यजति—चयइ।

(६) र्छ, छ्र, क्ष, त्क्ष, क्ष्म, त्स, थ्य, त्स्य, प्स, श्च के स्थान में च्छ तथा छ होता है। जैसे :—मूर्छा—मुच्छा, कृच्छ्र—किच्छ, क्षेत्र—छेत्त,

---

१. यहाँ (इस विभाग में) दिये गये सभी उदाहरणों में डबल क्क, क्ख, ग्ग, ग्घ, आदि अक्षरों के प्रयोग के विषय में जो कहा गया है, उनका उपयोग शब्द के अन्दर करना चाहिए और जो इकहरा क, ख, ग, आदि कहा है उसका उपयोग शब्द के आदि में करना चाहिए।

अक्षि-अच्छि, उत्क्षिप्त-उच्छित्त, लक्ष्मी-लच्छी, क्षमा-छमा, वत्स-वच्छ, मिथ्या-मिच्छा, मत्स्य-मच्छ, लिप्सा-लिच्छा, आश्चर्य-अच्छेर।

(७) ब्ज, ज्ञ, ज्र, र्ज, ज्व, द्य, र्य, य्य के स्थान में ज्ज तथा ज होता है। जैसे :—कुब्ज-खुज्ज, सर्वज्ञ-सव्वज्ज, वज्र-वज्ज, वर्ज्य-वज्ज, गर्जति-गज्जइ, प्रज्वलित-पज्जलित, ज्वलित-जलिअ, विद्या-विज्जा, कार्य-कज्ज, शय्या-सेज्जा।

(८) ध्य, ध्व, ह्य, के स्थान में ज्झ तथा झ होता है। जैसे :—मध्य-मज्झ, साध्य-सज्झ, ध्यान-झाण, ध्यायति-झायइ, साध्वस-सज्झस, बाह्य-बज्झ, सह्य-सज्झ।

(९) र्त के स्थान में ट्ट होता है। जैसे :—नर्तकी-नट्टई।

(१०) ष्ट, ष्ठ, स्थ, स्त, के स्थान में ट्ठ तथा ठ होता है। जैसे :—दृष्टि-दिट्ठि, गोष्ठी-गोट्ठी, अस्थि-अट्ठि, स्थित-ठिअ, स्तम्भ-ठम,।

(११) र्त तथा र्द के स्थान में ड्ड होता है। जैसे :—गर्त-गड्ड, गर्दभ-गड्डह।

(१२) र्ध, द्ध, ग्ध, ब्ध तथा ढ्य के स्थान में ड्ढ होता है। जैसे :—अर्ध-अड्ढ, वृद्ध-वुड्ढ, दग्ध-दड्ढ, स्तब्ध-ठड्ढ, आढ्य-अड्ढ।

(१३) ज्ञ, म्न, न्न, ण्य, न्य, र्ण, ण्व, न्व के स्थान में ण्ण तथा ण अथवा न्न तथा न होता है। यथाः—सर्वज्ञ-सव्वण्णु-सव्वन्नु, यज्ञ-जण्ण-जन्न, ज्ञान-णाण-नाण, विज्ञान-विण्णाण-विन्नाण, प्रद्युम्न-पज्जुण्ण-पज्जुन्न, प्रसन्न-पसण्ण-पसन्न, पुण्य-पुण्ण-पुन्न, न्याय-णाय-नाय, अन्योऽन्य-अण्णोण्ण-अन्नोन्न, मन्यते-मण्णए-मन्नए, वर्ण-वण्ण-वन्न, कण्व-कण्ण-कन्न, अन्वेषण-अण्णेसण-अन्नेसण, अन्वेषयति-अण्णेसेइ-अन्नेसेइ।

(१४) क्ष्ण, क्ष्म, श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण, के स्थान में ण्ह अथवा न्ह होता है। यथा :—तीक्ष्ण–तिण्ह–तिन्ह, सूक्ष्म-सण्ह, प्रश्न–पण्ह–पन्ह, विष्णु–विण्हु–विन्हु, स्नान–ण्हाण–न्हाण, प्रस्नुत–पण्हुअ–पन्हुअ। प्रस्नव–पण्हव–पन्हव, पूर्वाह्ण–पुव्वण्ह–पुव्वन्ह, वह्नि–वण्हि–वन्हि।

(१५) क्त, प्त, त्न, त्म, त्र, त्व, र्त के स्थान में त्त तथा त होता है। जैसे :—भुक्त–भुत्त, सुप्त–सुत्त, पत्नी-पत्ती, आत्मा–अत्ता, त्राण–ताण, शत्रु–सत्तु, त्वं–तं, सत्त्व–सत्त, मुहूर्त–मुहुत्त।

(१६) क्थ, त्र, थ्य, र्थ, स्त, स्थ के स्थान में त्थ तथा थ होता है। जैसे :-- सिक्थक–सित्थअ, तत्र–तत्थ, तथ्य–तत्थ, पथ्य–पत्थ, स्तम्भ–थंभ, स्तुति–थुइ, स्थिति–थिति।

(१७) ब्द, द्र, र्द, द्व, के स्थान में द्द तथा द होता है। जैसे :—अब्द–अद्द, भद्र–भद्द, आर्द्र–अद्द, द्वि–दि, द्वैत–दइअ, अद्वैत–अदइअ, द्वौ–दो।

(१८) ग्ध, ब्ध, र्ध, ध्व, के स्थान में द्ध तथा ध होता है। जैसे :—स्निग्ध–निद्ध, लब्ध–लद्ध, अर्ध–अद्ध, ध्वनति–धणइ।

(१९) न्त के स्थान में न्द होता है (शौरसेनी भाषा में)। निश्चिन्त–निच्चिन्द, अन्तःपुर–अन्देउर। महत्–महन्त–महन्द, पचत्–पचन्त–पचन्द, प्रभाववत्–पभावन्त–पहावन्द, किन्तु–किन्दु।

(२०) त्प, त्म, प्य, प्र, र्प, ल्प, प्ल, क्म, ड्म के स्थान में प्प तथा प होता है। जैसे :—उत्पल–उप्पल, आत्मा–अप्पा, प्यायते–पायए, विज्ञप्य–विण्णप्प, प्रिय–पिय, अप्रिय–अप्पिय, अर्पयति–अप्पेइ, अल्प–अप्प, प्लव–पव, विप्लव–विप्पव, प्लवते–पवए, रुक्म–रुप्प, रुक्मिणी–रुप्पणी, कुड्मल–कुंपल।

(२१) त्फ, ष्प, ष्फ, स्प, स्फ के स्थान में प्फ तथा फ होता है। जैसे :— उत्फुल्ल–उप्फुल्ल, पुष्प–पुप्फ, निष्फल–निप्फल, स्पर्श–फंस, स्पृशति–फरिसइ, स्फुट–फुड, स्फुरति–फुरइ, स्फुरण–फुरण।

(२२) द्व, द्ब, र्व, ब्र, र्ब, ब्र के स्थान में ब्ब तथा ब अथवा व्व तथा व होता है। जैसे :—उद्बन्ध–उव्वधिय, द्वे–वे अथवा बे, द्वीनि–विन्नि, वेन्नि अथवा विन्नि बेन्नि, बर्बर–बब्बर, ब्राह्मण–बम्हण, अब्रह्मण्य–अब्बम्हण्ण, सर्व–सब्व सव्व, व्रजति–वयइ, व्रज–वज।

(२३) ग्भ, द्भ, म्भ, र्भ, भ्र, ह्व के स्थान में ब्भ तथ भ होता है। जैसे :—प्राग्भार–पब्भार, सद्भाव–सब्भाव, सभ्य–सब्भ, गर्भ–गब्भ, भ्रम–भम, विभ्रम–विब्भम, विह्वल–विब्भल।

(२४) ग्म, ड्म, ण्म, न्म, म्य, र्म, म्र, ल्म के स्थान में म्म तथा म होता है। जैसे :—युग्म–जुग्म, दिङ्मुख–दिम्मुह, वाङ्मय–वम्मय, षण्मुख–छम्मुह, जन्म–जम्म, मन्मन–मम्मण, गम्य–गम्म, सौम्य–सोम्म, धर्म–धम्म, कम्र–कम्म, म्रेडित–मेडिअ, जाल्म–जम्म, गुल्म–गुम्म।

(२५) श्म, ष्म, स्म, और ह्म के स्थान में म्ह होता है। जैसे :—पक्ष्म–पम्ह, ग्रीष्म–गिम्ह, विस्मय–विम्हय, ब्राह्मण–बम्हण।

शब्द विभाग

सभी प्राकृत भाषाओं में दो प्रकार के शब्द होते हैं—संस्कृतसम और देश्य। जो शब्द संस्कृत भाषा से बिलकुल अथवा थोड़ी समानता से मिलते-जुलते हैं। वे संस्कृतसम कहलाते हैं और जो शब्द बहुत प्राचीन होने के कारण व्युत्पत्ति की दृष्टि से संस्कृत भाषा के साथ अथवा प्राकृत भाषा के साथ मेल नहीं खाते (अथवा मिलते-जुलते

नहीं हैं) वे देश्य शब्द माने जाते हैं। ये देश्य शब्द बहुत प्राचीन हैं। वेद आदि प्राचीन शास्त्रों में, संस्कृतभाषा के साहित्य में तथा कोषों मे देश्य शब्दों का प्रयोग बहुलता से हुआ है। देश्य शब्दों में बहुत से अनार्य तथा बहुत से द्राविड़ भाषा के शब्द भी मिले हुए है। श्री हेमचन्द्राचार्य ने ऐसे देश्य शब्दों का संग्रह कर 'देशी-शब्द-संग्रह' (देसी-सद्द-संगह) नाम से एक स्वतन्त्र कोश की रचना की है। उन्होंने स्वयं इस कोश की टीका भी लिखी है।

संस्कृतसम प्राकृत शब्दों के दो प्रकार हैं। कुछ तो संस्कृत से बिल्कुल मिलते हैं, लेकिन कुछ थोड़ी समानता लिये हुए हैं।

संस्कृत से मिलते-जुलते नामरूप शब्द

प्राकृत	संस्कृत
संसार	संसार
दाह	दाह
दावानल	दावानल
नीर	नीर
संमोह	संमोह
धूलि	धूलि
समीर	समीर इत्यादि

संस्कृत से मिलते-जुलते क्रियापद

प्राकृत	संस्कृत
भेदति	भेदति
हनति	हनति
धाति	धाति
मरते	मरते इत्यादि

कुछ समानता लिये हुए नामरूप शब्द

प्राकृत	संस्कृत
कणग	कनक
सुवण्ण-सुवन्न	सुवर्ण
विलया	वनिता
घर	गृह
इत्थी	स्त्री
रुक्ख	वृक्ष
वाणारसी	वाराणसी

कुछ मिलते-जुलते क्रियापद

कुणति	कृणोति (तृतीय पुरुष एकवचन)
नच्चति	नृत्यति
पुच्छति	पृच्छति
जीहति	जिह्रेति
वचति	वच्ति (प्रयोग में वक्ति)
जुज्झति जुज्झते युध्यते	
वन्दित्ता	वन्दित्वा (सम्बन्धक भूतकृदन्त)
कत्तवे कातवे करित्तए	कर्तवे (हेत्वर्थक कृदन्त)

देश्य	संस्कृत	गुजराती	हिन्दी
खडकी		खडकी	खिडकी
खड्डा	गर्त	खाडो	खड्ड अथवा गड्डा

ओज्झरी	होजरी	उदर (पेट)
अआलि अकाले (?)	एली-हेली-वरसादनी एली, बरसाती	
गडयडी	गडगडाट	गड़गड़ाहट कीड़ा
गागरी गर्गरी	गागर	गगरी, गागर
छासी	छाश	छाछ (मट्टा)
जोवारी	जुवार	जुआर, ज्वार (अनाज)

देश्य शब्दों में तामिल–तेलुगु और अरबी–फारसी आदि अनेक भाषाओं के शब्द भी होते हैं।

शब्द रचना

प्राकृत शब्दों को समझने के लिए प्राचीन काल से ही संस्कृत शब्दों के माध्यम से प्राकृत बनाने की जो परम्परा चली आयी है, प्रस्तुत पुस्तक में उसी परम्परा का आश्रय लिया गया है।

स्वरों का सामान्य परिवर्तन

जिन नियमों के साथ नागरी अंक लगे हुए हैं उन्हें सामान्य नियम समझना चाहिये और जिन नियमों के साथ अंग्रेजी अंक लगाये हुए हैं उन्हें विशेष-नियम समझना चाहिए। इसी प्रकार खास-खास भाषाओं के नाम लेकर परिवर्तन के जो नियम बनाये गये हैं वे सूचित नियम उन खास भाषाओं के साथ सम्बन्धित हैं और जो नियम किसी विशेष भाषा का नाम लिये बिना अथवा प्राकृत भाषा का नाम लेकर बताये गये हैं वे साधारणतः यहाँ बतायी गयी सभी भाषाओं के साथ सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु इन नियमों के प्रयोग करने से पहले अपवादात्मक नियमों की ओर पूरा ध्यान देना अनिवार्य है।

ह्रस्व से दीर्घ[१]

संस्कृत	प्राकृत
कश्यप	कासव
पश्य	पास
आवश्यक	आवासय
मिश्र	मीस
विश्राम	वीसाम
संस्पर्श	सफास
अश्व	आस
विश्वास	वीसास
दुश्शासन	दूसासण
पुष्य	पूस
मनुष्य	मणूस
वर्ष	वास
वर्षा	वासा
कर्षक	कासअ
विष्वक्	वीसु
विष्वाण	वीसाण
निषिक्त	नीसित्त
कस्य	कास
सस्य	सास

१ हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण ८।१।४३।

परिवर्तन के विधान को समझने के लिए सभी सूत्रों के अंक दिये गये हैं। अतः सूत्रों के जो जो उदाहरण यहाँ नहीं दिये गये हैं, वे सभी उदाहरण उन उन सूत्रों को देखकर समझ लें।

संस्कृत	प्राकृत
विस्रम्भ	वीसंभ
उस्र	ऊस
निस्व	नीस
विकस्वर	विकासर
निस्सह	नीसह

(पालि भाषा में भी ऐसा परिवर्तन होता है। जैसे; परामर्श—परामास—देखो पालि-प्रकाश, पृ० ११ टिप्पण)

दीर्घ से ह्रस्व[1]

(२)

संस्कृत	प्राकृत
आम्र	अम्ब
ताम्र	तम्ब
तीर्थ	तित्थ
मुनीन्द्र	मुणिन्द
चूर्ण	चुन्न-चुण्ण
नरेन्द्र	नरिंद
म्लेच्छ	मिलिच्छ मिलिक्ख
नीलोत्पल	नीलुप्पल

(पालि भाषा में भी दीर्घ का ह्रस्व—ए का 'इ', ओ का 'उ' तथा औ का 'उ' होता है। देखो, पा० प्र०—पृ० ८, नियम ११, पृष्ट ५५ और पृ० ५)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।८४।

(३) आ को अ[1]

प्रकार	पयर	पयार
प्रचार	पयर	पयार
प्रहार	पहर	पहार
प्रवाह	पवह	पवाह
प्रस्ताव	पत्थव	पत्थाव

यहाँ यह नियम स्मरण में रखना चाहिए कि ये सभी नाम भाववाचक और नरजाति के ही हैं।

(४) इ को ए[2]

पिष्ट	पेट्ठ	पिट्ठ
सिन्दूर	सेन्दूर	सिंदूर
पिण्ड	पेंड	पिंड
विष्णु	वेण्हु	विण्हु
बिल्व	बेल्ल	बिल्ल

इन सभी उदाहरणों में 'इकार' संयुक्त अक्षर के पूर्व में आया हुआ है।

(पालि भाषा में भी ऐसा ही विधान है। देखो, पा० प्र० पृ० ३-इ = ए)

(५) उ को ऊ[3]

उत्सरति	ऊसरइ
उत्सव	ऊसव

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।६८, २. हे० प्रा० व्या० ८।१।८५।; ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।११४।

उच्छ्‌वसति	ऊससइ
उच्छ्‌वास	ऊसास

इन उदाहरणों में 'उ' के पश्चात् त्स अथवा च्छ्र आया हुआ है।

(६) उ को ओ[1]

कुट्टिम	कोट्टिम
तुण्ड	तोंड
पुद्‌गल	पोग्गल
मुस्ता	मोत्था
पुस्तक	पोत्थअ

इन उदाहरणों में 'उ' संयुक्त अक्षर के पूर्व में आया हुआ है।

(पालि भाषा में इसी प्रकार 'उ' को ओकार होता है। देखो, पा० प्र० पृ० ५४—उ=ओ)

(७) ऋ को अ[2]

घृत	घय
तृण	तण
कृत	कय

(पालि भाषा में भी 'ऋ' को 'अ' होता है। देखो, पा० प्र० पृ० १—ऋ=अ)

(८) ऋ को उ[3]

पितृगृहं	पिउघरं
मातृगृहम्	माउघरं
मातृष्वसा	माउसिया

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।११६।

२. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२६। ; ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३४।

(६) ऋ को रि[1]

ऋद्धि	रिद्धि
ऋक्ष	रिच्छ
सदृश	सरिस
सदृक्ष	सरिक्ख
सदृक्	सरि
ऋण	रिण-अण
ऋषभ	रिसह-उसह

(पालि भाषा में भी 'ऋ' को 'रि' होता है। देखो, पा० प्र० पृष्ठ ३—ऋ=रि टिप्पण)

सदृश आदि शब्दों में दकार लोप करने के बाद जो 'ऋ' शेष रहती है उसको 'रि' होता है।

पैशाची भाषा में सरिस (सदृश) के बदले सतिस रूप बनता है। इसी प्रकार जारिस (यादृश) के बदले यातिस, अन्नारिस (अन्यादृश) के बदले अन्नातिस आदि रूप बनते हैं (हे० प्रा० व्या० ८।४।३१७)।

(१०) ऌ को इलि[2]

क्लृन्न	किलिन्न
क्लृप्त	किलित्त

(११) ऐ को ए[3]

शैल	सेल
कैलास	केलास
वैधव्य	वेहव्व

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४०, १४१, १४२.।

२. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४५। ; ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४८।

(पालि भाषा में भी 'ऐ' को 'ए' होता है। देखो, पा० प्र०-पृ० ३—ऐ=ए)

(१२) औ को ओ[1]

कौशाम्बी	कोसंबी
यौवन	जोव्वण
कौस्तुभ	कोत्थुह

(पालि भाषा में भी 'औ' को 'ओ' होता है। देखो, पा०-प्र० पृ० ५-औ=ओ)

अपभ्रंश[2] प्राकृत भाषा में स्वरों का परिवर्तन व्यवस्थित रूप से नहीं होता। याने कहीं तो 'आ' को 'अ' होता है, कहीं 'ई' को 'ए' होता है, कहीं 'उ' को 'अ' तथा 'आ' होता है। 'ऋ' को 'अ', 'इ' तथा 'उ' होता है कहीं 'ऋ' भी रहती है। 'लृ' को 'इ' तथा 'इलि' 'ए' को 'इ' तथा 'ई' और 'औ' को 'ओ' तथा 'अउ' होता है।

'आ' को 'अ'—काच—कच्चु, काच्चु अथवा काच्च।
'ई' को 'ए'—वीणा—वेण, वीण, वीणा।
'उ' को 'अ' तथा 'आ'—बाहु, बाह, बाहा, बाहु।
ऋ को 'अ', 'इ', 'उ'—पृष्टी—पट्ठि, पिट्ठि, पुट्ठि,
तृण—तणु, तिणु, तृणु,
सुकृत—सुकिदु, सुकिउ, सुकृदु।
लृ को 'इ', 'इलि'—क्लृन्न, किन्नउ, किलिन्नउ।
ए को 'इ', 'ई',—लेखा } लिह, लीह, लेह।
रेखा }
औ को 'ओ' तथा 'अउ'—गौरी, गोरि, गउरि।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५६। ; २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२६, ३३०.।

अपभ्रंश प्राकृत में किसी भी विभक्ति के आने के पश्चात् नामरूप शब्द का अन्त्य स्वर ह्रस्व हो तो दीर्घ हो जाता है और दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है। जैसे :—

धवल–ढोल्ला	(अ को आ)	प्रथमा विभक्ति
श्यामल–सामला	(„ „)	„
दीर्घ–दीहा	(अ को आ)	द्वितीया विभक्ति
रेखा–रेह	(आ को अ)	प्रथमा विभक्ति
भणिता–भणिअ	(आ को अ)	„

देखिये—हे० प्रा० व्या० ८।४।३३०।

—: ॰ :—

स्वरों का विशेष-आपवादिक-परिवर्तन

१. 'अ' का परिवर्तन

'अ' को 'आ'[1]

अभियाति	आहियाइ	अहियाइ
दक्षिण	दाहिण	दक्खिण
प्ररोह	पारोह	परोह
प्रवचन	पावयण	पवयण
पुनः	पुना	पुण
समृद्धि	सामिद्धि	समिद्धि आदि

(पालि भाषा में भी 'अ' को 'आ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५२–अ=आ)

'अ' को 'इ'[2]

उत्तम	उत्तिम
कतम	कइम

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।४४, ४५ तथा ६५। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।४६, ४७, ४८, ४६।

मरिच	मिरिअ
मध्यम	मज्झिम
दत्त	दिएण
अङ्गार	इंगार, अंगार
पक्व	पिक्क, पक्क
ललाट	णिडाल, णडाल

(पालि भाषा में भी 'अ' को 'इ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृष्ठ ५२–अ=इ।)

'अ' को 'ई'[1]

हर–हीर, हर सं० हीर

'अ' को 'उ'[2]

ध्वनि	झुणि
कृतज्ञ	कयएणु

(पालि भाषा में भी 'अ' को 'उ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५२–अ = उ)

'अ' को 'ए'[3]

अत्र	एत्थ	
शय्या	सेज्जा	पालि–सेय्या
वल्ली	वेल्ली सं० वेल्लि।	
कन्दुक	गेंदुअ सं०[4] गेन्दुक, गिन्दुक।	

(पालि भाषा में भी 'अ' को 'ए' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५२–अ = ए)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।५१। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।५२, ५३, ५४, ५५, ५६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।५७, ५८, ५९, ६०। ४. सं० संस्कृत भाषा।

'अ' को 'ओ'[1]

नमस्कार — नमोक्कार
परस्पर — परोप्पर
पद्म — पोम्म
अर्पयति — ओप्पेइ, अप्पेइ
स्वपिति — सोवइ, सुवइ
अर्पित — ओप्पिअ, अप्पिअ

'अ' को 'अइ'[2]

विषमय — विसमइअ
सुखमय — सुहमइअ

'अ' को 'आइ'[3]

पुनः पुणाइ, पुणा, पुण
न पुनः न उणाइ, न उणा, न उण

'अ' का लोप[4]

अरण्य — रण्ण — अरण्ण
अलाबू — लाऊ — अलाऊ

—:*:—

२. आ का परिवर्तन

'आ' को 'अ'[5]

श्यामाक — सामअ स० श्यामक।
महाराष्ट्र — मरहट्ठ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।६१, ६२, ६३, ६४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।५०। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।६५। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।६६।
५. हे० प्रा० व्या० ८।१।६७।६८,७०,७१।

कालक	कलअ, कालअ
कुमार	कुमर, कुमार सं० कुमर
हालिक	हलिअ, हालिअ
प्राकृत	पयय, पायय
चामर	चमर, चामर सं० चमर
वा	व, वा
यथा	जह, जहा
तथा	तह, तहा
अथवा	अहव, अहवा

(पालि भाषा में भी 'आ' को 'अ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५२–आ=अ)

'आ' को 'इ'[1]

आचार्य	आइरिअ, आयरिअ
निशाकर	निसिअर, निसाअर

'आ' को 'ई'[2]

खल्वाट	खल्लीड
स्त्यान	ठीण, थीण

'आ' को 'उ'[3]

आर्द्र	उल्ल
स्तावक	थुवअ
सास्ना	सुण्हा

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।७२,७३। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।७४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।७५।८२।

'आ' को 'ऊ'[1]

आर्या	अज्जू
आधार	ऊधार, आधार

'आ' को 'ए'[2]

ग्राह्य	गेज्झ
पारापत	पारेवअ, पारावअ
द्वार	देर, दार
असहाय्य	असहेज्ज, असहज्ज
पुराकर्म	पुरेकम्म, पुराकम्म
मात्र	मेत्त

(पालि भाषा में भी 'आ' को 'ए' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३–आ=ए)

'आ' को 'ओ'[3]

आर्द्र	ओल्ल, अल्ल

---

३. इ का परिवर्तन

'इ' को 'अ'[4]

इति	इअ
तित्तिरि	तित्तिर सं० तित्तिर
पथिन्	पह

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।७६, ७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।७८, ७९, ८०, ८१। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।८२, ८३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।९१, ८८, ८९, ९०।

हरिद्रा	हलद्दा
इङ्गुद	अंगुअ, इङ्गुअ
शिथिल	सढिल, सिढिल

(पालि भाषा में भी 'इ' को 'अ' होता है। देखिये—पालि प्र० पृ० ५३–इ=अ)

'इ' को 'ई'[1]

जिह्वा	जीहा (अवेस्ता भाषा में हिज्वा)
सिंह	सीह
निस्सरति	नीसरइ, निस्सरइ

'इ' को 'उ'[2]

द्वि	दु
इक्षु	उच्छु, इक्खु
नि	नु, णु
युधिष्ठिर	जहुट्ठिल, जहिट्ठिल
द्वितीय	दुइअ, विइअ
द्विगुण	दुउण, विउण

(पालि भाषा में भी 'इ' को 'उ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३–इ=उ तथा पृष्ठ ३२ टिप्पण)

'इ' को 'ए'[3]

मिरा	मेरा
किंशुक	केसुअ, किंसुअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।९२।९३। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।९४, ९५, ९६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।८७, ८६।

(पालि भाषा में भी 'इ' को 'ए' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३-इ=ए)

'इ' को 'ओ'[1]

द्विवचन	दोवयण
द्विधा	दोहा, दुहा
निर्झर	*ओज्झर, निज्झर

(पालि भाषा में भी 'इ' को 'ओ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३-इ=ओ)

---

४. ई का परिवर्तन

'ई' को 'अ'[2]

हरीतकी — हरडई (पालि हरीटकी)

(पालि भाषा में 'ई' को 'अ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३-ई=अ)

'ई' को 'आ'[3]

कश्मीर — कम्हार

'ई' को 'इ'[4]

द्वितीय	दुइय
गम्भीर	गहिर
व्रीडित	विलिअ
पानीय	पाणिअ, पाणीअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।९७, ९४, ९८। * यहाँ 'न' सहित इ को 'ओ' समझना चाहिये। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।९९। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१००। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०१।

जीवति	जिवइ, जीवइ
उपनीत	उवणिअ, उवणीअ

'ई' को 'उ'[1]

जीर्ण	जुराण, जिराण

'ई' को 'ऊ'[2]

तीर्थ	तूह, तित्थ
हीन	हूण, हीण सं० हूण
विहीन	विहूण, विहीण

'ई' को 'ए'[3]

विभीतक	बहेडअ
पीयूष	पेऊस सं० पेयूष
नीड	नेड, नीड

---

५. उ का परिवर्तन

'उ' को 'अ'[4]

गुडूची	गलोई
युधिष्ठिर	जहुट्ठिल
मुकुट	मउड सं० मकुर
उपरि	अवरिं, उवरिं
गुरुक	गरुअ, गुरुअ

(पालि भाषा में 'उ' को 'अ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५३—उ = अ—मुकुल—मकुल)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०२। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०३, १०४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०५, १०६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१। १०७, १०८, १०९।

'उ' को 'इ'[1]

पुरुष	पुरिस यास्क-पुरिशय
भ्रुकुटि	भिउडि

(पालि भाषा में 'उ' को 'इ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५४-उ=इ)

'उ' को 'ई'[2]

क्षुत	छीअ

'उ' को 'ऊ'[3]

मुसल	मूसल
सुभग	सूहव, सुहअ

'उ' को 'ओ'[4]

कुतूहल	कोउहल, कुऊहल

(पालि भाषा में भी 'उ' को 'ओ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५४-उ=ओ)

---

६. ऊ का परिवर्तन

'ऊ' को 'अ'[5]

दुकूल	दुअल्ल, दुऊल

(पालि भाषा में भी 'ऊ' को 'अ' होता है। देखिये—पा० प्र० ० ५५-ऊ=अ)

---

१. है० प्रा० व्या० ८।१।११०, १११। २. है० प्रा० व्या० ८।१।११२। ३. है० प्रा० व्या० ८।१।११३, ११५। ४. है० प्रा० व्या० ८।१।११७। ५. है० प्रा० व्या० ८।१।११८, ११६।

'ऊ' को 'ई'[1]

उद्व्यूढ	उव्वीढ, उव्वूढ

'ऊ' को 'उ'[2]

भ्रू	भु
हनूमत्	हणुमन्त
+ कण्डूया	कंडुया
कुतूहल	कोउहल, कोऊहल
मधूक	महुअ, महूअ सं० मधुक

'ऊ' को 'ए'[3]

नूपुर	नेउर, नूउर

'ऊ' को 'ओ'[4]

कूर्पर	कोप्पर (पालि कप्पर)
गुडूची	गलोई (पालि गोलोची)
तूण	तोण, तूण
स्थूणा	थोणा, थूणा

(पालि भाषा में भी 'ऊ' को 'ओ' होता है। देखिये—प्रा० प्र० पृ० ५५—ऊ=ओ)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२०। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२१,१२२। + यहाँ 'कण्डूय' धातु भी समझना चाहिए। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१२४,१२५।

७ ऋ का परिवर्तन

ऋ' को 'आ'

कृश	कास, किस
मृदुत्व	माउक्क, मउत्तण

ऋ को 'इ'[2]

उत्कृष्ट	उक्किट्ठ
ऋषि	इसि
ऋद्धि	इद्धि
शृगाल	सिआल
हृदय	हिअय
धृष्ट	धिट्ठ, धट्ठ
पृष्ठि	पिट्ठि, पट्ठि
बृहस्पति	बिहप्फइ, बहप्फइ
मातृष्वसृ	माइसिआ, माउसिआ
मृगांक	मियंक, मयंक

(पालि भाषा में भी 'ऋ' को 'इ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ०—२, ऋ=इ)

पैशाची[3] भाषा में हृदय के बदले हितप रूप बनता है। हृदय—हितप। हृदयक, हितपक।

---

१ हे० प्रा० व्या० ८।१।१२७। २ हे० प्रा० व्या० ८।१।१२८, १२६, १३०। ३ हे० प्रा० व्या० ८।४।३१०।

‘ऋ’ को ‘उ’[1]

भ्रातृ	भाउ
वृद्ध	वुड्ढ
वृद्धि	वुड्ढि
पितृ	पिउ
पृथिवी	पुहई
मृषा	मुसा, मोसा
वृषभ	उसह, वसह
वृहस्पति	वुहप्फइ, वहप्फइ

(पालि भाषा में भी ‘ऋ’ को ‘उ’ होता है। देखिये—पा० प्र० पृ०–२, ऋ=उ)

‘ऋ’ को ‘ऊ’[2]

मृषा	मूसा, मुसा

‘ऋ’ को ‘ए’[3]

वृन्त	वेंट, विंट

(पालि भाषा में भी ‘ऋ’ को ‘ए’ होता है। देखिये—पा० प्र० पृ०–३, ऋ=ए)

‘ऋ’ को ‘ओ’[4]

मृषा	मोसा, मुसा
वृन्त	वोंट, विंट

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३१, १३२, १३३, १३४, १३६, १३७, १३८। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१३६, १३६।

'ऋ' को 'अरि'[1]

हृत दरिअ

'हृ' को 'ढि'[2]

आहृत *आढिअ

---

८. ए का परिवर्तन

'ए' को 'इ'[3]

वेदना विअणा
देवर दिअर

'ए' को 'ऊ'[4]

स्तेन थूण, थेण

(पालि भाषा में किसी-किसी शब्द में 'ए' को 'ओ' होता है। द्वेष-दोस, देखिये—पा० प्र० पृ० ५५-ए = ओ)

---

९. ऐ का परिवर्तन

'ऐ' को 'अअ'[5]

उच्चैस् उच्चअ
नीचैस् नीचअ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४३। * आहृत शब्द के रूप का विकास आरिअ-आढिअ-आढिअ इस तरह से होना चाहिए? (?) ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४७। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५४।

'ऐ' को 'इ'[१]

शनैश्चर	सणिच्छर
सैन्धव	सिंधव
सैन्य	सिन्न, सेन्न

(पालि भाषा में 'ऐ' को 'इ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ४–ऐ–ई)

'ऐ' को 'ई'[२]

धैर्य	धीर
चैत्यवन्दन	चीवंदण, चेइयवंदण

(पालि भाषा में भी 'ऐ' को 'ई' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ४–ऐ=ई)

'ऐ' को 'अइ'[३]

चैत्र	चइत्त, चेत्त
वैशम्पायन	वइसंपायण, वेसंपायण
कैलास	कइलास, केलास
वैर	वइर, वेर
दैव	दइव्व, देव्व

---

१० औ का परिवर्तन

'औ' को 'अ'[४]

अन्योन्य	अन्नन्न, अन्नुन्न

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१४९,१५०। २. हे० प्रा० व्या ८।१।१५५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५१, १५२, १५३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५६।

आतोद्य	आवज्ज, आउज्ज
मनोहर	मणहर, मणोहर

'ओ' को 'ऊ'[1]

सोच्छ्वास	सूसास

'ओ' को 'अउ, आअ'[2]

गोक	गउअ
गो	गउ
गो	गाअ, गाई (मादा जाति)

---

११. औ का परिवर्तन

'औ' को 'अउ'[3]

पौर	पउर
मौन	मउण
गौरव	गउरव
गौड	गउड
कौरव	कउरव

'औ' को 'आ'[4]

गौरव	गारव, गउरव

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५७। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५८। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६२। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६३।

(पालि भाषा में 'औ' को 'आ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५. औ = आ; कहीं-कहीं 'औ' को 'अ' भी हो जाता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५-टिप्पण)

'औ' को 'उ'[1]

शौद्धोदनि	सुद्धोअणि
सौवर्णिक	सुवण्णिअ
दौवारिक	दुवारिअ
सौन्दर्य	सुन्देर
कौच्चेयक	कुच्छेअय, कोच्छेअय

(पालि भाषा में 'औ' को 'उ' होता है। देखो—पा० प्र० पृ० ५–औ = उ)

'औ' को 'आव'[2]

नौ	नावा
गौ	गावी

—:※:—

व्यञ्जन का परिवर्तन

अन्त्य व्यञ्जन और दो स्वरों के बीच में रहनेवाले (असंयुक्त) व्यञ्जन का सामान्य परिवर्तन।

१. लोप

(क) शब्द के अन्तिम व्यञ्जन का लोप हो जाता है।[3]

तमस्	तम सं० तम
तावत्	ताव
अन्तर्गत	अन्तग्गय
पुनर्	पुण
अन्तर्-उपरि	अन्तोवरि

(पालि भाषा में भी शब्द के अन्तिम व्यञ्जन का लोप हो जाता है : विद्युत्—विज्जु। देखिये—पा० प्र० पृ० ६, नियम ७)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६०, १६१। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।११।

(ख) दो स्वरों के मध्य में आए हुए क, ग, च, ज, त, द, प, ब, य और व का लोप होता है[1]।

सं०	प्रा०	सं०	प्रा०
लोक	लोअ	मदन	मयण
नगर	नयर	रिपु	रिउ
शची	सई	विबुध	विउह
गज	गअ	वियोग	विओग
रसातल	रसायल	वडवानल	वलयाणल

लोप करते समय जहाँ अर्थ भ्रान्ति का सम्भावना हो वहाँ लोप नहीं करना चाहिए। जैसे —सुकुसुम, प्रयाग, सुगत, सचाप, विजय, सुतार, विदुर, सगर, समवाय, देव, दानव आदि।

पालि, शौरसेनी मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश भाषाओं में यह नियम सार्वत्रिक नहीं—सापवाद है। इसे यथास्थान सूचित करेंगे।

(ख) के अपवाद

उपर्युक्त लोप का नियम, तथा इस प्रकरण में आनेवाले नियम और जहाँ कोई विशेष विधान सूचित न किया गया हो ऐसे दूसरे भी सामान्य और विशेष नियम पैशाची भाषा में नहीं लगते[2]।

पैशाची	प्राकृत
मकरकेतु	मयरकेउ
सगरपुत्तवचन	सयरपुत्तवयण
विजयसेन	विजयसेण
लपित	लविअ

---

१ हे० प्रा० व्या० ८।१।१७७। २ हे० प्रा० व्या० ८।४।३२४।

पाप	पाव
आयुध	आउह आदि

शौरसेनी में दो स्वरों के मध्य में स्थित 'त' को 'द' होता है[1]।

संस्कृत	शौरसेनी	प्राकृत
कथित	कधिद	कहिअ
ततः	तदो	तओ
प्रतिज्ञा	पदिण्णा	पइण्णा
मन्त्रित	मंतिद	मंतिअ

आपवादिक नियमों को छोड़ शौरसेनी में जिन परिवर्तनों के नियम बताए गए हैं वे सब मागधी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश भाषा में भी समझने चाहिए[2]।

(पालि भाषा में भी 'त' को 'द' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५६–त = द)

मागधी भाषा में 'ज' को 'य' होता है।[3]

संस्कृत	मागधी	प्राकृत
जनपद	यणवद	जणवअ
जानाति	याणदि	जाणइ
गर्जित	गय्यिद	गज्जिअ

(पालि भाषा में भी 'ज' को 'य' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५७–ज = य)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६०। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०२, ३२३, ४४६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६२।

पैशाची भाषा में और चूलिका पैशाची भाषा में 'त' कायम रहता है तथा 'द' को भी 'त' हो जाता है[१]।

सं०	पै०—चू० पै०	प्रा०
भगवती	भगवती	भगवई
मदन	मतन	मयण
कन्दर्प	कतप्प	कदप्प
दामोदर	तामोतर	दामोअर

(पालि भाषा में 'द' को 'त' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ६०—द=त)

चूलिका पैशाची भाषा में 'ग' को 'क', 'ज' को 'च', और 'ब' को 'प' होता है[२]।

सं०	पै०	चू० पै०	प्रा०
गिरितट,	गिरितट	किरितट	गिरितड
नगर	नगर	नकर	नगर, नयर
नाग	नाग	नाक	नाग, नाय
जीमूत	जीमूत	चीमूत	जीमूअ
जर्जर	जज्जर	चच्चर	जज्जर
राजा	राजा	राचा	राया
बालक	बालक	पालक	बालअ
बर्बर	बब्बर	पप्पर	बब्बर
बान्धव	बधव	पधव	बधव

कुछ वैयाकरण मानते हैं कि चूलिका पैशाची भाषा में आदि में

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०७, ३२५। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२५।

आए हुए वर्गीय तृतीय व्यंजन का प्रथम व्यंजन और चतुर्थ व्यंजन क। द्वितीय व्यंजन नहीं होता तथा युज् धातु के 'ज्' को भी 'च्' नहीं होता।[1]

सं०	पै०	चू० पै०	हेमचन्द्र चू० पै०	प्रा०
गति	गति	गति	कति	गइ
गिरि	गिरि	गिरि	किरि	गिरि
जीमूत	जीमूत	जीमूत	चीमूत	जीमूअ
ढक्का	ढक्का	ढक्का	ठक्का	ढक्का
बालक	बालक	बालक	पालक	बालअ
नियोजित	नियोजित	नियोजित	नियोचित	नियोजिअ

(पालि भाषा में 'ग' को 'क' तथा 'ज' को 'च' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५५,५७–ग=क तथा ज = च)

अपभ्रंश भाषा में किसी-किसी प्रयोग में 'क' को 'ग' होता है।[2]

संस्कृत	अपभ्रंश	प्राकृत
विक्षोभकर	विच्छोहगर	विच्छोहयर

२. अन्तिम व्यञ्जन को 'अ'

कुछ शब्दों में अन्त्य-व्यञ्जन को 'अ' होता है।[3]

सं०	प्रा०
शरत्	सरअ
भिषक्	भिसअ (पालि भिसक)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९६। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८।

३. मध्यम व्यञ्जन को य

जिसके पूर्व में और अन्त में 'अ' तथा 'आ' हो ऐसे 'क', 'ग', 'च', 'ज' आदि के[1] लोप हो जाने पर शेष बचे 'अ' को 'य' और 'आ' को 'या'[2] होता है। जैसे :—

सं०	प्रा०	सं०	प्रा०
तीर्थंकर	तित्थयर	पाताल	पायाल
नगर	नयर	गदा	गया
कचग्रह	कयग्गह	नयन	नयण
प्रजा	पया	लावण्य	लायण्ण

(पालि भाषा में 'क' और 'ज' को भी 'य' होता है। देखिए— पा० प्र० पृ० ५१, ५७—क = य, तथा ज = य)

४. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'ख', 'घ', 'थ', 'ध' तथा 'भ' को 'ह' होता है।[3] जैसे :—

मुख—मुह, मेघ—मेह, कथा—कहा, साधु—साहु, सभा—सहा।

अपवाद

शौरसेनी भाषा में 'थ' को 'ह' होता है और कहीं 'ध' भी होता है तथा 'ह' को कहीं 'ध' होता है।[4]

सं०	शौ०	प्रा०
नाथ	नाध, नाह	नाह
राजपथ	राजपध, राजपह	राजपह
इह	इध	इह

(पालि भाषा में 'घ', 'ध' और 'भ' को 'ह' होता है। देखिये— पा० प्र० पृ० ५६—घ=ह, पृ० ६०—ध=ह, पृ० ६२—भ=ह)

---

१. देखिए— पृ० ३३ लोप (ख)। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८०। ३ हे० प्रा० व्या० ८।१।१८७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६७ तथा २६८

चूलिका-पैशाची भाषा में 'घ' को 'ख', 'झ' को 'छ', 'ड' को 'ट', 'ढ' को 'ठ', 'ध' को 'थ' और 'भ' को 'फ' होता है।[1]

सं०	चू० पै०	पै०	प्रा०
घर्म	खम्म	घम्म	घम्म
मेघ	मेख	मेघ	मेह
व्याघ्र	वक्ख	वग्घ	वग्घ
झर्झर	छच्छर	झज्झर	झज्झर
निर्झर	निच्छर	निज्झर	निज्झर, ओज्झर
प्रतिमा	पटिमा	पतिमा	पडिमा
तडाग	तटाक[2]	तडाग	तडाय
मण्डल	मंटल	मंडल	मंडल
डमरुक	टमरुक	डमरुक	डमरुअ
गाढ	काठ	गाढ	गाढ
षण्ढ	संठ	संढ	संढ
ढक्का	टक्का	ढक्का	ढक्का
मधुर	मथुर	मधुर	महुर
धूलि	थूलि	धूलि	धूलि
बान्धव	पंथव	बंधव	बंधव
रभस	रफस	रभस	रहस
रम्भा	रम्फा	रंभा	रंभा
भगवती	फकवती	भगवती	भगवई

(पालि भाषा में 'ब' को 'प' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६२—ब=प)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२५। २. 'तटाक' शब्द संस्कृत में भी है।

५. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'ट' को 'ड' होता है[1]।

घट–घड, घटते–घडइ, नट–नड, मट–मड।

(पालि भाषा में 'ट' को 'ड' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ५८–ट=ड)

पैशाची भाषा में 'टु' को 'तु' भी होता है[2]।

सं०	पै०	प्रा०
कुटुम्ब	कुतुंब, कुटुंब	कुडुंब
कटुक	कतुअ, कटुक	कडुअ
पटु	पतु, पटु	पडु

६. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'ठ' को 'ढ' होता है[3]।

मठ–मढ, कुठार–कुढार, पठति–पढइ।

७. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'ड' को 'ल' होता है[4]।

तडाग–तलाय, गरुड–गरुल, क्रीडति–कीलइ।

(पालि भाषा में भी 'ड' को 'ळ' होता है और 'ण' को 'न' होता है। देखिए—क्रमशः पा० प्र० पृ० ४३–ड=ळ; पा० प्र० पृ० ५८–ण=न)

८. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'न' को 'ण' नित्य तथा शब्द के आदि में रहे 'न' को 'ण' विकल्प से होता है[5]।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९५। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।३११। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९९। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०२। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।२२८, २२९।

सं०	प्रा०	सं०	प्रा०
कनक	कणय	नदी	णई, नई
वचन	वयण	नर	णर, नर
वदन	वयण	नयति	णेइ, नेइ

(पालि भाषा में 'ण' को 'न' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६१–न=ण)

पैशाची भाषा में 'ण' को 'न' होता है[१]।

सं०	पै०	प्रा०
गुण	गुन	गुण
गण	गन	गण

९. 'अ' तथा 'आ' के बाद आनेवाले 'प' को[२] 'व' ही होता है[3]।

कपिल–कविल, कपाल–कवाल, तपति–तवइ।
ताप–ताव, पाप–पाव, शाप–साव.

१०. दो स्वरों के बीच में आए हुए 'प' को 'व' होता है[४]।

उपसर्ग–उवसग्ग, उपमा–उवमा, गोपति–गोवइ, प्रदीप-पईव, महिपाल–महिवाल।

(पालि भाषा में 'प' को 'व' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६१, प=व)

अपभ्रंश भाषा में 'प' को 'व' भी होता है[५]।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०६। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७६। ३. पृ० ३३–लोप (ख) का अपवाद है। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३१। ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।३६६।

सं०	अप०	प्रा०
शपथ	सवध-सवध	सवह

११. प्राकृत और अपभ्रंश भाषा में दो स्वरों के बीच में आए हुए 'फ' को 'भ' अथवा 'ह' होता है।[1]

रेफ–रेभ, रेह। शिफ–सिभा, सिहा। मुक्ताफल–मुत्ताहल। 'मुत्ताभल' नहीं होता है। शफरी–सभरी, सहरी। सफल–सभल, सहल। अप० सभलअ।

१२. दो स्वरों के मध्य में आए हुए 'ब' को 'व' होता है।[2]

शबल–सवल, अलाबू–अलावू (पालि अलापू)

(पालि-भाषा में भी 'प' को 'व' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६२, प=व)

अपभ्रंश भाषा में दो स्वरों के बीच में आए हुए 'म' को विकल्प से 'वँ' होता है।[3]

सं०	अप०	प्रा०
कमल	कवँल, कमल	कमल
भ्रमर	भवँर, भमर	भमर
यथा	जिवँ, जिम	जह, जहा
कुमर	कुवँर, कुमर	कुमर
तथा	तिवँ, तिम	तह, तहा

१३. शब्द के आदि में 'य' को 'ज' होता है।[4]

यश–जस्न, यशस्–जसो, याति–जाइ। यम–जम, यथा–जहा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३६। तथा ८।४।३६६। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४५।

(पालि भाषा में भी 'य' को 'ज' होता है। गवय = गवज देखिए—पा० प्र० पृ० ६२)

मागधी भाषा में शब्द के आदि 'य' का 'य' ही रहता है।[1]

सं०	मा०	प्रा०
याति	यादि	जाइ
यथा	यधा	जहा
यान	याण	जाण

मागधी भाषा में 'र' के स्थान में 'ल' होता है[2]।

सं०	मागधी	प्रा०
कर	कल	कर
विचार	विश्राल	विश्रार
नर	नल	नर

चूलिका-पैशाची में 'र' के स्थान में विकल्प से 'ल' होता है[3]

सं०	चू० पै०	प्रा०
हर	हल, हर	हर

पैशाची भाषा में 'ल' के स्थान मे 'ळ' होता है[4]।

सं०	पै०	प्रा०
कमल	कमळ	कमल
कुल	कुळ	कुल
शील	सीळ	सील

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६२। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२८८। ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३२६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०८।

वैदिक भाषा में 'ड' के स्थान में 'ळ' हो जाता है।

"अग्निमीळे पुरोहितम्" ऋग्वेद का प्रारम्भिक छन्द।

(पालि भाषा में भी 'ड' को 'ळ' हो जाता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ४३, ड = ळ)

१४. मागधी भाषा को छोड़कर सभी प्राकृत भाषाओं में 'श' तथा 'ष' के स्थान में 'स' होता है[1]।

कुश–कुस। दश–दस। विंशति–विसइ। शब्द–सद्द। शोभा–सोहा। कषाय–कसाय। पाप–पाव। निकष–निकस। षण्ड–संड। पौष–पोस। विशेष–विसेस। शेष-सेस। निःशेष–नीसेस।

मागधी भाषा में 'श', 'ष' तथा 'स' के स्थान में केवल 'श' ही बोला जाता है[2]।

सं०	मा०	प्रा०
शोभन	शोभण	सोहण।
श्रुत	शुद	सुअ।
सारस	शालश	सारस।
हंस	हश	हस।
पुरुष	पुलिश	पुरिस।

१५. यदि अनुस्वार से परे 'ह' आया हो तो उसके स्थान में 'घ' भी हो जाता है[3]।

सिंह सिंघ, सीह। संहार संघार, सहार।

१६ (अपवादनियम को छोड़कर सामान्य प्राकृत में बताए सभी नियम शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची और अप-

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६० तथा ८।४।३०६। २ हे० प्रा० व्या० ८।४।२८८, ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६४।

भ्रंश भाषा में भी लागू होते हैं। जैसे:—१४ वाँ नियम शौरसेनी, पैशाची, चूलिका-पैशाची और अपभ्रंश में भी लागू होता है।)

—:o:—

शब्द के बीच में स्थित असंयुक्त व्यञ्जन के *विशेष परिवर्तन।

१. ¹'क' का परिवर्तन

'क' को 'ख' कर्पर–खप्पर। कील–खील। कीलक–खीलअ। कुब्ज–खुज्ज (खुज्ज=कुबडा)।

'क' को 'ग' अमुक–अमुग। असुक–असुग। आकर्ष–आगरिस। आकार–आगार। उपासक–उवासग। एक–एग। एकत्व–एगत्त। कन्दुक–गेन्दुअ। सं० गेन्दुक। तीर्थकर–तित्थगर। दुकूल–दुगुल्ल। मदकल–मयगल। मरकत–मरगय। श्रावक–सावग। लोक–लोग।

'क' को 'च' किरात–चिलाअ (चिलाअ याने भील)।

'क' को 'भ' शीकर–सीभर, सीअर।

'क' को 'म' चन्द्रिका–चन्दिमा। सं० चन्द्रिमा।

'क' को 'व' प्रकोष्ठ–पवट्ठ, पउट्ठ।

'क' को 'ह' चिकुर–चिहुर। सं० चिहुर। निकष–निहस। स्फटिक–फलिह। शीकर–सीहर, सीअर।

(पालि भाषा में 'क' को 'ख' तथा 'ग' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ५५, क=ख तथा क=ग)

---

*जहाँ परिवर्तन का विशेष नियम लागू होता है वहाँ परिवर्तन का सामान्य नियम नहीं लगता ऐसी बात नहीं है। जैसे:—तीर्थंकर-तित्थयर। लोक–लोअ आदि। देखिए—पृ० ३३, सामान्य नियम १. (ख) तथा पृ० ३७, ३। १. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६।

२. [1]'ख' का परिवर्तन

'ख' को क शृङ्खला–सकला। शृङ्खल–संकल

३. [2]'ग' का परिवर्तन

'ग' को 'म' भागिनी–भामिणी। स० भामिनी। पुंनाग–पुंनाम।
'ग' को 'ल' छाग–छाल। स० छगल। छागो–छाली।
'ग' को 'व' सुभग–सूहव, सुहअ। दुर्भग–दूहव, दुहअ।

४. [3]'च' का परिवर्तन

'च' को 'ज' पिशाची–पिसजी, पिसाई।
'च' को 'ट' आकुञ्चन–आउटण तथा आउचण।
'च' को ल्ल पिशाच–पिसल्ल, पिसाअ।
'च' को 'स' खचित–खसिअ, खइअ।

५. [4]'ज' का परिवर्तन

'ज' को 'झ' जटिल–झडिल, जडिल।

६. [5]'ट' का परिवर्तन

'ट' को 'ढ' कैटभ–केढव। सकट–सयढ। सटा–सढा।
'ट' को 'ल स्फटिक–फलिहो†। चपेटा–चविला, चविडा।
+पाटयति–फालेइ, फाडेइ

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१८९। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९०, १९१,१९२। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९३। तथा हे० प्रा० व्या० ८।१।१७७ वृत्ति। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९४। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९६, १९७, १९८। †देखो पृ० ४४–'क' का परिवर्तन। +यहाँ पाट् धातु समझना चाहिए। अतः इस धातु के सभी रूपों में यह नियम लागू होता है।

(पालि भाषा में 'ट' को 'ल' तथा 'ळ' दोनों होते हैं। देखिए—पालि प्र० पृ० ५८ – ट=ल, ट=ळ)

७. [1]'ठ' का परिवर्तन

'ठ' को 'ल्ल'	अङ्कोठ	अंकोल्ल
'ठ' को 'ह'	पिठर	पिहड, पिढर×

८. [2]'ण' का परिवर्तन

'ण' को 'ल' वेणु—वेलु, वेणु। वेणुग्गाम—वेलुग्गाम (वेलगांव)

(पालि भाषा में 'ण' को 'ळ' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ५८—ण = ळ)

९. [3]'त' का परिवर्तन

'त' को 'च' तुच्छ—चुच्छ, तुच्छ

'त' को 'छ' तुच्छ—छुच्छ, तुच्छ

'त' को 'ट' तगर—टगर

तूवर—टूवर

त्रसर—टसर

(पालि भाषा में 'त' को 'ट' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ५८ – त = ट)

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२००, २०१। × देखिए नियम ६. पृ० ३६ 'ट' का सामान्य परिवर्तन। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, १५६।

'त' को 'ड' पताका-पडाया
प्रति-पडि (पालि पटि)
÷प्रतिमा-पडिमा
प्रतिपत्-पडिवया (पडिवा-तिथि)
प्रतिहार-पडिहार

प्रभृति-पहुडि। प्राभृत-पाहुड। विभीतक-बहेडश्र। मृतक-मडश्र। व्यापृत-वावड। सूत्रकृत-सुत्तगड। श्रुतकृत-सुअगड। हरीतकी-हरडई। अपहृत-ओहड. ओहय। अवहृत-अवहड, अवहय। आहृत-आहड, आहय। कृत-कड, कय। दुष्कृत-दुक्कड, दुक्कय। मृत-मड, मय। वेतस-वेडिस, वेश्रस। सुकृत-सुकड, सुकय। हृत-हड, हय।

'त' को 'ण' अतिमुक्तक-अणिउंतय। गर्भित-गब्भिण।

'त' को 'र' सप्तति-सत्तर।

'त' को 'ल' अतसी-अलसी। सातवाहन-सालाहण। स० सातवाहन। सातवाहनी-सालाहणी। पलित-पलिल, पलिश्र।

त' को 'व' आतोद्य-आवज्ज, आउज्ज
पीतल-पीवल, पीअल

'त' को 'ह' वितस्ति-विहत्थि
(पालि भाषा में 'विदत्थि' होता है। देखिये-पा० प्र० पृ० ५६-त=द)
कातर काहल, कायर
भरत भरह, भरय
मातुलिंग-माहुलिंग, माउलिङ्ग
वसति-वसहि, वसइ

÷ जिन शब्दों में 'प्रति' लगा हो उन सभी शब्दों में यह नियम लगता है। जैसे:—प्रतिपत्ति-पडिवत्ति आदि।

१०

[१]'थ' का परिवर्तन

'थ' को 'ढ' प्रथम–पढम। मेथि–मेढि। सं० मेथि। शिथिल–सिढिल। निशीथ–निसीढ, निसीह। पृथिवी–पुढवी, पुहवी।

(पालि में 'पठवी' होता है। देखिये–पा० प्र० पृ० ५६–थ=ठ)

'थ' को 'ध' पृथक्–पिधं, पिहं।

११

[२]'द' का परिवर्तन

'द' को 'ड' ÷दंश्–डंस्। दह्–डह्। कदन–कडण, कयण। दग्ध–दड्ढ, दड्ढ। दण्ड–डंड, दंड। दम्भ–डंभ, दंभ। दर्भ–डब्भ, दब्भ। दष्ट–डट्ठ, दट्ठ आदि।

(पालि भाषा में 'द' को 'ड' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ५६–द=ड)

'दित' को 'ण्ण' रुदित–रुण्ण।

'द' को 'ध' ÷दीप्–धीप्, दीप्।

'द' को 'र' एकादश–एआरह। द्वादश–बारह।
*त्रयोदश–तेरह। +कदली–करली।
गद्गद्–गग्गर।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१५, २१६, १८८। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१८, २१७, २०६, २२३, २१९, २२०, २२१, २२२, २२४, २२५। ÷ इस चिह्न वाले शब्द धातु हैं, अतः इन धातुओं के सभी रूपों में यह नियम लगता है। * यहाँ दकार वाले सभी शब्दों को संख्यावाचक समझना चाहिए। जो शब्द संख्यावाचक नहीं है उनको यह नियम नहीं लगता। + यहाँ कदली का अर्थ 'केले का वृक्ष' नहीं है।

'द' को 'ल' प्रदीप–पलीव। दोहद–दोहल। कदम्ब–कलंब, कयब, सं० कलम्ब।

(पालि भाषा में 'द' को 'ळ' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६०–द = ळ)

'द' को 'व' कदर्थित–कवट्ठिअ।

'द' को 'ह' ककुद–कउह।

१२. [1] 'ध' का परिवर्तन

'ध' को 'ढ' निषध–निसढ। औषध–ओसढ, ओसह।

१३ [2] 'न' का परिवर्तन

'न' को 'ण्ह' नापित–ण्हाविअ, नाविअ। सं० स्नापक।

'न' को 'ल' निम्ब–लिंब, निंब।

(पालि भाषा में 'न' को 'ल' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६१–न=ल)

१४ [3] 'प' का परिवर्तन

'प' को 'फ' पनस–फणस। सं० पनस तथा फणस।
–पाट् (धातु) फाड।
पाटयति–फाडेइ।
पाटयित्वा–फाडेऊण।
परुष–फरुस।
परिखा–फलिहा।

---

१ हे० प्रा० व्या० ८।१।२२६, २२७। २ हे० प्रा० व्या० ८।१।२३०। ३ हे० प्रा० व्या० २३२, २३३, २३४, २३५।

(पालि भाषा में भी 'प' को 'फ' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ४०—प=फ)

'प' को 'म' आपीड—आमेल, आवेड।
नीप—नीम, नीव।
'प' को 'व' प्रभूत—वहुत्त।
'प' को 'र' पापर्द्धि—पारद्धि।

१५. [1]'व' का परिवर्तन

'व' को 'भ' विसिनी—भिसिणी

(पालि भाषा में 'व' को 'भ' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६२—व=भ)

'व' को 'म' कवन्ध—कमंध, कयंध।

१६. [2]'भ' का परिवर्तन

'भ' को 'व' कैटभ—केढव।

१७. [3]'म' का परिवर्तन

'म' को 'ढ' विषम—विसढ, विसम।
'म' को 'व' मन्मथ—वम्मह।
अभिमन्यु—अहिवन्नु, अहिमन्नु।
'म' को 'स' भ्रमर—भसल, भमर ; सं० भसल।
'म' को 'अनुनासिक' अतिमुक्तक—अणिउँतय।
कामुक—काउँअ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३८, २३९। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४०। ३. हे० प्रा० व्या ८।१ २४१, २४२, २४३, २४४,१७८।

चामुण्डा–चाउँडा।
यमुना–जउँणा।

१८. [1]'य' का परिवर्तन

'य' को 'आह' कतिपय–कइवाह।

(पालि भाषा में 'कतिपयाह' शब्द का 'कतिपाह' रूप बनता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६२–नियम–६४)

'य' को 'ज्ज' उत्तरीय–उत्तरिज्ज, उत्तरीअ।
तृतीय–तइज्ज, तइअ।
द्वितीय–बिइज्ज, बीअ।
करणीय–करणिज्ज, करणीअ।
पेया–पेज्जा, पेआ।

'य' को 'त' युष्मद्–तुम्ह।
युष्मदीय–तुम्हकेर।
युष्मादृश–तुम्हारिस।

'य' को 'र' स्नायु–ण्हारु।

(पालिभाषा में भी 'य' को 'र' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ४७–टिप्पण–स्नायु–सिनेरु)

'य' को 'ल' यष्टि–लट्ठि।

(पालिभाषा में भी 'य' को 'ल' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६३–य=ल)

'य' को 'व' कतिपय–कइअव।

(पालिभाषा में 'य' को 'व' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ६३–य=व)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५०, २४८, २४६, २४७, २४९।

'य' को 'ह' छाया—छाही, छाया (छाही = वृक्ष की छाया। छाया = वृक्ष की छाया तथा शरीर की कान्ति)।

१९. [1]'र' का परिवर्तन

'र' को 'ड' किरि—किडि ; सं० किटि।
पिठर—पिढड, पिढर।
भेर—भेड; सं० भीरु।

'र' को 'डा' पर्याण—पडायाण, पल्लाण ; सं० पल्ययन।

'र' को 'ण' करवीर—कणवीर ; सं० कणवीर।

'र' को 'ल' अङ्गार—इंगाल।
करुण—कलुण।
चरण—चलण।
दरिद्र—दलिद्द।
परिघ—फलिह।
भ्रमर—भसल, भमर ; सं० भसल।
मुखर—मुहल।
युधिष्ठिर—जहुट्ठिल।
रुग्ण—लुक्क।
वरुण—वलुण।
स्थूर—थूल, थोर।
हरिद्रा—हलिद्दा इत्यादि।
जठर—जढल, जढर।
बठर—बढल, बढर।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५१, २५२, २५३, २५४, २५५।

निठुर–निट्ठुल, निट्ठुर[1]।

२० [2]'ल' का परिवर्तन

'ल' को 'ण' ललाट–णलाड, णिलाड (पालि–नलाट)।
लाङ्गल–णगल, लङ्गल (पालि–नागल)।
लाङ्गूल–णगूल, लगूल।
लाहल–णाहल, लाहल।

(पालिभाषा में 'ल' को 'न' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६२–ल=न)

'ल' को 'र' स्थूल–थोर; सं० स्थूर।

२१. [3]'व' का परिवर्तन

'व' को 'भ' विह्वल–भिब्भल, विब्भल, विहल।
'व' को 'म' शबर–समर।
'व' को 'म' नीवी–नीमी, नीवी।
स्वप्न–सिमिण, सुमिण, सिविण।

२२. [4]'श' का परिवर्तन

'श' को 'छ' शमी–छमी।
शाव–छाव

---

१. संस्कृत भाषा में भी 'र' का 'ल' होता है—परिघ.–पलिघः। पर्यङ्क–पल्यङ्कः। कपरिका–कपलिका–सिद्धहेम० सं० व्या० २।३।९९ से २।३।१०४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५७, २५६, २५५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।५८। तथा हे० प्रा० व्या० ८।१।२५८, २५९। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६५, २६२।

शिरा–छिरा, सिरा (यह शब्द पैशाची भाषा में भी बोला जाता है।)

(पालि में भी 'श' को 'छ' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ६३–श = छ)

'श' को 'ह' दश–दह, दस। एकादश–एग्रारह, एग्रारस। दशबल–दहबल, दसबल।

२३. [1]'ष' का परिवर्तन

'ष' को 'छ' षट्–छ। षट्पद–छप्पत्र। षष्ठ–छट्ट।
'ष' को 'ण्ह' स्नुषा–सुण्हा, सुसा।
'ष' को 'ह' पाषाण–पाहाण, पासाण। प्रत्यूष–पच्चूह, पच्चूस।

२४. [2]'स' का परिवर्तन

'स' को 'छ' सप्तपर्ण–छत्तिवण्णो। सुधा–छुहा।
'स' को 'ह' दिवस–दिवह, दिग्रह, दिवस।

२५. [3]'ह' का परिवर्तन

'ह' को 'र' उत्साह–उत्थार, उच्छाह।

२६. [4]स्वर सहित व्यञ्जनों का लोप

(यह नियम पैशाचीभाषा में भी लगता है।)

'क' तथा 'का' का लोप व्याकरण–वारण, वायरण। प्राकार–पार, पायार।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६५, २६१, २६२ तथा ८।२।१४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६५, २६३। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।४८। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६७, २६८, २६९, २७०, २७१। शब्दान्तर्गत सस्वर व्यंजन के लोप करने की प्रक्रिया यास्कने स्वीकृत की है तथा

'ग' का लोप आगत–आअ, आगअ ।

'ज' का लोप दनुज–दणु, दणुअ ।

दनुजवध–दणुवह, दणुअवह ।

भाजन–माण, मायण ।

राजकुल–राउल, रायउल ।

'द', 'दु' तथा पादपीठ–पावीढ, पायवीढ ।

'दे' का लोप पादपतन–पावडण, पायवडण ।

उदुम्बर–उंबर, उउंबर, स० उम्बर ।

दुर्गादेवी–दुग्गावी, दुग्गाएवी अथवा दुग्गादेवी ।

'य' का लोप किसलय–किसल, किसलय, स० किसल ।

काल + आयस = कालायस–कालास, कालायस ।

हृदय–हिअ, हिअअ ।

सहृदय–सहिअ, सहिअय ।

'व' का लोप अवट–अड, अयड ।

आवर्तमान–अत्तमाण, आवत्तमाण ।

एवमेव–एमेव, एवमेव ।

तावत्–ता, ताव ।

देवकुल–देउल, देवउल ।

प्रावारक–पारअ, पावारअ ।

यावत्–जा, जाव ।

'वि' का लोप जीवित–जीअ, जीविअ ।

संस्कृतभाषा में भी ऐसी प्रक्रिया सम्मत है—आगता = आता, दिशावाचक शब्द–तारक । स० उदुम्बर–उम्बुरक अथवा उम्बर । मुदत्त–मुत्त । प्रदत्त–प्रत्त ।

२७. आदि व्यञ्जन का लोप

जिस शब्द के प्रारम्भ में व्यञ्जन रहता है उसका अर्थात् शब्द के आदि व्यंजन का कहीं-कहीं लोप[1] हो जाता है। जैसे :—

च—अ।

चिह्न—इंध।

पुनः—उण, उणा।

१. संयुक्त व्यञ्जनों का सामान्य परिवर्तन

पूर्ववर्ती व्यञ्जन का लोप

क्, ग्, ट्, ड्, त्, द्, प्, श्, ष् और स् व्यञ्जनों का किसी भी संयुक्त व्यञ्जन के पूर्ववर्ती होने पर लोप हो जाता है[2] और लोप होने के बाद शेष बचा व्यञ्जन यदि शब्द के आदि में न हो तभी उनका द्वित्व (डबल) होता[3] है। द्वित्व हुआ अक्षर ख्ख, छ्छ, ठ्ठ, थ्थ और फ्फ हो तो उसके स्थान में क्रमशः क्ख, च्छ, ट्ठ, त्थ और प्फ हो जाता है[4]। अगर द्वित्व हुआ अक्षर घ्घ, झ्झ, ढ्ढ, ध्ध, तथा भ्भ हो तो उसके स्थान में क्रमशः ग्घ, ज्झ, ड्ढ, द्ध, तथा ब्भ हो जाता है। जैसे :—

पूर्ववर्ती 'क' का लोप भुक्त — भुत — भुत्त*। मुक्त — मुत — मुत्त। शक्त—सत—सत्त। सिक्थ—सिथ—सिथ्थ—सित्थ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।७७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।८९। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।९०।

*इन उदाहरणों में जो अन्तिम रूप है वही प्रयोग में व्यवहार करने योग्य है। बीच का कोई भी रूप प्रयोग में नहीं आता है।

पूर्ववर्ती 'ग' का लोप दुग्ध-दुध-दुग्ध-दुद्ध ।
मुग्ध-मुध-मुग्ध-मुद्ध ।
" 'ट' " षट्पद–छपग्र–छप्पग्र ।
कट्फल–कफल–कप्फल, कप्फल ।
" 'ड' " खड्ग–खग–खग्ग । षड्ज–सज–सज्ज ।
" 'त' " उत्पल–उपल–उप्पल ।
उत्पाद–उपाग्र–उप्पाग्र । धात्री–धारी[1] ।
" 'द' " मुद्गर–मुगर–मुग्गर । मुद्ग–मुग–मुग्ग ।
" 'प' " गुप्त–गुत–गुत्त । सुप्त–सुत–सुत्त ।
" 'श' " निश्चल–निचल, निच्चल–(पालि–निच्चल)।
श्मशान–मसाण । श्च्योतति–चुग्रइ ।
श्मश्रु–मस्सु ।
" 'ष' " निष्ठुर–निठुर–निठ्ठुर–निट्ठुर ।
शुष्क–सुक–सुक्क । षष्ठ–छठ–छट्ठ–छट्ठ ।
" 'स' " निस्पृह–निपह–निप्पह । स्तव–तव ।
स्नेह–नेह । स्कन्द–कंद ।

(पालि भाषा में भी संयुक्त व्यंजन के पूर्ववर्ती क्, ग् आदि व्यंजनों का लोप होता है तथा उनका द्वित्व वगैरह भी प्राकृत भाषा के अनुसार होता है देखिए—पा० प्र० पृ० ४१, २४ (नियम ३०), २५ (नि० ३१), ३८, ५१, २६ (नि० ३२), ३७, ३५, ३६, २८। और पालि भाषा में श्मश्रु–मस्सु । शुष्क–सुक्ख । स्कन्द–खंद तथा खंध ऐसे प्रयोग होते हैं)।

परवर्ती व्यञ्जन का लोप

संयुक्त व्यञ्जन के परवर्ती 'म्', 'न्', और 'य्' का लोप हो जाता

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।८१ ।

है[1] और लोप होने के पश्चात् शेष बचे व्यञ्जन का तभी द्वित्व होता है यदि वह व्यञ्जन शब्द के आदि में न हो।

परवर्ती 'म' का लोप युग्म–जुग–जुग्ग* । स्मर–सर ।
रश्मि–रसि–रस्सि । स्मेर–सेर ।
,, 'न' ,, नग्न–नग–नग्ग । लग्न–लग–लग्ग ।
धृष्टद्युम्न–धट्ठज्जुण* ।
,, 'य' ,, कुड्य–कुड–कुड्ड । व्याघ–वाह । श्यामा–सामा । चैत्य–चइत्त, चेइअ ।

(पालिभाषा में 'न' तथा 'य' के लोप के लिए देखिए–पा० प्र० पृ० ५० तथा पृ० ४८–(नि० ६६), पृ० २१–(नि० २६) ।

पूर्ववर्ती तथा परवर्ती व्यञ्जन का लोप

द, व, र, ल तथा विसर्ग किसी भी संयुक्त व्यञ्जन के पूर्ववर्ती हो अथवा परवर्ती हो तो उनका लोप हो जाता है[2] और लोप होने के बाद शेष बचे व्यञ्जन का द्वित्व तभी होता है यदि वह शब्द के आदि में न हो।

पूर्ववर्ती 'द' का लोप अब्द–अद–अद्द* । शब्द–सद–सद्द ।
स्तब्ध–थध–थध्ध–थद्ध और ठद्ध ।
लुब्धक–लुधअ–लुध्धअ–लुद्धअ और लोद्धअ ।
परवर्ती 'व' ,, ध्वस्त–धत्थ । पक्व–पक्क और पिक्क ।
ध्वज–धअ । द्वेटक–खेडअ । द्वोटक–खोडअ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।७८ । *विशेष सूचना के लिए देखिए पृ० ५६ की *टिप्पणी । *'ण' का द्वित्व नहीं होता है । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।७९ ।

पूर्ववर्ती 'र' का लोप	अर्क-अक-अक्क। वर्ग-वग-वग्ग।
	दीर्घ-दिघ-दिग्घ-दिग्घ। वार्ता-वता-वत्ता।
	सामर्थ्य-सामथ-सामत्थ-सामत्थ।
परवर्ती 'र' ,,	क्रिया-किया। ग्रह-गह। चक्र-चक-चक्क।
	रात्रि-रति-रत्ति। धात्री-धाती और धाई।
पूर्ववर्ती 'ल' ,,	उल्का-उका-उक्का। वल्कल-वकल-वक्कल।
परवर्ती 'ल' ,,	विक्लव-विकव-विक्कव। श्लक्ष्ण-सण्ह।
विसर्ग का लोप	दुःखित-दुखिअ-दुखिअ-दुक्खिअ।
	दु:सह-दुसह-दुस्सह। नि:सह-निसह-निस्सह।
	नि:सरइ-निसरइ-निस्सरइ।

(पालिभाषा में होने वाले ऐसे रूपान्तरों के लिए देखिए—पालिप्रकाश पृ० २६, ३०, ३१ (नि० ३६, ३७), पृ० ३२, ३३ (नि० ३८, ३९), पृ० ३५ (नि० ४२), पृ० १० (नि० १२), पृ० १२ (नि० १५, १६)।

[सूचना :—जहाँ पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों प्रकार के व्यञ्जनों के लोप होने का प्रसंग आ जाय वहाँ प्रचलित प्रयोगों को ध्यान में रख कर लोप करना उचित है। जैसे—उद्विग्न, द्विगुण, द्वितीय इत्यादि शब्दों में 'द्व' में 'द्' पूर्ववर्ती है और 'व्' परवर्ती है अतः यहाँ 'द्' तथा 'व' दोनों के लोप का प्रसंग है। उद्विग्न का 'उव्विग्ग', द्विगुण का 'विउण' तथा द्वितीय के 'विईय' प्रयोग बनते हैं इस लिए उन शब्दों में केवल पूर्ववर्ती 'द्' का ही लोप करना चाहिए परवर्ती 'व्' का लोप नहीं। 'व्' का लोप करने से उद्दिग्ग प्रयोग बनता है और ऐसा प्रयोग विशेषतः नहीं मिलता है। इसलिए 'व्' का लोप न करके 'द्' का ही लोप करना उचित है।]

निम्नलिखित शब्दों में भी यही नियम है :—

पूर्ववर्ती 'ल' का लोप कल्मष-*कमस-कम्मस। शुल्व-सुव-सुव्व।
पूर्ववर्ती 'र' ,, ,, सर्व-सव-सव्व। सार्व-सव-सव्व।
परवर्ती 'य' ,, ,, काव्य-कव-कव्व। माल्य-मल-मल्ल।
परवर्ती 'व' ,, ,, द्विप-दिअ। द्विजाति-दुआइ।

पूर्ववर्ती तथा परवर्ती का क्रमशः लोप

पूर्ववर्ती 'ग' का लोप उद्विग्न-उव्विण-उव्विण्ण*।
,, 'द्' ,, ,, द्वार-वार अथवा वार।
परवर्ती न ,, ,, उद्विग्न-उव्विग-उव्विग्ग
,, व ,, ,, द्वार-दार।

केवल 'ज्ञ' के ञ् तथा 'द्र' के 'र' का लोप विकल्प से होता है।[1] यथा:—

ज्ञ-ज[2], ण[3]।
ज्ञात-जात अथवा णात, णाय।
ज्ञातव्य-जातव्व अथवा णातव्व, णायव्व।
ज्ञाति-जाति ,, णाति, णाइ।
ज्ञान-जाण ,, णाण।
ज्ञानीय-जाणीअ ,, णाणीअ।

---

*वही पृ० ५६ की * सूचना। १. हे० प्रा० व्या० ८।२।८३। तथा ८०। २. 'ज्' तथा 'ञ्' मिलकर 'ज्ञ' बनता है अतः 'ज्ञ' में से 'ञ्' का लोप होने पर शेष 'ज' बचे, यह स्वाभाविक है। ३. जब 'ज्ञ' में से 'ज्' का लोप हो जाय तब 'ञ्' बचे यह भी स्वाभाविक है और बचा हुआ 'ञ', 'ञ' के रूप में न रह कर 'न' के रूप में (अर्थात् अपने मूल रूप में) आ जाता है तब उसका 'ण' होता है देखिए - नियम ८ 'ण' विधान पृ० ३६।

ज्ञानीय-जाणिज ,, णाणिज ।
ज्ञापना-जावणा ,, णावणा ।
ज्ञेय-जेय ,, णेय ।
अभिज्ञ-अहिज्ज, ,, अहिण्णु ।
अल्पज्ञ-अप्पज्ज ,, अप्पण्णु ।
आत्मज्ञ-अप्पज्ज ,, अप्पण्णु ।
इङ्गितज्ञ-इगिअज्ज ,, इंगिअण्णु ।
आज्ञा-अज्जा ,, आणा ।
दैवज्ञ-देवज्ज ,, देवण्णु ।
दैवज्ञ-दइवज्ज ,, दइवण्णु ।
प्रज्ञा-पज्जा ,, पण्णा ।
मनोज्ञ-मणोज्ज ,, मणोण्ण ।
संज्ञा-सञ्जा ,, सण्णा, सणा ।
संप्रज्ञ-संपज्ज ,, संपण्ण ।
सर्वज्ञ-सव्वज्ज ,, सव्वण्णु ।

(पालि भाषा में भी 'ज्ञ' को 'ज' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० २४—टिप्पण प्रज्ञान-पञान)

'द्र'के 'र' का लोप चन्द्र-चद, चन्द्र । रुद्र-रुद, रुद्र ।
समुद्र-समुद, समुद्र । भद्र-भद, भद्र ।
द्रव-दव, द्रव । द्रह-दह, द्रह । द्रुम-दुम, द्रुम ।

अपभ्रंश भाषा में संयुक्त अक्षर में परवर्ती 'र' का लोप विकल्प से होता है।[1] प्रिय-पिउ अथवा प्रिउ । प्राकृत भाषा में-पिय ।

अः को ओ।[2]

शब्द के अंत में आये हुए 'अ' का 'ओ' होता है। जैसे :—

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३९८। २ हे० प्रा० व्या० ८।१।३७।

अग्रतः—अग्गतो[१] । अद्यतः—अज्जतो । अन्ततः—अंततो । आदितः—आदितो । इतः—इतो[२] । इतः इतः—इदो इदो (शौर०) । कुतः—कुतो । कुदो (शौर०) । ततः—ततो । तदो । तदो तदो । पुरतः—पुरतो । पृष्ठतः—पिट्ठतो । मार्गतः—मग्गतो । सर्वतः—सव्वतो ।

नाम के रूप

जिनः—जिणो । देवः—देवो । भवतः—भवतो । भवन्तः—भवन्तो । भगवन्तः—भगवन्तो । रामः—रामो । सन्तः—संतो इत्यादि ।

२. 'ख' विधान

यह बात विशेष ध्यान में रखनी चाहिए कि यहाँ जो जो विधान किये जा रहे हैं उन सब में एक अक्षर के—असंयुक्त अक्षर के—विधान (जैसे ख, च, छ इत्यादि के विधान) शब्द के आदि में अर्थात् शब्द के प्रारम्भ में किये गये हैं और दोहरे (डबल) अक्षर के सभी विधान—(जैसे क्ख, ग्ग, च्च, च्छ इत्यादि के विधान) शब्द के अन्दर किये गये हैं ऐसा समझना चाहिए ।

'क्ष[३]' को 'ख' क्षण—खण (= समय का छोटा भाग) । क्षमा—खमा (= क्षमा याने सहन करना) । क्षय—खअ । क्षीण—खीण । क्षीर—खीर । क्ष्वेटक—खेडअ । क्ष्वोटक—खोडअ ।

'क्ष' को 'क्ख' इक्षु—इक्खु । ऋक्ष—रिक्ख । मक्षिका—मक्खिआ । लक्षण—लक्खण ।

---

१. पृ० ३३ नियम (ख) के अनुसार अग्गओ, तओ, सव्वओ ऐसे भी रूप होते हैं । २. पृ० ३४—शौरसेनी भाषा में 'त' का 'द' होता है—इस नियम से अग्गदो, तदो, सव्वदो, पुरदो ऐसे भी रूप होते हैं । ३. हे० प्रा० व्या ८।२।३ ।

मागधी भाषा में 'च' के स्थान में जिह्वामूलीय[1] अक्षर—≍'क' बोला जाता है।

सं०	मा०	प्रा०
यक्ष	य≍क	जक्ख
राक्षस	ल≍कश	रक्खस

'ष्क'[2] को 'ख' निष्क–निक्ख। पुष्कर–पोक्खर।
पुष्करिणी–पोक्खरिणी। शुष्क–सुक्ख।

'स्क' को 'ख' स्कन्द–खंद। स्कन्ध–खंध।
स्कन्धावार–खंधावार।

'स्क' को 'क्ख' अवस्कन्द–अवक्खंद। प्रस्कन्देत्–पक्खंदे।
उपस्कर–उवक्खर। उपस्कृत–उवक्खड।
अवस्कर–अवक्खर याने पुरीष=विष्ठा।

(पालि भाषा में 'ष्क' को 'क्ख', 'स्क' को 'ख' तथा 'क्ख' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० ३६, ३७।)

मागधी भाषा में[3] जहाँ-जहाँ संयुक्त 'ष' अथवा 'स' आता है वहाँ सर्वत्र 'स' ही बोला जाता है।

	सं	मा०	प्रा०
संयुक्त 'ष'	उष्मा	उस्मा	उम्हा।
	धनुष्खण्ड	धनुस्खंड	धणुक्खंड।
	कष्ट	कस्ट	कट्ठ।
	निष्फल	निस्फल	निप्फल।
	विष्णु	विस्नु	विण्हु।
	शष्प	शस्प	सप्फ।
	शुष्क	शुस्क	सुक्क।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९६। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२८८।

सं०	मा०	प्रा०
प्रस्खलति	परखलदि	पक्खलइ।
वृहस्पति	बुहस्पदि	बुहप्फइ।
मस्करी	मस्कली	मक्खरी।
विस्मय	विस्मय	विम्हय।
हस्ती	हस्ती	हत्थी।

(पालि भाषा में इस विधान के लिए देखिए—पा० प्र० पृ० ५१-नि० ६८)।

३. 'च' विधान

'त्य'[1] को 'च' त्याग–चाय। त्यागी–चाई। त्यजति–चयइ।
'त्य' को 'च्च' प्रत्यय–पच्चय। प्रत्यूष–पच्चूह। सत्य–सच्च।
'त्व' को 'च' कृत्वा–किच्चा। ज्ञात्वा–णच्चा। दत्वा–दच्चा।
भुक्त्वा–भोच्चा। श्रुत्वा–सोच्चा। चत्वर–चच्चर।

(पालि भाषा में त्य को च, च्च तथा त्व को च, च्च, होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० २० तथा पृ० ३४ टिप्पण।)

४. 'छ' विधान

'क्ष'[2] को 'छ' क्षण–छण (=उत्सव)। क्षत–छय।
क्षमा–छमा (=पृथिवी)। क्षार–छार। क्षुत–छीअ।
'क्ष' को 'च्छ' अक्षि–अच्छि। इक्षु–उच्छु। उक्षा–उच्छा।
ऋक्ष–रिच्छ। कुक्षि–कुच्छि।

(पालि भाषा में 'क्ष' को 'क', 'ख', 'क्ख' तथा 'क्ष' को 'च' 'छ' तथा 'च्छ' भी होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० १७–क्ष–ख, क्ष–च, क्ष–छ, तथा क्ष को झ टिप्पण पृ० १७। तथा ऋक्ष–अच्छ, इक्क। ध्वाङ्क्ष–धंक। लाक्षा–लाखा देखिए पा० प्र० पृ० १८।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१३ तथा १५। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।३ तथा २०, १८, १९।

'श्व' [1]को 'न्छ' पृथ्वी–पिच्छी।

'थ्य' [2]को 'च्छ' पथ्य–पच्छ। पथ्या–पच्छा। मिथ्या–मिच्छा। सामर्थ्य–सामथ्य, सामच्छ।

'श्च' को 'च्छ' आश्चर्य–अच्छेर। पश्चात्–पच्छा। पश्चिम–पच्छिम। वृश्चिक–विंछिअ।

'त्स' को 'च्छ' उत्सव–उच्छव। उत्साह–उच्छाह। उत्सुक–उच्छुअ चिकित्सति–चिइच्छइ। मत्सर–मच्छर। संवत्सर–संवच्छर।

'प्स' को 'च्छ' अप्सरा–अच्छरा। जुगुप्सति–जुगुच्छइ। लिप्सति–लिच्छइ। जुगुप्सा–जुगुच्छा। लिप्सा–लिच्छा। ईप्सति–इच्छइ।

मागधी भाषा में 'च्छ' के स्थान में 'श्च' प्रयुक्त[3] होता है :—

सं०	मा०	प्रा०
गच्छ	गश्च	गच्छ
पिच्छिल	पिश्चिल	पिच्छिल
पृच्छति	पुश्चदि	पुच्छइ
वत्सल	वश्चल	वच्छल
उच्छलति	उश्चलदि	उच्छलइ
तिर्यक्	तिरिश्चि	तिरिच्छि

(पालि भाषा में 'थ्य' को 'च्छ', 'श्च' को 'च्छ', 'त्स' को 'च्छ' तथा 'प्स' को 'च्छ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० २१, २८, २६।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।२१।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५।

५. 'ज' विधान

'द्य'[1] को 'ज' द्युति-जुइ। द्योत-जोश्र।

'द्य' को 'ज्ज' वैद्य-वेज्ज। मद्य-मज्ज। श्रद्य-श्रज्ज। श्रवद्य-श्रवज्ज।

'य्य' को 'ज्ज' शय्या-सेज्जा। जय्य-जज्ज।

'र्य' को 'ज्ज' श्रार्य-श्रज्ज। कार्य-कज्ज। पर्याप्त-पज्जत्त। भार्या-भज्जा। मर्यादा-मज्जाया। श्रार्यपुत्र-श्रज्जउत्त।

शौरसेनी भाषा में 'र्य' के स्थान में विकल्प से 'य्य'[2] भी बोला जाता है।

सं०	शौ०	प्रा०
श्रार्यपुत्र	श्रय्यउत्त, श्रज्जउत्त	श्रज्जउत्त।
श्रार्य	श्रय्य, श्रज्ज	श्रज्ज।
कार्य	कय्य, कज्ज	कज्ज।
सूर्य	सुय्य, सुज्ज	सुज्ज।

(मागधी भाषा में 'द्य', 'ज्ज', तथा 'य' के स्थान पर विकल्प से आदि में 'य' श्रौर शब्द के श्रन्दर 'य्य'[3] बोला जाता है।)

सं०	मा०	प्रा०
श्रद्य	श्रय्य	श्रज्ज।
मद्य	मय्य	मज्ज।
विद्याधर	वियाहल	विज्जाहर।
यथा	यधा	जहा
कुरु	कलेय्यहि	करेज्जहि

(पालि भाषा में 'द्य' को ज, ज्ज श्रौर य्य भी होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० १८ श्रौर १६ वें का टिप्पण। पालि भाषा में र्य को यिर, य्य श्रथवा रिय होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० १५, १६।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२४। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६६।
३. हे० प्रा० व्या ८।४।२९२।

६. 'झ' विधान

'ध्य' को 'झ' ध्यान–झाण। ध्यायति–झायइ।
'ध्य'[1] को 'ज्झ' उपाध्याय–उवज्झाय। बध्यते–बज्झइ।
विन्ध्य–विंझ। साध्य–सज्झ। स्वाध्याय–सज्झाय।
'ह्य' को 'झ' नह्यति-नज्झति। गुह्य–गुज्झ। मह्यं–मज्झं।
सह्य–सज्झ।
'ह्य'[2] को 'य्ह' गुह्य–गुय्ह, गुज्झ। सह्य–सय्ह, सज्झ।
'क्ष'[3] को 'झ' क्षीण–झीण। क्षीयते–झिज्जइ।
'क्ष' को 'ज्झ' प्रक्षीण–पज्झीण।

(पालि भाषा में भी ध्य को झ और ह्य को य्ह होता है। क्रमशः देखिये—पा० प्र० पृ० १६—ध्य=झ, ध्य=ज्झ। पा० प्र० पृ० २२—ह्य=य्ह)

७. 'ट' विधान

'र्त'[4] को 'ट्ट' कैवर्त–केवट्ट। नर्तकी–नट्टई। वर्ती–वट्टी।
वर्तुल–वट्टुल। वार्ता–वट्टा।

(कुछ शब्दों में 'र्त' के 'रेफ' का लोप हो जाता है। जैसे :— आवर्तक–आवत्तअ। मुहूर्त–मुहुत्त। मूर्ति–मुत्ति। धूर्त–धुत्त। कीर्ति–कित्ति। कार्तिक–कत्तिअ। कर्तरी–कत्तरी इत्यादि)

(पालि भाषा में 'त' को 'ट' होता है। देखिए–पा० प्र० पृ० ५८) शौरसेनी भाषा में किसी-किसी प्रयोग में 'न्त' को 'न्द'[5] हो जाता है। जैसे :—

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२६। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।३। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।३०। ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६१।

सं०	शौ०	प्रा०
अन्तःपुर	अन्देउर	अन्तेउर।
निश्चिन्त	निश्चिन्द	निच्चिन्त।
महान्-महन्त	महन्द	महन्त।

८. 'ठ' विधान

'ष्ट'[1] को 'ट्ठ' इष्ट–इट्ठ। अनिष्ट–अणिट्ठ। कष्ट–कट्ठ।
दष्ट–दट्ठ। दृष्टि–दिट्ठी। पुष्ट–पुट्ठ।
मुष्टि–मुट्ठि। यष्टि–लट्ठि। सुराष्ट्र–सुरट्ठ।
सृष्टि–सिट्ठि।

(अपवाद :—इष्टा–इट्टा। उष्ट्र–उट्ट। संदष्ट–संदट्ट।)

मागधी भाषा में 'ट्ट' तथा 'ष्ट' के स्थान में 'स्ट'[2] बोला जाता है।

'ट्ट' को 'स्ट' पट्ट–पस्ट, प्रा० पट्ट। भट्टारिका–भस्टालिया, प्रा० भट्टारिया। भट्टिनी–भस्टिणी, प्रा० भट्टिणी।

'ष्ट' को 'स्ट' कोष्ठागार–कोस्टागाल, प्रा० कोट्ठागार। सुष्ठु–शुस्टु, प्रा० सुट्ठु।

पैशाची भाषा में 'ष्ट' के बदले 'सट'[3] बोला जाता है।

कष्ट–कसट, प्रा० कट्ठ। दृष्ट–दिसट प्रा० दिट्ठ।

(पालि भाषा में 'ष्ट' को 'ट्ठ' होता है। देखिये पा० प्र० पृ० २६ तथा उसी पृष्ठ का टिप्पण)

९. 'ण' विधान

'ज्ञ'[4] को 'ण' आज्ञा–आणा। ज्ञान–णाण। संज्ञा–संणा।

'ज्ञ' को 'ण्ण' विज्ञान–विण्णाण। प्रज्ञा–पण्णा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।३४। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९०।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।४२।

'म्न' को 'ण्ण'   निम्न–निण्ण ।   प्रद्युम्न–पज्जुण्ण ।

मागधी भाषा में न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज—इन चार अक्षरों की जगह 'ञ्ञ'[1] बोला जाता है तथा पैशाची भाषा में न्य, ण्य, तथा ज्ञ—इन तीन अक्षरों के स्थान में 'ञ्ञ'[2] बोला जाता है।

		सं०	मा०पै०	प्रा०
मागधी } पैशाची }	'न्य' को 'ञ्ञ'	अभिमन्यु	अभिमञ्ञु	अहिमन्नु ।
		कन्यका	कञ्ञका	कन्नका ।
,,	'ण्य' को 'ञ्ञ'	पुण्य	पुञ्ञ	पुण्ण ।
		पुण्याह	पुञ्ञाह	पुण्णाह ।
		पुण्यकर्म	पुञ्ञकम्म	पुण्णकम्म ।
'ज्ञ' को 'ञ्ञ'		प्रज्ञा	पञ्ञा	पण्णा ।
		सर्वज्ञ	शव्वञ्ञ सव्वञ्ञ	सव्वण्णु ।
मागधी 'ञ्ज' को 'ञ्ञ'		अञ्जलि	अञ्ञलि	प्रा० अंजलि ।
		धनञ्जय	धनञ्ञय	प्रा० धणंजय ।
		प्राञ्जल	पञ्ञल	प्रा० पंजल ।

(पालि भाषा में 'ज्ञ' को 'ञ' तथा 'म्न' को 'ञ' होता है। देखिए—पा० प्र० पृ० २४ टिप्पण तथा ४८। तथा ज्ञ, ण्य, और न्य को 'ञ्ञ' भी होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० २३, २४।)

'श्न'[3] को 'ण्ह'   प्रश्न–पण्ह । शिश्न–सिण्ह ।
'ष्ण' को 'ण्ह'   कृष्ण–कण्ह । विष्णु–विण्हु ।
                  जिष्णु–जिण्हु । उष्णीष–उण्हीस ।
'स्न' को 'ण्ह'   स्नात–ण्हाअ । ज्योत्स्ना–जोण्हा ।
                  प्रस्नुत–पण्हुअ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९३। २. हे० प्रा०व्या० ८।४।३०३ तथा ३०५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।७५।

'ह्न' को 'ण्ह' जह्नु–जण्हु । वह्नि–वण्हि ।
'ह्ण' को 'ण्ह' अपराह्ण–अवरण्ह । पूर्वाह्ण–पुव्वण्ह ।
'क्ष्ण' को 'ण्ह' तीक्ष्ण–तिण्ह । श्लक्ष्ण–सण्ह ।
'क्ष्म' को 'ण्ह' सूक्ष्म–सण्ह ।

(पैशाची भाषा में स्न के स्थान में 'सिन'[1] बोला जाता है ।)

सं०	पै०	प्रा०
स्नान	सिनात	ण्हाअ
स्नुषा	सिनुसा, सुनुषा	ण्हुसा, सुण्हा ।

(पालि भाषा में इस रूपान्तर के लिए देखिये—क्रमशः प्रा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६३) तथा पृ० ४७ श्न=ण्ह, ह्न तथा ष्ण–ण्ह पृ० ४८ टिप्पण=तीक्ष्ण–तिण्ह, तिक्ख, तिक्खिण तथा पृ० ४९ टिप्पण–पूर्वाह्ण–पुव्वण्ह ।)

(पालि भाषा में स्नान–सिनान । स्नुषा–सुणिसा, सुण्हा, हुसा ऐसे तीन रूप होते हैं । देखिये— पा० प्र० पृ० ४६ नियम ६३ ।)

१० 'थ' विधान

'स्त[2]' को 'थ' स्तव–थव, तव । स्तम्भ–थंभ ।
स्तब्ध–थद्ध, ठद्ध । स्तुति–थुई । स्तोक–थोअ ।
स्तोत्र–थोत्त । स्त्यान–थीण ।

'स्त' को 'त्थ' अस्ति–अत्थि । पर्यस्त–पल्लत्थ, पल्लट्ट । प्रशस्त–पसत्थ । प्रस्तर–पत्थर । स्वस्ति–सत्थि । हस्त–हत्थ ।
(अपवादः–समस्त–समत्त, स्तम्ब–तंब)

(मागधी भाषा में 'र्थ' तथा 'स्थ' के स्थान में 'स्त'[3] बोला जाता है)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।४५ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९१ ।

	सं०	मा०	प्रा०
'र्थ' को 'त्त'	अर्थपति	अत्तवदि	अत्थवई।
	सार्थवाह	शत्तवाह	सत्थवाह।
'स्थ' को 'त्त'	उपस्थित	उवस्तिद	उवट्ठिअ।
	सुस्थित	सुस्तिद	सुट्ठिअ।

(पालि भाषा में 'स्त' को 'थ' और 'त्थ' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० २७)

११. 'प' विधान

'ड्म'[1] को 'प' कुड्मल–कुंपल।

'क्म' को 'प्प' रुक्म–रुप्प। रुक्मिणी–रुप्पिणी। रुक्मी–रुप्पी, रुग्मी।

'ष्प'[2] को 'प्प' निष्पाप–निप्पाव। निष्पुंसन–निप्पुंसण।

निष्प्रभ–निप्पह। निष्प्राण–निप्पाण।

'स्प' को 'प्प' परस्पर–परोप्पर। बृहस्पति–बुहप्पइ। निस्पृह–निप्पिह।

(पालि भाषा में 'ड्म' को 'ड्डुम' और 'क्म' को 'कुम' होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ४९ कुड्मल–कुडुमल अथवा कुट्मल। रुक्म–रुकुम तथा रुक्म देखिये, पा० प्र० पृ० ४१ टिप्पण)

१२. 'फ' विधान

'ष्प'[3] को 'प्फ' निष्पाव–निप्फाव। निष्पेष–निप्फेस।

पुष्प–पुप्फ। शष्प–सप्फ।

'स्प' को 'फ' स्पन्दन–फंदण। स्पन्द–फंद। स्पर्धा–फद्धा।

स्पन्दते–फंदए। स्पर्धते–फद्धए।

'स्प' को 'प्फ' प्रतिस्पर्धी–पडिप्फद्धी। प्रतिस्पर्धा–पडिप्फद्धा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।५२। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।५३।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।५३।

प्रतिस्पर्धते–पडिप्फद्धए । बृहस्पति–बुहप्फइ, बिहप्फइ, बुहप्पइ, बिहप्पइ । वनस्पति–वणप्फइ ।

(पालि भाषा में ष्प को प्फ तथा स्फ को फ और प्फ होता है । देखिये—पा० प्र० पृ० ३६)

१३. 'भ' विधान

'ह्व'[1] को 'भ' ह्वान–भाण । ह्वयते–भयए
'ह्व' को 'ब्भ' आह्वान–अब्भाण । आह्वयते–अब्भयते । जिह्वा–जिब्भा, जीहा । विह्वल–विब्भल, भिब्भल, विहल ।

(पालि भाषा में भी ह्व को भ होता है । देखिये—पा० प्र० पृ० ६४ तथा गह्वर–गब्भर पृ० ३५ टिप्पण ।)

१४. 'म' विधान

'ग्म'[2] को 'म्म' युग्म–जुम्म, जुग्ग । तिग्म–तिम्म, तिग्ग ।
'न्म' को 'म्म' जन्म–जम्म । मन्मथ–वम्मह । मन्मन–मम्मण ।

(पालि भाषा में ग्म को गुम तथा न्म को म्म होता है । देखिये—पा० प्र० पृ० क्रमशः ४९ तथा ४६)

'द्म' को 'म्ह' पद्म–पम्ह । पद्मल–पम्हल ।
'श्म' " " कश्मीर–कम्हार । कुश्मान–कुम्हाण ।
'ष्म' " " उष्मा–उम्हा । ग्रीष्म–गिम्ह ।
'स्म' " " अस्मादृश–अम्हारिस । विस्मय–विम्हय ।
'ह्म' " " ब्रह्म–बम्ह । ब्राह्मण–बम्हण ।
ब्रह्मचर्य–बम्हचेर, बंभचेर । सुह्म–सुम्ह ।

(अपभ्रंश भाषा में पूर्वनिर्दिष्ट म्ह के स्थान में 'म्भ'[3] भी बोला जाता है ।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।५७,५८ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।६२, ६१, ७४ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।४१२ ।

सं०	अप०	प्रा०
ग्रीष्म	गिम्ह, गिम्भ	गिम्ह
श्लेष्म	सिम्ह, सिम्भ	सिम्ह
पद्म	पम्ह, पम्म	पम्ह
पद्मल	पम्हल, पम्मल	पम्हल।
ब्राह्मण	बम्हण, ब्रमण	बम्हण

(पालि भाषा में श्म=म्ह, ष्म-म्ह, स्म=म्ह होता है और कहीं-कहीं श्म और स्म को स्स तथा स होता है। देखिये पा० प्र० पृ० ५०)

१५. 'ल्ह' विधान

'ह्ल'[1] को 'ल्ह' कह्लार-कल्हार। प्रह्लाद-पल्हाअ।

(पालि भाषा में 'ह्ल' के बदले 'हिल' बोला जाता है:—ह्लाद-हिलाद। देखिये—पा० प्र० पृ० ३२)

१६. कुछ संयुक्त व्यञ्जनों के मध्य में स्वरों का आगम

'क्ल'[2] के स्थान में 'किल' क्लाम्यति-किलम्मइ। क्लाम्यत्-किलमत। क्लिष्ट-किलिट्ठ। क्लिन्न-किलिन्न। क्लेश-किलेस। शुक्ल-सुकिल, सुक्ल।

'ग्ल' के स्थान में 'गिल' ग्लायति-गिलाइ। ग्लान-गिलाण।

'प्ल' के ,, ,, 'पिल' प्लुष्ट-पिलुट्ठ। प्लोष-पिलोस।

'म्ल' ,, ,, ,, 'मिल' अम्ल-अबिल। म्लान-मिलाण। म्लायति-मिलाइ।

'श्ल' ,, ,, ,, सिल' श्लेष-सिलेस। श्लेष्मा-सिलिम्हा। श्लोक-सिलोग। श्लिष्ट-सिलिट्ठ।

'र्य'[3] के स्थान में 'रिअ' अथवा 'रिय' आचार्य-आयरिअ। गाम्भीर्य-गम्भीरिअ। गाम्भीर्य-गहीरिअ। ब्रह्मचर्य-बम्हचरिअ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।७६। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०६।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०७।

भार्या–भारिश्रा। वर्य–वरिश्र। वीर्य–वीरिश्र। स्थैर्य–थेरिश्र।
सूर्य–सूरिश्र। सौन्दर्य–सुंदरिश्र। शौर्य–सोरिश्र।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में 'रिय' भी समझना चाहिए। लेकिन यह विधान व्यापक न होकर प्रयोगानुसारी है देखिए—ज विधान

नियम–५। पैशाची भाषा में 'र्य' के स्थान में 'रिय'[1] भी बोला जाता है।

सं०	पै०	प्रा०
भार्या	भारिया, भज्जा	भज्जा

'र्श[2]' के स्थान में 'रिस' आदर्श–आयरिस, आयंस। दर्शन–दरिसण, दंसण। सुदर्शन- सुदरिसण, सुदंसण।

'र्ष' " " " वर्ष–वरिस, वास। वर्षशत--वरिससय, वाससय। वर्षा--वरिसा, वासा।

'र्ह' " " " रिह अर्हति--अरिहइ। अर्ह--अरिह। गर्हा–गरिहा। वर्ह--वरिह।

[3]स्त्रीलिङ्गी पद के संयुक्त व्यञ्जनों में स्वरों का आगम

'घ्वी' के स्थान में	'घुवी'	लघ्वी—लघुवी, लहुवी।
थ्वी " " "	थुवी	पृथ्वी—पुथुवी, पुहुवी।
द्वी " " "	दुवी	मृद्वी—मिदुवी, मिउवी।
न्वी " " "	णुवी	तन्वी—तणुवी।
र्वी " " "	रुवी	गुर्वी—गुरुवी।
ह्वी " " "	हुवी	वह्वी—वहुवी।

(पालि भाषा में भी कई संयुक्त व्यञ्जनों के बीच में स्वरों का आगम होता है। देखिये—पा० प्र० पृ० ४६ (नि० ६२), पृ० ३२, पृ० ११, पृ० २६२ स्त्री प्रत्यय।)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।३१४। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०५। १०४। ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।११३।

संयुक्त व्यञ्जनों का विशेष परिवर्तन

१. क[1]

'क्त' को 'क' मुक्त–मुक्क, मुत्त। शक्त–सक्क, सत्त।
'ग्ण' " 'क' रुग्ण–लुक्क, लुग्ग।
'त्व' " 'क' मृदुत्व–माउक्क, माउत्तण।
'ष्ट' " " दष्ट–डक्क, दट्ठ।

[सूचना :—जहाँ दो-दो रूप दिए हैं वहाँ विकल्प से समझना चाहिए।]

(पालि भाषा में भी शक्त–सक्क। प्रतिमुक्त–पतिमुक्क। देखिये—पा० प्र० पृ० ४१ (टिप्पणी)। रुग्ण–लुग्ग पृ० ४६ टिप्पण)

२. क्ख[2]

'क्ष्ण' को 'क्ख' तीक्ष्ण–तिक्ख, तिण्ह देखिये—'ण' विधान नियम क्ष्ण को ण्ह, पृ० ७०।

(तीक्ष्ण–तिक्ख, तिण्ह, तिखिण देखिए पा० प्र० पृ० ४८ टिप्पण)

३. ख[3]

'स्त' को 'ख' स्तम्भ–खंभ, थंभ।
'स्थ' " " स्थाणु–खाणु अर्थात् ठूँठ वृक्ष, थाणु (=महादेव)।
'स्फ' को " स्फेटक–खेडअ। स्फोटक–खोडअ। स्फेटिक–खेडिअ।

४. ग्ग[4]

'क्त' को 'ग्ग' रक्त–रग्ग, रत्त।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।३।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।८,७,६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०।

५. ङ्ग[1]

'ल्क' को 'ङ्ग' शुल्क–सुङ्ग, सुंग, सुक* ।

(शुल्क—सुंक देखिए पा० प्र० पृ० ३० टिप्पण)

६. च्च[2]

'त्त' को 'च्च' कृत्ति–किच्ची ।
'थ्य' " 'च्च' तथ्य–तच्च, तच्छ ।

७. छ तथा च्छ[3]

'स्थ' को 'छ' स्थगित–छइअ, थइअ ।
'स्प' " " स्पृहा–छिहा । स्पृहावत्–छिहावंत ।
'स्प' " 'च्छ' निस्पृह–निच्छिह, निप्पिह ।

८. ञ्ज तथा ञ्ञ[4]

'न्य' को 'ञ्ज', 'ञ्ञ' अभिमन्यु–अहिमञ्जु, अहिमञ्ञु, अहिमंजु, अहिमन्नु ।
मागधी[5] में अभिमन्यु–अहिमञ्ञु ।
(अभिमन्यु–अभिमञ्जु देखिये—पा० प्र० पृ० २३)

९. ज्झ[6]

'न्ध' को 'ज्झ' इन्ध–इज्झाइ । (तृतीय पुरुष, एकवचन, वर्तमानकाल)
सम् + इन्ध—समिज्झाइ ,,
वि + इन्ध—विज्झाइ ,,

१०. ञ्चु[7]

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।११। *तुलना कीजिए–हिन्दी-'चुंगी' से । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२,२१ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७,२३ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।२५ । ५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२९३ । ६. हे० प्रा० व्या० ८।२।२८ । ७. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६ ।

'श्चि' को 'ञ्चु' वृश्चिक—विञ्चुअ, विंचुअ, विछिअ।
(वृश्चिक-विच्छिक देखिये—पा० प्र० पृ० ३८)

११. ट्ट[1]

'त्त' को 'ट्ट' पत्तन—पट्टण। मृत्तिका—मट्टिआ। वृत्त—वट्ट।
'र्थ' ,, ,, कदर्थित—कवट्टिअ।
'स्त' ,, ,, पर्यस्त—पल्लट्ट।

(देखिए पा० प्र० पृ० ५८ र्त=ट्ट, वर्ति—वट्टि।)

१२ ठ—ट्ठ[2]

'स्त' को 'ठ' स्तम्भयते—ठम्भिज्जइ (=गतिहीन)। स्तब्ध—ठड्ढ[3]।
(यानें निस्पद—गतिहीन, हिन्दी में खड़ा)
स्तम्भ्—ठम्, ठमइ क्रियापद।
स्तम्भ—ठम, खंभ। स्त्यान—ठीण, थीण।

'स्थ' को 'ठ' विसंस्थुल—विसंटुल।
'र्थ' को 'ट्ठ' अर्थ—अट्ठ (=प्रयोजन), अत्थ (=धन)।
चतुर्थ—चउट्ठ, चउत्थ।

'स्थ' को 'ट्ठ' अस्थि—अट्ठि।

(देखिये—पा० प्र० पृ० २७ टिप्पण, परिवस्तव्य—परिवट्ठव्व। अर्थ—अट्ठ, अट्ठ देखिये—पा० प्र० पृ० १० टिप्पण। वयस्थ—वयट्ठ, अस्थि—अट्ठि देखिए पा० प्र० पृ० २८ स्थ=ठ तथा पृ० २६ स्थ=ट्ठ।

१३. ड्ड[4]

'र्त' को 'ड्ड' गर्त—गड्ड। गर्ता—गड्डा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।२९, ४७। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।९, ८, ३२, ३३, ३९। ३. तुलना—हिन्दी—ठाढो—"सूरदास द्वारे ठाढो आंधरो भिखारी"। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।३५,३६,३७।

'र्द' ,, ,, कपर्द—कवड्ड । छर्द—छड्डइ (क्रियापद) ।
छर्दि—छड्डि । मर्दित—मड्डिअ । वितर्दि—विअड्डि ।
गर्दभ—गड्डह, गद्दह ।

१४. ढ, ड्ढ[1]

'र्ध' को 'ढ' मूर्ध--मुंढा, मुद्ध ।
'र्ध' ,, 'ड्ढ' अर्ध--अड्ढ, अद्ध ।
'ग्ध' ,, ,, दग्ध—दड्ढ । विदग्ध-विअड्ढ ।
'द्ध' ,, ,, ऋद्धि-इड्ढि, इद्धि । वृद्ध-वुड्ढ, विद्ध । वृद्धि-वुड्ढि ।
श्रद्धा-सड्ढा, सद्धा ।
'ब्ध' ,, ,, स्तब्ध-ठड्ढ ।

(देखिए—पा० प्र० पृ० ४२-वृद्धि-वुड्ढि । वर्धमान-वड्ढमान । अर्ध-अड्ढ । दग्ध-दड्ढ आदि । द्ध = ड्ढ, र्ध = ड्ढ, ग्ध = ड्ढ ।

१५. ण्ट, ण्ड, ण्ण[2]

'न्त' को 'ण्ट' वृन्त-वेण्ट अथवा वेंट । तालवृन्त-तालवेण्ट ।
'न्द' ,, 'ण्ड' कन्दरिका-कण्डलिया । भिन्दिपाल-भिण्डिवाल ।
'ञ्च' ,, 'ण्ण' पञ्चदश-पण्णरह । पञ्चाशत्-पण्णासा ।
'त्त' ,, 'ण्ण' दत्त-दिण्ण (जहाँ ण्ण न हो वहाँ दत्त पद समझना चाहिए । जैसे, दत्तं । परन्तु देवदत्त, चारुदत्त आदि नामों में 'त्त' का परिवर्तन नहीं होता है ।)
'ह्न' ,, 'ण्ण' मध्याह्न-मज्झण्ण, मज्झण्ह ।

(देखिए—पा० प्र० पृ० ५८-वृन्त-वण्ट-नियम ८५ ।)

१६. त्थ[3]

'त्स' को 'त्थ' उत्साह-उत्थाह ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२,४१,४०,३९ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२। ३१, ३८, ४३, ८४ तथा ८।१।४६ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।४८ ।

'त्म' ,, ,, अध्यात्म-अज्झत्थ, अज्झप्प।

(देखिये—पालि प्र० पृ० ३० टिप्पण उत्साह-उस्साह।)

१७. न्त[1]

'न्य' को 'न्त' मन्यु-मन्तु अथवा मंतु, मन्नु।

१८. ढ[2]

'ष्ट' ,, 'ढ' आश्लिष्ट-आलिद्ध।

१९. न्ध[3]

'ह्न' ,, 'न्ध' चिह्न-चिन्ध, चिंध, चिण्ह।

चिह्नित-चिन्धिअ, चिंधिअ, चिण्हिअ।

२०. प्प, प्फ, फ[4]

'त्म' को 'प्प' आत्मा-अप्पा, अत्ता। आत्मानः-अप्पाणो, अत्ताणो।

'क्म' ,, 'प्प' रुक्म-रुप्प, रुक्म।

'ष्म' ,, 'प्फ' भीष्म-भिप्फ।

'ष्म' ,, 'फ' श्लेष्मन्-सेफ, सिलिम्ह।

(समानता-'श्ले' और 'ष्म' के बीच में 'अ' का प्रवेश करने पर श्लेषम-गुजराती में 'सलेखम')

(आत्मा-अत्ता, आतुमा देखिये—पा० प्र० पृ० ५० नियम ५७। श्लेष्मा-सिलेतुमा, सेम्ह देखिये—पा० प्र० पृ० ४६।)

२१. ब्भ, म्ब, म्भ[5]

'र्ध्व' को 'ब्भ' ऊर्ध्व-उब्भ, उद्ध।

१. है० प्रा० व्या० ८।२।४४। २. है० प्रा० व्या० ८।२।४९। ३. है० प्रा० व्या० ८।२।५०। ४. है० प्रा० व्या० ८।२।५१,५४,५५। ५. है० प्रा० व्या० ८।२।५९, ५६, ६०, ७४।

'म्र' ,, 'म्ब' आम्र--अम्ब । ताम्र--तम्ब ।
'श्म' ,, 'म्भ' कश्मीर--कम्भार, कम्हार ।
'ह्म' ,, 'म्भ' ब्राह्मण--बम्भण, बम्हण ।
ब्रह्मचर्य--बम्भचेर, बम्हचेर ।

(आम्र--अम्ब, ताम्र--तम्ब देखिये—पा० प्र० पृ० १५ नियम १८)

२२. र[1]

'त्र' को 'र' धात्री--धारी ।
'र्य' को 'र' आश्चर्य—अच्छेर । तूर्य—तूर । धैर्य—धीर, धिज्ज ।
पर्यन्त—पेरन्त, पज्जंत । ब्रह्मचर्य-बंभचेर ।
शौण्डीर्य-सोंडीर, सं० शौण्डीर । सौन्दर्य-सुंदेर ।
'ह' को 'र' उत्साह—उत्थार ।
'र्ह' को 'र' दशार्ह—दसार ।

(देखिए—पा० प्र० पृ० १४ टिप्पण—धात्री-धाती । पा० प्र० पृ० ४ इस्सेरं, मच्छेरं)

२३. ल, ल्ल[2]

'ण्ड' को 'ल' कूष्माण्ड—कोहल, कोहंड । कूष्माण्डी—कोहली, कोहंडी ।
'र्य' को 'ल्ल' पर्यस्त—पल्लट्ट, पल्लत्थ । पर्याण—पल्लाण, सं० पल्ययन ।
सौकुमार्य—सोगमल्ल, सोअमल्ल, सं० सौमाल्य ।

(देखिए—पा० प्र० पृ० १६ टिप्पण—पर्यस्तिका—पल्लत्थिका आदि)

२४. स्स[3]

'स्प' को 'स्स' बृहस्पति—बहस्सइ, बहप्फइ ।
वनस्पति--वणस्सइ, वणप्फइ ।

(देखिए—पा० प्र० पृ० ३९, वनस्पति—वनप्पति, नियम ४८)

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।८१, ६६,६४,६३,६५,४८,८५ । २. हे० प्रा०व्या० ८।२।७३,६८ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।६६।

२५ ह[1]

'क्ष' को 'ह्' दक्षिण–दाहिण, दक्खिण।
'ख' ,, 'ह्' दु:ख–दुह, दुक्ख। दु:खित–दुहिअ, दुक्खिअ।
'ष्प' ,, 'ह्' वाष्प–वाह (अश्रु–असु गु०, आँसू) तथा वाष्प–वप्फ (=भाफ)।
'ष्म' को 'ह्' कुष्माण्ड–कोहण्ड। कुष्माण्डी–कोहडी।
र्घ ,, ,, दीर्घ–दोह, दिग्घ।
र्थ ,, ,, तीर्थ–तूह, तित्थ।
र्ष ,, ,, कार्षापण–काहापण।
(देखिये–पा० प्र० पृ० ८, दु:ख–दुक्ख)

२६. द्विर्भाव[2]

कुछ शब्दों में 'र' और 'ह' को छोडकर इकहरे व्यञ्जन को द्वित्व हो जाता है। द्वित्व का ही अपर नाम द्विर्भाव है। यह द्विर्भाव कुछ शब्दों में नित्य होता है और कुछ में वैकल्पिक।

नित्य द्विर्भाव —ऋजु–उज्जु। तैल–तेल्ल। प्रभूत–बहुत्त। प्रेम–पेम्म। मण्डूक–मंडुक्क। यौवन–जुव्वण। विचकिल–वेइल्ल। व्रीडा–विड्डा इत्यादि।

वैकल्पिक द्विर्भाव :—एक–एक्क, इक्क, एअ, एग। कर्णिकार–कण्णिआर, कणिआर। कुतूहल–कोउहल्ल, कोउहल। चैत्र–चित्त, च्चित्त, चित्त। चैत्र–चेत्त, च्चेत्त, चेत्त। तूष्णीक–तुण्हिक्क, तुण्हिक। दैव–दइव्व, दइव। नख–नक्ख, नह। निहित–णिहित्त, निहिअ। नीड–नेड्ड, नीड। मूक–मुक्क, मूअ। सेवा–सेव्वा, सेवा।

---

१ हे० प्रा० व्या० ८।२।७२, ७०, ७३, ९१, ७१। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।८९, ९५, ९८, ९७, ९२, ८।१।२२।

स्थूल–थुल्ल, थूल। स्थाणु–खण्णु, खाणु। हूत–हुत्त, हूअ इत्यादि।

सामासिक शब्दों में द्विर्भाव :—आलानस्तम्भ–आणालक्खंभ, आणालखंभ। कुसुमप्रकर–कुसुप्पयर, कुसुमपयर। देवस्तुति–देवत्थुइ, देवथुइ। नदीग्राम–नइग्गाम, नइगाम। हरस्कन्द–हरक्खंद, हरखंद इत्यादि।

जिस इकहरे व्यञ्जन के पूर्व दीर्घ अथवा अनुस्वार हो तो उसे द्वित्व नहीं होता है। जैसे :—

क्षिप्त–छूढ का छुड्ढ नहीं होता है।
स्पर्श–फास ,, फस्स ,, ,,
त्र्यस्र–तंस ,, तस्स ,, ,,
संध्या–संझा ,, संज्झा ,, ,,

(पालि भाषा में भी द्विर्भाव की प्रक्रिया है। देखिये पा० प्र० पृ० १०, नियम १२।)

२७. शब्दों में विशेष परिवर्तन[1]

अयस्कार–एक्कार। आश्चर्य–अच्छअर, अच्छरिअ, अच्छरिज्ज, अच्छरीअ। उदूखल–ओहल, उऊहल। उलूखल–ओक्खल, उलूहल। कमल–केल, कमल। कदली–केली, कयली। कर्णिकार–कण्णेर, कणिआर, कण्णिआर। चतुर्गुण–चोग्गुण, चउग्गुण। चतुर्थ–चोत्थ, चउत्थ। चतुर्दश–चोद्दस, चउद्दस। चतुर्वार–चोव्वार, चउव्वार। त्रयस्त्रिंशत्–तेत्तीसा। त्रयोदश–तेरह।

(पालि में अच्छरिय, अच्छयिर देखिये पा० प्र० पृ० ४४ टिप्पण।)

---

१. प्रा० व्या० ८।१।१६६, १६५, १६७, १६८, १७०, १७१, १७४, १७५ तथा ८।२।६६, ६७।

त्रयोविंशति–तेवीसा। त्रिंशत्–तीसा। नवनीत–नोणीअ, लोणीअ। नवफलिका–नोहलिआ। नवमालिका—नोमालिआ। निषण्ण–णुमण्ण। पूगफल–पोप्फल। पूतर–पोर। प्रावरण–पगुरण, पाउरण, पावरण। बदर–बोर। मयूख–मोह। रुदित–रुण्ण। लवण–लोण। विचकिल–वेइल्ल। विंशति–वीसा। सुकुमार–सोमाल (स० सोमाल)। स्थविर–थेर।

(देखिये पा० प्र० पृ० ४४ नियम ५७, लवण–लोण तथा पृ० ६२, लयन–लेन। देखिये—पा० प्र० पृ० २८ नि० ३४, स्थविर–थेर।)

२८ शब्दों में विविध परिवर्तन[1]

अधस्–हेट्ठ। अप–ओ। अप्सरस्–अच्छरसा, अच्छरा। अयि–ऐ, अइ। अव–ओ। अवधि–ओहि। आयुष्–आउस। आरब्ध–आढत्त, आरद्ध। इदानीं–एण्हि, एत्ताहे, दाणि, इआणि (शौरसेना–दाणि)। ईषत्–कूर, ईसि, ईसि। उत–ओ। उप–ऊ, ओ। उपाध्याय–ऊज्झाय ओज्झाय, उवज्झाय। उभय–अवह, उवह, उभयो। ककुभ्–कउहा। क्षिप्त–छूढ, खित्त। क्षुध्–छुहा। गृह–घर। गृहस्वामी–घरसामी। राजगृह–रायघर। गृहपति–गहवइ। छुप्त–छिक्क, छुत्त। तिर्यक्–तिरिया, तिरिच्छ। त्रस्त–हित्थ, तट्ठ, तत्थ। दिश–दिसा। दुहिता–धूआ, दुहिआ। दंष्ट्रा–दाढा (स० दाढा)।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४१। ८।१।१७२, २०, १६६, १७२, २०। ८।२।१३८, १३४। ८।४।२७७। ८।२।१२९। ८।१।१७२, १७३। ८।२।१३८।

धनुष्–धणुह, धणु। धृति–दिहि। पदाति–पाइक्क, पयाइ। प्रावृष्–पाउस। पितृष्वसा–पिउच्छा, पिउसिआ। पूर्व–पुरिम, पुव्व (शौरसेनी–पुरव)। बहिस्–बाहि, बाहिरं। बृहस्पति–भयस्सइ, बहस्सइ। भगिनी–बहिणी, भइणी। मलिन–मइल, मलिण। मातृष्वसा–माउच्छा, माउसिआ। मार्जार–मञ्जर, वञ्जर, मज्जार। वनिता–विलया, वणिआ। विद्रुत–विद्दाअ। वृक्ष–रुक्ख, वच्छ। वैडूर्य–वेरुलिय, वेडुज्ज। शुक्ति–सिप्पि, सुत्ति। स्तोक–थेव, थोव, थोक्क, थोअ। स्त्री–इत्थी, थी। श्मशान–सीआण, सुसाण, मसाण[1]।

[2]अपभ्रंश भाषा में निम्नलिखित शब्दों का विशेष परिवर्तन इस प्रकार है :—

सं०	प्रा०	अपभ्रंश
अन्यादृश	अन्नारिस	अन्नाइस
अपरादृश	अवरारिस	अवराइस

(देखिये—पा० प्र० पृ० ५६ नि० ७८, गृह–घर। गृहणी–घरणी। पृ० १६, तिर्यक्–तिरिय। पृ० ३४ टिप्पण, पितृष्वसा–पितुच्छ। पृ० २७, स्तोक–थोक। पृ० ५१ टिप्पण—श्मशान–मसान, सुमान।)

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१। ८।२।१२७, ८।१।१७, ८।२।१४४, ८।२।१३८, ८।२।१४३, ८।२।१३६। ८।१।१९, ८।२।१२६, ८।२।१३६, ८।१।२२, ८।२।१३१, ८।२।१३८, ८।१।१६, ८।२।१४२, ८।२।१३५, ८।४।२७०, ८।२।१४०, ८।२।१३७, ८।२।१२६, ८।२।१३८, ८।२।१४२, ८।२।१३२, ८।२।१२८, ८।१।१०७, ८।२।१२७, ८।२।१३३, ८।२।१३८, ८।२।१२५, ८।२।१३०, ८।२।८६। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।४१३, ८।४।४०३, ८।४।४०२, ८।४।४२१।

ईदृश	एरिस	अइस, एह
कीदृश	केरिस	कइस, केह
तादृश	तारिस	तइस, तेह
यादृश	जारिस	जइस, जेह
वर्त्म	वट्ट	विच्च
विषण्ण	विसण्ण	वुन्न

आगम

कुछ शब्दों के संयुक्त व्यञ्जनों के बीच में स्वरों का आगम होता है। इसे स्वर-प्रक्षेप वा अन्तःस्वरवृद्धि अथवा स्वर-भक्ति कहते हैं।

[1]अ का आगमः—अग्नि—अगणि, अग्गि। अर्हन्—अरहंत। कृष्ण—कसण, कण्ह (अर्थात् काला रंग)। क्ष्मा—छमा। प्लक्ष—पलक्ख। रत्न—रतन, रयण। शार्ङ्ग—सारंग। श्लाघा—सलाहा। स्निग्ध—सणिद्ध। सूक्ष्म—सुहम। स्नेह—सणेह, नेह।

[2]इ का आगमः—अर्हत्—अरिहंत। कृत्स्न—कसिण, कण्ह। क्रिया—किरिया, किया। चैत्य—चेइअ। तप्त—तविअ। दिष्ट्या—दिट्ठिआ। भव्य—भविअ, भव्व। वज्र—वइर, वज्ज। श्री—सिरी। स्निग्ध—सिणिद्ध, निद्ध। स्याद्—सिआ। स्याद्वाद—सिआवाअ। स्वप्न—सिविण, सिमिण, सुमिण। ह्यः—हिओ। ह्री—हिरी।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१०२, ८।२।१११, ८।२।११०, ८।२।१०१, ८।२।१०३, ८।२।१०१, ८।२।१००, ८।२।१०१, ८।२।१०९, ८।२।१०१, ८।२।१०२। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१११, ८।२।११०, ८।२।१०४, ८।२।१०७, ८।२।१०५, ८।२।१०४, ८।२।१०७, ८।२।१०५, ८।२।१०४, ८।२।१०६, ८।२।१०७, ८।२।१०८, ८।२।१०४।

[1]ई का आगमः—ज्या–जीआ ।

[2]उ का आगमः—अर्हत्–अरहत । छद्म–छउम । द्वार–दुवार, दुआर, दार, देर, बार । पद्म–पउम, पोम्म । मूर्ख–मुरुक्ख, मुक्ख । द्व–सुवे । स्नुषा–सुनुसा, सुण्हा, ण्हुसा, सुसा । सूक्ष्म–सुहुम, सुहम, सण्ह, सुण्ह । सुघ्न–सुरुग्घ । स्व–सुव ।

२९. [3]विशेष शब्दों में अनुस्वार का आगम—अतिमुक्तक–अइमुंतय, अइमुत्तय । अश्रु–अंसु । उपरि–अवरिं, उवरि । कर्कोट–कंकोड । कुड्मल–कुंपल । गुच्छ–गुंछ । गृष्टि–गिंठि, गिट्ठि । त्र्यस्र–तंस, । दर्शन–दंसण, दरिसण । देवनाग–देवनाग । पर्शु–पंसु, परिसु । पुच्छ–पुंछ, पुच्छ । प्रतिश्रुत–पडंसुआ । बुध्न–बुंध । मनस्वि–मणंसि । मनस्विनी–मणंसिणी । मनःशिला–मणंसिला, मणसिला, मणासिला, मणोसिला । मूर्धन्–मुंढ, मुद्ध । मार्जार–मंजार, मज्जार । वक्र–वंक, वक्क । वयस्य–वयंस, वयस्स । वृश्चिक–विंछिअ, विंचुअ । श्मश्रु–मंसु, मस्सु ।

[4]शौरसेनी भाषा में णकार का विकल्प से आगम —

सं०	प्रा०	शौ०
युक्तम् इदम्	जुत्तं इणं	जुत्तं णिमं, जुत्तं इणं ।
सदृशम् इदम्	सरिसं इणं	सरिसं णिमं, सरिसं इणं ।
किम् एतद्	किं एअं	किं णेदं, किं एदं ।
एवम् एतद्	एवं एअं	एवं णेदं, एवं एदं ।

---

१ हे० प्रा० व्या० ८।२।११५ । २ हे० प्रा० व्या० ८।२।१११, ८।२।११२, ८।२।११४, ८।२।११३, ८।२।११४ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२६। ४ हे० प्रा० व्या० ८।४।२७९ ।

[1]अपभ्रंश भाषा में विशेष शब्दों के किसी-किसी प्रयोग में स्वर अथवा व्यञ्जन का आगमः—

सं०	प्रा०	अप०
उक्त	उत्त	वुत्त—'व' का आगम
परस्पर	परोप्पर	अपरोप्पर—'अ' का आगम
व्यास	वास	व्रास—'र' का आगम

३०. [2]अक्षरों का व्यत्यय (व्यतिक्रम) :—

अचलपुर—अलचपुर। आलान—आणाल। करेणु—कणेरु महाराष्ट्र—मरहट्ठ। लघुक—हलुअ, लहुअ। ललाट—णडाल, णलाड। वाराणसी—वाणारसी, सं० वराणसी, वाणारसी, वराणसि। हरिताल—हलिआर, हरिआल। ह्रद—द्रह, हर।

०

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।४२१, ८।४।४०६, ८।४।३६६। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।११८, ८।२।११७, ८।२।११६, ८।२।११९, ८।१।१२२, ८।२।१२३, ८।२।११६, ८।२।१२१, ८।२।१२०।

लिंगविचार

कुछ[1] शब्दों के लिंग में जो परिवर्तन होता है वह इस प्रकार है :—

जिन शब्दों के अन्त में स् अथवा न् हो वे सभी शब्द पुंलिग में होते हैं।

सं०	पु०	सं०	पु०
यशस्	जसो	जन्मन्	जम्मो
पयस्	पयो	नर्मन्	नम्मो
तमस्	तमो	मर्मन्	मम्मो
तेजस्	तेओ	वर्म्मन्	वम्मो
उरस्	उरो	धामन्	धामो

'जसो', 'पयो' आदि शब्दों के अन्त में 'ओकार' नर जाति (पुंलिग) सूचित करता है।

अपवाद :—दामन्–दामं। शर्मन्–सम्मं। चर्मन्–चम्मं। शिरस्–सिरं। सुमनस्–सुमण।

प्रावृष्–शरद् और तरणि शब्द पुंलिग में प्रयुक्त होते हैं। प्रावृष्–पाउसो। शरद्–सरओ। तरणि–तरणी। 'आँख' अर्थवाले सभी शब्द पुंलिग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।

सं०	पुं०	नपु०
अक्षि	अक्खी	अक्खि
अक्षि	अच्छी	अच्छि
चक्षु	चक्खू	चक्खुं

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।३२, ८।१।३१, ८।१।३३, ८।१।३४, ८।१।३५।

नयन	नयणो	नयणं
लोचन	लोयणो	लोयणं

निम्नलिखित शब्द पुंलिग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।

वचन	वयणो	वयणं
विद्युत्	विज्जुणा	विज्जुए (तृतीया विभक्ति)
कुल	कुलो	कुलं
छन्द	छंदो	छंदं
माहात्म्य	माहप्पो	माहप्पं
दुःख	दुक्खो	दुक्खं
भाजन	भायणो	भायणं

निम्नलिखित शब्द नपुंसकलिग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।

गुण	गुणं	गुणो
देव	देवं	देवो
विन्दु	विन्दुं	विन्दू
खड्ग	खग्गं	खग्गो
मण्डलाग्र	मंडलग्गं	मंडलग्गो
कररुह	कररुहं	कररुहो
वृक्ष	रुक्खं	रुक्खो

जिन शब्दों के अन्त में भाववाची 'इमा' प्रत्यय हो तो वे शब्द स्त्रीलिंग में विकल्प से प्रयुक्त होते है।

सं०	पुंलिग	स्त्रीलिग
गरिमन्	गरिमा	गरिमा
महिमन्	महिमा	महिमा
निर्लज्जिमन्	निल्लज्जिमा	निल्लज्जिमा
धूर्तिमन्	धुत्तिमा	धुत्तिमा

अञ्जलि आदि शब्द स्त्रीलिंग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।

सं०		स्त्रीलिंग
अञ्जलि	अंजलि	अंजली
पृष्ठ	पिट्ठं	पिट्ठी
अक्षि	अच्छि	अच्छी
प्रश्न	पण्हो	पण्हा
चौर्य	चोरिअ	चोरिआ
कुक्षि	कुच्छी	कुच्छी
बलि	बली	बली
निधि	निही	निही
रश्मि	रस्सी	रस्सी
विधि	विही	विही
ग्रन्थि	गंठी	गंठी

●

सन्धि

सन्धि अर्थात् परस्पर मिल जाना, एक दूसरे में मिल जाना अथवा एक दूसरे में छिप जाना।

प्रथम पद के अन्तिम स्वर और पिछले पद के पूर्व स्वर के मिल जाने पर जो परिवर्तन होता है उसे स्वर-सन्धि कहते हैं।

पद के अन्दर के व्यञ्जन का अपने पीछे आनेवाले व्यञ्जन के कारण जो परिवर्तन होता है उसे व्यञ्जन-सन्धि कहते हैं। जैसे:—

कंठ—कण्ठ। चंद—चन्द। कंकण—कङ्कण। संख—सङ्ख।
गंगा—गङ्गा आदि।

अर्धमागधी में संस्कृत की भाँति पृथक्-पृथक् व्यञ्जनों की सन्धि नहीं होती।

१. एक पद में सन्धि नहीं होती है[१]:

प्राकृत भाषा के अनेकानेक शब्द स्वरबहुल होते हैं ऐसे पदों में सन्धि करने से अर्थभ्रम होता है अतः इस भाषा में एक पद में सन्धि नहीं होती है। जैसे:—

नई (नदी), पइ (पति), कइ (कवि), गअ (गज), गउआ (गो=गाय), काअ (काक), लोअ (लोक), रुइ (रुचि), रइ (रति) आदि।

अपवादः—कुछ शब्दों में एक पद में भी स्वरसन्धि हो जाती है। जैसे:—

---

१. हे० प्रा० व्या ८।१।४।

वि + ईअ = वीअ } द्वितीय (दूसरा)
वि + इअ = विइअ }

काहि + इ = काही } करेगा (करिष्यति)
काहिइ }

[1]थ + इर = थेर (वृद्ध = स्थविर)

च + उ + द्दस = चोद्दस (चौदह = चतुर्दश)

[2]कुम्भ + आर = कुम्भार (कुम्हार = कुम्भकार)

चक्क + आअ = चक्काअ (चक्रवाक् = चकवा पक्षी)

साल + आहण = सालाहण (शालिवाहन राजा)

२. क्रियापद के स्वर को स्वर परे रहनेपर सन्धि नहीं होती है।[3] जैसे :—

होइ + इह = होइ इह । सं० भवति + इह = भवति इह ।

३. 'ई अथवा उ, ऊ' के पश्चात् कोई भी विजातीय स्वर आ जावे तो सन्धि नहीं होती[4]। जैसे :—

इ—जाइ + अन्ध = जाइअंध (जाति अन्ध—जात्यन्ध = जन्मान्ध)

ई—पुढवी + आउ = पुढवीआउ (पृथ्वी—आप = पृथ्वी और पानी)

उ—बहु + अट्ठिअ = बहुअट्ठिअ (बहुअस्थिक = बहुत-सी हड्डियोंवाला)

ऊ—बहू + अवगूढ = बहूअवगूढ (वधू अवगूढ)

४. 'ए और ओ' के बाद स्वर परे होने पर सन्धि नहीं होती[5]। जैसे :—

ए—महावीरे + आगच्छइ। एगे + आया। एगे + एवं।

ओ—अहो + अच्छरियं। गोयमो + आघवेइ।

आलक्खिमो + इण्हि।

---

१. देखिये, पिछले उदाहरणों में नियम २७ के अन्तर्गत। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।८। ३ हे० प्रा० व्या० ८।१।९। ४. हे० प्रा० व्या० ८।१।६। ५. हे० प्रा० व्या० ८।१।७।

५. दो पदों में भी व्यञ्जन के लोप होने पर शेष स्वरों की सन्धि नहीं होती[१]। जैसे :—

निशाकर—निसा + अर = निसाअर। निसि + अर = निसिअर।

रजनीकर—रयणी + अर = रयणीअर।

रजनीचर—रयणी + अर = रयणीअर।

निशाचर—निसा + अर = निसाअर। निसि + अर = निसिअर।

गन्धपुटी—गंध + उडी = गंधउडी।

६. 'अ और आ' के बाद अ और आ रहने पर दीर्घ आकार हो जाता है[२]। जैसे :—

(अ + अ = आ। अ + आ = आ। आ + अ = आ। आ + आ = आ।)

अ—जीव + अजीव = जीवाजीव।

विसम + आयव = विसमायव (विषम + आतप)।

आ—गंगा + अहिवइ = गंगाहिवइ।

जउणा + आणयण = जउणाणयण (यमुना + आनयन)।

७. 'इ और ई' के परे इ और ई हो तो दीर्घ ईकार हो जाता है[५]। जैसे :—

(इ + इ=ई। इ + ई=ई। ई + इ=ई। ई + ई = ई।)

इ—मुणि + इयर=मुणियर। पुहवी + ईस=पुहवीस।

दहि + ईसर=दहीसर। पुहवी + इसि=पुहवीसि।

८. 'उ और ऊ' के बाद उ तथा ऊ रहने पर दीर्घ ऊकार हो जाता है[६]। जैसे :—

(उ + उ=ऊ। उ + ऊ=ऊ ऊ + उ = ऊ। ऊ + ऊ = ऊ।)

बहू + उदग=बहूदग। बहू + उपमा=बहूपमा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।८। २.–५. हे० सं० सिद्धहेम० ल० वृ० १।२।१। ३. सिद्धहे० सं० व्या० १।२।१।

साउ + उदग=साऊदग। बहू + ऊसास=बहूसास।

बहु + ऊसास=बहूसास।

९. स्वर के बाद स्वर रहने पर पूर्वस्वर का लोप भी हो जाता है[1]। जैसे :—

नर + ईसर—नर् + ईसर = नरीसर, नरेसर।

तिदस + ईस—तिदस् + ईस=तिदसीस, तिदसेस।

निसास + ऊसास—नीसास् + ऊसास=नीसासूसास।

रमामि + अह—रमामह। तम्मि + असहर=तम्मंसहर।

उवलमामि + अहं = उवलमामहं।

देविंद + अभिवंदिअ = देविंदभिवंदिअ।

ददामि + अहं = ददामह। ण + एव = णेव।

१०. जहाँ दो स्वर पास-पास आते हों वहाँ कई स्थानों पर पिछले पद के पहले स्वर का लोप हो जाता है[2]। जैसे :—

फासे + अहियासए = फासे हियासए।

बालो + अवरज्झइ = बालो वरज्झइ।

एस्सति अणतसो = एस्सति णतसो।

११. सर्वनाम सम्बन्धी स्वर अथवा अव्यय सम्बन्धी स्वर पास-पास आये हों तो दो में से किसी एक का लोप हो जाता है[3]। जैसे :—

तुब्भे + इत्थ = तुब्भित्थ। जे + एत्थ = जेत्थ।

अम्हे + एत्थ = अम्हेत्थ। जइ + अहं = जइहं।

जे + इमे = जेमे। जइ + इमा = जइमा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१०। २. सिद्धहे० सं० व्या० १।२।२७। इस सूत्र से मिलता-जुलता यह नियम है। ३. हे० प्रा० व्या० ८।१।४०।

१२. किसी भी पद के बाद में आये हुए 'अपि' अथवा 'अवि' अव्यय के 'अ' का विकल्प से लोप होता है।[१] जैसे :—
किं + अपि = किंपि, किमवि। केण + अवि = केणवि, केणावि।
केहं + अपि = कहंपि, कहमवि।

१३. किसी भी पद के बाद में आये हुए 'इति' अव्यय के 'इ' का लोप हो जाता है।[२]
जं + इति = जंति। जुत्तं + इति = जुत्तंति। दिट्ठं + इति = दिट्ठंति।

१४. यदि स्वरान्त पद के पश्चात् 'इति' अव्यय आ जाय तो 'इ' का लोप होने पर 'ति' का डबल (द्वित्व) 'त्ति' हो जाता है।[३]
तहा + इति = तहत्ति[४]। पुरिसो + इति = पुरिसोत्ति। पिओ + इति= पिओत्ति।

१५. भिन्न-भिन्न पदों में अ अथवा आ से परे इ अथवा ई हो तो 'ए' (गुण) हो जाता है।[५]
न + इच्छति=नेच्छति। जाया + ईस=जायेस। वास + इसि=वासेसि।
खट्टा + इह = खट्टेह (खट्वा + इह)। दिण + ईस = दिणेस।

१६. भिन्न-भिन्न पदों में अ और आ के बाद उ अथवा ऊ रहने पर 'ओ' (गुण) हो जाता है।[६] जैसे :—
सिहर + उवरि = सिहरोवरि। गंगा + उवरि = गंगोवरि। एग + ऊण = एगोण। वीस + ऊण = वीसोण। पाअ + ऊण = पाओण। पउन (=तीन पाव)

१७. पद के अन्तिम 'अ' का अनुस्वार होता है।[७]
जलम् = जलं। फलम् = फलं। गिरिम् = गिरिं।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।४१। २—३. हे० प्रा० व्या० ८।१।४२।
४. देखिये—नियम (२)। ५-६. सि० हे० सं० व्या० १।२।६।
७. हे० प्रा० व्या० ८।१।२३।

अपवाद —वणम्मि–वणमि, वणम्मि।

१८ यदि पद के अन्तिम 'म्' के पश्चात् स्वर आ जाये तो उसका विकल्प से अनुस्वार होता है।[1]

उसमम् + अजिअ = उसम अजिअ, उसममजिअ। नगरम् + आगच्छइ = नगर आगच्छइ, नगरमागच्छइ।

१९. कुछ शब्दों के अन्तिम व्यञ्जन का अनुस्वार हो जाता है[2]। जैसे :—

साक्षात्–सक्खं   पृथक्–पिहं
यत्–जं   सम्यक्–सम्मं
तत्–तं   ऋधक्–इहं
विष्वक्–वीसुं   ऋधक्क्–इहयं

२०. ङ्, ञ्, ण् तथा न् के बाद व्यञ्जन परे रहने पर अनुस्वार हो जाता है[3]। जैसे :—

शङ्ख–सङ्ख, संख।   षण्मुख–छण्मुह, छंमुह।
कञ्चुक–कञ्चुअ, कंचुअ।   सन्ध्या–संझा।

२१. कुछ शब्दों में अनुस्वार का लोप हो जाता है[4]। जैसे :—

विंशति–वीसा।   एवम्–एवं–एव, एवं।
त्रिंशत्–तीसा।   नूनम्–नूनं–नूण, नूणं।
संस्कृत–सक्कय (सं० संस्कृत)। इदानीम्–इआणिं–
संस्कार–सक्कार (सं०संस्कार)। इआणि, इआणिं,
मांस–मास, मंस।   दाणि, दाणिं।
मांसल–मासल, मंसल।   किम्–किं, कि, किं।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।२५। ४ हे० प्रा० व्या० ८।१।२८,२९।

कांस्य—कास, कंस । संमुख—समूह, संमुह ।
पांशु—पासु, पंसु । किंशुक—केसुअ, किंसुअ ।
कथम्—कथं, कह, कहं । सिंह—सीह, सिंघ ।

२२. अनुस्वार के बाद वर्ग के किसी भी व्यञ्जन के परे रहने पर विकल्प से वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है[1]। जैसेः—

पंक—पङ्क, पंक	कंड—कण्ड, कंड
संख—सङ्ख, संख	संढ—सण्ढ, संढ
अंगण—अङ्गण, अंगण	अंतर—अन्तर, अंतर
लंघण—लङ्घण, लंघण	पंथ—पन्थ, पंथ
कंचुअ—कञ्चुअ, कंचुअ	चंद—चन्द, चंद
लंछण—लञ्छण, लंछण	बंधु—बन्धु, बंधु
अंजन—अञ्जण, अंजण	कंप—कम्प, कंप
संझा—सञ्झा, संझा	गुंफ—गुम्फ, गुंफ
कंटअ—कण्टअ, कंटअ	कलंब—कलम्ब, कलंब
कंठ—कण्ठ,कंठ	आरंभ—आरम्भ, आरंभ

२३. कुछ शब्दों में दो पदों के बीच 'म्' का आगम हो जाता है[2]। जैसे :—

अन्न + अन्न = अन्नम् अन्न—अन्नमन्न ।
एग + एग = एगम् एग—एगमेग ।
चित्त + आणंदिय = चित्तम् आणंदिय—चित्तमाणंदिय ।
जहा + इसि = जहाम् इसि—जहामिसि ।
इह + आगअ = इहम् आगअ—इहमागअ ।
हट्ठतुट्ठ + अलंकिअ = हट्ठतुट्ठम् आलंकिय—हट्ठतुट्ठमालंकिय ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।३० । २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१० ।

अणेगछन्दा + इह = अणेगछदाम् इह–अणेगछदामिह ।
जुब्वण + अप्फुण्ण = जुव्वणम् अप्फुण्ण–जुब्वणमप्फुण्णे ।

२४. कुछ शब्दों का अन्तिम व्यञ्जन लोप होने की अपेक्षा पास वाले स्वर में ही मिल जाता है[1]। जैसे :—
किम् + इहं = किमिह   निर् + अन्तर = निरन्तर।
यद् + अस्ति = यदत्थि, जदत्थि दुर् + अतिक्रम = दुरतिक्कम ।
पुनर् + अपि = पुणरवि   दुर् + अइक्कम = दुरइक्कम ।

२५. यहाँ सन्धि के जो-जो नियम बताये गये हैं उनका उपयोग दो पदों में ही करना चाहिये। जहाँ एक से अधिक नियम लागू हों वहाँ प्रचलित प्रयोगों के अनुसार सन्धि करनी चाहिए जिससे अर्थभ्रम न हो। अक्षरपरिवर्तन तथा लोप के नियम का उपयोग करते समय भी अर्थभ्रम न हो इसका ख्याल रखना जरूरी है।

•

---

१. स्वरहीन परेण सयोज्यम् । तथा हे० प्रा० व्या० ८।१।१४।

समास[1]

समास का अर्थ है संक्षेप याने थोड़े शब्दों में अधिक अर्थ बतानेवाली शैली का नाम समास है। जिसमे लिखना और बोलना कम पड़ता है फिर भी विशेष अर्थ समझने में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न रहे ऐसी शैली की खोज में समास शैली की शोध हुई। इस शोध का विकास पण्डितों की शैली में विशेष रूप से हुआ। बोलचाल की लोकभाषा में इस शैली का प्रचार बहुत कम दिखाई देता है। परन्तु जब लोकभाषा केवल साहित्य की भी भाषा बन जाती है तब उसमें भी इसका प्रयोग प्रचुर मात्रा मे होता है।

'न्याय का अधीश' कहना हो तो समास विहीन शैली में 'नायस्स अधीसो' कहा जाएगा। जब कि समासशैली में 'नायाधीसो' कहा जाएगा अर्थात् जिस अर्थ को बताने के लिए समास विहीन शैली में छः अक्षरों की आवश्यकता पड़ती है उसी अर्थ को बताने के लिए समासशैली में केवल चार अक्षरों से ही काम चल जाता है।

इसी प्रकार "जिस देश में बहुत से वीर हैं वह देश" कहना हो तो समास विहीन शैली में "जम्मि देसे बहवो वीरा सन्ति सो देसो" इतना लम्बा वाक्य कहना पड़ता है जब कि उसी अर्थ को बताने के लिए समास-शैली में "बहुवीरो देसो" इतने कम अक्षरों से ही काम चल जाता है। अर्थात् जिस अर्थ को बताने के लिए समास विहीन शैली में चौदह अक्षरों की आवश्यकता पड़ती है, उसी अर्थ को संपूर्ण रूप से बताने वाली समास-शैली में केवल छः अक्षरों से ही सुन्दर रूपेण काम चल जाता है। समास-शैली की यही सब से बड़ी विशेपता है।

---

१. सिद्धहेम० सं० व्या० ३।१।१ से १६३–सम्पूर्ण समास प्रकरण।

इसके अतिरिक्त समासशैली की और भी अनेक विशेषताएँ हैं जैसे 'अहिणउलं' (अहिनकुलम्) में एकवचनी द्वन्द्व समास साँप और नकुल दोनों के जातिगत स्वाभाविक विरोध को प्रकट करता है—जब कि 'देवासुरं' में एकवचनी द्वन्द्व समास देव और असुरों में मात्र विरोध को ही सूचित करता है।

इसके अतिरिक्त कई बार जब समास में पूर्वपद की विभक्ति का लोप नहीं होता तब वह किसी अर्थविशेष को बताता है; जैसे 'गेहेसूरो' समास मनुष्य को कायरता को सूचित करता है। "तित्थे कागो अत्थि" यह समास विहीन वाक्य कोई खास विशेष अर्थ नहीं बताता। जबकि 'तित्थकाग' (तीर्थकाक) सामासिक वाक्य तीर्थवासी मनुष्य की प्रधमता बतलाता है।

कहीं-कहीं समास में मध्यमपद के लोप होने पर भी उसका अर्थ बराबर सूचित होता रहता है। जैसे 'झसोदर' सामासिक शब्द का अर्थ "मछली के पेट की भाँति पेट है जिसका" ऐसा होता है। वस्तुतः ऐसा अर्थ बताने के लिए 'झसोदरोदर' (झस-मछली, उदर-पेट, उदर-पेट) शब्द प्रयुक्त होना चाहिए जब कि इसके बदले केवल 'झसोदर' शब्द ही उक्त अर्थ को पूर्णरूप से बता देता है। इस समास का ही यह एक चमत्कार है। ऐसे समास को 'मध्यमपद-लोपी' समास कहते हैं। इसके अतिरिक्त समासशैली की विशेषता बताने के लिए 'दंडादंडी' (दण्डादण्डि), केसाकेसी (केशाकेशि), अनुरूव (अणुरूव), जहासत्ति (यथाशक्ति) आदि अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं परन्तु उन सभी उदाहरणों को विस्तारपूर्वक देने का यह स्थान नहीं है।

इस बात का यहाँ विशेष ध्यान रखना चाहिए कि समासों की जो खूबी पण्डिताऊ भाषा में है वह खूबी एक समय की लोकभाषारूप इस प्राकृत भाषा में नहीं। परन्तु जब से यह भाषा भी साहित्यिक भाषा बनी तब से इसके ऊपर भी पण्डितों की भाषा के समासों का प्रभाव पर्याप्त रूप से पड़ा है और इसीलिए यहाँ समासों की थोड़ी चर्चा करना समुचित है।

समास के प्रसिद्ध चार भेद अथवा प्रकार निम्नलिखित हैं: १. दंद (द्वन्द्व), २. तप्पुरिस (तत्पुरुष), ३. बहुव्वीहि (बहुव्रीहि), ४. अव्वईभाव (अव्ययीभाव) । जिन शब्दों का समास किया जाता है उन्हें अलग-अलग कर देने को विग्रह कहते हैं, विग्रह याने अलग करना ।

१. द्वन्द्व समास :—

द्वन्द्व याने जोड़ा (युगल), द्वन्द्व समास के जोड़े में प्रयुक्त दो अथवा दो से भी अधिक शब्दों में कोई मुख्य अथवा गोण नहीं होता अर्थात् द्वन्द्व समास में प्रयुक्त सभी शब्दों की समान मर्यादा है । जैसे :—'माता-पिता', 'सगा-सम्बन्धी' ये दोनों उदाहरण द्वन्द्व समास के है । उसी प्रकार 'पुण्णपावाइं', 'जीवाजीवा', 'सुहदुक्खाइं', 'सुरासुरा' आदि उदाहरण भी द्वन्द्व समास के हैं । द्वन्द्व समास का विग्रह इस प्रकार है :—

पुण्णं च पावं च पुण्णपावाइं ।
जीवा य अजीवा य जीवाजीवा ।
सुहं च दुक्खं च सुहदुक्खाइं ।
सुरा य असुरा य सुरासुरा ।

द्वन्द्व समास द्वारा बने शब्द अधिकतर बहुवचन में प्रचलित हैं । इसी प्रकार 'हत्थपाया' (हस्तपादाः), 'लाहालाहा' (लाभालाभाः), 'सारासारं' (सारासारम्), 'देवदाणवगंधव्वा' (देवदानवगन्धर्वाः) आदि ।

द्वन्द्व समास के विग्रह में य, अ अथवा च प्रयुक्त होता है ।

२. तप्पुरिस समास :—

जिस समास का पूर्वपद अपनी-विभक्ति के सम्बन्ध से उत्तरपद के साथ मिला हुआ हो वह तत्पुरुष समास कहलाता है । इस समास का पूर्वपद द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी विभक्ति तक होता है । पूर्वपद जिस विभक्ति का हो उसी नाम से तत्पुरुष समास कहा जायेगा । जैसेः—

बिईया तप्पुरिस (द्वितीया तत्पुरुष), तईया तप्पुरिस (तृतीया-तत्पुरुष), चउत्थो तप्पुरिस (चतुर्थी तत्पुरुष), पचमी तप्पुरिस (पञ्चमी तत्पुरुष), छट्ठी तप्पुरिस (षष्ठी तत्पुरुष) और सत्तमी तप्पुरिस (सप्तमी तत्पुरुष)।

इन सभी के उदाहरण क्रमश. इस प्रकार हैं।

बिईया तप्पुरिस —

इदिय अतीतो–इदियातीतो। वीर अस्सिओ–वीरस्सिओ (वीराश्रित)।
सुह पत्तो–सुहपत्तो। खण सुहा–खणसुहा (क्षणसुखा)।
दिव गतो–दिवगतो।

तईया तप्पुरिस —

ईसरेण कडे–ईसरकडे (ईश्वरकृत)। मायाए सरिसो–माउसरीसो
दयाए जुत्तो–दयाजुत्तो। कुलेण गुणेण सरिसो–कुलगुणसरिसो।
गुणेहिं संपन्नो–गुणसपन्नो। रूवेण समाणा–रूवसमाणा।
रसेण पुण्ण–रसपुण्ण।

चउत्थो तप्पुरिस —

लोगाय हितो–लोगहितो। बहुजणस्स हितो–बहुजणहितो।
लोगस्स सुहो–लोगसुहो। घमाय कट्ठ–घमकट्ठ।

पचमी तप्पुरिस —

दमणाओ भट्ठो–दंसणभट्ठो। वग्धाओ भय–वग्धभय।
अन्नाणाओ भय–अन्नाणभय। रिणाओ मुत्तो–रिणमुत्तो (मुक्त)।
ससाराओ भीओ–ससारभीओ।

छट्ठी तप्पुरिस —

देवस्स मंदिर–देवमन्दिर। लेहस्स साला–लेहसाला।
कन्नाए मुह–कन्नामुह। विज्जाए ठाण–विज्जाठाण।

नरस्स इंदो–नरिन्दो। समाहिणो ठाणं–समाहिठाणं।
देवस्स इंदो–देविंदो।

सत्तमी तत्पुरिसः—

कलासु कुसलो–कलाकुसलो। जिणेसु उत्तमो–जिणोत्तमो।
वंभणेसु उत्तमो–वंभणोत्तमो। दिएसु उत्तमे–दिओत्तमे
नरेसु सेट्ठो–नरसेट्ठो।

उववय समास (उपपद समास) तत्पुरुष समास के अन्दर ही समाविष्ट हो जाता है। उववय (उपपद) समास में अन्तिम पद कृदन्तसाधित होता है यही इसकी विशेपता है ।

उववय समास के कुछ उदारहण :—

कुंभगार	(कुन्भकार)	भासगार	(भाष्यकार)
सव्वण्णु	(सर्वज्ञ)	निण्णया	(निम्नगा)
पायव	(पादप)	नीयगा	(नीचगा)
कच्छव	(कच्छप)	नम्मया	(नर्मदा)
अहिव	(अधिप)	सगटभि	(स्वकृतभित्)
गिहत्थ	(गृहस्थ)	पावनासग	(पापनाशक)
सुत्तगार	(सूत्रकार)	वुत्तिगार	(वृत्तिकार) आदि।

विशेपण और विशेष्य का समास भी तत्पुरुष के भीतर समा जाता है उसका दूसरा नाम 'कम्मधारय समास' है। उसके उदारहणः—

पीअं च तं वत्थं च–पीअवत्थं।
रत्तो च सो घडो च–रत्तघडो।
गोरो च सो वसभो च–गोरवसभो।
महंतो च सो वीरो च–महावीरो।
वीरो च सो जिणो च–वीरजिणो।

महंतो च सो रायो च–महारायो ।

कण्हो च सो पक्खो च–कण्हपक्खो ।

सुद्धो च सो पक्खो च–सुद्धपक्खो ।

कभी इस समास में दोनों विशेषण भी होते हैं ।

रत्तपीअं वत्थं–(रक्तपीत वस्त्रम्) ।

सीउण्हं जलं–(शीतोष्ण जलम्) ।

कई बार पूर्वपद उपमासूचक होता है ।

चन्दो इव मुहं–चंदमुहं ।

घणो इव सामो–घणसामो ।

वज्ज इव देहो–वज्जदेहो (वज्रदेह.) ।

कई बार अन्तिम पद उपमासूचक होता है ।

मुहं चंदो इव–मुहचदो । जिणो इंदो इव–जिणिंदो ।

कई बार पूर्वपद केवल निश्चयबोधक होता है ।

संजमो एव धणं–संजमधणं ।

तवो चिअ धणं–तवोधणं ।

पुण्णं चेअ पाहेज्जं–पुण्णपाहेज्जं (पुण्यपाथेयम्) ।

कम्मधारय समास का प्रथमपद यदि संख्यासूचक हो तो उसको द्विगुसमास कहते हैं ।

नवण्हं तत्ताणं समाहारो–नवतत्तं ।

चउण्हं कसायाणं समूहो–चउक्कसायं ।

तिण्हं लोआण समूहो–तिलोई ।

तिण्हं लोगाणं समूहो–तिलोग ।

अभाव या निषेधार्थक 'अ' अथवा 'अण' के साथ संज्ञा शब्दों के समास को नतप्पुरिस (नञ् तत्पुरुष) समास कहते हैं । जैसे.—

न लोगो–अलोगो ।   न इट्ठं–अणिट्ठं ।
न देवो–अदेवो ।   न दिट्ठं–अदिट्ठं ।
न आयारो–अणायारो ।   न इत्थी–अणित्थी ।

(जिस शब्द के आदि में स्वर हो वहीं 'अण' का प्रयोग करना चाहिए)।

प, अइ, अव, परि और नि आदि उपसर्गों के साथ संज्ञा शब्दों के समास को पादितप्पुरिस (प्रादि तत्पुरुष) समास कहते हैं।

पगतो आयरियो–पायरियो ।   उग्गओ वेलं–उव्वेलो ।
संगतो अत्थो–समत्थो ।   निग्गओ कासीए–निक्कासि ।
अइक्कंतो पल्लंकं–अइपल्लंको ।

पुणोपवुड्ढो (पुनःप्रवृद्धः), अंतब्भूओ आदि भी इसी प्रकार समझना चाहिए।

३. बहुव्वीहि समास :—

इस समास में दो से भी अधिक पदों का उपयोग होता है। 'बहुव्वीहि' यानी बहुत व्रीहि (चावल) है जिसके पास ऐसा जो कोई हो वह 'बहुव्वीहि' कहलाता है। 'बहुव्वीहि' का जैसा अर्थ है वैसा ही इस समास द्वारा तैयार किये हुए शब्दों का अर्थ भी है। तात्पर्य यह है कि इस समास का पूर्वपद अधिकतर विशेषणरूप अथवा उपमासूचक होता है और प्रथम-पद के पश्चात् आनेवाला पद विशेष्य रूप होता है और समास हो जाने पर जो एक संपूर्ण शब्द तैयार होता है वह भी किसी दूसरे का विशेषण ही होता है। इस समास में प्रयुक्त शब्द प्रधान नहीं होते, परन्तु उनसे पृथक् अन्य कोई अर्थ प्रधान होता है इसलिए इस समास को अन्यपदार्थ-प्रधान समास भी कहते हैं। उपर्युक्त 'बहुव्वीहि' पद का अर्थ ही इस बात को स्पष्ट करता है। जब इस समास में प्रयुक्त शब्द समान विभक्ति वाले हों तो उसे समानाधिकरण बहुव्वीहि समास कहते हैं और जब शब्द

अलग-अलग विभक्ति वाले हों तो उस वहिकरण (व्यधिकरण) बहुव्रीहि कहते हैं।

समानाधिकरण बहुव्रीहि के उदाहरण —

आरूढो वाणरो ज रुक्ख सो आरूढवाणरो रुक्खो (वृक्ष)।
जिआणि इंदियाणि जेण सो जिइंदिया मुणी।
जिओ कामो जेण सो जिअकामो महादेवो।
जिआ परीसहा जेण सो जिअपरीसहो गोयमो।
भट्टो आयारो जस्स सो भट्ठायारो जणो।
नट्ठो मोहो जस्स सो नट्ठोमोहो साहू।
घोर वमचेर जस्स सो घोरवमचेरो जवू।
सम चउरस सठाण जस्स सो समचउरससठाणो–रामो।
कओ अत्थो जस्स सो कयत्थो कण्हो।
आसा अवर जेसि ते आसवरा।
सेय अबर जेसि ते सेयवरा।
महता बाहुणो जस्स सो महाबाहू।
पच वत्ताणि जस्स सो पचवत्तो–सीहो।
चत्तारि मुहाणि जस्स सो चउम्मुहो-वम्हा।
एगो दंतो जस्स सो एगदतो-गणेसो।
वीरा नरा जम्मि गामे सो गामा वीरणरो।
मुत्तो सिंघो जाए सा सुत्तसीहा गुहा।

वधिकरण बहुव्रीहि —

चक्क पाणिम्मि जस्स सो चक्कपाणी।
गडोव करे जस्स सो गडीवकरो अज्जुणो।

उपमान जिसके प्रथम पद में हैं ऐसे बहुव्रीहि के उदाहरण —

मिगनयणाइ इव नयणाणि जाए सा मिगनयणा।

इसी प्रकार कमलनयणा, गजाणणो, हंसगमणा, चंदमुही आदि ।

न वहुव्वीहि :—

न-कार सूचक 'अ' और 'अण' के साथ भी वहुव्वीहि समास होता हैं। जैसे :—

न अत्थि भयं जस्स सो अभयो ।
न अत्थि पुत्तो जस्स सो अपुत्तो ।
न अत्थि नाहो जस्स सो अणाहो ।
न अत्थि पच्छिमो जस्स सो अपच्छिमो ।
न अत्थि उयरं जीए सा अणुयरा ।

स वहुव्वीहि :—

इसी प्रकार सहसूचक 'स' अव्यय के साथ वहुव्वीहि समास होता है ।

पुत्तेण सह सपुत्तो राया ।
सीसेण सह ससीसो आयरियो ।
पुण्णेण सह सपुण्णो लोगो ।
पावेण सह सपावो रक्खसो ।
कम्मणा सह सकम्मो नरो ।
फलेण सह सफलं ।
मूलेण सह समूलं ।
चेलेण सह सचेलं ण्हाणं ।
कलत्तेण सह सकलत्तो नरो ।

प, नि, वि, अव, अइ, परि आदि उपसर्गों के साथ जो वहुव्वीहि समास होता है उसे पादिवहुव्वीहि समास कहते हैं :—

प (पगिट्ठं) पुण्णं जस्स सो पपुण्णो जणो
नि (निग्गया) लज्जा जस्स सो निल्लज्जो
वि (विगओ) धवो जीए सा विधवा
अव (अवगतं) रूवं जस्स सो अवरूवो (अपरूप:)
अइ (अइक्कंतो) मग्गो जेण सो अइमग्गो रहो
परि (परिगतं) जलं जाए सा परिजला परिहा ।

४ अव्ययीभाव समास :—

जब युद्ध, अथवा झगडा बताने के लिए बराबर क्रिया बतानी हो तब इस समास का उपयोग होता है। जैसे भाषा में प्रचलित 'मारा-मारी', 'मुक्का-मुक्की' आदि शब्द इस समास के माने जाते हैं। प्रस्तुत में 'केसाकेसि', 'दण्डादण्डि' आदि शब्द हैं। इस समास में जिन दो शब्दों का समास होता है दोनों शब्द बिलकुल एक जैसे होने चाहिए। यही इसकी विशेषता है 'हत्थ' और 'पाय' ऐसे अलग-अलग शब्दों का यह समास नहीं हो सकता। यह समास अव्यय के समान ही माना जाता है।

इसके अतिरिक्त अव्ययों के साथ भी यह समास होता है।
उव—गुरुणो समीवं उवगुरु।
अणु—भोयणस्स पच्छा अणुभोयणं।
अहि (अधि)—अप्पंसि अतो अज्झप्पं।
जहा—सत्ति अणइक्कमिऊण जहासत्ति।
जहा—विहिं अणइक्कमिऊण जहाविहि।
जहा—जुगय अणइक्कमिऊण जहारिहं
पइ—पुरं पुरं पइ पइपुर।

समास में अधिकतर प्रथम शब्द के अन्तिम स्वर में ह्रस्व हो तो दीर्घ हो जाता है और दीर्घ हो तो ह्रस्व हो जाता है।[1] जैसे—

ह्रस्व को दीर्घ :—

अन्तर्वेदि—अंतावेइ   भुजयन्त्र—भुआयत, भुअयत।
सप्तविंशति—सत्तावीसा   पतिगृह—पईहर, पइहर।
वारिमती—वारीमई, वारिमई। वेणुवन—वेलूवण, वेलुवण।

---

१. दे० प्रा० व्या० ८।१।४।

दीर्घ को ह्रस्व :—

यमुनातट—जंउणयड, जंउणायड

नदीस्रोतस्—नइसोत्त, नईसोत्त

गोरीगृह—गोरिहर, गोरीहर

वधूमुख—वहुमुह, वहूमुह

संस्कृत भाषा में भी समास में ह्रस्व का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व होने का विधान पाणिनिकाल से पाया जाता है—

ह्रस्व का दीर्घ :—

अष्टकपालम्—अष्टाकपालम् ।

अष्टगवम्—अष्टागवम् ।

अष्टपदः—अष्टापदः, इत्यादि ।

दीर्घ का ह्रस्व :—

दर्शनीया + भार्याः—दर्शनीयभार्यः ।

अता + थ्यम्—अतथ्यम् ।

पचन्ती + तरा—पचन्तितरा ।

नर्तकी + रूपा—नर्तकिरूपा ।

स्त्री + तरा—स्त्रितरा, इत्यादि ।

दीर्घका ह्रस्व—देखिए–काशिका ६।३।३४, ६।३।३, ६।३।४४, ६।३।४५।
ह्रस्व का दीर्घ—देखिए–काशिका ६।३।११५ से ६।३।१२२, ६।३।४६।

इसके अतिरिक्त इस समास के और भी बहुत से प्रयोग पण्डितों की भाषा में उपलब्ध होते हैं परन्तु उन सबका यहाँ कोई उपयोग नहीं होने से नहीं दिये गये है। इस प्रकार समासों के विषय में उपयोगिता की दृष्टि से आवश्यकतानुसार स्पष्टता हो जाती है।

वैदिक तथा लौकिक संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत भाषा की तुलना

१ वैदिक संस्कृत और प्राकृत भाषा मे अधिक समानता है। *जिस प्रकार वैदिक संस्कृत के धातुओं मे किसी प्रकार का* गणभेद नहीं है उसी प्रकार प्राकृत भाषा मे भी धातुओं मे गणभेद नहीं है। जैसे :—

पाणिनीय धातुरूप	*वैदिक धातु रूप*	*प्राकृत धातु रूप*
हन्ति	हनति	हनति, हणति
शेते	शयते	सयते, सयए
भिनत्ति	*भेदति*	*भेदति, भेदइ*
म्रियते	मरते	मरते, मरए

—देखिये, वैदिक प्रक्रिया सू० २।४।७३, ३।४।८५, २।४।७६, ३।४।११७, ऋग्वेद पृ० ४७४ महाराष्ट्र संशोधन मण्डल।

२. वैदिक संस्कृत मे और प्राकृत भाषा मे आत्मनेपद तथा परस्मैपद का भेद नहीं है। जैसे :—

पाणि० सं०	वै० सं०	प्रा० भा०
इच्छाति	इच्छति, इच्छते	इच्छति, इच्छते
युध्यते	युध्यति, युध्यते	जुज्झति, जुज्झते

—देखिये, वैदिक प्रक्रिया ३।१।८५।

३ वैदिक संस्कृत के तथा प्राकृत भाषा के क्रियापदों मे अन्य पुरुष का (तृतीय पुरुष का) एक वचन 'ए' प्रत्यय लगाने से पाणि० सं० 'शेते' के स्थान मे वेदों मे शये तथा पाणि० सं० ईष्टे के स्थान मे वेदों मे 'ईशे' क्रियापद होते हैं। इसी

प्रकार प्राकृत भाषा में 'शेते' के स्थान में 'सए' तथा 'ईट्टे' के स्थान में 'ईसे' अथवा -ईसए' प्रयोग होते हैं।

—देखिये, वैदिकप्रक्रिया सू० ७।१।१। तथा ऋग्वेद पृ० ४६८ महाराष्ट्र संशोधन मण्डल।

४. वर्तमानकाल, भूतकाल वगैरह कालों की वेदों में तथा प्राकृत भाषा में कोई नियमिता नहीं है अर्थात् वैदिक क्रियापद में वर्तमान के स्थान में परोक्ष भी होता है— म्रियते के स्थान में ममार—देखिये, वै० प्र० ३।४।६।

इसी प्रकार प्राकृत भाषा में परोक्ष के स्थान में वर्तमान का प्रयोग भी होता है—प० प्रेक्षांचक्रे के स्थान में व० पेच्छइ। प० आवभाषे के स्थान में व० आभासइ तथा व० शृणोति के स्थान में भू० सोहीअ—देखिये, है० व्या० ८।४।४४७।

५. काल के व्यत्यय की तरह वैदिक नामों के रूपों में तथा प्राकृत भाषा के नामों के रूपों में विभक्तियों का भी व्यत्यय होता रहता है। वेदों में और प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति के स्थान में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग विहित है।
—देखिये वै० प्र० सू० २।३।६२ तथा हैम० प्रा० व्या० ८।३।१३१।

वेदों में तृतीया विभक्ति के स्थान में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है —वै० प्र० २।३।६३ तथा है० प्रा० व्या० ८।३।१३४। १३५, १३६, १३७ तथा कच्चायण पालिव्याकरण कारककप्प कां ६, सू० २०, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२।

६. सब प्रकार के विधानों में वैदिक व्याकरण में बहुलम् का व्यवहार होता है। इसी प्रकार प्राकृत भाषा के व्याकरण में सर्वत्र बहुलम् का व्यवहार होता है। देखिये—बहुलं छन्दसि २।४।३९ तथा ७३।

हे० प्रा० व्या० ८।१।२ तथा ३। कच्चायण पालिव्या० नामकप्प-कांड १, सू० १, संधिकप्प कांड ४, सू० ९।

७. वैदिक शब्दों में अन्तिम व्यञ्जन का लोप होता है। इसी प्रकार प्राकृत भाषा में अन्त्यव्यंजन का लोप व्यापक है।

वैदिक रूप :—

पश्चात्—पश्चा, पश्चार्ध—वै० प्र० ५।३।३३।
उच्चात्—उच्चा—तैत्ति० स० २।३।१४।
नीचात्—नीचा—तैत्ति० सं० १।२।१४।
विद्युत्—विद्यु—अन्त्यलोपः छान्दस., ऋग्वेद पृ० ४६६ म० सं० मं०।
युष्मान्—युष्मा—वाज० सं० १।१३।१। शत० ब्रा० १।२।६।
स्यः—स्य—वै० प्र० ६।१।१३३।

प्राकृत रूप :—

तावत्—ताव।
यावत्—जाव।
तमस्—तम।
चेतस्—चेत, इत्यादि।

—देखिए पृ० १२ व्यंजन का परिवर्तन-लोप।

८. वैदिक भाषा में 'स्प' को 'प' हो जाता है। प्राकृतिक भाषा में भी स्प को प हो जाता है।

वै०	प्रा०
स्पृशन्य—पृशन्य।	स्पृहा—पिहा, निस्पृह—निप्पह।
—ऋग्वेद पृ० ४६६ म० स०।	—देखिए, पृ० ५७। पूर्ववर्ती 'स' का लोप।

९. 'र' का लोप :—

वै०	प्रा०
अप्रगल्भ—अपगल्भ	क्रिया—किया
—तै० सं० ४।५।६।१ ।	—देखिए पृ० ५९–परवर्ती 'र' का लोप।

१०. 'य' का लोप :—

वै०	प्रा०	
त्र्यृचः—तृचः	श्याम—साम	—देखिए पृ० ५८–
—वै० प्र० ६।१।३४ ।	व्याघ—वाह	परवर्ती व्यंजन का लोप।

११. 'ह' को 'घ' :—

वै०		प्रा०
सह—सघ सहस्य—सघस्य	वै० प्र० ६।३।९६ ।	इह—इघ
गाह—गाघ वहू—वघू	–निरुक्त पृ० १०१	तायह—तायघ देखिए पृ० ३७—चतुर्थ
शृणुहि–शृणुधि—वै० प्र० ६।४।१०२ ।		नियम का अपवाद।

१२. 'थ' को 'घ' तथा 'घ' का 'थ' :—

वै०	प्रा०
माघव—माथव	नाथ—नाघ
—शत० ब्रा० १।३।३।१०, ११, १७ ।	देखिए पृ० ३७ चतुर्थ नियम का अपवाद।

१३. 'द्य' को 'ज' :—

वै०	प्रा०
द्योतिस्–ज्योतिस्	द्युति–जुति
—अथर्व० सं० ४।३७।१० ।	उद्योत–उज्जोत

;निरुक्त पृ० १०१, १२ । —देखिए पृ० ६६, 'ज' विधान ।

द्योतते–ज्योतते

—निरुक्त पृ० १७०, १६।

अवद्योतयति–अवज्योतयति

—शत०ब्रा० १, २, ३, १६।

द्योतय–ज्योतय

अवद्योत्य–अवज्योत्य

—का० श्रौ० ४।१४।५।

१४. 'ह्' को 'घ' तथा 'भ' :—

वै०	प्रा०
आहुणि–आघृणि।	दाह, दाघ
—निरुक्त पृ० ३८२, ३६।	(प्राकृत में ये दोनों शब्द प्रचलित हैं।)
विदेह–विदेघ।	
—शत० ब्रा० १।३।३, १०।११।१२।	
मेह–मेघ।	विह्वल–विब्भल।
—निरुक्त पृ० १०१,१।	जिह्वा–जिब्भा।
गृहीत–गृभीत। गृहाण–गृभाण्य। जहार–जभार। } वै० प्र० ३।१।८४।	—देखिए पृ० ७२ 'भ' विधान

१५. 'ड' को 'ळ' तथा 'ढ' को 'ळ'.—

वै०	प्रा०
ईडे–ईळे	ईडे, ईले, ईळे।
अहेडमान –अहेळमान.।	अहेळमानो।

दृढ–दृळह ।	दळह ।
सोढा–साळहा ।	सोळहा
—वै० प्र० ६।३।११३ ।	देखिए पृ० ३९, नियम ७ तथा पृ० ४२, ४३ ।

१६. अनादिस्थ 'य' तथा 'व' का लोप :—

वै०	प्रा०
प्रयुग–पउग	प्रयुग–पउग
—वा० सं० १५-९ ।	पृथुज्रवः–इस प्रयोग में 'व' का
'सिव्' धातु का—सीमहि	लोप होकर फिर शेष 'अ' की
—ऋ०वे० पृ० १३५, ३ ।	'य' श्रुति हुई है जैसे लावण्य–
पृथुजवः–पृथुज्रयः	लायण्ण । देखिए—पृ० ३३
—निरुक्त पृ० ३८३, ४० ।	(ख) तथा पृ० ३७ नियम ३ ।

१७. अभूतपूर्व 'र' का आगम :—

अविगु–अध्रिगु ।
—निरुक्त पृ० ३८७, ४३ ।

पृथुजवः–पृथुज्रयः ।	अपभ्रंश-प्राकृत में व्यास का
इन रूपों में अभूतपूर्व 'र'	व्रास तथा चैत्य का चैत्र जैसे
का आगम हो गया है ।	रूपों में अभूतपूर्व 'र' का आगम हो गया है । देखिये—नियम २९ आगम–पृ० ८८ ।

१८. 'क' तथा 'च' का लोप :—

वै०	प्रा०
याचामि–यामि	कचग्रह–कयग्गह
—निरुक्त पृ० १००, २४१ ।	शची–सई
अन्तिक–अन्ति	लोक–लोअ
—ऋग्वेद पृ० ४९६ म० सं० ।	–देखिए पृ. ३३ (ख)

१९. आन्तर अक्षर का लोप —

वै०	प्रा०
शतक्रत्व -शतक्रत्व	राजकुल-राउल
पशवे-पश्वे	प्राकार-पार
—वै०प्र० ७।३।९७।	दुर्गादेवी-दुग्गावी
निविविशिरे-निविविश्रे	आगत-आय
—ऋ० स० ८।१०।११८।	—देखिए पृ० ५४, नियम २६।
आगतः-आताः	
—निरुक्त पृ० १४२ दिशानाम।	

२०. संयुक्त व्यञ्जनों के मध्य मे स्वरों का आगम :—

वै०	प्रा०
तन्वम्-तनुवम्	अर्हन्-अरहत
—तै० आ० ७।२२।१।	लघ्वी-लघुवी
स्वर्ग -सुवर्गः	
—तै० आ० ४।२।३।	
त्र्यम्बकम्-त्रियम्बकम्	आश्चर्य-अच्छरिय
—वै०प्र० ६।४।८६।	
विभ्वम्-विभुवम्	तन्वी-तणुवी
सुध्यो-सुधियो	अर्हन्-अरिहत
रात्र्या-रात्रिया	क्रिया-किरिया
सहस्र्य -सहस्रियः	दिष्ट्या-दिट्ठिआ
—यजु०वे०।	
तुग्र्यासु-तुग्रियासु	भव्य-भविय
—वै० प्र० ४।४।११५।	—देखिए पृ० ७३ नियम १६ तथा पृ० ८६ आगम।

२१. 'ऋ' को 'र' तथा 'उ' :—

वै०	प्रा०
ऋजिष्टम्–रजिष्टम्	ऋद्धि–रिद्धि
—वै० प्र० ६।४।१६२ ।	
वृन्द–वुन्द	वृन्द–वुन्द
—निरुक्त पृ० ५३२,अं० १२८ ।	
तृ–ततुरिः	ऋषभ–उसभ
	ऋतु–उतु
गृ–जगुरिः	वृद्ध–वुड्ढ
—वै०प्र० ७।१।१०३।	
वृणीत–वुरीत	—देखिए पृ० १४,१५ नियम–८,६।
—शु०य०सं० पृ० ६२ मंत्र ८।	तथा पृ० २७, २८ 'ऋ' का
कृत–कुट	परिवर्तन ।
—निरुक्त पृ० ४२२, ७० ।	

२२. 'द' को 'ड' :—

वै०	प्रा०
दुर्दभ–दूडभ	दण्ड–डंड
—वा० सं० ३,३६ ।	दंभ–डंभ
पुरोदाश–पुरोडाश	—देखिए—पृ० ४८ नियम ११
—शु० प्रा० ३।४४ ।	'द' का परिवर्तन ।
वै० प्र० ३।२।६१ ।	

२३. 'अव' को 'ओ' तथा 'अय' को ए :—

वै०	प्रा०
श्रवणा–श्रोणा	अवहसित–ओहसित
—तै०ब्रा० १.५–१.४; ५.२.६ ।	

	नयति–नेति
अन्तरयति–अन्तरति	कयल–केल
—शत० ब्रा० १.२–३ १८,	अयस्कार–एक्कार
४ २०, ३.१.१६ ।	–देखिए पृ० ८२ नियम २७ ।

२४ सयुक्त के पूर्व का ह्रस्व —

वै०	प्रा०
रोदसीप्रा–रोदसिप्रा	तीर्थ–तित्थ
—ऋग्० स० १०.८८.१० ।	ताम्र–तंब
अमात्र–अमत्र	–देखिए पृ०–१२ (२)।
ऋ० स० ३.३६ ४।	

२५. 'क्ष' को 'छ' —

वै०	प्रा०
अक्ष–अच्छ	अक्षि–अच्छि
—अथ० स० ३ ४.३ ।	अक्ष–अच्छ
	–देखिए पृ० ६४
	नियम ४–'छ' विधान

२६. अनुस्वार के पूर्व के दीर्घ का ह्रस्व :—

वै०	प्रा०
युवाम्–युवम्	मास–मस
—ऋ०स० ११२५-६ ।	मालाम्–माल

२७ विसर्ग का 'ओ' :—

वै०	प्रा०
स चित्—सो चित् ।	देव अस्ति—देवो अत्थि ।
—ऋ० वै० पृ० १११२ म० स० ।	पुन. एति—पुणो एति ।

संवत्सरः अजायत—संवत्सरो अजायत
—ऋ० सं० १-१९१-१०-११।
आपः अस्मान्—आपो अस्मान्
—वै० प्र० ६।१।११७

इत्यादि। देखिए पृ० ६१
अः को ओ।

२८. ह्रस्व को दीर्घ तथा दीर्घ को ह्रस्व :—

वै०	प्रा०
एव, एवा	अहव, अहवा (अथवा)
अच्छ, अच्छा	एव, एवा (एव)
—वै० प्र० ६।३।१३६।	जह, जहा (यथा)
घ, घा,	तह, तहा (तथा)
मक्षु, मक्षू	चतुरन्त—चाउरंत
कु, कू	
अत्र, अत्रा	परकीय—पारक्क
यत्र, यत्रा	—देखिये पृ० १६ तथा पृ० २०।
तु, तू	विश्वास—वीसास
नु, नू	मनुष्य—मणूस
पुरुष, पूरुष	—देखिए पृ० ११।
—वै० प्र० ६।३।११३ तथा १३७।	
दुर्दभ, दूदभ	
दुर्लभ, दूळभ	
—वा० सं० ३। ३६। ऋ० सं० ४।९।८।	
दुर्णाश, दूणाश।	
—शु० प्रा० ३।४३।	

२९. अक्षरों का व्यत्यय :—

वै०	प्रा०
निसृकर्त्य—निष्टर्क्य।	आलान—आणाल।

—वै०प्र० ३।१।१२३।
कर्तु—तर्कु ।
—निरुक्त पृ० १०१-१३।
नमसा—मनसा ।
—ऋग्वेद पृ० ४८६ म०स०।
तड्वक—कड्वत ।
"तकतेर्गत्यर्थस्य वर्णव्यत्ययेन कड्वत इति"
—ऋग्वेद पृ० ११०६ म० स०।

महाराष्ट्र—मरहट्ठ ।
वाराणसी—वाणारसी ।
—देखिए पृ० ८८ अक्षरों का व्यत्यय ।

३०. हेत्वर्थ कृदन्त के प्रत्यय में समानता —

वै०

कर्तुम्—कर्तवे ।
—वै० प्र० ३।४।९
वै०प्र० ३।४।९ सूत्र में 'स', 'सेन्' और 'असे' प्रत्ययों का विधान 'तुम्' के स्थान में किया गया है।
इस नियम से 'इ' धातु का 'एसे' (एतुम्) रूप होगा।

प्रा०

कत्तवे, कातवे, कत्तिए ।
गणेतुये, दक्खितायें
नेतवे, निधातवे

एसे
—देखिए पालिप्र० सकीर्णक० कु० पृ० २५८ ।

३१. (क) क्रियापद के प्रत्ययों में समानता :—

वै०

अन्यपुरुष बहुवचन—दुह्+रे=दुह्रे।
—वै०प्र० ७।१।८।

प्रा०

अन्यपुरुष के बहुवचन में 'रे' और 'इरे' प्रत्यय का भी व्यवहार होता है।
गच्छ—गच्छरे, गच्छिरे ।
—हे०प्रा०व्या० ८।३।१४२ तथा पा० प्र० पृ० १७१ ।

(ख) आज्ञार्थसूचक 'इ' प्रत्यय :—

वै०	प्रा०
बोध् + इ = बोधि ।	बोध् + इ = बोधि, बोहि ।
	सुमर्—इ = सुमरि ।
	—देखिये हे० प्रा० व्या० ८।४।३७ ।

३२. संज्ञा शब्दों के रूपों में प्रत्ययों की समानता :—

वै०	प्रा०
देवेभिः	देवेभि, देवेहि ।
—वै० प्र० ७।१।१० ।	
पतिना	पतिना ।
—वै०प्र० १।४।६ ।	
गोनाम्	गोनं, गुन्नं ।
—वै० प्र० ७।१।५७ ।	
युष्मे	तुम्हे ।
अस्मे	अम्हे ।
—वै० प्र० ७।१।३९ ।	
त्रीणाम्	तिन्नं, तिण्हं ।
—वै० प्र० ७।१।५३ ।	
नावया	नावाय, नावाए ।
—वै० प्र० ७।१।३९ ।	
इतरम्	इतरं
—वै प्र० ७।१।२६ ।	
वाह + अन = वाहनः	वाहणओ, वोल्लणआ
('कर्ता' सूचक 'अन' प्रत्यय)	इत्यादि ।
—वै० प्र० ३।२।६५,६६ ।	

३३. अनुस्वारलोप :—

वै०	प्रा०
मास—मास	मास–मास, मस
—वैदिकग्रामर	–देखिए पृ० ६२
कंडिका ८३–१	नियम २१

३४ भूतकाल में आदि मे 'अ' का अभाव —

वै०	प्रा०
अमथ्नात्–मथीत्	मथीअ
अरुजन्–रुजन्	रुजीअ
अभूत्–भूत्	भवीअ

—ऋ० वै० पृ० ४६४,४६५ म० स० ।

३५ इकारांत शब्द के प्रथमा विभक्ति का बहुवचन :—

वै०	प्रा०
अग्निणः	हरिणो

तृजन्तस्य 'अत्तृ' शब्दस्य (प्रथमा बहुवचन)
जस छान्दस 'इनुड्' आगम ।
ऋ० वै० पृ० ११३–५ सूत्र मेवम०

३६. 'कृ' का तथा 'जि' धातु का रूप :—

वै०	प्रा०
कृणोनि	कुणति—हे० प्रा० व्या० ८।४।६५ ।
जेष	जिणइ—हे० प्रा० व्या० ८।४।२४१ ।

–ऋ० वै० पृ० २२६–२२७ ।
तथा पृ० ४६५ ।

३७. अकारांत शब्द में लगनेवाला प्रत्यय ईकारान्त में भी लगता है :—

वै०	प्रा०
नद्यैः —वै० प्र० ७।१।१०। पाणि० काशिका ।	नदीहि—हे० प्रा० व्या० ८।३।१२४
इस रूपमें अकारान्त मे लगनेवाला प्रत्यय ईकारांत मे भी लगा है ।	प्राकृत में अकारान्त में लगने वाले प्रत्यय ईकारांत में भी लगते है ।

द्विवचन का रूप वहुवचन के समान :—

वै०	प्रा०
दैवा उमा वेनन्ता —ऋग्वेद पृ० १३६–६। इन्द्रावरुणा —ऋ० सं० ७।८२।१।४ ।	प्राकृतभाषा में द्विवचन होता ही नहीं है । द्विवचन के सव रूप वहुवचन के समान होते है—"द्विवचनस्य वहुवचनम्" —हे० प्रा० व्या० ८।३।१३०
मित्रावरुणा या दिविस्पृशा अश्विना —वै० प्र० ७।१।३९ ।	हत्था पाया थणया नयणा, इत्यादि ।

तृण्या—'आकारः छन्दसि द्विवचनादेशः' —तन्त्रवार्तिक पृ० १५७, आनन्दाश्रम ।

३८. विभक्तिरहित प्रयोग :—

वै०		प्रा०
आर्द्रे चर्मन् लोहिते चर्मन् परमे व्योमन्	सप्तमी का अप्रयोग ।	प्राकृत भाषा में भी अनेक प्रयोग विभक्तिरहित ही पाये जाते हैं ।
—वै० प्र० ७।१।३९ ।		गय–षष्ठी का बहुवचन
बीळु दळ्हा अभिज्ञु	द्वितीया का अप्रयोग ।	बहुगत– " " इत्यादि ।
—ऋ०वे० पृ० ४६४ तथा ४७२ म० स० ।		

३९. समान अर्थयुक्त अव्यय —

वै०	प्रा०
कुह (कुत्र)	कुह (कुत्र)
न (उपमासूचक)	णं (उपमासूचक)
—ऋ०वे० पृ० ७३३ म० सं० ; तथा निरुक्त पृ० २२० ; तथा ऋ० वे० पृ० ४६०-४६२- ५२८ म० सं० ।	
दिवेदिवे	दिविदिवि –हे०प्रा०व्या० ८।४।२९९ ।

४०. संधि का विकल्प :—

वै०	प्रा०
ईषा + अक्षो	पदयोसन्धिर्वा
ज्या + इयम्	–हे० प्रा० व्या० ८।१।५ ।
पूषा + अविष्टु	
—वै०प्र० ६।१।१२६ ।	

संस्कृत और प्राकृत में स्वरों का समान परिवर्तन[1]

१. 'अ' का लोप :—

सं०	प्रा०
अलावू, लावू ।	देखिए–पृ० १९ 'अ' का लोप ।

२. 'अ' को 'आ :—

पति–पाति ।	देखिए–पृ० १७ नि० १ ।

३. 'अ' को 'इ' :—

कन्दुक, गिन्दुक ।	देखिए–पृ० १७ 'अ' को 'इ' ।

४. 'आ' को 'अ' :—

कुमार, कुमर फाल, फल कलाञ्ज, कलञ्ज	देखिए–पृ० १३ नि० ३ ।

५. 'इ' को 'अ' :—

सं०	प्रा०
पेटिक, पेटक	देखिए–पृ० २१ नि० ३ ।

६. 'इ' को 'ए' :—

सं०	प्रा०
मुहिर, मुहेर गिन्दुक, गेन्दुक	देखिए–पृ० २२ 'इ' को 'ए' ।

---

१. अर्थात् वैयाकरण जिसको अवैदिक संस्कृत कहते हैं ऐसी प्राचीन पुरोहितों की पंडिताऊ संस्कृतभाषा के शब्दों के साथ भी प्राकृतभाषा के शब्दों की तुलना ।

७. 'ई' को 'ए' :—

सं०	प्रा०
पीयूष, पेयूष	देखिए–पृ० २४ 'ई' को 'ए'।

८. 'ऋ' को 'रि' —

सं०	प्रा०
ऋज, रिज	देखिए–पृ० १५ नि० (ह)।

९. 'ऋ' को 'लृ' :—

सं०	प्रा०
ऋफिड, लृफिड	प्राकृत में भी 'र' का 'ल' होता है।—देखिए पृ० ५२ 'र' का परिवर्तन

(१०) 'औ' को 'उ' :—

सं०	प्रा०
कौतुक, कुतुक। कौङ्कण, कुङ्कण।	देखिये, पृ० ३२ 'औ' को 'उ'।

संस्कृत तथा प्राकृत में व्यंजनों का समान परिवर्तन

१. अन्त्यव्यजन का लोपः—

सं०	प्रा०
धामन्, धाम	
महस्, मह	
तमस्, तम	
सोमन्, सोम	देखिये, पृ० ३२ नि० (क)।
रोचिस्, रोचि	
शोचिस्, शोचि	
चर्मन, चर्म	
शवस्, शव	
होमन, होम	
तपस्, तप	

२. 'क' को 'ग' :—

सं०	प्रा०
दक, दग	
कन्दुक, गिन्दुक	देखिये, पृ० ४४ 'क' को 'ग'।
द्रकट, द्रगड	
काश्मरी, गम्भारी	

३. 'ख' को 'ह्' :—

मुखल, मुहल (मुसल)	देखिये, पृ० ३७ नि० ४।

४. 'घ' को ह् :—

घस्र, हस्र	देखिए ,, ,, ,,

५. 'द्' को ज :—

जम्पती, दम्पती (प्राचीन शब्द)। देखिए पा० प्र० पृ० ५७ ज-द तथा पृ० ६६ 'ज' विधान।

६. 'ट' को 'ड' :—

तटाक, तडाक	
पेटा, पेडा	देखिए पृ० ३९, नि० ५।
कुटी, कुडी	

७. 'ड' को 'ल' :—

जड, जल	
विडाल, विलाल	
कडत्र, कलत्र	देखिए पृ० ३९, नि० ९।
नाडी, नाली	
कडेवर, कलेवर	
वडिश, वलिश	
वाडिश, वालिश	
दुडि, दुलि	
ताडक, तालक	

८. 'ण' को 'ळ' :—
श्लेष्मण, श्लेष्मल — देखिए पृ० ४६ नि० ८।

९. 'त' को 'ट' :—
विकृत, विकट (प्राचीन शब्द) — देखिए पृ० ४६ नि० ६।

१०. 'त' को 'थ' :—
पोती, पोथी — देखिए पा० प्र० पृ० ५६ त-थ।

११. 'त' को 'र' :—
प्रतिदान, परिदान — देखिए पृ० ४७ 'त' को 'र'।

१२. 'थ' को 'ध' :—
मथुरा, मधुरा — देखिए पृ० ३७ नि० ४-अपवाद।

१३. 'द' को 'त' :—
बादाम, बाताम — देखिए पृ० ३५, पैशाची तथा पालि।
राजादन, राजातन

१४. 'प' को 'ब' :—
तम्पा, तम्बा — देखिये पृ० ४६ 'प' का परिवर्त्तन।

१५. 'प' को 'व' :—
कपाट, कवाट — देखिए पृ० ४० नि० १०।
जपा, जवा
पारापत, पारावत
लिपि, लिवि

१६. 'भ' को 'व' :—
करम्भ, करम्व — दे० पृ० ५० 'भ' का परिवर्तन।

१७. 'म' को 'व' :—
श्रमण, श्रवण — दे० पृ० ५० 'म' का परिवर्तन।

१८. 'य' को 'ज' :—

यमन, जमन

यानि, जानि — दे० पृ० ४१ नि० १३।

यातु, जातु

यातुधान, जातुधान

१९. 'र' को 'ल' :—

पुरुष, पुलुष

तरुण, तलुन

क्षुधारु, क्षुधालु — दे० पृ० ५३ 'र' का परिवर्तन।

शीतारु, शीतालु

राक्षा, लाक्षा

रोम, लोम

चरण, चलन

ऋफिड, ऋफिल

२०. 'व' को 'ब' :—

द्वार, बार — प्राकृत भाषा में व और ब समान माने जाते हैं। दे० पृ० ४१ नियम १२।

२१. 'व' को 'म'

द्रविड, द्रमिड — दे० पृ० ४० 'व' का परिवर्तन।

यवनी, यमनी

२२. 'श' को 'स' :—

शूर्प, सूर्प (प्राचीन शब्द)

काशी, कासी

शाक, साक — दे० पृ० ४३ नि० १४।

शर्करा, सर्करा

शुभ, सुभ
शची, सची
शर्वरी, सर्वरी

२३. 'ष' को 'श' :—
अभीषु, अभीशु — दे० पृ० ४३ मागधी ष-श।
वेष्या, वेश्या

२४. 'ष' को 'स' :—
वृषो, वृसो
चाष, चास — दे० पृ० ४३ नि० १४।
मषी, मसी

२५. 'स' को 'श' —
सूरि, शूरि
स्याल, श्याल — दे० पृ० ४३ मागधी स-श।
अस्र, अश्रु
दासी, दाशी

२६. 'हृ' को 'घ' :—
अंह्रि, अङ्घ्रि — दे० पृ० ४३ नि० १५।

संयुक्त व्यंजन का परिवर्तन

१. 'क' का 'लोप' :—
योक्त्र, योत्र — देखिए पृ० ५६ लोपविधान।

२ 'द' का 'लोप' —
कुद्दाल, कुदाल — दे० पृ० ५७ लोपविधान।

३ 'य' का 'लोप' —
श्याली, शाली

मत्स्य, मत्स — दे० पृ० ५७ परवर्ती व्यंजन का लोप।
तूर्य, तूर
चैत्य, चैत्र

४. 'र' का 'लोप' :—

कुर्कुट, कुक्कुर — दे० पृ० ५६ लोपविधान।
कुर्कुर, कुक्कुर
वप्र, वप्प (वाप = पिता)
द्राढिका, दाढिका
प्रियाल, पियाल

५. 'ल' का लोप :—

झल्लरी, झलरी — दे० पृ० ५६ लोपविधान।

६. 'व' का 'लोप' :—

ऊर्ध्व, ऊर्ध — दे० पृ० ५८ लोपविधान।

७. 'स' का 'लोप' :—

स्तूप, तूप — दे० पृ० ५७ लोपविधान।

८. 'अनुस्वार का 'लोप' :—

अम्बा, अब्बा — दे० पृ० ९७ नि० २१ तथा पा० प्र० पृ० ८२ नि० २५।

९. स्वर का लोप तथा स्वरसहित मध्यस्थित व्यंजन का लोप :—

रसना, रस्ना
वासर, वास्र
भगिनी, भग्नी
उदुम्बर, उम्बुरक, उम्बर — दे० पृ० ५४ नि० २६।

सुदत्त, सुत्त
आदत्त, आत्त
प्रदत्त, प्रत्त
वहनी, वेणी

१०. 'अनुस्वार' का 'आगम' :—
मद्र, मन्द्र — दे० पृ० ८७ अनुस्वार का आगम।
अत्तिका, अन्तिका
लक्षण, लाञ्छन

११. र्थ, र्भ, म्र, र्ष और ह्र इन संयुक्तव्यंजनों के बीच में अकार तथा इकार का आगम :—
मनोऽर्थ, मनोरथ
कम्र, कमर
गर्भ, गरभ — दे० पृ० ८६ आगम।
हर्ष, हरिष
वर्षा, वरिषा
वर्ष, वरिष
पर्षत्, परिषत्
दह्र, दहर

१२. 'क्ष' को 'ख' :—
क्षुल्लक, खुल्लक — दे० पृ० ६२ खविधान।
क्षुर, खुर
पक्ष, पुङ्ख

१३. 'क्ष' को 'च्छ' :—
पक्ष, पिच्छ — दे० पृ० ६४ नि० ४।
क्षुरी, छुरी
कक्ष, कच्छ

१४. 'त्त' को 'ट्ट' :—

पत्तन, पट्टण — दे० पृ० ६७ नि० ७।

१५. 'र्त' को 'ट' :—

कर्तक, कण्टक — दे० पृ० ५७ नि० ७।

१६. 'त्स' को 'च्छ' :—

मत्स, मच्छ — दे० पृ० ६५ नि० ४।

गुत्स, गुच्छ

१७. 'र' को 'ल' :—

ह्रीका, ह्लीका

प्रवङ्ग, प्लवङ्ग — दे० पृ० ५२ 'र' का परिवर्तन।

१८. 'श्च' को 'च्छ' :—

पश्च, पुच्छ अथवा पिच्छ — दे० पृ० ६५ नि० ४।

१९. 'श्म' को 'म्भ' :—

काश्मरी, कम्भारी — दे० पृ० ७२ नि० १४— ग्रीष्म, गिम्ह, गिम्भ।

२०. 'ष्ट्र' को 'ढ' :—

दंष्ट्रिका, दाढिका — दे० पृ० ६३ शब्दों में विविध परिवर्तन।

२१. 'र' का 'आगम' :—

पामर, प्रामर — दे० पृ० ८७ नि० २६

चैत्य, चैत्र

दाढिका, द्राढिका

२२. 'अयू' को 'ओ' :—

मयूर, मोर — दे० पृ० ८२ शब्दों में विशेष परिवर्तन नि० २७— मयूख—मोह।

२३. 'एक ही शब्द के विविध उदाहरण :—

चन्द्र, चन्द, चन्दिर।
विकृस्त, विकस्त, विक्रस्त।
हट्ट, अट्ट।
मुसल, मुपल।
बुक्कस, पुक्कस, पुल्कस।
तविश, तविष, ताविष।
वनीपक, वनीयक, वनवक।
खोट, खोड, खोर।
वराणसी, वाराणसी, बाणारसी।
हण्डे, हञ्जे।
सुवासिनी, स्ववासिनी।
मौक्तिक, मुकुतिक, मकुतिक।
मस्तक, मस्तिक।
अषाढ, आषाढ।
एतश, ऐतश।
बिडोजा, बिडौजा।
निघण्टु, निर्घण्टु।
नेतृ, नेत्र।
दिवोका, दिवौका।

यहाँ जो संस्कृत के ये शब्द दिये गए हैं उन सबका उल्लेख प्राचीन संस्कृत कोशों में है। देखिए, अमरकोश, हेमचन्द्र अभिधान-नाममाला-कोश, पुरुषोत्तमदेवप्रणीत द्विरूपकोश, शब्दरत्नाकरकोश, शब्दकल्पद्रु-कोश इत्यादि।

विविध परिवर्तनयुक्त वैदिकशब्द तथा संस्कृत के शब्द इसलिए यहाँ दरसाये गए हैं कि इन शब्दों के तथा उनमें हुए परिवर्तनों के साथ

प्राकृतभाषा के शब्द तथा उनके परिवर्तन कितनी अधिक समानता रखते हैं। इससे यह भी फलित होता है कि वैदिक संस्कृत, पुरोहितों की संस्कृत तथा प्राकृतभाषा—ये तीनों भाषाएँ अंग्रेजी, गुजराती, उड़िया भाषा की तरह सर्वथा स्वतंत्र रूप से नहीं है परन्तु भाषा तो एक ही है मात्र उच्चारण का तथा उनकी शैली का ही इसमें भेद है। जैसे; दिल्ली की हिन्दी, अजमेर—मेवाड़ की हिन्दी और साक्षरी हिन्दी—इन तीनों हिन्दी भाषाओं में कोई भेद नहीं है परंतु उनमें बोलने की शैली तथा उच्चारणों का ही भेद है।

वाक्यपदीयकार श्रीभर्तृहरि ने कहा है कि

यद् एकं प्रक्रियाभेदैर्वहुधा प्रविभज्यते।
तद् व्याकरणमागम्य परं ब्रह्माधिगम्यते ॥ २२ ॥

—वाक्यपदीय प्रथम खंड.

एक दूसरी स्पष्टता—

आजकल एक ऐसी कल्पना प्रचलित है कि प्राकृतभाषा नीचों की भाषा है, स्त्रियों की और शूद्रों की भाषा है परन्तु पंडितों की भाषा नहीं।

सचमुच यह कल्पना सच होती तो प्रवरसेन, वाक्पति, शालिवाहन, राजशेखर जैसे धुरंधर वैदिक पांडतों ने इस भाषा में सुंदर से सुंदर काव्य ग्रन्थ न लिखे होते तथा वररुचि, भामह, वाल्मीकि, लक्ष्मीधर, क्रमदीश्वर, मार्कंडेय कात्यायन, सिंहराज इत्यादि वैदिक पंडितों ने इस भाषा के विविध व्याकरण ग्रंथ भी न लिखे होते। सच तो वात यह है कि प्राकृत भाषा आमजनता की भाषा रही इसी कारण इस भाषा का उपयोग सव लोग करते रहे और पंडित लोग भी अपने वच्चों के साथ तथा वृद्ध माता-पिता और अपठित पत्नियों के साथ इसी भाषा से व्यवहार करते रहे, केवल यज्ञादिक विधियों में तथा शास्त्रार्थ-सभा में पुरोहित पंडित प्रचलित भाषा को ही अपने ढंग के उच्चारणों द्वारा वोलते थे और उन्होंने

ही उसे संस्कृत नाम रख दिया, महर्षि पणिनि तथा महर्षि भाष्यकार पतंजलि ने तो भाषा का नाम 'संस्कृत' कहा ही नहीं परन्तु केवल भाष्यकार ने ही लौकिक शब्दो के अनुशासन की बात कही है उससे मालूम होता है कि भाष्यकार को भाषा का नाम 'लौकिक' अभिप्रेत था, न कि संस्कृत।

इसके अतिरिक्त अमरकोश, वैजयन्तीकोश, मखकोश, धनंजयकोश इत्यादि कोशकारों ने भी अपने-अपने कोशो में भी 'संस्कृत शब्दो का कोश करते है' ऐसा कहीं भी नहीं दरसाया है। अमरकोश में कहा है कि 'संस्कृत' शब्द के दो अर्थ है—१. कृत्रिम, २. लक्षणोपेत—शास्त्र के अनुशासनसहित अर्थात् शास्त्र द्वारा व्यवस्थित . "संस्कृतम् । कृत्रिमे लक्षणोपेते" कां० ३, नानार्थवर्ग श्लो० १२५४ अभिधान संग्रह-निर्णय-सागर, सन् १८८९ का संस्करण।

पाठमाला—वाक्यरचना विभाग

पहला पाठ

वर्तमानकाल

एकवचन के पुरुषबोधक[1] प्रत्यय

१. पुरुष—मैं मि[2], ए[3]
२. पुरुष—तू सि[4], से[5]
३. पुरुष—वह ति, ते[5]
इ, ए[5]

धातु—

हरिस्[6] (हर्ष्) हर्ष होना, प्रसन्न होना
घरिस् (घर्ष्) घसना, घंसना, घुसना, घृष्ट होना

---

१. पुरुष याने कर्ता अथवा कर्म, ये प्रत्यय जब प्रयोग 'कर्तरि' होगा तब कर्ता को सूचित करते हैं और जब प्रयोग 'कर्मणि' होगा तब कर्म को सूचित करते हैं—क्रियापद के साथ जिसका सम्बन्ध सीधा हो—समानाधिकरणरूप हो उसका नाम पुरुष—देक्खामि—मैं देखता हूँ अथवा देक्खिज्जामि—उनसे मैं दीख पड़ता हूँ, 'देक्खामि' का 'मैं' के साथ सीधा सम्बन्ध है और 'मैं' कर्ता है, तथा देक्खिज्जामि का भी मैं के साथ सीधा सम्बन्ध है, देक्खिज्जामि का कर्म 'मैं' है पर कर्ता तो 'उनसे' है अर्थात् तृतीयपुरुष है (हे० प्रा० व्या० ८।३।१४१, १४०, १३९)।

---

२. पालि के प्रत्यय— शौरसेनी के प्रत्यय— मागधी के प्रत्यय— अपभ्रंश के प्रत्यय— संस्कृत के प्रत्यय—

पालि के प्रत्यय—	शौरसेनी के प्रत्यय—	मागधी के प्रत्यय—	अपभ्रंश के प्रत्यय—	संस्कृत के प्रत्यय—
१. मि, ए	मि, ए	मि, ए,	उ, मि	मि, ए
२. सि, से	सि, से	शि, शे	हि, सि, से	सि, से
३. ति, ते	दि, दे	दि, दे	दि, दे, इ, ए	ति, ते

३. *प्रथमपुरुष के एकवचन के इस 'ए' प्रत्यय का प्रयोग विरल होता है—प्राचीन प्राकृत में—आर्ष प्राकृत में—प्राय होता है—*
वन्दे उसभ अजिअ "चतुर्विंशतिस्तव–लोगस्स" सूत्र द्वितीय गाथा।

४. संस्कृत के समान पालि भाषा में धातुओं का गणभेद है तथा आत्मनेपद और परस्मैपद के प्रत्यय भी जुदा-जुदा है (देखो पा० प्र० पृ० १७१ *आख्यातकल्प) परन्तु प्राकृतभाषा में वैसा गणभेद नहीं है तथा* आत्मनेपद के और परस्मैपद के प्रत्यय भी जुदे-जुदे नहीं है परन्तु इन्हीं प्रत्ययों के अन्तर्गत दोनों पदों के प्रत्यय बता दिए हैं। जब शौरसेनी, मागधी, पैशाची, अपभ्रंश में इन प्रत्ययों का उपयोग करना *हो तब उस उस भाषा के अक्षरपरिवर्तन के नियम लगाकर करना चाहिए, शौरसेनी वगैरह भाषा के प्रत्यय दूसरे टिप्पण में बता दिए* है, पैशाची के प्रत्यय प्राकृत के समान हैं अत नहीं बताए हैं।

शौरसेनी रूप प्राकृत के समान हैं परन्तु तृतीयपुरुष में 'हसदि, हसदे' दो रूप होते हैं।

मागधी रूप शौरसेनी के समान हैं परन्तु 'हस्' के स्थान में 'हश्' होगा।

पैशाची रूप प्राकृत के समान हैं।

अपभ्रंश रूप— १ हसउ, हसमि।
२ हसहि, हससि, हससे।
३ हसदि, हसदे, हसइ, हसए।

वरिस्[७] (वर्प्) वरसना, वरसात, होना

करिस् (कर्प्) काढ़ना, खींचना

मरिस् (मर्प्) सहन करना, क्षमा रखना

घरिस् (घर्प्) घिसना

तुरिय् (तूर्य्) त्वरा करना, उतावला करना, जलदी करना

अरिह् (अर्ह्) पूजना, अर्घना

पुरिय् (पूर्य्) पूरना, पूर्ण करना, भरना

मरिस् (मर्श्) विचारना, विचार-विमर्श करना

गरिह् (गर्ह्) गर्हणा करना, निंदा करना

जेम् (जेम्) जीमना, भोजन करना

देक्ख (दृश्) देखना, जोहना, आंखों से देखना

पुच्छ् (पृच्छ्) पूछना, प्रश्न करना

पूर् (पूर्) पूरा करना, भरना

कर् (कर्) करना, वनाना

वंद्, वन्द् (वन्द्) वंदन करना, नमस्कार करना

पत्, पड् (पत्) पड़ना, गिरना।

---

५. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४५। जब धातु के अन्त में 'अ' हो तब ही से, ते और ए प्रत्यय लगते हैं, 'अ' न हो तो ये प्रत्यय नहीं लगते— ठा धातु से ठासे, ठाते, ठाए रूप नहीं होंगे परन्तु ठासि, ठाति और ठाइ रूप ही वनेंगे।

६. देखिए पृ० ८६ आगम।

७. ( ) इस निशान में दिये हुए सब शब्द (धातु वा संज्ञा शब्द) संस्कृत भाषा के हैं और मात्र तुलना के लिए वताए हैं। वताए हुए धातु वा संज्ञा शब्द का शौरसेनी, मागधी, पैशाची में प्रयोग करना हो तव उन धातुओं में व संज्ञा शब्दों में उस उस भाषा के अक्षरपरिवर्तन का नियम लगाना जरूरी है।

नियम

१. मि, ति, न्ति आदि प्रत्ययों को लगाने के पूर्व मूल धातुओं के अन्त मे विकरण 'अ' का प्रयोग होता है।[1] जैसे—
   वन्द् + ति–वन्द् + अ + ति = वदति।
   पुच्छ् + ति–पुच्छ् + अ + ति = पुच्छति।

२. प्रथमपुरुष के मकारादि प्रत्ययों के पूर्व आनेवाले 'अ' विकरण का विकल्प से 'आ' होता है।[2] जैसे:—
   वद् + अ + मि = वदामि, वदमि।
   पड् + अ + मि = पडामि, पडमि।

३. पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने के बाद धातु के अग 'अ' का विकल्प से 'ए' हो जाता है।[3] जैसे —
   वद् + अ + इ = वदेइ, वदइ, [4]वन्दए, वन्देए।
   जाण् + अ + सि = जाणेसि, जाणसि, [4]जाणसे, जणेसे।
   पुच्छ् + अ + मि = पुच्छेमि, पुच्छामि, पुच्छमि।

रूपाख्यान

१.	देक्खमि	देक्खामि	देक्खेमि।
२.	[4]देक्खसि	देक्खेसि	देक्खसे, देक्खेसे।
३	[4]देक्खइ	देक्खेइ	देक्खए, देक्खेए।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२३९। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५४-१५५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५८। ४. देखिए पृ० १४० टिप्पण ७। शौरसेनी रूप—२. देक्खशि, देक्खेशि, देक्खशे, देक्खेशे। ३. देक्खदि, देक्खेदि, देक्खदे, देक्खेदे। मगधी रूप—शौरसेनी की तरह समझ लें।

ठीक इसी प्रकार शौरसेनी, मागधी तथा अपभ्रंश के रूप भी वना लेने चाहिए। उस भाषा के प्रत्यय तथा रूप के कुछ उदाहरण टिप्पण में भी दिये गये हैं।

भाषान्तर वाक्य

वन्दना करता हूँ।	वह घिसता है।
वसता हूँ।	वह जानता है।
करता हूँ।	वह गिरता है।
तू वन्दना करता है।	तू खींचता है।
तू जीमता (भोजन करता) है।	तू वरसता है।
तू हर्ष करता है।	भोजन करता है।
वह देखता है।	वह विचार करता है।
वह करता है।	वह पूर्ण करना है।
वह सहता है।	तू उतावला करता है।
मैं घिसता हूँ।	तू निन्दा करता है।
मैं गिरता हूँ।	तू पूजता है।
मैं पूछता हूँ।	मैं सहता हूँ।
मैं करता हूँ।	
मैं गिरता हूँ	
[1]वंदामि	करते
करिससे	जाणेसि
हरिसमि	करिससि
वरिसति	पूरइ

१. प्रथमपुरुष के एकवचन में 'वंदे' रूप भी प्रयोग में आता है। वन्द् अ + ए = वंदे। (संस्कृत में वंदे—मैं वन्दना करता हूँ) "उसभं अजिअं च वंदे"।

—चतुर्विंशतिस्तव सूत्र गाथा २

देवसि
गरिहामि
तुरियइ
अरिहेइ
पुच्छामि
धरिससि

हरिससि
मरिसामि
गरिहसि
जेमइ
धरिसेमि
मरिसामि, तुरियेसि ।

●

दूसरा पाठ

किसी भी लोक-व्यापक दूसरी भापा में द्विवचन-सूचक प्रत्यय अलग उपलब्ध नहीं होते। इसी प्रकार लोकव्यापक प्राकृतभापा में भी द्विवचनदर्शक अलग प्रत्यय नहीं है। इसीलिए इस पाठ में एकवचनीय प्रत्ययों के पश्चात् वहुवचनीय प्रत्ययों का ही प्रकरण दिया गया है। परन्तु जब द्विवचन का अर्थ सूचित करना हो तव क्रियापद अथवा संज्ञा शब्द साथ 'द्वि' शब्द के वहुवचनीय प्राकृतरूपों का उपयोग करना पड़ता है। वे रूप इस प्रकार हैं :—

प्रथमा तथा द्वितीया	[1]दोण्णि, दुण्णि (द्वीनि ?)
	वेण्णि, विण्णि
	दो (द्वौ)
	दुवे (द्वे)
	वे, वे (द्वे)

प्रयोग :—वे सिव्वामो—हम दोनों सीते हैं।

---

१. 'दु' शब्द के जो रूप ऊपर वताये है उसके साथ विल्कुल मिलते-जुलते रूप आज भी अलग-अलग लोक भापाओं में प्रचलित हैं। जैसे :—

वे, वे गुजराती—वे
विण्णि, वेण्णि ,,—वन्ने
दो, हिन्दी—दो
दुण्णि, दोण्णि मराठी—दोन
दुवे वंगाली—दुई

वर्तमान काल

बहुवचन के पुरुषबोधक प्रत्यय

	प्रा०प्र०	पालिप्र०	शौ०प्र०	मा०प्र०	सं० प्र०
१ पु०	मो, मु, म[1]	म्हे	मो, मु, म[4]	शौरसेनी	म, महे
२ पु०	इत्था, ह[2]	व्हे	इत्था, ध, ह	के समान	ध, ध्वे
३ पु०	न्ति[3], न्ते, इरे	अन्ते, रे	न्ति, न्ते, इरे	होते हैं	न्ति, न्ते।

१ है० प्रा० व्या० ८।३।१४४। 'मो' प्रत्यय के साथ 'मु' और 'म' प्रत्यय तथा संस्कृत के 'महे' प्रत्यय की भाँति 'म्ह' प्रत्यय भी प्रयुक्त होता है—देवखामो, देवखामु, देवखाम, देवखम्ह।

२. 'ह' की तरह 'इत्था' प्रत्यय भी प्रयुक्त होता है—बोल्लह, बोल्लित्था —है० प्रा० व्या० ८।३।१४३।

३. 'न्ति' की तरह 'न्ते' तथा 'इरे' प्रत्यय भी प्रयोग में आते हैं—करति करन्ते, करिरे—है० प्रा० व्या० ८।३।१४२। तथा देखिए वैदिक भाषा के साथ समानता पृ० १२१, नि० ३१।

४. अपभ्रंश के बहुवचन के प्रत्यय :—१ हु, मो, मु, म। २ हु, ह, ध, इत्था। ३ हिं, न्ति, न्ते, इरे।

अपभ्रंश रूपाख्यान का उदाहरण—१ हरिसहुं, हरिसेहुं, हरिसमो, हरिसामो, हरिसिमो, हरिसेमो, हरिसमु, हरिसामु, हरिसिमु, हरिसेमु, हरिसम, हरिसाम, हरिसिम, हरिसेम, हरिसेज्ज, हरिसिज्ज, हरिसेज्जा, हरिसिज्जा। २ हरिसहु, हरिसेहु, हरिसह, हरिसेह, हरिसध, हरिसेध, हरिसइत्था, हरिसित्था, हरिसेत्था, हरिसेज्ज, हरिसिज्ज, हरिसेज्जा, हरिसिज्जा। ३ हरिसहिं, हरिसेहिं, हरिसंति, हरिसेंति, हरिसिन्ति, हरिसते, हरिसेंते, हरिसिन्ते, हरिसइरे, हरिसिरे, हरिसेइरे, हरिसेज्ज, हरिसिज्ज, हरिसेज्जा, हरिसिज्जा।

धातुएँ—

खुब्भ् (क्षुभ्य[1]) क्षुब्ध होना, घबराना

कुप्प् (कुप्य) कोप करना, क्रोध करना, गुस्सा करना,

सिव्व् (सिव्य) सीना

लव् (लप्[2]) लप्-लप् करना, व्यर्थ बोलना

तव् (तप्) तपना, संताप होना तप करना,

वेव् (वेप्) काँपना

सव् (शप्) शाप देना

दीव (दीप्) दीपना, चमकना, प्रकाशित होना

जव् (जप्) जपना, जाप करना।

खिव् (क्षप्) फेंकना।

खिप्प् (क्षिप्य) फेंकना

लुह् (लुप्य) लोटना, आलोटना

दिप्प् (दीप्य) दीपना, चमकना, शोभित होना, प्रकाशित होना

गच्छ् (गच्छ्) जाना

वोल्ल् (ब्रू) वोलना

४. प्रथम पुरुष के 'म' से शुरू होने वाले बहुवचनीय प्रत्ययों के पूर्व आये 'अ' का विकल्प से 'इ'[3] हो जाता है। जैसे :—

वोल्ल् + अ + मो = वोल्लमो, वोल्लामो,[4] वोल्लिमो, वोल्लेमो ।

श्री तुलसीकृत रामायण में करहि, नच्चहि, लहहुं ऐसे अनेक प्रयोग पाये जाते हैं।

१. देखिए पिछले प्रकरण में नियम १. ।

२. देखिए पिछले प्रकरण में नियम—९ । ३. हे०प्रा०व्या० ७।३।१५५ ।

४. 'मो' की भाँति 'मु', 'म', तथा 'म्ह' प्रत्ययों के रूप भी इसी प्रकार करने चाहिए जैसे :—

वोल्लमु, वोल्लामु, वोल्लिमु, वोल्लेमु । वोल्लम, वोल्लाम, वोल्लिम, वोल्लेम । वोल्लम्ह, वोल्लाम्ह । वोल्लिम्ह, वोल्लेम्ह ।—दे०पृ० १२ नि०२

रूपाख्यान

१. पु० बोल्लमो, बोल्लामो, बोल्लिमो, बोल्लेमो
२ पु० बोल्लह, बोल्लेह
३. पु० बोल्लति,[2] बोल्लेंति

वाक्य

हम सीते हैं।
हम वन्दना करते हैं।
हम लोटते हैं।
तुम दोनों बोलते हो।
तुम दोनों सीते हो।
हम दोनों फेंकते हैं।
हम दोनों काँपते हैं।
वे दोनों शाप देते हैं।
वे दोनों वन्दना करते हैं।
वे दोनों जाप करते हैं।
मैं जाता हूँ।

तुम दोनों वन्दना करते हो।
तुम जाप कहते हो।
तुम कुपित होते हो।
तुम घबराते हो।
हम दोनों शोभित होते हैं, चमकते हैं।
वह खाता है।
मैं काँपता हूँ।
मैं फेंकता हूँ।
तू लोटता है।
तू माता है।
तू जाप करता है।

वह दीप्त होता है, शोभित होता है चमकता है, प्रकाशित होता है।

वदामो	वंदेने	वन्दइ[3]
सविरे	गच्छन्ति	वन्दधे

---

१. बोल्ल् + अ + इत्था = बोल्लित्था अथवा बोल्लइत्था देखिए पृ० ९५ नि० ९। २ बोल्ल् + अ + न्ते = बोल्लन्ते, बोल्ल् + अ + इरे = बोल्लिरे रूप भी समझना चाहिए। ३. अभ्यास के लिए शौरसेनी के तथा मागधी भाषा के नियम लगाकर ऐसे धातु रूपों के वाक्य बनाना जरूरी है।

चंदह्
वोल्लमो
लवेम
टुण्णि लुट्टह
वे खिप्पित्था
दो खुब्भित्था
कुप्पेह
गच्छम्ह

जीवमो
वंदेम
वन्दंते
वोल्लामु
लुट्टामि
कुप्पेह
खिवामि
वोल्लसि
वंदति

०

तीसरा पाठ

वर्तमानकाल[1]

सर्व पुरुष } ज्ज
सर्व वचन } ज्जा

'ज्ज' तथा 'ज्जा' प्रत्ययों के लगने से पूर्व 'अंग' के अन्त्य अ' को 'ए' होता[2] है।

वंद् + अ + ज्ज = वंदेज्ज[3]।

वंद् + अ + ज्जा = वंदेज्जा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५६। ३. पुरुषबोधक प्रत्यय और स्वरान्त धातुओं के बीच में ज्ज तथा ज्जा दोनों में से किसी एक प्रत्यय के लगाने से भी रूप बन सकते हैं। जैसे:—

हो + इ = हो + ज्ज + इ = होज्जइ अथवा होइ।

हो + इ = हो + ज्जा + इ = होज्जाइ अथवा होइ —हे० प्रा० व्या० ८।३।१७८। विकरण लगने के पश्चात् :—

हो + अ + इ = हो + अ + ज्ज + इ = होएज्जइ, होअइ।

हो + अ + इ = हो + अ + ज्जा + इ = होएज्जाइ, होअइ।

होज्जइ अथवा होएज्जइ के साथ श्रीज्ञानेश्वरप्रणीत गीताजी (चौदहवाँ शतक) में 'अपेखिजे', 'मंदिजे', 'भोगिजे', 'कीजे', 'विजमो' 'साहिजे' ऐसे अनेक क्रियापद आते हैं वे तथा होजे, थजे, करज, चालजे, देजे, लेजे इत्यादि वर्तमान में प्रचलित गुजराती भाषा के क्रियापद के रूप बिल्कुल मिलते-जुलते हैं।

स्वरान्त धातुएँ :—

दा (दा)—देना ।
वा (वा)—बोना, वपन करना, उगाना ।
पा (पा)—पीना ।
गा (गा)—गाना ।
जा (जा)—जाना ।
धा (धाव्)—दौड़ना ।
खा (खाद्)—खाना, भोजन करना ।
ठा (स्था)—स्थिर रहना, ठहरना ।
झा (ध्या)—ध्याना, ध्यान करना ।
हा (हा)—छोड़ना, त्यागना ।
बू (ब्रू)—बोलना ।
हो (भू)—होना ।
णी, णे (नी)—ले जाना, पहुँचाना ।

अकारान्त धातुओं को छोड़कर शेप सभी स्वरान्त धातुओं के अन्त में पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने से पहले विकरण 'अ' विकल्प से होता है (हे० प्रा० व्या० ८।४।२४०) ।

हो + इ = होइ । हो + अ + इ = होअइ ।
खा + इ = खाइ । खा + अ + इ = खाअइ ।
धा + इ = धाइ । धा + अ + इ = धाअइ ।

(अकारान्त धातुओं के अन्त में 'अकार' विद्यमान है । इसलिए उनके बाद विकरण 'अ' दुबारा लगाने की आवश्यकता नहीं है ।)

अकारान्त धातुएँ :—

चिइच्छ (चिकित्स)—चिकित्सा करना, शंका करना, अथवा उपाय करना, उपचार करना ।
जुउच्छ (जुगुप्स)—घृणा करना अथवा दया करना ।
अमराय (अमराय)—देव की भाँति रहना ।
चिइच्छइ । जुउच्छइ । अमरायइ ।

रूपाख्यान

विना विकरण के रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
१. पु०	होमि	होमो
२. पु०	होसि	होह
३. पु०	होइ	होंति, हुंति।

विकरण वाले रूप :—

	एकवचन	बहुवचन
१. पु०	होअमि, होआमि, होएमि।	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो।
२. पु०	होअसि, होएसि।	होअह, होएह।
३. पु०	*होअइ, होएइ।*	*होअंति, होएंति, होइंति।*

सर्व पुरुष, सर्व वचन — होज्ज, होज्जा (विकरण रहित); होएज्ज, होएज्जा (विकरण वाले)

वाक्य

हम गाते हैं।	तुम पीते हो।
तुम दौड़ते हो।	वे गाते हैं।
वे बोलते हैं।	हम दोनों छोड़ते हैं, त्याग करते हैं।
वे दोनों खाते हैं।	वे देते हैं।
मैं खड़ा हूँ।	वह बोता है, उगाता है।
तू ले जाता है।	हम ले जाते हैं।
हम जाते हैं।	वे ले जाते हैं।
तुम चिकित्सा करते हो।	मैं घृणा करता हूँ।
हम देव की भांति रहते हैं।	

हुंति	घाह	गाह
होंति	गाइ	ठाह
जंति	जासि	ठाइत्था
वूमो	ठामि	हामि
विंति[1]	वूम	णेंति
वेजामो	णेमि	पामो
झामो	देंति	वेमि[2]
गाएसि	खाएमो	

०

---

१. वू + अ + न्ति = वू + ए + न्ति = वेंति तथा विंति ।

२. वू + अ + मि = वू + ए + मि = वेमि । पालिभाषा में 'ब्रू' धातु है । उसके रूप—

	एकवचन	बहुवचन
१.	ब्रूमि	ब्रूम
२.	ब्रूसि	ब्रूथ
३.	ब्रूति, ब्रवीति	ब्रुवन्ति

देखिए—पा० प्र० पृ० १७६ ।

चौथा पाठ

अस्=विद्यमान होना।

अस् धातु के रूप अनियमित हैं। वे इस प्रकार हैं[1] :—

	एकवचन	बहुवचन
१. पु०	अम्हि, म्हि (अस्मि) मि, असि[3], अत्थि[3]	म्ह, म्हो, मो[2] मु० (स्म) अत्थि
२. पु०	सि, असि (असि), अत्थि[3]	थ (स्थ), अत्थि
३. पु०	अत्थि[4]	अत्थि, सति (सन्ति)।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४६, १४७, १४८।

२. व्याकरण में 'म्ह' तथा 'म्हो' रूप विहित किये गये हैं परन्तु प्राचीन आर्ष प्राकृत भाषा में म्ह, मु, मो, ऐसे रूप भी प्राप्त होते हैं।

३. 'असि' (अस्मि) रूप विशेषतः आर्षप्राकृत में पाया जाता है और 'अत्थि' रूप सभी पुरुषों और सभी वचनों में प्रयुक्त होता है।

४. अस् धातु के पालि रूप—

	एकव०	बहुव०
१.	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह
२.	असि, अहि	अत्थ
३.	अत्थि	सति

—देखिए पा० प्र० पृ० १७८।

धातुएँ

मज्ज् , (मद्य)—मद करना, खुश होना, अभिमान करना।

खिज्ज् (खिद्य)—खीझना, खिन्न होना, खेद करना :

सं + पज्ज् (सं + पद्य)—प्राप्त होना।

नि + प्पज्ज (निष्पद्य) निष्पादन करना, होना।

विज्ज् (विद्य)—विद्यमान होना, उपस्थित होना।

जोत्, जोअ (द्योत)—द्योतित होना, प्रकाशित होना, देखना।

सिज्ज् (स्विद्य)—स्वेद का आना (होना), पसीजना, चिकना होना।

दिव्व् (दीव्य)—द्यूत खेलना, क्रीड़ा करना।

वाक्य

तू देता है।
वह होता है।
हम गाते हैं।
तुम दौड़ते हो।
वे दोनों खाते है।
मैं खड़ा हूँ।
(तुम) हो।
वह जाता है।
मैं खुश होता हूँ।
वह खेद करता है।
वह निष्पादन करता है।
वह सम्पादन करता है।

हम दोनों ध्यान करते है।
तुम पीते हो।
वे दोनों खेलते है।
पसीजता है।
(हम) हैं।
विद्यमान है।
तुम दो हो।
तू दीप्त होता है।
हम छोड़ते हैं।
मैं जाता हूँ।
मैं हूँ। मैं पूर्ण करता हूँ।
हम प्रकाशित होते है।

हुति
जति
बूम
वाइ
बे जाम
दो मो
निप्पज्जसे
सति
सिज्जति
मज्जते
म्ह
सि

गाएमि
जोतसि
जोआमु
खिज्जेह
वेण्णि सति
धाह
वूमि
सपज्जइ
गाइ
थ
असि
अम्हि

जासि
ठामि
म्हि
निप्पज्जह
असि
अत्थि
दो मज्जह
दोण्णि
दिव्वामु
वूमो
बे खाएमु
मज्जेसि

पाचवाँ पाठ

पुज्ज् (पूर्य)[1]—पूरा करना।
विज्झ् (विध्य[2])—बींधना।
गिज्झ् (गृध्य)—ललचाना।
कुज्झ् (क्रुध्य)—क्रोध करना।
सिज्झ् (सिध्य)—सिद्ध होना।
नज्झ् (नह्य[2])—बाँधना।
जुज्झ् (युध्य)—जूझना, युद्ध करना।
बोह् (बोध)—बोध होना, जानना, ज्ञान होना।
वह् (वध)—वध करना, जान से मारना, प्राणों का हनन करना।
सोह् (शोभ)—शोभना, शोभित होना।
खाद्
खाय् } (खाद)—खाना।
कह् (कथ[3])—कहना।
कुह् (कुथ)—सड़ना।
बाह् (बाध)—बाधा करना, अड़चन—रुकावट डालना।
लिह् (लिख[3])—लिखना।
लह् (लभ)—लेना, प्राप्त करना।
सिलाह् (श्लाघ)—श्लाघा करना, सराहना, प्रशंसा करना।
सोह् (शोध)—शोधना, शुद्ध करना, साफ करना।

---

१. देखिए पृ० ६६ ५। २. पृ० ६७ नियम ६। ३. पृ० ३७ नियम ८।

सुज्झ् (शुध्य)—शोधना, साफ करना।
धाव्,धाय् (धाव)—दौड़ना, भागना।

वाक्य

हम दोनों ध्यान करते हैं।	तुम हो।
वह बींधता है।	वे हैं।
हम ललचाते हैं।	हूँ।
तुम दोनों घबराते हो	तू है।
तुम दोनों सड़ते हो।	हम हैं।
हम बींधते हैं।	वह है।
तुम सुशोभित होते हो।	तुम द्योतित होते हो।
तुम शोधते हो।	वह जानता है।
तुम साफ करते हो।	मैं खुश होता हूँ।
हम दोनों लिखते हैं।	वे दोनों जाते हैं।
तुम खींचते हो।	तुम कांपते हो।
वह सम्पादन करता है।	वे दोनों प्रशंसा करते हैं।
वे दोनों निन्दा करते हैं।	वह बोता है।
तुम दोना दौड़ते हो।	हम होते हैं।
मैं गाता हूँ।	हम खेद करते हैं।
वह शाप देता है।	वह खड़ा रहता है।
वह प्रकाशित होता है।	मैं सिद्ध करता हूँ।

कुहंति	झाम
सिलाहति	होति
गिज्झाम	दुन्नि बोहेंति
मि	जुज्झेम
कहेमि	सि

नज्झसि	विंति
ठाइ	लिहेज्ज
वे सोहामो	सिज्झंति
मुज्झिमु	दो लहेज्जा
वेन्नि विज्जंति	कुज्झेसि
ठाएह	अंसि
वे वाहह	

धातुएँ

वीह्[1] (भी)—भयभीत होना, डरना ।

छज्ज् (सज्ज)—छाजना, शोभा देना ।

वेढ् (वेष्ट)—वेष्टन करना, वींटना, लपेटना ।

कर् (कर)—करना ।

तर् (तर)—तरना, तैरना ।

चिण् (चिनु)—चयन करना, चुनना, इकट्ठा करना ।

डह (दह्)—दग्ध होना, दाझना, जलना ।

डज्झ् (दह्य)—दग्ध होना, जलना, जलाना ।

नम्, नव् (नम)—नमना, झुकना, प्रणाम करना ।

चय् (त्यज)—त्यागना, छोड़ना ।

जिण् (जिना)—जीतना ।

छिंद् (छिनद्)—छेदन करना, फाड़ना ।

चल् (चल)—चलना ।

निंद्, निन्द् (निन्द)—निन्दना, निन्दा करना, शिकायत करना ।

---

१. समानता 'वीह्' और 'भी' :—व् + ह + ई; व् और ह् के मिल जाने से भ् और ई के मिलने से 'भी' ।

सूस } (शुष्य[1])—शोषण करना।
सुस्स }
सुण् (शृणु)—सुनना।
सुमर् (स्मर)—स्मरण करना, याद करना।
गच्छ् (गच्छ)—गति करना, जाना।
नस्स } (नश्य) नाश होना।
नास् }
गेण्ह् (गृह्ण)—ग्रहण करना।
नच्च् (नृत्य)—नाचना।
कुण् (कृणु)—करना।
रूस } (रूष्य)—रूठना, रोश करना, गुस्सा करना, क्रोध करना।
रूस्स }
हण् (हन्)—हनना, मारना।

सार और प्रश्न

	एकवचन	बहुवचन
१. पु०	वदमि, वदामि, वदेमि।	वदमो, वदामो, वदिमो, वदेमो, वदमु, वदामु, वदिमु, वदेमु, वदम, वदाम, वदिम, वदेम।
२. पु०	वदसि, वदेसि, वदसे, वदेसे।	वदह, वदेह, वदइत्था, वदेइत्था, वदित्था।
३. पु०	वदइ, वदेइ, वदए, वदेए, वदति, वदेति, वदते वदेते।	वदंति, वदेंति, वदिंति, वदंते, वदेंते, वदिंते, वदइरे, वदेइरे, वदिरे।

सर्व पुरुष } वदेज्ज, वदेज्जा
सर्व वचन }

---

१. देखिए पृ० ११ नि० १।

स्वरान्त धातुओं के विना विकरण के रूप :—

१. पु० होमि ।	होमो, होमु, होम ।
२. पु० होसि ।	होह, होइत्था ।
३. पु० होइ, होति ।	होंति, हुंति, होन्ति, हुन्ति, होन्ते, हुन्ते, होइरे ।

सर्व पुरुष
सर्व वचन } होज्ज, होज्जा

स्वरान्त धातुओं के विकरण वाले रूप :—

	एकवचन	वहुवचन
१. पु०	होअमि, होआमि, होएमि ।	होअमो, होआमो, होइमो, होएमो, होअमु, होआमु, होइमु, होएमु, होअम, होआम, होइम, होएम ।
२. पु०	होअसि, होएसि, होअसे, होएसे ।	होअह, होएह, होअइत्था, होएइत्था ।
३. पु०	होअइ, होएइ, होअए, होएए, होअति, होएति ।	होअंति, होएंति, होइंति, होंते, होअंते, होएंते, होअइरे, होएइरे ।

सर्व पुरुष
सर्व वचन } होएज्ज, होएज्जा

प्रश्न

१. प्राकृत भाषा में कौन-कौन से स्वरों का प्रयोग नहीं होता ? जिन स्वरों का प्रयोग नहीं होता, उनके स्थान पर कौन-कौन से स्वर प्रयुक्त होते हैं ? उदाहरण सहित समझाओ ।

२. निम्नलिखित शब्दों के प्राकृत में रूप बताओ ?
मृत्तिका, ताम्बूल, कीदृश, दैत्य, पौर, कौमुदी, तमस्, तीर्थंकर, गोष्ठी, नग्न, चन्द्र ।

३. निम्नलिखित शब्दों के संस्कृत रूप बताओ ।

समुद्द, वक, साहा, पवइ, साड़, हल्दा, अगाल, सद्द, चोद्दह, छट्ठ, मायण ।

४ निम्नलिखित संयुक्त व्यजनों के परिवर्तित रूप उदाहरण सहित बताओ ?

द्य, त्य, ध्य, प्स, ष्ट ।

५. निम्नांकित संयुक्त व्यञ्जन वाले शब्दों के प्राकृत-रूपान्तर बताओ ?

ग्रीष्म, स्तम्भ, पुष्प, प्रश्न, मुष्टि, ध्यान, शौण्डीय, ऊर्ध्व, तीर्थ, निम्न, कर्तरी ।

६. निम्नलिखित शब्दों में संधि बताओ ?

वासेसि, दसामह, बहूदगं, पुहवीसो, काही ।

७. निम्नलिखित शब्दों में समास समझाओ ?

देवदाणवगधव्वा, वीतरागो, तित्थयरो, नरिंदो, महावीरो ।

८ दीर्घ को ह्रस्व और ह्रस्व को दीर्घ कब-कब होता है ? उदाहरण सहित समझाओ ।

९. स्वरान्तधातु और व्यञ्जनान्तधातु की रूप-साधना में क्या-क्या अन्तर है ?

१०. प्राकृत में द्विवचन है ? वहाँ द्विवचन का अर्थ किस प्रकार सूचित किया जाता है ?

११. प्राकृत भाषा के रूपों के साथ गुजराती भाषा के रूपों का कैसा सम्बन्ध है ?

१२. शौरसेनी, मागधी तथा अपभ्रंश भाषा के परिवर्तन के नियमानुसार प्राकृत भाषा से कहाँ-कहाँ भिन्नता है ?

१३. पालि भाषा तथा प्राकृत भाषा के परिवर्तनों में समानता बताओ ?

उवसग्ग (उपसर्ग)

उपसर्ग धातु के पूर्व में आकर धातु के मूल अर्थ में न्यूनाधिकता करके विशेष, न्यून, अधिक अथवा भिन्नार्थ बताते हैं। जो इस प्रकार हैं :—

प (प्र) = आगे, प + जाइ=पजाइ=आगे जाता है।

प + जोतते=प्रजोतते=विशेष प्रकाशित होता है।

प + हरति=पहरति=प्रहार करता है।

परा—सामने, उल्टा, परा + जिणइ=पराजिणइ=पराजय करता है।

ओ, अव, अप } (अप)—हल्का, रहित, नीचे, दूर, ओ + सरइ, अव + सरइ, अप + सरइ } =सरकता है, दूर हटता है।

अप + अर्थकम् = अवत्थयं = अपार्थक, व्यर्थ।

ओ + माल्यम् = ओमल्लं = निर्माल्य।

सं (सम)–इकट्ठा, साथ, सं + गच्छति = संगच्छति = साथ जाता है।

सं + चिणइ = संचिणइ = संचय करता है, इकट्ठा करता है।

अनु (अनु)–पीछे, समान, अणु + जाइ = अणुजाइ = पीछे जाता है।

अणु ,, ,, ,, अणु + करइ = अणुकरइ = अनुकरण करता है।

ओ (अव)–नीचे ओ + तरइ = ओतरइ=अवतार लेता है।

अव ,, ,, अव + तरइ=अवतरइ=उतरता है, नीचे जाता है।

निर् (निर्)-निरन्तर, नि सतत, रहित नी ,,	निर् + इक्खइ = निरिक्खइ=निरीक्षण करता है देखता है। नि + ज्झरइ=निज्झरइ=झरता है। नि + सरइ=नीसरइ=निकलता है। निर् + अंतर=निरंतर=निरंतर। निर् + धनः=निद्धणो=निर्धन,गरीब।
दु (दुर्)—दुष्टता	दु + गच्छइ = दुगच्छइ=दुर्गति में जाता है।
दू ,,	दो + गच्च = दोगच्च=दौर्गत्य, दुर्गति। दू + हवो = दूहवो=भाग्यहीन, बदनसीब।
अभि (अभि)—सामने	अभि + भासइ = अभिभासइ = सामने जाता है।
अहि ,, ,,	अहि + मुहं = अहिमुहं = अभिमुख, सामने।
वि—विशेष, नहीं, विपरीत	वि + जाणइ = विजाणइ = विशेष जानता है (करता है)। वि + जुजइ = विजुजइ = वियुक्त होता है (करता है)। अलग होता है। वि + कुव्वइ = विकृत करता है।

१. 'दू' और 'सू' का उपयोग केवल 'हव' (भग) शब्द के पूर्व ही होता है। देखिए, पृ० २३ नियम ५।

अधि	(अधि)–अधिक	अधि + गच्छति = अधिगच्छइ = प्राप्त करता है, जानता है, ऊपर जाता है।
अहि	,, ,,	अधि + गमो = अहिगमो = अधिगम, ज्ञान।
सु[1]	(सु)–श्रेष्ठ	सु + भासए = अच्छा बोलता है।
सू	,, ,,	सू + हवो = सूहवो = भाग्यवान।
उ	(उत्)–ऊँचा	उ + गच्छते = उग्गच्छते—ऊँचा जाता है, ऊगता है।
अइ	(अति)—अतिशय, हदसे बाहर, अमर्यादित	अइ + सेइ = अइसेइ = अतिशय करता है, अति प्रशंसा करता है।
अति	,, ,,	अइ + गच्छति = अतिगच्छति = हद से बाहर जाता है।
णि	(नि)–निरन्तर, नीचे	णि + पडइ = णिपडइ = निरन्तर गिरता है, नीचे गिरता है।
नि	,, ,,	नि + पडइ = निपडइ = नीचे गिरता है, निरन्तर गिरता है।
पडि	(प्रति)–सामने, समान, विपरीत	पडि + भासए = पडिभासए = सामने बोलता है।
पति	,, ,,	पति + ठाइ = पतिठाइ = प्रतिष्ठित होता है।
परि[1]	,, ,,	परि + ट्ठा = परिट्ठा = प्रतिष्ठा। पडि + मा = पडिमा = समान आकृति। पडि + कूलं = पडिकूलं = प्रतिकूल।

१. 'परि' यह 'पडि' का ही एक भिन्न उच्चारण है। 'र' और 'ड' का–उच्चारण स्थान भी समान ही है। देखिए, पृ० ५२ नि० १९ 'र' को 'ट'।

परि (परि)—चारों तरफ	परि + वुडो = परिवुडो = परिवृत, चारों ओर से घिरा हुआ।
पलि ,, ,,	पलि + घो = पलिघो = परिघ, घन।
अपि (अपि)—भी, उल्टा	अपि + हेइ = अविहेइ = ढाँकता है।
अवि ,, ,, ,,	अवि + हेइ = अपिहेइ = ,,
ॅपि ,, ,, ,,	पि + हेइ = पिहेइ = ,,
वि ,, ,, ,,	को + वि = कोवि = कोई भी।
इ ,, ,, ,,	को + इ = कोइ = ,,
	किम् + अवि = किमवि = कुछ भी।
	जं + पि = जंपि = जो भी।
उ (उप)—पास	उव + गच्छइ = पास जाता है।
ओ ,, ,,	ऊ + ज्झायो = ऊज्झायो = उपाध्याय।
उव ,, ,,	ओ + ज्झायो = ओज्झायो = ,,
	उव + ज्झायो = उवज्झायो = ,,
आ—मर्यादा, उल्टा,	*आ + वसइ = आवसइ = अमुक* मर्यादा में रहता है।
	आ + गच्छइ = आता है।

उपसर्गों के अर्थ निश्चित नहीं होते। इसीलिए कोई उपसर्ग धातु के मूल अर्थ से विपरीत अर्थ बताता है, कोई मूल अर्थ को बनाता है, कोई

---

१. इन सब संस्कृत उपसर्गों में शौरसेनी, मागधी, तथा पैशाची भाषा के अनुसार परिवर्तन कर लेना चाहिये, जैसे—अति, शौ० अदि। परि, मा० पलि। अभि, पै० अभि।

धातु के मूल अर्थ में कुछ अतिशय अर्थ बताता है और कोई केवल शोभा के लिये ही प्रयोग में आता है—धातु के अर्थ में बिल्कुल परिवर्तन नहीं करनेवाला उपसर्ग 'अपि' है और वह 'भी' अर्थ में अव्यय भी है। इसलिए 'अपि' के उदाहरणों में उसके दोनों प्रकार के प्रयोग दिखाये हैं।

धातुएँ

पुण् (पुना)—पवित्र करना।
थुण् (स्तु)—स्तुति करना।
वच्च् (व्रज)—गति करना, जाना।
कुद्द (कुर्द)—कूदना।
अच्च् (अर्च)—अर्चना करना, पूजा करना।
वड्ढ् (वर्ध)—बढ़ना।
भम (भ्रम)—भ्रमण करना, घूमना।
भम्म (भ्राम्य)— ,, ,,
भिद् (भिनद्)—भेदना, टुकड़े-टुकड़े करना।
चिइच्छ (चिकित्स)—चिकित्सा करना, रोग का उपचार करना।
जग्ग् (जागृ)—जागना।
छिद् (छिनद्)—छेदना, चीरना, फाड़ना।
सिच् (सिञ्च)—सीञ्चना, पीना, तर करना।
मुंच् (मुञ्च)—छोड़ना, त्यागना।
लुण् (लुना)—काटना, लवना।
गंठ् (ग्रन्थ)—गाँठना, गूँथना।

गज्ज् (गज)—गाजना गजना।

मिला (म्ला)—म्लान होना कुम्हला जाना।

गिला (ग्ला)—ग्लानि होना क्षीण होना।

वीसर (वि + स्मर)—विस्मृत होना भूल जाना।

जम्म् (ज मन्)—ज म लेना, पैदा होना।

रुव् (रुद्)—रोना।

तोल (तोल)—तोलना मापना।

छठा पाठ

अकारान्त शब्द के रूप (पुंलिंग)

वीर+

	शब्दः प्रत्यय एकव०	बहुव०
प्र०	वीर + ओ = वीरो (वीरः[1])	वीर + आ = वीरा[1] (वीराः)
	वीर + ए = वीरे	

+ तुलना के लिए 'अकारान्त' 'बुद्ध' शब्द के पालिभाषा के एकवचनी रूप :—

एकवचन	बहुवचन
प्र० बुद्धो	बुद्धा (बुद्ध से)
द्वि० बुद्धं	बुद्धे
तृ० बुद्धेन	बुद्धेहि, बुद्धेभि

[किसी-किसी स्थान मे तृतीया के एकवचन में बुद्धसो' रूप भी होता है और तृतीया के एकवचन में कहीं-कहीं 'सा' प्रत्यय भी लगता है—जलसा, बलसा]

च० बुद्धाय, बुद्धस्स	बुद्धानं
पं० बुद्धा, बुद्धस्मा, बुद्धम्हा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
प० बुद्धस्स	बुद्धानं
स० बुद्धे, बुद्धस्सि, बुद्धम्हि	बुद्धेसु
सं० बुद्ध !, बुद्धा !	बुद्धा—दे०पा०प्र०पृ०,८५,८६।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२। तथा ८।४।२८७, ८।३।४।

द्वि० वीर+म्=वीर[2] (वीरं) वीर+आ=वीरा (वीरान्),
वीर+ए=वीरे[3]

संस्कृत भाषा में 'स्मात्' 'स्मिन्' प्रत्यय मात्र सर्वादि शब्द में हो सकते हैं। प्राकृत भाषा में ये प्रत्यय व्यापक हैं इसी हेतु वुद्धस्मा, वीरम्सि जैसे रूप प्राकृत भाषा में प्रचलित हैं।

शौरसेनी, मागधी, पैशाची भाषा के रूप भी 'वीर' के रूप जैसे ही बनेंगे, विशेषता इस प्रकार है

पंचमी एकवचन—शौरसेनी—वीरादो, वीरादु।

मागधी रूप—

प्रथमा एकवचन–'वीले' (मागधी भाषा में पुंलिंग में प्रथमा के एकवचन में 'वीले' ऐसा एकारान्त रूप होता है, 'वीलो' ऐसा ओकारान्त रूप नहीं होता)।

पंचमी एकवचन—वीलादो, वीलादु।

षष्ठी ,, वीलाह, वीलस्स।

षष्ठी बहुवचन—वीलाहं, वीलाणं (हे०प्रा०व्या० ८।४।२९९,३००)।

पैशाची रूप—

पंचमी एकवचन—वीरातो, वीरातु।

अपभ्रंश रूपों में विशेष भिन्नता है :—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वीरु, वीरो, वीर, वीरा।	वीर, वीरा।
द्वि०	वीरु, वीर, वीरा।	वीर, वीरा।
तृ०	वीरें, वीरेण, वीरेण	वीरेंहि, वीराहिं, वीरहिं।
ष०	वीरस्सु, वीरासु, वीरसु, वीराहो,	वीराहं, वीरहं, वीर,

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४।

तृ०	वीर + ऐण = वीरेण[४] (वीरेण), वीरेणं	[५]वीर + एहि=वीरेहि (वीरेभिः) वीरेहि, वीरेहिँ[६] (वीरैः)
च०	वीर + आय = वीराय (वीराय), वीर + आए = वीराए, वीर + स्स = वीरस्स (वीरस्य)	वीर + ण=वीराण[७] (वीराणाम्), वीराणं
पं०	*वीर + आ = वीरा[८] (वीरात्),	वीर + ओ = वीराओ[९]

	वीरहो, वीर, वीरा।	वीरा।
पं०	वीराहु, वीरहु, वीराहे, वीरहे।	वीराहुं, वीरहुं।
प०	वीरस्सु, वीरासु, वीरसु, वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा।	वीराहं, वीरहं।
सं०	वीरि, वीरे।	वीराहिं, विरहिं।
सं०	वीरु, वीरो, वीर, वीरा।	×वीराहो, वीरहो, वीर, वीरा।

× वैदिक छान्दस—'देवासः' रूप के साथ 'वीराहो' रूप की तुलना हो सकती है।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।६।, ८।३।१४।, ८।१।२७। ५. हे० प्रा० व्या० ८।३।७।, ८।३।१५। ६. हे० प्रा० व्या० ८।४।४४८।, ८।३।१३१, १३२। ७. हे० प्रा० व्या० ८।३।६।, ८।३।१२। *पांचमी विभक्ति में निम्न अधिक रूप बनते हैं :

एकवचन	बहुवचन
वीर + तो = वीरातो	वीरातो
वीर + तु = वीरातु	वीरातु
वीर + हि = वीराहि	वीराहि,
वीर + हिंतो = वीराहिंतो	वीरेहि,
वीर + त्तो = वीरत्तो (वीरतः)	वीरत्तो (वीरतः)

८. हे० प्रा० व्या० ८।३।८।, ८।३।१२। ९. हे० प्रा० व्या० ८।३।६।

वीर + ओ = वीराओ　　　　वीर + उ = वीराउ

वीर + उ = वीराउ　　　　वीर + हिंतो = वीराहिंतो,

　　　　　　　　　　वीरेहिन्तो (वीरेभ्य)

　　　　　　　　　　वीर + सुंतो = वीरासुंतो,

　　　　　　　　　　वीरेसुंतो

ष० वीर + स्स = वीरस्स[१०] (वीरस्य) वीर + ण = वीराण[११] (वीराणाम्),

　　　　　　　　　　वीराण

स० वीर + ए = वीरे[१२]　　　　वीर + सु-वीरेसु[१३] (वीरेषु),

वीर + अंसि = वीरंसि (वीरस्मिन्),　　　　वीरेसु

वीर + म्मि = वीरम्मि १२

स० वीर ! (वीर !)　　　　वीरा[१४] (वीरा !)

वीरा !

वीरो !

वीरे !

( ) इस निशान में बताये हुए संस्कृत रूपों और प्राकृत रूपों के उच्चारण में नहीं जैसा भेद है। यह भेद रूपों के बोलते ही समझ में आ जाता है। केवल पंचमी विभक्ति में अधिक अनियमित रूप बनते हैं।

तथा १२।१५। १०. हे० प्रा० व्या० ८।३।१०। ११. हे० प्रा० व्या० ८।३।६, ८।१।२७। १२. हे० प्रा० व्या० ८।३।११। १३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५, ८।१।२७। १४. हे० प्रा० व्या० ८।३।३८, तथा ४,१२।

रूप बताते समय शब्द (नाम) का मूल अंग और प्रत्यय का अंश दोनों पृथक्-पृथक् बताये गये हैं और उसके साथ ही उस पद्धति से साधित रूप भी अलग-अलग बताये गए है। अतः पाठक उक्त पद्धति से ही अकारान्त शब्द के रूप समझ लेंगे।

साधनपद्धति की जानकारी

१. प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी और सप्तमी विभक्ति के 'स्वरादि-प्रत्यय' तथा पंचमी का केवल 'आ' प्रत्यय लगाने पर अंग के अन्त्य 'अ' का लोप करना चाहिए (देखिए पृ० ६५ नियम—९)।
जैसे :—
वीर + ओ = वीरो

२. वीर + म् = वीरं (विरं)
वीरम् + अवि = वीरं अवि, वीरमवि, (देखिये पृ० ६६, ९७; क्रमशः नियम १७, १८)।

३. तृतीया और षष्ठी विभक्ति के 'ण' तथा सप्तमी विभक्ति के 'सु' परे रहने पर (आगे) विकल्प से अनुस्वार होता है।
वीर + एण = वीरेण, वीरेणं।
वीर + ण = वीराण, वीराणं।
वीर + सु = वीरेसु, वीरेसुं।

४. तृतीया और सप्तमी विभक्ति के बहुवचनीय प्रत्ययों के पूर्व अकारान्त अंग के अन्त्य 'अ' को 'ए' तथा इकारान्त और उकारान्त अङ्ग के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' को दीर्घ हो जाता है।
वीर + हि = वीरेहि। रिसि + हि = रिसीहि। भाणु + हि = भाणूहि।
वीर + सु = वीरेसु। रिसि + सु = रिसीसु। भाणु + सु = भाणूसु।

५. पञ्चमी के 'ओ', 'उ', हितो' प्रत्ययों के पूर्व स्वरान्त अंग के

अन्तिम स्वर को दीर्घ होता है और पञ्चमी के बहुवचन के 'हि', 'हिंतो', 'सुंतो' प्रत्ययों के पूर्व अकारान्त अंग के अन्त्य 'अ' को 'ए' भी हो जाता है।

एकवचन	बहुवचन
वीर + ओ = वीराओ	वीर + हि = वीराहि, वीरेहि।
वीर + उ = वीराउ	वीर + हिंतो = वीराहिंतो, वीरेहिंतो।
	वीर + सुंतो = वीरासुंतो, वीरेसुंतो।
	रिसि + हि = रिसीहि।
रिसि + ओ = रिसीओ	भाणु + हि = भाणूहि।
भाणु + ओ = भाणूओ	रिसि + हिंतो = रिसीहिंतो।

६. षष्ठी के बहुवचन 'ण' से पूर्व अंग के अन्तिम स्वर को दीर्घ होता है।
वीर + ण = वीराण, वीराणं।
रिसि + ण = रिसीण।

७. सम्बोधन—(विभक्ति) के रूप सर्वथा प्रथमा जैसे हैं; विभक्ति रहित केवल मूल अंग भी प्रयोग में देखने को मिलता है। जैसे, वीर! वीरो! वीरा! वीरे!

८. तृतीया विभक्ति के 'हि' प्रत्यय परे रहने पर अनुस्वार और अनुनासिक भी होता है। इस प्रकार इसके तीन रूप होते हैं। वीरेहि, वीरेहिं, वीरेहिँ।

९. वीराए[1] (च० ए०), वीरंसि (स० ए०) रूपों का व्यवहार विशेषत आर्ष प्राकृत में दिखाई देता है। कई स्थानों में चतुर्थी के एकवचन में 'आइ' प्रत्यय वाला रूप भी उपलब्ध होता है (हे०

---

१. अजिणाए (अजिनाय), मसाए (मासाय), पुच्छाए (पुच्छाय) आदि 'आए' प्रत्यय वाले तथा 'लोगंसि','कंसि', अगारंसि, सुसाणंसि आदि 'अंसि' प्रत्यय वाले रूप आचारांगादि आर्ष सूत्रों में मिलते हैं।

प्रा० व्या० ८।३।१३२)—वहाइ (वघाय), 'आय', 'आए' और 'आइ' इन तीनों में विशेष समानता है। 'आइ' प्रत्ययवाला रूप बहुत प्रचलित नहीं है। इसीलिए उपर्युक्त रूपों में नहीं बताया गया है। कई स्थानों में 'आए' के बदले 'आते' प्रत्यय भी उपलब्ध होता है अतः 'वीराए' की भाँति 'वीराते' रूप भी आर्ष प्राकृत में मिलता है।

छांदस नियम की तरह चतुर्थी विभक्ति के अर्थ में षष्ठी विभक्ति का उपभोग होता है अतः इन दोनों के समान रूप होते हैं।

पुंलिग शब्द [नरजाति]

अरिहंत[2] (अर्हत्) = वीतराग देव। बाल (बाल) = बालक।

---

२. अरिहंत वगैरह अनेक शब्द समग्र पुस्तक में दिए गए हैं। उन शब्दों को शौरसेनी, मागधी तथा पैशाची के शब्दपरिवर्तन के नियम लगाकर शौरसेनी, मागधी, पैशाची रूप बनाना, बादमें उनके सातों विभक्तियों के रूप बनाने चाहिए।

अरिहंत का मागधी अलिहंत।
णिव का पैशाची निप
नयण का ,, नयन
जिण का ,, जिन
जिण का मागधी यिण
पुच्छ का ,, पुश्च
पिच्छ का ,, पिश्च
हस्त का ,, हस्त
वदण का पैशाची वतन
वात का शौरसेनी वाद
अज्ज का शौरसेनी अय्य।

इस प्रकार सब शब्दों में तत्-तत् भाषा के परिवर्तन नियमों का उपयोग करना चाहिए।

हर (हर) = महादेव ।
बुद्ध (बुद्ध) = बुद्धदेव ।
मग्ग (मार्ग) = मार्ग (रास्ता) ।
कलह (कलह) = कलह (झगडा) ।
हत्थ (हस्त) = हाथ ।
पाय (पाद) = पाद (पैर), पाँव, पग ।
भार (भार) = भार ।
उवज्झाय (उपाध्याय) = उपाध्याय, अध्यापक, गुरु, ओझा ।
आयरिय (आचार्य) = सदाचारवान्-चरित्रवान्-गुरु ।
सिद्ध (सि) = अदेही, वीतराग ।
निव (नृप) = नृप, राजा ।
बुह (बुध) = बुद्धिमान् ।
पुरिस (पुरुष) = पुरुष ।
आइच्च (आदित्य) = आदित्य, सूर्य ।
इंद (इन्द्र) = इन्द्र ।
चद (चन्द्र) = चन्द्र ।
मेह (मेघ) = मेघ, बादल ।
भारवह (भारवह) = भार उठानेवाला, मजदूर ।
समुद्द, समुद्र (समुद्र) = समुद्र ।
नयण (नयन) = नयन, नेत्र, आँख ।
कण्ण (कर्ण) = कान ।
महावीर (महावीर) = महावीर देव ।
जिण (जिन) = जय पानेवाला—वीतराग ।
अज्ज (आर्य) = आर्य, सज्जन ।

वाक्य (हिन्दी में)

बादल मार्ग को सींचते हैं।
इन्द्र बुद्धदेव को नमस्कार करता है।
बुद्धिमान् पुरुष बालक को पूछता है।
आँख से चन्द्र को देखता हूँ।
कान से समुद्र को सुनता हूँ।
बालक के हाथ में चन्द्र है।
कलह को छिन्न कर (मिटा) दो।
सूर्य तपता है।
राजा मार्ग को जानता है।
सिद्धों को नमस्कार करो।
मजदूर लोग मार्ग पर दौड़ते हैं।
हम समुद्र में चन्द्र को देखते हैं।
बालक उपाध्याय को पूछते हैं।
राजा के चरणों में पड़ता हूँ।
वीतराग देव ! नमस्कार करता हूँ।
दो बालक बोलते हैं।
समुद्र गरजते हैं।
राजा सुशोभित होता है।

वाक्य (प्राकृत में)

नमो[1] अरिहन्ताणं।
भारवहो हरं वंदइ।
महावीरो जिणो झाअइ।

---

१. 'णमो' अथवा 'नमो' के साथ प्रयुक्त शब्द षष्ठी विभक्ति में आते हैं।

कण्णेहि सुणेमि ।
नयणेहि देक्खामु ।
भारवहा भार चिणंति ।
नमो उवज्झायाण ।
समुद्दो खुब्भइ ।
मेहा समुद्दम्मि पडइ ।
बाला हत्थे घरिसति ।
समुद्द तरह ।
हत्थेण हर अच्चेमि ।
नमो आयरियाण ।
आयरियाण पाए नमाम ।
बाला कुद्दति
चन्दो वड्ढइ ।

०

सातवाँ पाठ

अकारान्त कमल शब्द के रूप (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	कमल + म् = कमलं (कमलम्)	कमल + णि = कमलाणि[1] कमल + इं = कमलाइं कमल + इँ = कमलाइँ } कमलानि
द्वि०	” ” ”	” ”
सं०	[2]कमल ! (कमल !)	” ”

शेष रूप (तृतीया से सप्तमी विभक्ति पर्यन्त) वीर शब्द की भाँति होते हैं।

१०. 'णि', 'इं', 'इँ' प्रत्ययों के पूर्व अंग के अन्त्य ह्रस्व स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे :—

[3]कमल + णि = कमलाणि ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२६।

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।३७ ।

पालि रूप :—

३. प्र० एकव०
कमलं
द्वि० एकव०
कमलं

प्र० बहुव०
कमला, कमलानि ।
द्वि० बहुव०
कमले, कमलानि ।

वारि + इ = वारीइ ।

मद्दु + इ = महूइ ।

११. सम्बोधन के एकवचन में केवल मूल अंग ही प्रयुक्त होता है। जैसे, कमल!

---

४. प्र० एकव०	प्र० बहुव०
वारि	वारी, वारीनि ।
द्वि० एकव०	द्वि० बहुव०
वारि	वारी, वारीनि

५. प्र० एकव०	प्र० बहुव०
मधु	मधू, मधूनि ।
द्वि० एकव०	द्वि० बहुव०
मधुं	मधू मधूनि ।

पृ० ८९ में लिंगविचार बताया है तदनुसार मकारांत तथा नकारांत शब्द प्राकृत भाषा में पुलिंग हो जाते हैं लेकिन पालि भाषा में ये शब्द पुलिंग होते हैं तथा नपुंसकलिंग भी। संस्कृत के सकारान्त तथा नकारान्त शब्द प्राकृत भाषा में अन्त्य व्यंजन के लोप होने के बाद स्वरान्त बन जाते हैं (दे० पृ० ३२ लोप०)। स्वरान्त होने से उनके रूप स्वरान्त जैसे समझने चाहिए।

पुलिंग अकारान्त शब्द का अकारान्त की तरह तथा पुलिंग इकारान्त, उकारान्त का इकारान्त उकारान्त की तरह। नपुंसकलिंगी अकारान्त का कमल की तरह तथा इकारान्त का वारि की तरह और उकारान्त का मद्दु की तरह रूप होते हैं।

मनस्—मण तथा कम्मन्—कम्म के रूपों में थोड़ी विशेषता है।

शब्द (नपुंसकलिंग)

नयण (नयन) = नयन, नेत्र, आँख ।

मत्थय (मस्तक) = मस्तक, सिर ।

मण—तृतीया एकवचन मणसा ।

पंचमी ,, मणसो ।

च० ष० ,, मणसो ।

सप्तमी ,, मणसि ।

पालि में भी 'मन' शब्द के मनसा, मनसो, मनसि रूप होते हैं ।

कर्मन्—कम्म—

तृ० ए०—कम्मणा, कम्मुणा ।

च० ष० ए०—कम्मणो, कम्मुणो ।

पं० ए०—कम्मुणा, कम्मुणो ।

स० ए०—कम्मणि ।

इसी तरह पालि में भी कम्मना, कम्मुना, कम्मुनो, कम्मनि रूप होते हैं ।

सिरस्—सिर का तृ० ए० में सिरसा रूप भी होता है । ये सब रूप आर्षप्राकृत में प्रचलित हैं । संस्कृत के रूपों में परिवर्तन करने से इन रूपों की सिद्धि करनी सरल है (हे० प्रा० व्या० शेषं संस्कृतवत् ८।४।४४८) ।

पालि की विशेष विशेषता के लिए—दे० पा० प्र० पृ० १३५ नं० ६१–६२ ।

अपभ्रंश रूपों की विशेषता—

कम्मं कम्माइं, कम्मइं ।

णाण (ज्ञान) = ज्ञान ।
चदण (चन्दन) = चन्दन का वृक्ष अथवा लकड़ी ।
णगर, नगर, णयर, नयर (नगर) = नगर, शहर ।
मुह (मुख) = मुख ।
पित्त (पित्त) = पित्त ।
सिंग (शृङ्ग) = सींग ।
फल (फल) = फल ।

अपभ्रंश में 'क' प्रत्ययवाला शब्द हो तो उसके रूप इस प्रकार हैं—

कमलक—कमलअ

प्र० ए०	कमलउ	बहुवचन पूर्ववत्	
द्वि० ए०	कमलउँ	,,	
	केलक–केलअ (= केला)		
	केलउं	,,	प्रचलित गुजराती—केलुं
	केलउ	,,	
कुण्डक	(कुण्डा=पानी का कुंडा)	,,	कुंडु
	कुंडउ	बहुवचन पूर्ववत्	
	कुंडउ	,,	

अपभ्रंश में शब्द (नाम) के रूप :

शब्द का अन्त्य स्वर दीर्घ हो तो ह्रस्व करके तथा ह्रस्व हो तो दीर्घ करके भी रूप बनते हैं। उन रूपों में कोई विभक्ति भी नहीं लगती तथा जैसा शब्द है उसमें कोई परिवर्तन न करके भी रूप बनते हैं अतः विभक्ति लगाने की जरूरत नहीं होती। जैसे—पुंलिंग में वीरा, वीर, नपुंसकलिंग में केला, कुण्डा।

हिन्दीमें प्रचलित चितारा (चित्रकर), केला, जल शब्द से इनकी तुलना की जा सकती है।

वण (वन) = वन ।
भायण, भाण (भाजन) = भाजन, पात्र ।
वेर (वैर) = वेर, वैर ।
वयण (वचन) = वचन ।
वयण, वदण(वदन) = वदन, मुख ।
मंगल (मङ्गल) = मंगल ।
पास (पार्श्व) = पास, नज़दीक ।
हियय (हृदय) = हृदय ।
गल (गल) = गला, गर्दन, ।
पुच्छ (पुच्छ) = पूंछ ।
पिच्छ (पिच्छ) = पींछी ।
मंस (मांस) = मांस ।
अजिन (अजिन) = अजिन, चमड़ा ।
भय (भय) = भय, डर ।
चम्म (चर्म) = चमड़ा ।

शब्द (पुंलिंग)

सीह, सिंघ (सिंह) = सिंह ।
वग्घ (व्याघ्र) = वाघ ।
सिगाल,सिआल (शृगाल) = शियाल, सियार ।
सीआल (शीतकाल) = शरद् काल ।
गय (गज) = गज, हाथी ।
वसह (वृषभ) वृषभ, बैल ।
ओट्ठ (ओष्ठ) = होठ, ओठ ।
दन्त (दन्त) = दांत ।
कुम्भार (कुम्भकार) = कुम्हार, कोंहार ।

चम्मार (चर्मकार) = चमार ।
हव्ववाह (हव्यवाह) = हव्यवाह, अग्नि ।
कोह (क्रोध) = क्रोध ।
लोह (लोभ) = लोभ ।
दोस (द्वेष) = द्वेष ।
दोस (दोष) = दोष ।
राग (राग) = राग, आसक्ति ।

धातु (क्रियापद)

घड् (घट्) = घड़ना, गढ़ना, बनाना ।
जहा (जहा) = छोड़ना, त्यागना ।
जागर् (जागर) = जागना ।
भक्ख (भक्ष) = भक्षण करना, खाना ।
जाय (जाय) = जन्म होना, पैदा होना ।
परि + क्कम् (परिक्रम्) = परिक्रमा करना, प्रदक्षिणा करना, चारों तरफ घूमना ।
इच्छ (इच्छ) = इच्छा करना ।
रक्ख (रक्ष) = रक्षा करना, पालना ।
वह् (वह्) = वपन करना, बोना ।

विशेषण

लंब (लम्ब) = लम्बा ।
बज्झ (बाह्य) = बाहर का ।
लण्ह (श्लक्ष्ण) = छोटा ।

अव्यय

न (न) = नहीं ।

व (वा) = वा, अथवा ।

विणा, विना (विना) = विना ।

सया, सइ (सदा) = सदा, हमेशा ।

सह (सह) = साथ ।

सद्धि (सार्धम्) = साथ ।

निच्चं, णिच्चं (नित्यम्) = नित्य ।

वाक्य (हिन्दी में)

वैर से वैर बढ़ता है ।

नगर के पास चन्दन का वन है ।

सिंह अथवा वाघ से शृगाल डरता है ।

कुम्हार सर्दी में पात्र बनाता है ।

वाघ के सींग नहीं होते ।

अग्नि वन को जलाती है ।

ज्ञान में मंगल है ।

महावीर को मस्तक झुकाकर वन्दन करता हूँ ।

राजा के कान नहीं होते ।

सिंह के हृदय में भय नहीं है ।

वन में हाथी सूंढ़ से फल खाता है ।

मांस के लिए सिंह को मारते हो ।

दांतो के लिए हाथियों को मारते हैं ।

बुद्ध के साथ महावीर बोलते हैं ।

चमड़े के लिए वाघ को मारता है ।

हाथी बैलों से नहीं डरते ।

सिंह की पूंछ लम्बी होती है।
आँख में क्रोध को देखना हूँ।
सूर्य अथवा चन्द्र नहीं घूमते।
बैल सींगों से शोभा पाता है।
चमार चमड़े को साफ करता है।
मुख से वचन बोलता हूँ।
पुरुष पतले होंठ से शोभा पाता है।
वर्षा नित्य होती है।
वर्षा बिना वन सूखते हैं।

वाक्य (प्राकृत में)

अजिणाए वहंति वग्घे।
फलाइ मायणम्मि सोहन्ति।
बुहा पुरिसा हियये वेरं न रक्खन्ति।
निवो वणेसु सिंघे वा वग्घे वा हणइ।
सिंघो फल न खायइ।
चंदणस्स वणंसि जामि।
कुम्मारो नगराओ आगच्छइ।
चम्मारो अजिणाए नगरं जाइ।
निवस्स मत्थयमि कमलाणि एज्जन्ति।
मत्थयेण वंदामि महावीर।
वणे गए देक्खह।
वग्घस्स वा सीहस्स वा मिगं नत्थि।
लोहाओ लोहो वड्ढइ।
रागा दोसो जायइ।
कोहेण पित्तं कुप्पई।

०

आठवाँ पाठ

पुंलिंग शब्द

घड (घट) = घड़ा।
नड (नट) = नट, अभिनेता।
पडह (पटह) = ढोल।
भड (भट) = भट, शूर, वीर।
मोह (मोह) = मोह, मूढ़ता।
काय (काय) = काय, काया, शरीर।
सद्द (शब्द) = शब्द, आवाज़।
हरिस (हर्ष) = हर्ष, खुशी।
मढ (मठ) = मठ, सन्यासियों का निवास-स्थान।
सढ (शठ) = शठ, धूर्त।
कुढार (कुठार) = कुठार, कुल्हाड़ी।
पाढ (पाठ) = पाठ।
समण (श्रमण) = शुद्धि के लिए श्रम करने वाला सन्त पुरुष।
मोक्ख (मोक्ष) = मोक्ष, छुटकारा।
वेय (वेद) = ऋग्वेद आदि चारों वेद।
फास (स्पर्श) = स्पर्श।
तलाय (तडाग) = तालाब।
गरुल (गरुड) = गरुड, एक पक्षी।
खार, छार (क्षार) = खार।

खंध (स्कन्ध) = स्कन्ध, भाग, मोटी डाली।
पोक्खर (पुष्कर) = तालाब।
खय (क्षय) = क्षय।
कोस (कोश) = पानी निकालने का कोस, खजाना।
पाण (प्राण) = प्राण, जीव।
गंध (गन्ध) = गंध।
काम (काम) = काम, इच्छा, तृष्णा।
अप्पाण (आत्मन्) = आत्मा, स्वयं।

नपुंसकलिंग शब्द

जल (जल) = जल, पानी।
रयय (रजत) = रजत, चाँदी।
गीअ, गीत (गीत) = गीत, गाया हुआ।
सीस (शीर्ष) = मस्तक, सिर।
गुत्त (गोत्र) = गोत्र, वंश।
गहण (ग्रहण) = ग्रहण करने का साधन।
पञ्जर (पञ्जर) = पिंजड़ा।
सील (शील) = शील, सदाचार।
लावण्ण, लायण्ण (लावण्य) = लावण्य, कांति।
रसायल (रसातल) = रसातल, पाताल।
कुम्पल, कुंपल (कुड्मल) = कुंपल, कोंपल, अंकुर।
रुप्प (रुक्म) = चाँदी।
जुम्म, जुग्ग (युग्म) = युग्म, जोड़ा।
कम्म (कर्म) = कर्म, काम, अच्छी-बुरी प्रवृत्ति।

मित्त (मित्र) = मित्र ।

दुक्ख (दुःख) = दुःख ।

सुक्ख (सुख) = सुख ।

चारित्त (चारित्र) = सच्चारित्र, सद्वर्तन ।

घाण (घ्राण) = नाक, सूँघने का साधन ।

सयढ (शकट) = शकट, गाड़ी, छकड़ा ।

पद, पय (पद) = पग, चरण, पाद ।

जुग (युग) = युग, जुआ ।

छीर, खीर (क्षीर) = क्षीर, खीर, दूध ।

लक्खण, लच्छण (लक्षण) = लक्षण, चिह्न ।

छीअ (क्षुत्) = छींक ।

खेत्त, छेत्त (क्षेत्र) = क्षेत्र, खेत, मैदान ।

सोअ, सोत्त (श्रोत्र) = श्रोत्र, कान, सुनने का साधन ।

वीरिय (वीर्य) = वीर्य, बल, शक्ति ।

विशेषण

मूढ (मूढ) = मूढ, मोहवाला, अज्ञानी ।

पुट्ठ (पुष्ट) = पुष्ट ।

संजय (संयत) = संयम वाला ।

पुट्ठ (पृष्ट) = पूछा हुआ ।

पण्डित, पंडिअ (पण्डित) = पण्डित, शिक्षित, पतित, तोता, शुक पक्षी ।

दुल्लह (दुर्लभ) = दुर्लभ, दुल्लभ, कठिन ।

अव्यय

नो (नो, नहि) = नहीं।

च, अ, य (च) = और।

बहिआ, बहिया (बहिर्) = बाहर।

बज्झओ (बाह्यतः) = बाहर की ओर

जहासुत (यथासूत्रम्) = सूत्र के अनुसार।

ण, पुणो, उण (पुनः) = पुनः, दुबारा, फिर से।

तत्तो (तत) = उससे।

किं (किम्) = किसलिए।

धातु

गवेस् (गवेष) = गवेषणा करना, खोजना।

वस् (वस) = निवास करना, रहना।

वय् (वद) = बोलना।

पिव् (पिब) = पीना।

आ + पिव् = थोड़ा पीना।

आ + पिब् = मर्यादा से पीना।

आ + पिब् = किसी प्राणी को हानि न हो इस रीति से चूसना।

जय् (जय) = जीतना।

हव्, भव् (भव) = होना।

पढ् (पठ) = पढ़ना।

सोअ्, सोच् (सोच) = सोचना, विचारना, शोक करना।

भण् (भण) = पढ़ना।

आकारान्त ' लिंग हाहा शब्द के रूपः—

	एकव०	बहुव०
प्र०	हाहा	हाहा
द्वि०	हाहां	हाहा

तृ० हाहाण	हाहाहि, हाहाहिं, हाहाहिँ
च०प० हाहस्स, हाहे	हाहाण, हाहाणं
पं० हाहत्तो, हाहासो,	हाहत्तो, हाहासो,
हाहाउ, हाहाहितो	हाहाउ, हाहाहितो, हाहासुंतो
स० हाहम्मि, हाहंसि	हाहासु, हाहासुं
संबो० हाहा	हाहा

इसी प्रकार गोवा (गोपा), सोमवा (सोमपा),किलालवा (किलालपा) इत्यादि शब्दों के रूप होंगे।

'षड्भाषा चंद्रिका' नामक व्याकरण के नियमानुसार गोवा वगैरह शब्द ह्रस्व हो जाते हैं अर्थात् गोव, सोमव, किलालव ऐसे हो जाते हैं तब इन सबके रूप अकारांत 'वीर' शब्द की तरह चलेंगे।

वाक्य (हिन्दी में)

बड़े में तालाव का पानी है।

नट ढोल के साथ मार्ग में नाचते हैं।

बालक कान्ति से शोभायमान होते हैं।

जिन शील की स्तुति करते हैं।

कुल्हाड़ी से चन्दन को काटता हूँ।

गरुड़ का जोड़ा तालाव में है।

बालक छींकते हैं।

क्षेत्र में क्षार तत्त्व है इसलिए अंकुर जल जाते हैं।

शब्दों का कोश बताता हूँ।

कलह में वैर होता है।

श्रमण मठ में रहते हैं।

तुम खीर पीते हो।

बैल जल का मोट खींचते हैं।

राजा के भण्डार में चाँदी है।

पण्डित पुरुष मोक्ष चाहते हैं।

तृष्णा से कलह होता है और कलह से द्वेष होता है।

सयमी श्रमण न तो सुखा से हर्षित होता है और न दुखो से घबराता ही है।

नट गीत गाते हैं और नाचते है।

सिंह और बाघ तालाब का पानी पीते हैं।

बाघ और सिंह पिंजरे में दौड़ते है।

बैल के कन्धे पर जुआ शोभा पाता है।

पण्डित शील को ढूँढते हैं, लेकिन गोत्र नहीं पूछते।

शील का मार्ग दुर्लभ (कठिन) है।

बालक उपाध्याय से पढता है।

वीर पुरुष दुख से शोक नहीं करते।

प्रयोग (प्राकृत में)

घाण गन्धस्स गहण वयति।

लोहा मोहो जायइ।

दुक्खेसुंतो बेया वि न रक्खति।

सोत्त सद्दस्स गहण वयति।

दुक्खेहितो बीहति पडिता।

काय फासस्स गहण वयति।

सुक्खेसु मित्त सुमिरति।

समणे महावीरे जयति।

मुद्धो पुणो पुणो वज्झ देक्खइ।

पण्डिता धीर पिवित्था।

मूढा कामेसु मुज्झति।

चन्दणस्स रसमापिवति ।

अप्पाणो अप्पाणस्स मित्तं किं वहिया मित्तमिच्छसि ।

पुरिसे वीरियं पुण दुल्लहं ।

अप्पाणं जिणामु संजया ।

पुट्ठो पंडिओ जहासुत्तं वदति ।

पण्डिता पुट्ठा न होंति ।

गीअस्स सद्दं सुणह ।

नवाँ पाठ

अकारान्त सर्वादि शब्द (पुंलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग)

सव्व (सर्व)
ज (यद्)
त (तद्)
क (किम्)

अकारान्त सर्वनामों के रूप पुंलिंग में 'वीर' जैसे और नपुंसकलिङ्ग में 'कमल' जैसे होते हैं। उनमें जो विशेषताएँ हैं वे निम्नलिखित हैं :—

१. प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में केवल 'सव्वे' (सर्वे), 'जे' (ये), 'ते' (ते), 'के' (के) होता है अर्थात् अकारान्त सर्वनामों के पुंलिङ्ग में प्रथमा के बहुवचन में 'ए' प्रत्यय होता है (हे० प्रा० व्या० ८।३।५८)।

६. षष्ठी के बहुवचन में 'सव्वेसिं' (सर्वेषाम्), 'जेसिं' (येषाम्), 'तेसिं' :(तेषाम्), 'केसिं' (केषाम्) भी होता है अर्थात् षष्ठी के बहुवचन में अकारान्त सर्वनामों के पुलिङ्ग में 'ण' के अतिरिक्त 'एसि' प्रत्यय भी होता है (हे० प्रा० व्या० ८।३।६२)। जैसे, सव्व + एसि = सव्वेसि, सव्व + ण = सव्वाण।

७. सप्तमी के एकवचन में सव्वस्सि, सव्वहिं (सर्वस्मिन्), सव्वत्थ (सर्वत्र); जस्सि, जहिं (यस्मिन्), जत्थ (यत्र), तस्सि, तहिं (तस्मिन्); तत्थ (तत्र); कस्सि, कहिं (कस्मिन्); कत्थ (कुत्र), इस प्रकार तीन-तीन रूप बनते हैं। सप्तमी के एकवचन में अकारान्त

सर्वनामों के पुंलिङ्ग में 'स्सि', 'हिं' और 'त्थ' प्रत्ययों (हे० प्रा० व्या० ८।३।५९) के अतिरिक्त पूर्वोक्त 'अंसि' और 'म्मि' प्रत्यय' भी लगते हैं।

[1]सव्व (सर्व, पुंलिङ्ग)

	एकव०	बहुव०
प्र०	सव्वे (सर्वः)	सव्वे (सर्वे)
द्वि०	सव्वं (सर्वम्)	सव्वे, सव्वा (सर्वान्)

---

१. सव्व शब्द के पालि रूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०	सव्वो	सव्वे
द्वि०	सव्वं	सव्वे
तृ०	सव्वेन	सव्वेभि, सव्वेहि
च०	सव्वस्स	सव्वेसं, सव्वेसानं
पं०	सव्वस्मा, सव्वम्हा	सव्वेभि, सव्वेहि
ष०	सव्वस्स	सव्वेसं, सव्वेसानं
स०	सव्वस्मि, सव्वम्हि	सव्वेसु

मागधी में 'शव्व' होगा।

अपभ्रंश में 'सव्व' तथा 'साह' (हे० प्रा० व्या० ८।४।३६६) शब्द प्रचलित हैं।

	एकव०	बहुव०
प्र०	सव्वु, सव्वो, सव्वं, सव्वा	सव्वे, सव्वं, सव्वा
द्वि०	सव्वु, सव्वं, सव्वा	सव्वं, सव्वा
तृ०	सव्वेण, सव्वेणं, सव्वें	सव्वेहिं, सव्वाहिं, सव्वहिं
च०-प०	सव्वस्सु, सव्वासु, सव्वसु, सव्वहो, सव्वाहो, सव्व, सव्वा	सव्वहं, सव्वाहं, सव्व, सव्वा

तृ० सव्वेण, सव्वेण (सर्वेण)	सव्वहि सव्वेहिं, सव्वहिँ (सर्वैः)
च० सव्वस्स (सर्वस्मै)	सव्वसि, सव्वाअ, सव्वाण (सर्वेभ्यः)
पं० सव्वओ	सव्वाओ, सव्वाउ (सर्वत)
सव्वाउ	सव्वाहि, सव्वहि
सव्वम्हा (सर्वस्मात)	सव्वाहितो, सव्वेहिता (सर्वेभ्य)
ष० सव्वस्स (सर्वस्य)	सव्वसि, सव्वाण, सव्वाण (सर्वेषाम्)
स० सव्वसि, सव्वसिम, सव्वम्मि (सर्वस्मिन्)	सव्वसु सव्वसु (सर्वेषु)
सव्वहिं, सव्वत्थ (सर्वत्र)	

सव्व (नपुंसकलिङ्ग)

प्र० सव्व (सर्वम्)	सव्वाणि, सव्वाइ, सव्वाइँ (सर्वाणि)
द्वि० ,, ,,	,, ,, ,,

शेष रूप पुलिङ्ग 'सव्व' शब्द की भाँति ही चलते हैं।

ज[1] (यद् , पुंल्लिङ्ग)

प्र० जो, जे (यः)	जे (ये)

स० सव्वहा, सव्वाहा	सव्वहु, सव्वाहु
सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं

सब विभक्ति और वचनों में 'सव्व' 'सव्वा' रूप तो समझना ही, 'साहु' शब्द के भी रूप 'सव्व' की तरह समझना चाहिये।

१. पालि भाषा में 'ज' नहीं होता परन्तु 'य' होता है तथा मागधी भाषा में भी 'य' समझना दे० पृ० ३४ मागधी ज-य।

द्वि०	जं (यम्)	जे, जा (यान्)
तृ०	जेण, जेणं (येन)	जेहि, जेहिं, जेहिँ (यैः)
च०	जस्स, जास (यस्मै यस्मै)	जेसि जाण, जाणं (ये येभ्यः)
पं०	जम्हा (यस्मात्)	जाओ, जाउ (यतः)
	जाओ, जाउ (यतः)	जाहि, जेहि, जाहिन्तो, जेहिंतो, जासुंतो, जेसुंतो (येभ्यः)
ष०	षष्ठी के रूप चतुर्थी विभक्ति के समान होंगे।	
स०	जंसि, जस्सि (यस्मिन्)	जेसु, जेसुं (येषु)
	जहिं, जम्मि, जत्थ (यत्र)	जाहे, जाला, जईआ*(यदा)

ज (नपुंसकलिङ्ग)

जं (यत्)	जाणि, जाइं, जाइँ (यानि)
,, (,,)	,, ,, (,,)

शेष सभी रूप पुंल्लिग 'ज' के समान चलते हैं।

[1]त, ण (तद्, पुंल्लिङ्ग)

प्र०	स, सो, से (सः)	ते, णे (ते)
द्वि०	तं, णं (तम्)	ते, ता, णे, णा (तान्)
तृ०	तेण, तेणं, तिणा (तेन)	तेहि, तेहिं, तेहिँ; णेहि, णेहिं, णेहिँ (तैः)

---

* हे० प्रा० व्या० ८।३।६५।

१. प्राकृत भाषा में 'त' और 'ण' तथा पालि भाषा में 'त' और 'न' दोनों 'वह' (ते) के अर्थ में प्रयुक्त होते है (हे० प्रा० व्या०

ष०	तस्स, तास (तस्मै, तस्मै) सि, तास, तेसिं, (तेभ्य , ते)	
		ताण, ताण
५०	तो, ताओ, ताउ (तत)	ताओ, ताउ (तत)
	तम्हा (तस्मात्) ताहि, तेहि, ताहितो, तेहितो (तेभ्य.)	
		तासुन्तो, तेसुतो
	णाओ, णाउ	णाओ, णाउ
		णाहि, णेहि
		णाहितो, णेहितो
		णासुतो, णेसुतो
ष०	चतुर्थी विभक्ति के समान होते हैं।	
स०	तसि, तस्मि, तहि	तेसु, तेसु (तेषु)
	तम्मि (तस्मिन्)	णेसु, णेसु
	तत्थ (तत्र)	
	[1]*ताहे, ताला, तइआ* * (*तदा*)	
	णसि, णस्सि, णहि	
	णम्मि, णत्थ	

त (नपुंसकलिंग)

प्र०	तं (तत्)	ताणि, ताइ, ताइँ (तानि)

८।३।७० तथा पा० प्र० पृ० १४१ । इसीलिए 'न' के साथ 'ण' के रूप भी बता दिए हैं। 'त' और 'न' तथा 'ण' लिखने में सर्वथा समान हैं इसलिये यह 'ण' तथा 'न' लिपिदोष के कारण कदाचित् प्रचलित हुए हों। 'त्था' के स्थान में 'न्था' का प्रयोग गुजराती गोहिलवाडी में प्रचलित ही है।

१. ये तीनों रूप 'तद' (तदा) अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं।

* हे० प्रा० व्या० ८।३।६५।

	णं	णाणि, णाइं, णाइँ
द्वि०	,, (,,)	,, ,, ,, (,,)

शेष रूप पुंल्लिग 'तत्' शब्द के समान बनते हैं।

क (किम्, पुंल्लिङ्ग)

प्र०	को (कः)	के (के)
द्वि०	कं (कम्)	के, का (कान्)
तृ०	केण, केणं, किणा, किण्णा (केन)	केहि, केहिं, केहिँ, (कैः)
च०	कस्स, कास (कस्मै, कस्य)	कास, केसिं, (केभ्यः, के)
पं०	कम्हा (कस्मात्) किणो, कीस काओ, काउ	काओ, काउ काहि, केहि काहितो, केहितो कासुंतो, केसुंतो
ष०	चतुर्थी विभक्ति के समान होते है।	
स०	कंसि, कस्सि, कहि कम्मि (कस्मिन्) कत्थ (कुत्र) [1]काहे, काला, कइआ* (कदा)	केसु, केसुं (केषु)

क (नपुंसकलिङ्ग)

प्र०-द्वि० किं (किम्) काणि, काइं, काइँ (कानि)

('क' के पालिरूप भी इन रूपों के समान है, दे० पा०प्र० पृ०१४९)

सर्वनाम शब्द

अण्ण, अन्न(अन्य) = अन्य, दूसरा।

---

१. ये तीनों रूप 'तव' अर्थ में ही प्रयुक्त होते है।

* हे० प्रा०व्या० ८।३।६५।

अण्णयर, अन्नयर (अन्यतर) = दूसरा कोई।
अंतर (अन्तर) = अन्दर का, आन्तरिक।
अवर (अपर) = अपर, अन्य, दूसरा।
अहर (अधर) = नीचा।
इम (इदम्) = यह।
इयर (इतर) = कोई अन्य।
उत्तर (उत्तर) = उत्तर दिशा, उत्तर का।
एग, इक्क, एक्क (एक) = एक।
एय, एअ (एतद्) = यह।
तुम्ह (युष्मद्) = तू।
अम्ह (अस्मद्) = मैं।
क (किम्) = कौन।
कइम, कतम (कतम) = कितना।
कयर (कतर) = कौन-सा।
अमु (अदस्) = वह।
ज (यद्) = जो।

त, ण (तद्) = वह।
दाहिण, दक्खिण (दक्षिण) = दक्षिण, दक्षिण का।
पुरिम[1] (पुरा + इम) = पहले का, पूर्व।
पुव्व (पूर्व) = पूर्व, पूर्व का।
वीस (विश्व) = विश्व, सर्व (सब)।
स, सुव (स्व) = स्व, अपना, आत्मा का।
सम (सम) = सब।
सव्व (सर्व) = सर्व, सब।

---

१. दे० पृ० ८३ शब्दों में विविध परिवर्तन।

सिम (सिम) = सब ।

सामान्य शब्द

भूअ (भूत) = भूत—प्राण—जीव, पृथ्वी आदि ।
सिस्स, सीस (शिष्य) = चेला, छात्र, शागिर्द ।
कसिवल (कृषिवल) = किसान ।
अंक (अङ्क) = अंक, गोद ।
बंधव (बान्धव) = भाई-बन्धु ।
पासाय (प्रासाद) = प्रसाद, महल ।
जीव (जीव) = जीव ।
ताव (ताप) = उष्णता, गर्मी, धूप ।
बंभण, बम्हण, माहण (ब्राह्मण) = ब्राह्मण ।
कोड (क्रोड) = गोद ।
पास (पास) = पाश-फांसी, फंदा ।
दिणयर (दिनकर) = सूर्य, लड़का ।
संसार (संसार) = संसार, जगत् ।

नपुंसकलिङ्ग शब्द

अंगण (अङ्गण) = आंगन ।
सीअ (शीत) = सर्दी ।
खेम (क्षेम) = क्षेम, कुशल ।
महब्भय (महाभय) = बड़ा भय, महद् भय ।
वत्थ (वस्त्र) = वस्त्र ।
कट्ठ (काष्ठ) = काष्ठ, काठ, लकड़ी ।

कम्मबीअ (कर्मबीज) = कर्मबीज, सदसत्संस्कार का बीज ।
भोयण (भोजन) = भोजन, आहार ।
धण (धन) = धन ।
ताण (त्राण) = रक्षण, शरण, आश्रय ।
घर (गृह) = गृह ।
आउय (आयुष्य) = आयुष्य, जिन्दगी, उमर ।

विशेषण

पडुप्पन्न (प्रत्युत्पन्न) = वर्तमान, ताजा, ठीक समय पर होने वाला ।
पमत्त (प्रमत्त) = प्रमत्त, प्रमादी ।
सम (सम) = समान वृत्तिवाला, सदृश ।
वीयराग, वीयराय (वीतराग) = जिसमें राग नहीं वह व्यक्ति ।
सुजह (सु + हान) = अनायासेन छोडने या त्यागने योग्य ।
जुन्न (जीर्ण) = जीर्ण, पुराना, गला हुआ, फटा हुआ ।
पिय (प्रिय) = प्रिय, इष्ट, प्यारा ।
आसत्त (आसक्त) = आसक्त, मोही ।
हअ (हत) = वध किया हुआ, नष्ट हुआ, मारा हुआ ।
आगअ, आगत, आअ (आगत) = आया हुआ ।
पिआउय (प्रियायुष्क) = आयुष्य को प्रिय समझने वाला ।
उत्तम, उत्तिम (उत्तम) = उत्तम, श्रेष्ठ ।
बुद्ध (बुद्ध) = ज्ञानी, बोध पाया हुआ ।
बद्ध (बद्ध) = बधा हुआ, बद्ध ।
सीअ (शीत) = शीतल, सर्दी, ठंडक ।
अधीर (अधीर) = अधीर, बिना धैर्य का ।
हंतव्व (हन्तव्य) = मारने योग्य ।

अप्प (अल्प) = अल्प, थोड़ा ।
अणाइअ (अनादिक) = जिसकी आदि नहीं ।

अव्यय

कत्तो, कुत्तो, कुओ, कओ (कुतः) = क्यों, कहाँ से, किस ओर से ।
जहा, जह, (यथा) = जैसे, यथा, जिस प्रकार ।
एव, एवं (एवम्) = एवं, इस प्रकार ।
सव्वत्तो, सव्वतो, सव्वओ (सर्वतः) = सब प्रकार से, चारों ओर से, सर्वतः ।
तहा, तह (तथा) = तथा, वैसे, उस प्रकार से ।
अन्तो (अन्तर) = अन्दर ।
खलु (खलु) = निश्चय ।

धातुएँ

जाण् (ज्ञा)—जानना, मालूम करना, ज्ञात करना ।
प + मत्थ् (प्र + मथ्)—मन्थन करना, नाश करना ।
कील्, कीड् (क्रीड्)—खेलना, क्रीड़ा करना ।
रम् (रम्) = खेलना, रमना, रमाना ।
णम्, नम् (नम्)—नमस्कार करना, झुकना ।
दह्, डह् (दह्)—दग्ध होना, जलना, जलाना ।
सह् (सह्)—सहन करना ।
पास (पश्य)—देखना ।
परि + अट्ट (परि + वर्त)—घूमना, पर्यटन करना ।
आ + इक्ख (आ + चक्ष)—कहना, बोलना ।

वाक्य (हिन्दी में)

सभी को सदा सुख प्रिय है ।

जो शरीर में आसक्त है वे मूढ है।
संसार में राग और द्वेष अनादिकाल से है।
मेघ सर्वत्र चारों ओर से बरसते हैं।
हम दोनों जिसका कपड़ा सीते हैं वह राजा है।
जैसे अग्नि लकड़ी को जलाती है वैसे ही महापुरुष अपने दोषों को जलाते हैं।
प्रमादी पुरुष भय से काँपता है।
उत्तर-पूर्व में शीत है और दक्षिण में ताप है।
एक भी प्राणी मारने योग्य नहीं।
सभी बालक गाते हैं।
सभी किसान सर्दी और गर्मी सहन करते हैं।
जो किसी प्राणी को मारता नहीं उसे हम ब्राह्मण कहते हैं।
कौन कहाँ से आया है?
मनुष्य शरीर की कुशलता के लिए तप करते हैं।
पण्डित लोग हर्ष से दुःख सहन करते हैं।
सभी शिष्य आचार्य को मस्तक झुका कर प्रणाम करते हैं।
मैं सभी के लिए चन्दन घिसता हूँ।
जो आकुल-व्याकुल हो जाता है वह शूर नहीं।
बद्ध और आसक्त पुरुष कर्मबीज से संसार में चक्र काटते हैं।
हम दूसरों का कल्याण चाहते हैं।
वह अपने दोषों को देखता है।
हाथी से घायल किसान भय से काँपता है।
तुम्हारे आँगन में सभी बालक खेलते हैं।
जो मूढ शिष्य आचार्य के सामने झुकता नहीं वह दुःख सहन करता है।
वीतराग पुरुष सबमें उत्तम ब्राह्मण है।

वीतराग सभी जीवों को समान दृष्टि से देखता है।

वाक्य (प्राकृत में)

जहा जुन्नाइं कट्ठाइं हव्ववाहो पमत्थति तहा जुन्ने दोसे समणो दहइ।
जस्स मोहो हओ तस्स न होइ दुक्खं।
शव्वेसि पाणाणं भूआणं दुक्खं महब्भयं ति बेमि।
सव्वे पि पाणा न हंतव्वा एवं जे पडुप्पन्ना जिणा ते सव्वे वि आइक्खंति।
जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ।
पमत्तस्स सव्वतो भयं विज्जइ।
इअ महावीरो भासते
जस्स मोहो न होइ तस्स दुक्खं हयं।
एगेसि भाणवाणं आउयं अप्पं खलु।
अधीरेहिं पुरिसेहि इमे कामा न सुजहा।
पुरिमाओ, दाहिणाओ उत्तराओ वा कत्तो आगओ त्ति न जाणइ जीवो।
जे सव्वं जाणइ से एगं जाणइ।
समो य जो सव्वेसु भूएसु स वीअरागो।
जेहिं वद्धो जीवो संसारे परियट्टइ ते रागा य दोसा य कम्मवीअं।
जेण मोहो हओ न सो संसारे परियट्टइ।
सव्वे पाणा पियाउअ सुहमिच्छन्ति।

दसवाँ पाठ

तुम्ह, अम्ह, इम और एअ के रूप —

तुम्ह (युष्मद्) = तुम (तीनों लिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	तु, तुम, तं (त्वम्)	तुम्हे, तुब्भे (यूयम्)
द्वि०	,, ,, ,, तुमे, तुए (त्वाम्), वो (व)	तुम्हे, तुब्भे (युष्मान्)
तृ०	ते, तइ (त्वया)	तुम्हेहि, तुम्हेहिं, तुम्हेहिँ, तुब्भेहि, तुब्भेहिं, तुब्भेहिँ (युष्माभि:)
च०	तुह, तुज्झ, तुव, तुम, ते, तुत्र, तुह (तव, ते तुभ्यम्)	तुमाण, तुमाण (युष्माकम्) तुम्हाण, तुम्हाण तुज्झाण, तुज्झाणं तुम्हाहँ, वो (व)
प०	तुवत्तो, तुवाओ, तुवाउ (त्वत्) तुमत्तो, तुमाओ, तुमाउ तुज्झत्तो तुज्झाओ तुज्झाउ तुहत्तो, तुहाओ, तुहाउ, तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ	तुम्हत्तो, तुम्हाओ, तुम्हाउ, तुम्हाहितो, तुम्हेहितो, तुम्हासुतो, तुम्हेसुतो (युष्मत्)
ष०	चतुर्थी के समान होते हैं।	

---

१. देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।९० से १०४ तक।

स०	तुवम्मि, तुवंसि, तुवस्सि,	तुवेसु, तुवेसुं,
	तुमम्मि, तुमंसि, तुमस्सि,	तुवसु, तुवसुं,
	तुमे, तुम्हम्मि, तुम्हंसि,	तुमेसु, तुमेसुं,
	तुम्हस्सि,	तुमसु, तुमसुं,
	तुम्मि, तइ, तए (त्वयि)	तुहसु, तुहसुं,
		तुम्हेसु, तुम्हेसुं,
		तुम्हसु, तुम्हसुं,
		तुसु, तुसुं (युष्मासु)

('तुम्ह' के पालि रूपों के लिए दे० पा० प्र० पृ० १५१)

अम्ह (अस्मद्) = मैं (तीनों लिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	[1]अहं, अहयं (अहम्)	मो, अम्ह, अम्हे, अम्हो (वयम्)
	(मागधी-[2]हगे)	(मागधी-हगे)
द्वि०	म्मि, अम्मि, अम्ह, मं,	,, ,, ,,
	(माम्)	(अस्मान्), णे (नः)
तृ०	मइ, मए (मया)	अम्हेहि, अम्हाहि,
		अम्ह, अम्हे, णे (अस्माभिः)
च०	मम, मज्झ, मज्झं,	मज्झ, अम्ह, अम्हं अम्हे,
	(मह्यम्, मम, मे)	अम्हो, अम्हाण, अम्हाणं,
	ममत्तो, ममाओ, ममाउ	णो (नः) (अस्माकम्)
पं०	अम्ह, अम्हं, महं	ममत्तो, ममाओ, ममाउ
	ममाहि, ममा (मत्)	अम्हत्तो, अम्हाओ, अम्हाउ,
		(अस्मत्)

---

1. देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।६१।७२।७३।७४।७५।७७।७८।८१।
2. हे० प्रा० व्या० ८।४।३०१।

ष०	चतुर्थी के समान होते हैं।	
स०	मे, ममाइ, मि, मए, (मयि)	मइ, अम्हेमु, मम्हेमु, अम्हसु, अम्हसुं★ (अस्मासु)

('अम्ह' के पालि रूपों के लिए दे० पा० प्र० पृ० १५३)

इम (इदम्) = यह (पुंल्लिङ्ग)

	एकव०	बहु०
प्र०	अय, इमो, इमे, (अयम्)	इमे (इमे)
द्वि०	इम, इण, ण (इयम्)	इमे इमा, णे, णा (इमान्)
तृ०	इमेण, इमेण, इमिणा णेण, णेण (अनेन)	इमेहि, इमेहिं, इमेहिँ एहि, एहिं, एहिँ (एभिः) णेहि, णेहिं, णेहिँ
च०	इमस्स, से, अस्स (अस्मै)	सिं, इमेसिं, इमाण, इमाणं (एभ्य)
प०	इमत्तो, इमाओ, इमाउ इमाहि, इमाहितो, इमा (अस्मात्)	इमत्तो, इमाओ, इमाउ, इमाहि, इमेहि (एभ्यः) इमाहितो, इमेहितो, इमासुंतो, इमेसुंतो
ष०	चतुर्थी के समान होंगे।	
स०	इमसि, इमस्सि, इमम्मि इह, अस्सि (अस्मिन्)	इमेसु, इमेसुं, एसु, एसुं (एषु)

('इम्' के पालि रूपों के लिये दे० पा० प्र० पृ० १४४–१४५)

★ 'अम्ह' के शेष रूप 'सर्व' की भांति होंगे।

'इम' (नपुंसकलिंग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	इमं[1], इणमो, इदं, (इदम्)	इमाणि, इमाइं, इमाइँ (इमानि)
द्वि०	,, ,, ,,	,, ,, ,,

शेप रूप पुल्लिङ्ग की भाँति।

[2]एअ (एतत्) = यह (पुल्लिङ्ग)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	एस, एसो, एसे (एषः) इणं, इणमो	एए (एते)
द्वि०	एअं (एतम्)	एए, एआ (एतान्)
तृ०	एएण, एएणं (एतेन) एइणा	एएहि, एएहिं, एएहिँ (एतैः)
च०	से, एअस्स (एतस्मै, एतस्य)	सिं, एएसिं (एतेभ्यः एते) एआण, एआणं
पं०	एत्तो, एत्ताहे, एअत्तो, एआओ, एआउ एआहि, एआहितो (एतस्मात्)	एअत्तो, एआओ, एआउ, एआहि, एएहि एआहितो, एएहितो, (एतेभ्यः) एआसुंतो, एएसुंतो
ष०	चतुर्थी के समान होते हैं।	
स०	एत्थ, अयम्मि, ईअम्मि, एअंसि, एअस्सि, (एतस्मिन्) एअम्मि	एएसु, एएसुं (एतेषु)

---

१. देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।७९।

२. देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।८१।८२।८३।८४।८५।८६।

एअ (नपुंसकलिङ्ग)

प्र० एम, एअ, इणं, इणमा (एतत) एआणि, एआइ, एआइँ★ (एतानि)
द्वि० „ „ „ „ „ „ „

शेष रूप पुल्लिङ्ग की भाँति होंगे।

सामान्य शब्द

दुम (द्रुम) = द्रुम, वृक्ष।
भमर (भ्रमर) = भ्रमर, भँवरा।
रस (रस) = रस।
जणय (जनक) = जनक, पिता।
साव (शाप) = शाप श्राप, दुराशीष।
भारहर (भारहर) = भार वहन करने वाला, मजदूर।
लाभ, लाह (लाभ) = लाभ।
अलाभ, अलाह (अलाभ) = अलाभ, लाभ न होना, हानि, घाटा, नुकसान।
कयविक्कय (क्रय-विक्रय) = क्रयविक्रय, खरीदना और बेचना।
जम्म (जन्मन्) = जन्म, उत्पत्ति।
छत्त (छात्र) = छात्र, विद्यार्थी।
वद्धमाण (वर्धमान) = वर्धमान—महावीर का नाम।
पमाद (प्रमाद) = प्रमाद, आलस्य, असावधानता।
संग (संग) = संग, संगति, मोहबन्ध।
असमण (अश्रमण) = अश्रमण, जो श्रमण न हो।
तेअ (तेजस्) = तेज।

★ है० प्रा० व्या० ८।३।८५।

तस (त्रस) = त्रास पाने पर गति करने वाला प्राणी ।

थावर (स्थावर) = स्थावर, स्थिर रहनेवाला प्राणी, जो गति न कर सके ऐसा प्राणी, पृथ्वी आदि ।

एरावण (एरावण) ऐरावत, एक हाथी विशेष का नाम, बड़ा हाथी।

लोग, लोअ (लोक) = लोग–लोक, जगत् ।

मुहुत्त (मुहूर्त) = मुहूर्त, समय, थोड़े समय का नाम ।

नह (नभस्) = नभ, आकाश, गगन ।

महादोस (महादोष) = महादोष, बड़ा दोष ।

नास (नाश) = नाश, अन्त ।

नास (न्यास) = न्यास, रखना, स्थापन करना ।

सूअर (शूकर) = सूअर ।

काल (काल) = काल, समय ।

खत्तिअ (क्षत्रिय) = क्षत्रिय (जाति विशेष का नाम) ।

नमिराय (नमिराज) = मिथिला का एक राजर्षि ।

पव्वय (पर्वत) = पर्वत, पहाड़ ।

तव (तपस्) = तप, तपश्चर्या ।

नह (नख) = नख, नाखून, नह ।

अय (अयस्) = लोहा ।

जायतेय (जाततेजस्) = अग्नि ।

पाय (पाद) = पाद–चौथा (चतुर्थ) भाग ।

उट्ट (उष्ट्र) = ऊँट ।

नपुंसक शब्द

पाव (पाप) = पाप ।

पावग (पापक) = पाप ।

फंदण (स्पन्दन) = फरकना, थोड़ा-थोड़ा हिलना ।

जुज्म, जुद्ध (युद्ध) = युद्ध ।

कारण (कारण) = कारण ।

पय (पद) = पद, चरण ।

सत्य (शस्त्र) = शस्त्र, हथियार ।

महाभय महब्भय (महाभय) = बड़ा भय ।

रय (रजस्) = रज पाप, धूल ।

अरविंद (अरविन्द) = अरविन्द, कमल विशेष ।

दाण (दान) = दान ।

छत्त (छत्र) = छत्र, छत्री, छाता ।

बम्हचेर, बमचेर (ब्रह्मचर्य) = ब्रह्मचर्य, सदाचारवृत्ति, ब्रह्म में परायण रहना ।

सच्च (सत्य) = सत्य ।

अभयप्पयाण (अभयप्रदान) = अभयदान, प्राणियों को निर्भय करना ।

असाय, असात (असात) = असाता होना, सुख न होना, दु ख होना ।

रज्ज (राज्य) = राज्य ।

सरण (शरण) = शरण, आश्रय ।

धीरत्त (धीरत्व) = धीरत्व, धैर्य, धीरता ।

पुप्फ (पुष्प) = पुष्प फूल ।

अत्य (अस्त्र) = अस्त्र, फेंककर मारने का हथियार ।

सत्य (शास्त्र) = शास्त्र ।

चेइअ (चैत्य) = चिता ऊपर बनाया हुआ स्मारक चिह्न—छत्री, चरणपादुका, वृक्ष, वुड, मूर्ति आदि ।

साय, सात (सात) = साता, सुख होना ।

गुरुकुल (गुरुकुल) = सदाचारी गुरुओं का निवासस्थान ।

सुत्त (सूत्र) = सूत्र, छोटा वाक्य ।

अव्यय

अलं[1] (अलम्) = बस, पर्याप्त ।
तओ, तत्तो (ततः) = उससे, उसके पश्चात् ।
अवरिं, उवरिं (उपरि) = ऊपर ।
मुसं, मुसा, मूसा, मोसा (मृषा) = मिथ्या, झूठ, असत्य ।
हु, खु, खो (खलु) = निश्चय ।
एगया (एकदा) = एकदा, एक समय, एक वार ।
धुवं (ध्रुवम्) = निश्चय ।
अज्झप्पं, अज्झत्थं (अध्यात्म) = आत्मा सम्बन्धि, आंतरिक ।
सततं, सययं (सततम्) = सतत, निरन्तर ।
इइ[2], इअ, त्ति, ति, इति (इति) = इति–इस प्रकार, समाप्ति सूचक अव्यय ।

विशेषण

अवज्ज (अवद्य) = अवद्य, न कहने योग्य काम–पाप, दोष ।
अणवज्ज, अनवज्ज (अनवद्य) = पापरहित निर्दोष ।
दुरणुचर (दुरनुचर) = जिसका आचरण कठिन लगे ।
सुत्त (सुप्त) = सुप्त, सोया हुआ ।
सुत्त (सूक्त) = सुभाषित ।
वद्धमाण (वर्धमान) = बढ़ता हुआ ।
गढिय (गृद्ध) = अतिशय लालची ।

---

१. 'अलं' के योग में तृतीया विभक्ति होती है—'अलं जुद्धेण', 'अलं तवेणं' ।

२. 'इति' अव्यय के उपयोग के लिये देखिए पृ० ९६ नि० १३, १४ ।

अहम (अधम) = अधम, नीच, हलका।
जिइंदिय (जितेन्द्रिय) = इन्द्रियों को जीतनेवाला।
निरट्ठय (निरर्थक) = निरर्थक, व्यर्थ।
धीर (धीर) = धीर, धैर्यधारी।
अणारिय (अनार्य) = अनार्य, आर्य से विपरीत।
पिय (प्रिय) = प्रिय, इष्ट, प्यारा।
दुप्पूरिय (दुष्पूर्य) = दुष्पूर्य—जो कठिनता से पूरा हो सके।
सयल (सकल) = सकल, सब, सम्पूर्ण।
कुसल (कुशल) = कुशल, चतुर।
दुरतिक्कम (दुरतिक्रम) = जिसका अतिक्रमण करना कठिन हो।
मड, मय (मृत) = मृत, मरा हुआ।
सेट्ठ (श्रेष्ठ) = श्रेष्ठ, उत्तम।
दंत (दान्त) = तृष्णा का दमन करने वाला, शान्त।
कड, कय (कृत) = कृत, किया हुआ।
विविह (विविध) = विविध, भिन्न-भिन्न प्रकार का।

धातुएँ

भास् (भाष्) = भाषण करना, बोलना।
प + मय (प्र + माद) = प्रमाद करना, आलस्य करना।
जुर् (जुर्) = जूरना, वियोग से दुःखित होना।
तिप्प् = (तिप्) = देना, झरना, रोना।
पिट्ट (पिट्ट) = पीटना, मारना, पीड़ा देना।
परि + तप्प (परि + तप्य) = परिताप पाना, दुःखी होना।
सम् + आ + यर् (सम् + आ + चर) = आचरण करना।
कप्प् (कल्प) = आवश्यकता होना, उचित होना।
वज्ज् (वर्ज) = वर्जन करना, रोकना, छोड़ना।

चय् (त्यज्) = त्यागना, छोडना, तज देना ।
चर् (चर) = चर्वण करना, चबाना, चलना ।
सं + जल् (सं + ज्वल) = जलना, तपना, क्रोध करना ।
अणु + तप्प् (अनु + तप्य्) = अनुताप करना, पश्चात्ताप करना ।
प + यय् (प्र + यत्) = प्रयत्न करना ।
अभि + नि + क्खम् (अभि + निष् + क्रम्) = सदा के लिए घर से निकल जाना, संन्यास लेना ।
परि + हर (परि + हर्) = छोड़ना ।
तच्छ् (तक्ष्) = छीलना, पतला करना ।
अभि + प्प + त्थ / अभिपत्थ } (अभि + प्र + अर्थ) = प्रार्थना करना ।
अभि + जाण् (अभि + ज्ञा) = पहचानना ।
खण् (खन्) = खोदना, कुरेदना ।
परि + च्चय् (परि + त्यज) = परित्याग करना ।

वाक्य

आचार्य कुशलता के लिए सतत प्रयास करते हैं ।
संसार में पाप का बोझ बढता है ।
जैसे-जैसे वासना बढ़ती है वैसे-वैसे लोभ बढ़ता है ।
युद्ध के समय धैर्य दुर्लभ होता है ।
हम निरर्थक नहीं बोलते ।
भँवरे फूलों पर दौड़ते हैं ।
वृक्ष पानी पीते हैं और ताप सहन करते हैं ।
नमिराज युद्ध को छोडता है ।
क्षत्रिय शस्त्र और अस्त्रों से निर्दोष मनुष्यों के मस्तक काटते हैं ।
छात्र सदैव गुरुकुल में रहते हैं ।

हम, तुम और वे सभी संसार के पाश को काटते हैं।
श्रमण जल से वस्त्र शुद्ध करते हैं—धोते हैं।
कुशल पुरुष निर्दोष वचन को उत्तम कहते हैं।
तपों में ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ है।
क्षत्रियों का लक्षण धैर्य और वीर्य है।
जितेन्द्रिय पुरुष बुद्ध और महावीर की सेवा करते हैं।
सभी प्राणी लोभ से पाप के मार्ग पर चलते हैं।
धीर क्षत्रिय मनुष्य का कुशल-क्षेम चाहते हैं।
तुम धैर्य से लोभ को जीतते हो।
वृक्ष बढ़ते और कुम्हलाते हैं इसलिए उनमें जीव है।
आचार्य जागते हैं और ध्यान करते हैं।
ब्राह्मण और श्रमण शास्त्रों से लड़ते हैं।
चैत्य में महावीर और बुद्ध की चरण-पादुकाएँ हैं।
तप से वृद्धि पाये हुए वर्धमान मनुष्यों के कल्याणार्थ संन्यास लेते हैं।
दाँत से लोहे को चबाते हो।
उसके आँगन में सूर्य का तेज दीप्त होता है।
वह तुम को बार-बार याद करता है।
हम महल के ऊपर हैं।
हम में वह एक जितेन्द्रिय पण्डित है।
तुम इसको बारम्बार वंदना करते हो।
वे, तुम और हम दूध पीते हैं।
पापी ब्राह्मण सब से हलका है।
संसार में कोई किसी का नहीं।
तुम अन्तर को जानते हो इसलिए प्रमाद नहीं करते।
मेरा भाई शीत से परीतता है।
यह ब्राह्मण इन लोगों को शाप देता है।

यह समुद्र क्षुब्ध होता है ।
वह और मैं लकड़ियाँ छीलता हूँ ।
अधिकतर लोग निरर्थक कोप करते हैं ।
तुम उसको, मुझको और इसको जीतते हो ।
सच्चे ब्राह्मण के बिना दूसरा कौन उत्तम है ?
जन्म से कोई ब्राह्मण नहीं बन सकता ।
संसार में सभी सभी के शरणरूप है ।
संसार में सर्वत्र त्रस और स्थावर जीव हैं ।
श्रमण पापमय कर्मों का त्याग करता है।
श्रमणों मे वर्धमान श्रेष्ठ है ।
दानों में अभयदान श्रेष्ठ है ।
पाँव से अग्नि को कुचलते हो ।
नखों से तुम पर्वत को खोदते हो ।
पुष्पो में अरविन्द श्रेष्ठ है ।
थोड़ा असत्य भी महाभयंकर है ।
मजदूर चाँदी के लिए पर्वत को खोदते हैं ।
पिता की गोद में पुत्र लोटता है ।

वाक्य (प्राकृत)

एगो हं नत्थि मे को वि नाहमन्नस्स कस्स वि धीरो वा पण्डितो मुहुत्तमपि नो पमायए ।
इमे तसा पाणा, इमे थावरा पाणा न हंतव्वा इति सव्वे आयरिया भासंति ।
अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे विविहेहिं दुक्खेहिं जूरइ ।
तओ से एगया पावेहिं दिव्वइ ।
कोहेण, मोहेण, लोहेण वा चित्तं खुब्भइ तत्तो अलं तव एएहिं ।

अय पुरिसे गढिए सोयइ, जरइ, तिप्पइ, पिट्टइ, परितप्पइ।
जे अज्झत्थ जाणति ते बहिया वि जाणति।
अल बालस्स सगेण।
धीगण भग्गो दुग्गुवरो।
एम लोगे ससारंमि गिज्झइ।
त वय बूम माहण जो एगमवि पाण न हणेज्जा पुरिसा।
तुममेव तुम मित्त किं बहिया मित्तमिच्छसि ?
जहा अता तहा बाहिं एव पासनि पण्डिना।
कामा खलु दुरतिक्कमा।
असमणा सया सुत्ता, समणा सया जागरति।
कईहिं तो कम्मेहिंतो केसिमवि न मावन्नो अत्यि।
मूढस्स पुरिसस्स सगेण अल।
बुद्धो कामे जहाइ।
पावगेण कम्मेण पुणो पुणो कलहो जायति।
अल पमाएण कुसलस्स।
पण्डिओ न हरिसेइ, न कुप्पइ।
पाणाण असात महब्भयं दुक्ख।
नत्थि जीवस्स नासो त्ति।
मूढाणं अप्पाणे दुप्पूरिए अत्थि
समणाण कयविक्कयो महादोसा न कप्पइ।
तुमे सच्च समण तहा सच्च माहण न गरिहह।
'पुत्ता मे', 'धण मे', 'मायण मे' त्ति गढिए पुरिसे मुज्झइ।
ते पुत्ता तव ताणाए नालं तुम पि तेसिं सरणाए नालं होसि।
लाभो त्ति न मज्जेज्जा, अलाभा त्ति न सोएज्जा।

सततं मूढे धम्मं [1]नाभि-जाणति ।

जिणा अलोभेण लोभं जयंति ।

संसारे एगेसिं भाणवाणं अप्पं च खलु आउः

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं ।

खत्तिया धम्मेणं जुज्झं जुज्झंति ।

जहा लाहो, तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढ

समणा सव्वेसिं पाणाणं सुहमिच्छंति[2] ।

---

१. देखिए, सन्धि पृ० ६४, नियम ६, न + अभिजाणति = नाभिजाणति ।

२. देखिए, सन्धि पृ० ६७, नियम १८ ।

ग्यारहवाँ पाठ

भूतकालिक प्रत्यय*

स्वरांत धातुओं में लगनेवाले प्रत्यय :—

	एकवचन – बहुवचन
प्र० पु०	सी, ही, हीअ (सात्)
म० पु०	,, ,, ,, ,
तृ० पु०	,, ,, ,, ,,

* प्राकृत भाषा में भूतकाल के कोई भेद नहीं है। ह्यस्तनी, अद्यतनी और परोक्ष—ये तीनों सामान्य भूतकाल में समाविष्ट हो जाते हैं और इन तीनों के प्रत्यय भी समान ही हैं तथा भूतकाल के तीनों पुरुष तथा सब वचनों के प्रत्यय भी समान हैं। पालि भाषा में तो संस्कृत के समान 'हियतनी', 'अज्जतनी' और 'परोक्ख'—ये तीन भेद भूतकाल के हैं तथा इन तीनों के आत्मनेपद तथा परस्मैपद के तीनों पुरुषों तथा सब वचनों के प्रत्यय भिन्न भिन्न हैं।

हियतनी (ह्यस्तनी) परस्मैपद के प्रत्यय —

	एकव०	बहुव०
१ पु०	अ, अं	म्हा
२. पु०	ओ, अ	त्थ
३ पु०	ओ, अ	ऊ, उं, उ

आत्मने पद के प्रत्यय —

१. पु०	इं	म्हसे
२ पु०	से	व्हं
३. पु	त्थ	त्थुं

'पा' धातु के रूप

सर्व पुरुष सर्व वचन	पासी (पा + सी), पाअसी (पा + अ + सी) पाही (पा + ही), पाअही (पा + अ + ही) पाहीअ (पा + हीअ), पाअहीअ (पा + अ + हीअ)

अज्जतनी (अद्यतनी) परस्मैपद के प्रत्यय :—

१. पु०	इं (इसं, इस्सं)	म्हा, म्ह
२. पु०	ओ, इ	त्थ
३. पु०	ई, इ	उं, इंसु, इसुं, अंसु

आत्मने पद के प्रत्यय :—

	एकव०	बहुव०
१. पु०	अ	म्हे
२. पु०	से	व्हं
३. पु०	आ	ऊ

परोक्ख (परोक्ष) परस्मैपद :—

	एकव०	बहुव०
१. पु०	अ	म्ह
२. पु०	ए	त्थ
३. पु०	अ	उ

आत्मनेपद :—

१. पु०	इ	म्हे
२. पु०	त्थो	व्हो
३. पु०	त्थ	रे

'हो' धातु के रूप

होमो (हा + मा) होअम्हो (हा + अ + मो)

हाहा (हा + हो) होअहो (हा + अ + हो)

होहोअ (हो + होअ) होअहोअ (हा + अ + होअ)

हियतनी–रूपनिदर्शन —

'भू' धातु

	परस्मैपद		आत्मनपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१ पु०	अभव, अभव	अभम्हा	अभवि	अभवम्हसे
२. पु०	अभवो	अभवत्थ	अभवसे	अभवम्ह
३. पु०	अभवा	अभवू	अभवत्थ	अभवत्थु

अज्जतनी–रूपनिदर्शन —

	परस्मैपद		आमनपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१. पु० अभवि		अभविम्हा, अभविम्ह	अभव, अभवं	अभविम्हे
२. पु०	अभवो, अभवि	अभवित्थ	अभविस	अभविम्हे
३. पु०	अभवी, अभवि	अभवु, अभविंसु	अभवा, अभवित्थ	अभवू

परोक्ख—रूपनिदर्शन —

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
१. पु०	बभूव	बभूविम्ह	बभूवि	बभूविम्हे
२. पु०	बभूवे	बभूवित्थ	बभूवित्थो	बभूविव्हो
३. पु०	बभूव	बभूवु	बभूवित्थ	बभूविरे

व्यञ्जनांत धातुओं में लगनेवाले प्रत्यय :—

	एकवचन — बहुवचन
प्र० पु०	ईअ[२] (ईत्[२])
म० पु०	,,
तृ० पु०	,,

पालि में धातु के आदि में ह्यियतनी, अज्जतनी में भूतकाल सूचक 'अ' का आगम होता है परन्तु प्राकृत में वैसा नहीं होता तथा पालि में परोक्ष भूतकाल में धातु का द्विर्भाव हो जाता है। प्राकृत में वैसा नहीं होता है। पालिरूपों का भूतकाल-संबंधी विशेषताओं के लिए देखिए, पा०प्र० पृ० २०२ तथा २१२ से ११६ तक। यहाँ बताए हुए पालि प्रत्यय तथा प्राकृत प्रत्यय—इन दोनों में विशेष तो नहीं परन्तु साधारण समानता जरूर देखी जाती है।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६२। सूत्र में प्रयुक्त भूतकाल का 'सी' और संस्कृत में प्रयुक्त भूतकाल 'सीत्' प्रत्यय दोनों एक जैसे हैं। 'अबासीत्', 'अत्रासीत्' आदि संस्कृत रूपों में प्रयुक्त 'सीत्' (तृतीय पु० एकवचन) भूतकाल को बताता है लेकिन प्राकृत में वह व्यापक होकर सर्वपुरुष और सर्ववचन बताता है। 'ही' और 'हीअ' ये दोनों प्रत्यय भी 'सी' के साथ ही समानता रखते हैं।

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६३। के अनुसार 'ईअ' और संस्कृत का भूतकाल सूचक 'इत्' दोनों हैं। 'अभाणीत्', 'अवादीत्' आदि संस्कृत क्रियापदों में प्रयुक्त 'ईत्' (तृ० पु० एकवचन) भूतकाल को बताता है परन्तु प्राकृत में वह सर्वपुरुष और सर्ववचनों में व्यापक हो जाता है।

वद + वदीअ (वद् + ईअ)
हस् + हसीअ (हस् + ईअ)
कर् + करीअ (कर् + ईअ)

विशेषतः आर्ष प्राकृत में उपलब्ध प्रत्यय :—

प्रायः तृतीय पुरुष एकवचन } त्था, इत्था, इत्थ (इट्[1])

प्रायः तृतीय पुरुष बहुवचन } इंसु (इट्[2]), इंसु (इषु), अंसु

धातु-रूप

हो होत्था (हो + त्था)
री रीइत्था (री + इत्था)
प + हार् = पहारित्था, पहारत्था } (पहार + इत्था)
भुज्—भुंजित्था (भुंज् + इत्था)
वि + हर् = विहरित्था (विहर् + इत्था)

---

१. यह 'इत्थ' और संस्कृत का 'इट्' प्रत्यय दोनों समान हैं। इट्—इट्ठ—इत्थ, त्था, अभविष्ट, अजनिष्ट आदि संस्कृत रूपों में प्रयुक्त 'इट्' (तृतीय पु० एकवचन) भूतकाल का सूचक है। प्राकृत में भी प्रायः यह तृतीय पुरुष एकवचन को सूचित करता है।

२ 'इंसु' और 'अंसु' तथा संस्कृत का भूतकाल द्योतक 'इषु' ये सभी समान हैं। 'अवादिषु', 'अयाजिषु' आदि संस्कृत क्रियापदों में प्रयुक्त 'इषु' (तृ० पु० बहुव०) भूतकाल का सूचक है और प्राकृत में भी प्रायः यह उसी काल, पुरुष और वचन को सूचित करता है।

सेव्—सेवित्था (सेव् + इत्था)
गच्छ् + गच्छिसु (गच्छ् + इंसु)
पृच्छ्—पुच्छिसु (पुच्छ् + इंसु)
कर्—करिंसु (कर् + इंसु)
नच्च्—नच्चिंसु (नच्च् + इंसु)
आह्—आहंसु (आह् + अंसु)

कुछ अनियमित रूपः—

अस्[1]—होना

अत्थि, अहेसि, आसि (सर्वपुरुष-सर्ववचन)

आसिमो, आसिमु (आस्म) रूप कहीं-कहीं आर्ष प्राकृत में प्रथम पुरुष के बहुवचन में उपलब्ध होते हैं। 'वद्' धातु का 'वदीअ' रूप होना चाहिए तथापि आर्ष प्राकृत में इसके बदले 'वदासी' और 'वयासी' रूप उपलब्ध होते हैं। अर्थात् उक्त 'सी' प्रत्यय स्वरान्त धातु में लगाया जाता है, लेकिन आर्ष प्राकृत में कहीं-कहीं व्यञ्जनान्त धातु में भी लगा हुआ मिलता है। वद + सी = वदासी। आर्ष प्राकृत होने से 'वद' को 'वदा' हुआ है।

कर्—करना

भूतकाल में 'कर' के बदले 'का' भी होता है :—

कर + ईअ = करीअ

---

[1] पालि भाषा में अस् धातु के भूतकाल में रूप :—

	एकव०	बहुव०
१.	आसि	आसिम्ह
२.	आसि	आसित्थ
३.	आसि	आसुं, आसिंसु

'कर' का 'का' होने पर — का + सी = कासी; का + हा = काही; का + हीअ = काहीअ

आर्ष प्राकृत में उपलब्ध अन्य अनियमित रूप :—

कर्—अकरिस्स (अकार्षम्) १. पु० एकवच०
कर् = क–अकासी (अकार्षीत्) ३. पु० ,,
ब्रू—अब्बवी (अब्रवीत्) ,, ,, ,,
वच—अवोच (अवोचत्) ,, ,, ,,
अस्—आसी, आसि (आसीत्) ,, ,, ,,
आसिमु (आस्म) १. पु० बहुव०
ब्रू—आह (आह) ३. पु० एकव०
ब्रू—आहु (आहुः) ३. पु० बहुवचन
दृश—अदक्खू (अद्राक्षुः) ,, ,, ,,
भू, हू — अभू (अभूत अथवा अभुवन्) एकव० तथा बहुव०; अहू

उक्त आर्षरूप संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं की भिन्नता को स्पष्ट रूप से निषेध करते हैं। ये सभी रूप केवल उच्चारणभेद के नमूने हैं तथा इन आर्ष रूपों के साथ पालि रूप बहुत मिलते-जुलते हैं।

पुंल्लिङ्ग

आरिय (आर्य) = आर्य, सज्जन।
णायसुय, णातसुत (ज्ञातसुत) = ज्ञातवंश का पुत्र—महावीर।
छगलय (छाग) = बकरा।
नायपुत्त, नातपुत्त, णातपुत्त (ज्ञातपुत्र) = ज्ञातवंश का पुत्र-महावीर।
देस (देश) = देश।
मिलिच्छ (म्लेच्छ) = म्लेच्छ (जातिविशेष)।

ऊसव (उत्सव) = उत्सव ।

मअ (मृग) = मृग ।, हिरण, पशु ।

मयंक (मृगाङ्क) = मृगाङ्क, चन्द्र ।

पज्जुण्ण, पज्जुन्न (प्रद्युम्न) = प्रद्युम्न नामक कृष्ण का पुत्र ।

वच्छ (वत्स) = वत्स, पुत्र, बच्चा ।

उच्छाह (उत्साह) = उत्साह ।

रिच्छ (ऋक्ष) = रीछ, भालू ।

गोतम, गोयम (गौतम) = गौतम गोत्र का मुनि ।

पवंच (प्रपञ्च) = प्रपञ्च ।

संख (शंख) = शंख ।

कंटग (कण्टक) = काँटा ।

पंथ (पन्थ) = पथ, मार्ग, रास्ता ।

कलंब (कदम्ब) = कदम्ब का वृक्ष ।

सप्प (सर्प) = सर्प, सांप ।

मंजार (मार्जार) = बिल्ली ।

दुक्काल (दुष्काल) = दुष्काल ।

वम्मह (मन्मथ) = मन को मथनेवाला–कामदेव ।

पण्ह (प्रश्न) = प्रश्न ।

कण्ह (कृष्ण) = कृष्ण भगवान् ।

पण्हुअ (प्रस्नुत) = वात्सल्य से माँ की छाती में दूध भर आना ।

पुव्वण्ह (पूर्वाह्न) = दिवस का पूर्व भाग ।

हेमन्त (हेमन्त) = हेमन्त ऋतु, अगहन और पूस का महीना ।

मूसअ, मूसय (मूषक) = मूषक, चूहा, मूस (भोजपुरी में) ।

पल्हाअ, पल्हाद (प्रह्लाद) = प्रह्लाद नामक भक्त, राजपुत्र ।

मोहणदास (मोहनदास) = मोहनदास, गांधीजी का नाम ।

रट्ठधम्म (राष्ट्रधर्म) = राष्ट्रधर्म, देश का हित करनेवाली प्रवृत्ति ।

गाम (ग्राम) = गाँव ।
देविंद (देवेन्द्र) = देवों का इन्द्र—स्वामी ।
मोर, मयूर (मयूर) = मयूर, मोर ।
हरिएसबल (हरिकेशबल) = चण्डाल कुल में पैदा होनेवाला एक जैन मुनि ।
विंछिअ (वृश्चिक) = बिच्छू, बिच्छी ।

नपुंसकलिङ्ग शब्द

गमण (गमन) = गमन करना, जाना ।
पाणीअ, पाणीय (पानीय) = पानी, जल, पीने की वस्तु ।
दुद्ध (दुग्ध) = दूध ।
रायगिह (राजगृह) = राजगृह, मगध देश की राजधानी ।
कुसग्गपुर (कुशाग्रपुर) = राजगृह का दूसरा नाम ।
विण्णाण, विन्नाण (विज्ञान) = विज्ञान ।
भारहवास (भारतवर्ष) = भारतवर्ष, हिन्दुस्तान ।
महाविज्जालय (महाविद्यालय) = महाविद्यालय, कॉलेज ।
पाडलिपुत्त (पाटलिपुत्र) = पाटलिपुत्र, पटना (शहर) ।
चंडालिय (चाण्डालिक) = चण्डाल का स्वभाव, क्रोध ।
नाण (ज्ञान) = ज्ञान ।
पवहण (प्रवहन) = प्रवहन, बहना ।
अच्छेर (आश्चर्य) = आश्चर्य ।

विशेषण

महिड्ढिय, महड्ढिय (महर्धिक) = ऋद्धिवान् , धनाढ्य ।
वाघायकर (व्याघातकर) = व्याघात करनेवाला, विघ्न करनेवाला।
महग्घ (महार्घ) = बहुमूल्य, महँगा, किमती, अधिक कीमतवाला।

सग्घ (स्वर्घ) = सस्ती ।

केरिस (कीदृश) = कैसा ।

नवोण, णवोण, (नवीन) = नवीन, नया ।

अज्जतण, अज्जयण (अद्यतन) = आज का, ताजा ।

सरस (सरस) = सरस, अच्छा, रसवाला ।

पच्छ (पथ्य) = पथ्य—मार्गमें हित करनेवाला, पाथेय ।

जुगुच्छ (जुगुप्स) = जुगुप्सा करनेवाला, घृणा करनेवाला ।

सण्ह, सुहुम, सुखुम (सूक्ष्म) = सूक्ष्म, बारीक, छोटा-सा ।

सहल (सफल) = सफल ।

विहल (विफल) = निष्फल ।

विलिअ (व्यलीक) = झूठ, असत्य ।

पुराण, पुराअण (पुराण) = पुराना, पुरातन ।

णिण्ण, णेण्ण (निम्न) = निम्न, नीच ।

वीलिअ (व्रीडित) = लज्जित, शर्मिन्दा ।

अव्यय

तेण (तेन) = उस तरफ, उससे ।

जेण (येन) = जिस तरफ, जिससे ।

अवस्सं (अवश्यं) = अवश्य ।

एव, एवं (एवम्) = एवं, इस प्रकार ।

सुट्ठु (सुष्ठु) = शोभन, अच्छा, सुन्दर, अतिशय ।

दुट्ठु (दुष्ठु) = खराब, असुन्दर ।

खिप्पं (क्षिप्रम्) = शीघ्र ।

पच्छा (पश्चात्) = अनन्तर, बाद, पीछे ।

इहेव (इहैव) = यहीं, यहीं पर ।

असइं (असकृत्) = अनेकवार, बारंबार ।

गामाणुग्गामं, गामाणुगाम (ग्रामानुग्रामम्)=प्रत्येक गांव में, गांव-गांव में, एक गांव से दूसरे गांव में।
नमो, णमो (नमः)=नमस्कार।
पगे (प्रगे)=प्रात काल में, सुबह।
मा (मा)=मा, मत, नहीं।

धातु

अच्च (अर्च्)=अर्चना, पूजना।
उव+दिस् (उप+दिश्)=उपदेश करना।
नच्च् (नृत्य)=नृत्य करना, नाचना।
प+हार् (प्र+धार्)=धारना, सकल्प करना।
ने, णे (नी)=ले जाना।
आ+णे (आ+नी)=ले आना।
सेव् (सेव्)=सेवन करना, सेवा करना।
हस् (हस्)=हँसना।
पढ् (पठ्)=पढना।
पुच्छ् (पृच्छ)=पूछना।
भण् (भण्)=पढ़ना, कहना।
रीय् (री)=निकलना, जाना।
वि+हर् (वि+हर्)=विहरना, घूमना, पर्यटन करना, विहार करना।
अणु+भव् (अनु+भव)=अनुभव करना।

वाक्य (हिन्दी)

मै गांव में गया और अपने साथ बकरा को ले गया।
आर्यपुरुषो ने महावीर को अनेकवार वंदन किया।

मेघ बरसा और मयूर नाचे ।
ब्राह्मणों ने पूछा, 'महावीर का शील कैसा है ?'
उन्होंने पानी पिया और हमने दूध ।
कौन नहीं जानता कि पानी नीचे जाता है ?
मैं ज्ञान से क्रोध को अवश्य मारता हूँ ।
उसने दुष्ट रीति से संकल्प किया ।
हम दोनों ने अच्छी तरह से सेवा की ।
आज का दूध अच्छा था ।
प्रातः और उसके पश्चात् भी बालक आँगन में खेले ।
श्रमण बहुमूल्य वस्त्रों को नहीं छूते ।
लोगों ने ज्ञानार्थ पण्डितों की पूजा की ।
हमने सत्य बोला ।
राजा और इन्द्र विनयपूर्वक बोले ।
मैं और तू महाविद्यालय में गये और राष्ट्रधर्म पढ़ा ।
उसने बहुत अच्छा-अच्छा काम किया और जीवन को सफल किया ।
महावीर हेमन्त ऋतु में निकले ।
जब उसने पूछा तब तुमने झूठ बोला ।
हमने सत्य का जाप किया ।
अनार्यों ने कहा 'सभी प्राणी मारने योग्य हैं' लेकिन आर्यों ने कहा 'कोई भी प्राणी मारने योग्य नहीं ।'
मोहनदास महापुरुष ने प्रत्येक गाँव में घूमकर राष्ट्र-धर्म का उपदेश दिया।
प्रद्युम्न का शिष्य पाटलिपुत्र गया ।
देश में मनुष्यों ने दुष्काल में दुःख भोगा ।
शरमिन्दे शिष्य हँसते नहीं ।
तुमने शिष्यों से शीघ्र पूछा, झूठ क्यों बोले ?

पुराना सब सच्चा है ऐसा भी नहीं और नया सब भी नहीं।

आर्यों को नमस्कार।

पूर्वाह्न के समय सूर्य का पूजन किया।

हिन्दुस्तानी सस्ता अन्न खाते हैं।

वाक्य (प्राकृत)

वाला धाविसु।

मा य चडालियं कासी[1]।

तवस्स वाघायकर वयणे वयासी।

इम पण्ह उदाहरित्था।

गोयमो समण महावीरं एव वयासी।

तोल कह नायसुनस्स आसी?

नमिरायो देविंदमिणमब्बवी।

अगणम्मि वाला मारा य नच्चिसु।

ते पुत्ता जणयं इण वयण कहिंसु।

वद्धमाणो जिणो अभू।

सो दुद्ध पासी।

तुम छगलय गामं नेही।

माणवा हसीअ।

जिणा एव कहिंसु।

आसी अम्हे महिड्ढिया।

तेण कालेण तेण समयेण पाडलिपुत्ते नयरे होत्था।

---

१. संस्कृत का 'मा कार्षीत्' (अद्यतनभूत तृ० एकव०) रूप और यह 'मा कासी' रूप बिल्कुल एक जैसे हैं।

व समणे महावीरे तेणेव गोयमो गच्छीअ पुच्छिसु णं समणा
ाहणा य, सो पुरिसो पाडलिपुत्तं नयरं गमणाए पहारेत्थ ।
रायगिहे नयरे होत्था ।
अहू जिणा, अत्थि जिणा सव्वेवि जिणा धमम्मि सच्चमुत्तमं आहंसु ।
ते पाणीयं पाहीअ ।
बालो हसीअ । मिच्छा ते एवमाहंसु ।
तुम्हे तत्थ ठाहीअ ।
आसिमु बंधवा दोवि ।
सो इमं वयणमब्बवी ।
अत्थि इहेव भारहवासे कुमग्गपुरं नाम नय- ।
सोसे विणयेणं आयरिये सेवित्था ।
तंसि हेमंते नायपुत्ते महावीरे रीइत्था ।
जे आरिया ते एवं वयासी ।
समणे महावीरे गामाणुगामं विहरित्था ।
हरिएसबलो नाम जिइन्दियो समणो आसि
किं अम्हे असच्चं भासीअ ?
तंसि देसंसि दुक्कालो होसी ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६४ । देखिए पृ० २२४ = अस्—होना ।

बारहवाँ पाठ

इकारान्त और उकारान्त पुल्लिंग शब्द के रूप :—

रिसि*

एकवचन	बहुवचन
प्र० रिसि = रिसी[1] (ऋषि)	रिसि + अउ[2] = रिसउ
	रिसि + अओ[2] = रिसओ
	रिस + अयो = रिसया (ऋषयः)

---

* रिसि शब्द के पालिरूप —

एकव०	बहुव०
प्र० रिसि	रिसी, रिसयो
द्वि० रिसि	रिसी रिसयो
तृ० रिसिना	रिसीहि, रिसिहि, रिसीभि, रिसिभि
च० रिसिनो, रिसिस्स	रिसीनं
प० रिसिना, रिसिस्मा रिसिम्हा	रिसीहि, रिसिहि, रिसीभि, रिसिभि
ष० रिसिनो रिसिस्स	रिसीन
स० रिसिस्मि रिसिम्हि	रिसीसु रिसिसु
सं० रिसे !, रिसि !	रिसी रिसयो

पालिभाषा में प्रथमा तथा द्वितीया के बहुवचन में प्राकृत के 'णो' प्रत्यय की तरह 'नो' प्रत्यय भी लगता है—मारमत्तिनो, सम्मादिट्ठिनो, मिच्छादिट्ठिनो वजिरबुद्धिनो अधिपतिनो जानिपतिनो, सेनापतिनो, गहपतिनो (देखिए पा० प्र० पृ० ८४ व ९१)।

एकव०	बहुव०
	रिसि + णो[3] = रिसिणो
	रिसि = रिसी
द्वि० रिसि + म्[४] = रिसिं (ऋषिम्)	रिसि = रिसी (ऋषीन्)
	रिसि + णो = रिसिणो
तृ० रिसि + णा = रिसिणा[५] (ऋषिणा)	रिसि + हि = रिसीहि,[६] रिसीहिं, रिसीहिँ (ऋषिभिः)
च० रिसि + अये = रिसये (ऋषये) रिसि + स्स = रिसिस्स रिसि + णो[७] = रिसिणो	रिसि + ण = रिसीण, रिसीणं (ऋषिभ्यः)

पालिभाषा में पुंल्लिग 'सखि' शब्द के विशेष रूप होते है। उन रूपों में सखि को कहीं 'सख', कहीं 'सखि' तथा कहीं 'सखार' और कहीं पर 'सखान' ऐसे आदेश होते हैं। प्रथमा के एकवचन में 'सखा' तथा द्वितीया के एकवचन में 'सखारं' तथा 'सखानं' रूप होते हैं और प्रथमा तथा द्वितीया के बहुवचन में 'सखायो' रूप भी होता है (देखिए, पा० प्र० पृ० ८९)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१९। इसके अतिरिक्त अन्य वैयाकरण ह्रस्व इकारान्त तथा उकारान्त के अनुस्वारयुक्त रूप भी प्रथमा के एकवचन में मानते है—रिसी, रिसिं; भाणू, भाणुं।

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।२०।

३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२२।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।५; ८।३।१२४।

५. हे० प्रा० व्या० ८।३।२४।

६. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६।

प० रिसि + त्ता = रिसित्तो (ऋषित)	रिसि + त्तो = रिसित्तो (ऋषित)
रिसि + आ[७] = रिसीआ (ऋषित)	रिसिआ = रिसीओ (ऋषित)
रिसि + उ = रिसीउ (ऋषित)	रिसि + उ = रिसीउ (ऋषित)
रिसि + णो = रिसिणो (ऋषित)	रिसि + हिंतो=रिसीहिंतो (ऋषिभ्य)
रिसि + हिंतो=रिसीहिंतो	रिसि + सुंतो = रिसीसुंतो
ष० रिसि + स्स = रिसिस्स (ऋषे)	रिसि + ण = रिसीण,
रिसि + णो = रिसिणो	रिसिण (ऋषीणाम्)
स० रिसि + सि = रिसिसि (ऋषौ)	रिसि + सु=रिसीसु रिसीसुं (ऋषिषु)
रिसि + म्मि = रिसिम्मि	
स० रिसि = रिसि !	रिसि + अउ = रिसउ ! (ऋषय)
रिसी = रिसी ! (ऋषे !)	रिसि + अओ = रिसओ ! (ऋषय)
	रिसि + अयो = रिसयो ! (ऋषय)
	रिसि + णो = रिसिणो !
	रिसि = रिसी !

७ हे० प्रा० व्या० ८।३।२३ तथा ८।३।१२४।

*भाणु (भानु = सूर्य)

	एकव०	बहुव०
प्र०	भाणु, भाणू (भानुः)	भाणु + अवो = भाणवो[1] (भानवः) भाणु + अवे = भाणवे[2] (,,) भाणु + अओ = भाणओ (,,) भाणु + अउ = भाणउ (,,) भाणु + णो = भाणुणो भाणु = भाणू

* भानु शब्द के पालिरूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०	भानु	भानू, भानवो
द्वि०	भानुं	भानू, भानवो
तृ०	भानुना	भानूहि, भानूभि
च०	भानुनो, भानुस्स	भानूनं
पं०	भानुना, भानुस्मा, भानुम्हा	भानूहि, भानूभि
ष०	भानुनो, भानुस्स	भानूनं
स०	भानुस्मि, भानुम्हि	भानूसु
सं०	भानु	भानू, भानवो, भानवे

—देखिए, पा० प्र० पृ० ६१–६३, ६४ ।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२१ सूत्र के द्वारा उकारान्त पुंल्लिङ्ग रूप भी सिद्ध होते हैं ।

२. 'अवे' प्रत्यय का उपयोग आर्ष प्राकृत में पर्याप्त उपलब्ध होता है ।

द्वि० भाणु + म् = भाणुं (भानुम) भाणु + णो = भाणुणो,
भाणू = भाणू (भानून्)

तृ० भाणु + णा=भाणुणा भानुना) भाणु + हि = भाणूहि,
भाणूहिं, भाणूहिँ
(भानुभिः)

च० भाणु + अवे = भाणवे भाणु + ण = भाणूण,
भाणु + णा = भाणुणो भाणूण (भानुभ्य)
भाणु + स्स = भाणुस्स (भानव)

प० भाणु + त्तो = भाणुत्तो
भाणु + ओ = भाणूओ भाणूओ (भानुत)
भाणु + उ = भाणूउ भाणूउ (,,)
(भानुत , भानो)
भाणु + णो = भाणुणो भाणु + हितो = भाणूहिंतो,
भाणु + हिंता = भाणूहिंतो भाणूसुंता (भानुभ्यः)

ष० भाणु + स्स = भाणुस्स भाणु + ण = भाणूण,
भाणु + णो = भाणुणो (भानो) भाणूण (भानूनाम्)

स० भाणु + म्मि = भाणुम्मि भाणु + सु = भाणूसु,
भाणु + म्मि = भाणुम्मि भाणूसुं (भानुषु)
(भानौ)

सं० भाणु = भाणु ! (भानो !) भाणु + अवो = भाणवो ! (मानव)
भाणु = भाणू ! भाणु + अओ = भाणओ (,,)
भाणु + अउ = भाणउ

भाणु + णो = भाणुणो

भाणु + भाणू

अकारान्त शब्द के रूप सिद्ध करने में जो प्रत्यय प्रयुक्त होते है, अधिकतर उन्हीं प्रत्ययों का प्रयोग उपर्युक्त रूपसाधना में किया गया है। सर्वथा नये रूप बहुत थोड़े हैं।

१. प्रथमा और सम्बोधन के एकवचन तथा बहुवचन में और द्वितीया के बहुवचन में इकारान्त और उकारान्त के मूल अंग केवल दीर्घ होकर प्रयुक्त होते हैं।

यथा :—रिसि = रिसी; भाणु = भाणू।

२. स्वरादि प्रत्यय परे रहने पर प्रथमा, सम्बोधन और चतुर्थी के अंग के अन्त्य स्वर का याने अंग का अन्त्य 'इ' अथवा 'उ' का लोप हो जाता है।

जैसे :—रिसि + अओ = रिस् + अओ = रिसओ
भाणु + अवो = भाण् + अवो = भाणवो
रिसि + अये = रिस् + अये = रिसये
भाणु + अवे = भाण् + अवे = भाणवे।

३. नये रूपों में तृतीया एकवचन, 'णा' प्रत्ययवाले सभी रूप और चतुर्थी का एकवचन है। लेकिन वे सभी उपर्युक्त प्रयोग रूपसाधना से समझे जा सकते हैं।

संस्कृत में 'इन्' प्रत्ययान्त (दण्डिन्, मालिन्) शब्दों के प्रथमा-द्वितीया-बहुवचन में तथा पञ्चमी-षष्ठी के एकवचनमें 'दण्डिनः मालिनः;' इत्यदि रूप प्रसिद्ध है; इन्ही रूपों का प्राकृत रूपान्तर 'दंडिणो; मालिणो' होता है। ये सब देखते हुए 'रिसिणो', 'भाणुणो' रूपों की घटना सहज में ही समझी

जा सकती है। 'इम्' प्रत्ययान्त शब्दों के सभी रूप लगभग इकारान्त शब्द की भाँति होते हैं।

इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिङ्ग

इकारान्त-उकारान्त नपुंसकलिङ्ग अंग के तृतीया से सप्तमी पर्यन्त सभी रूप, इकारान्त-उकारान्त पुलिङ्ग रूपसाधना की भाँति हैं और प्रथमा, द्वितीया तथा सम्बोधन की रूपसाधना अकारान्त नपुंसकलिङ्ग की भाँति है। यथा —

वारि (वारि = जल)

प्र०-द्वि० वारि + म् = वारिं (वारि) वारि + णि = वारीणि
वारि + इ = वारीइ
वार + इँ = वारीइँ } (वारीणि)

स० वारि! (वारि!) ,, ,, ,,

(सूत्रों के लिये देखिये पाठ सातवाँ का प्रारम्भ)

महु (मधु = शहद)

प्र०-द्वि० महु + म् = महुं (मधु) महु + णि = महूणि
महु + इ = महूइ
महु + इँ = महूइँ } (मधूनि)

सं० महु! (मधु!) ,, ,, ,, (,,)

(सूत्रों के लिए देखिए पाठ सातवाँ का प्रारम्भ)

चतुर्थी के एकवचन में 'वारिणे', 'वारिस्स', 'महुणे', 'महुस्स' रूप समझना चाहिए। लेकिन 'वारय', 'महव' नहीं।

इकारान्त और उकारान्त शब्द (पुंलिङ्ग)

मुणि (मुनि) = मुनि—मनन करने वाला मौन धारण करनेवाला सन्त।

सउणि (शकुनि) = शकुनि—पक्षी ।

पइ (पति) = पति—स्वामी, मालिक, रक्षक ।

घरवइ, गहवइ (गृहपति) = गृहपति—गृहस्थ, घरका स्वामी ।

रिसि, इसि (ऋषि) = ऋषि, महात्मा ।

दुक्खदंसि (दुःखदर्शिन्) = दुःख देखनेवाला, दुःखी पुरुष ।

भोगि, भोइ (भोगिन्) = भोगी, भोग भोगनेवाला, संसारी पुरुष ।

उदहि (उदधि) = समुद्र, उदक—जल धारण करनेवाला, समुद्र ।

साहु (साधु) = साधक, साधु पुरुष, सज्जन, साहुकार ।

जन्तु (जन्तु) = जन्तु, प्राणी ।

सिसु (शिशु) = शिशु; छोटा बच्चा, बालक ।

मच्चु, मिच्चु (मृत्यु) = मृत्यु ।

बिंदु (बिन्दु) = बिन्दु ।

भाणु (भानु) = भानु, सूर्य ।

वाउ, वायु (वायु) = वायु, पवन ।

विण्हु (विष्णु) = विष्णु ।

हत्थि (हस्तिन्) = हाथी ।

कुलवइ (कुलपति) = कुलपति—आचार्य ।

नरवइ (नरपति) = नरपति—नरों-पुरुषों का पति = राजा, राजा ।

भूवइ (भूपति) = भूपति—भू—पृथ्वी का पति, राजा ।

गणवइ (गणपति) = गणों का पति—गणपति, गणेश ।

अमुणि (अमुनि) = जो मुनि नहीं हो (बड़-बड़ करने वाला) ।

कोहदंसि (क्रोधदर्शिन्) = क्रोधदर्शी, क्रोधी ।

भूमिवइ (भूमिपति) = भूमि का पति—राजा ।

उवाहि (उपाधि) = उपाधि ।

सेट्ठि (श्रेष्ठिन्) = श्रेष्ठी, सेठ, साहुकार ।

गब्भदंसि (गर्भदर्शिन्) = गर्भ देखने वाला, जन्म लेने वाला ।

अभोगि, अभोइ (अभोगिन्) = अभोगी (योगी)।
पक्खि (पक्षिन्) = पक्षी।
सोमित्ति (सौमित्रि) = सुमित्रा का पुत्र, लक्ष्मण।
भिक्खु (भिक्षु) = भिक्षु।
चक्खु (चक्षुष्) = चक्षु, आँख।
सयभु (स्वयभू) = स्वयभू, ब्रह्मा, समुद्र का नाम।
ससारहेउ (संसारहेतु) ससार बढ़ने का कारण।
गुरु (गुरु) = गुरु, माता-पिता आदि गुरुजन।
तरु (तरु) = तरु, वृक्ष।
बाहु (बाहु) = बाहु, भुजा।

इकारान्त और उकारान्त (नपुसकलिङ्ग) शब्द

अक्खि, अच्छि (अक्षि) = आँख।
अट्ठि (अस्थि) = हड्डी, अस्थि।
धणु (धनुष्) = धनुष।
जाणु (जानु) = घुटना।
वारि (वारि) = वारि, जल, पानी।
जउ (जतु) = जतु, लाख, लाह।
वत्थु (वस्तु) = वस्तु, पदार्थ।
दहि (दधि) = दही।
महु (मधु) = मधु, शहद।
खाणु (स्थाणु) = स्थाणु, अचल, ठूँठ (वृक्ष)।

अकारान्त (पुँल्लिङ्ग) शब्द

वसह (वृषभ) = वृषभ, बैल।
कोसिअ (कौशिक) = कौशिक गोत्र वाला इन्द्र, चण्डकौशिक सर्प।

आहार (आहार) = आहार, भोजन ।

ण्हाविअ, नाविअ (स्नापयितृ) = नापित, नाई ।

मअ (मृग) = मृग, वन्यपशु, हिरण ।

मार (मार) = मार ।

कुमारवर (कुमारवर) = श्रेष्ठ कुमार ।

आहार (आधार) = आधार ।

गरुल (गरुड़) = गरुड़ ।

रण्णवास (अरण्यवास) = अरण्यवास, जंगल में रहना ।

सव्वसंग (सर्वसङ्ग) = सर्व प्रकार का सङ्ग—सम्बन्ध-आसक्ति ।

महासव (महास्रव) = पाप का बड़ा मार्ग ।

महप्पसाय (महाप्रसाद) = सुप्रसन्न, महाकृपालु ।

मास (मास) = मास, महीना ।

पक्ख (पक्ष) = पक्ष—शुक्ल पक्ष, कृष्णपक्ष ।

वेसाह (वैशाख) = वैशाख मास ।

उवासग (उपासक) = उपासक, उपासना करने वाला ।

कोववर (कोपपर) = कोप करने में तत्पर, क्रोधी ।

सोवाग (श्वपाक) = श्वपाक, चण्डाल ।

अकारान्त (नपुंसकलिङ्ग) शब्द

आभरण (आभरण) = आभरण, आभूषण, गहना ।

घर (गृह) = गृह, घर ।

पंजर (पञ्जर) = पञ्जर—हड्डियों का ढाँचा, पिंजरा ।

उदग, उदय (उदक) = उदक, पानी, जल ।

हुअ (हुत) = होम ।

रूव (रूप) = रूव, आकृति ।

कुल (कुल) = कुल ।

घय (घृत) = घी।
तण (तृण) = तृण, घास।
मित्तत्तण (मित्रत्व) = मित्रता, दोस्ती, भाई-बन्धुता।

विशेषण

बुद्ध (बुद्ध) = बोध—ज्ञान पाया हुआ, ज्ञानी।
हुत (हुत) = हवन किया हुआ।
सेट्ठ (श्रेष्ठ[1]) = श्रेष्ठ, उत्तम।
सभूअ (संभूत) = हुआ।
चउत्थ } (चतुर्थ) = चतुर्थ, चौथा।
चतुत्थ }
तिण्ण (तीर्ण) = तीर्ण, तिरा हुआ।
सुत्त (सुप्त) = सुप्त, सोया हुआ।
अप्पणिय (आत्मीय) = अपना।
पासग (दर्शक) = द्रष्टा, समझदार, विचारक।
परिसोसिय, परिसोसिअ (परिशोषित) = परिशोषित।
बिइज्ज (द्वितीय) = द्वितीय, दूसरा।

अव्यय

ताव, ता (तावत्) = तब तक।
एगया (एकदा) = एकदा, एकबार।
सया (सदा) = सदा, हमेशा।

---

१. उपयोग :—जिसमें श्रेष्ठ कहना हो वह शब्द षष्ठी और सप्तमी विभक्ति में आता है 'पाणीसु सेट्ठे माणवे' अथवा 'पाणीण सेट्ठे माणवे' याने प्राणियों में मनुष्य श्रेष्ठ है।

जाव, जा (यावत्) = जब तक, जो ।

एत्थ (अत्र) = यहाँ ।

चिरं = (चिरम्) = चिरकाल तक ।

धातुएँ

अव + मन्न् (अप + मन्)—अपमान कर.

अ + क्खा (आ + ख्या)—बोलना, कहना ।

जाय् (याच्)—याचना करना, माँगना ।

प + वय् (प्र + वद्)—कहना ।

पूज, पूअ (पूज्)—पूजना, पूजा करना ।

चय् (त्यज्)—त्यागना, छोड़ना ।

डस् (दश्)—डसना, दंशना, डंक मारना ।

रक्ख् (रक्ष)—रक्षा करना, सम्भालना ।

वि + राअ, वि + राज् (वि + राज्) = विराजमान होना, शोभायमान होन

उ + ड्डी (उत् + डी)—उड़ना ।

नि + मंत् (नि + मन्त्र)—निमन्त्रण देना, बुलाना ।

जागर् (जागर्)—जागना ।

ताड्, ताड् (ताड्)—ताड़न करना, मारना ।

वि + चर् (वि + चर्)—विचरना, घूमना ।

वाक्य (हिन्दी)

एकबार साधु ब्राह्मण के घर गये ।

भिक्षु उपाधियों को छोड़ते हैं और स्वयंभू का ध्यान करते हैं ।

अनार्य तप से परिशोपित मुनि का उपहास करते हैं ।

ब्राह्मणों ने भिक्षुओं का अपमान किया ।

हे मुनि ! तू ससार से विरा हुआ है ।
कर्म से उपाधि होती है ।
सभी प्राणियों के प्रति मेरी मित्रता है किसी के साथ वैर नहीं है ।
अमुनि सदा सोते रहते हैं और मुनि हमेशा जागते रहते हैं ।
चण्डकौशिक सर्प ने श्रमण महावीर को डसा ।
जो क्रोधदर्शी है वह गर्भदर्शी है और जो गर्भदर्शी है वह दुःखदर्शी है।
हे पण्डित ! मैं सब प्रकार से लोभ का त्याग करता हूँ ।
महावीर ने चण्डकौशिक सर्प और देवेन्द्र दोनों में मित्रता रखी ।
वायु से वृक्ष काँपे और जल की बूँदें उड़ीं ।
क्या विचारक को उपाधि होती है ?
कौशिक देवेन्द्र ने श्रमण महावीर को पूजा ।
हाथी ने समुद्र का पानी पिया ।
लोभ संसार का हेतु है ।
कोई भी व्यक्ति कुलपति के बैल तथा मृग को नहीं मारता ।
बैल और मृग घास खाते हैं और मुनि घी पीते हैं ।
महावीर के उपासक सेठ ने वैशाख मास में तप किया ।
सभी आभूषण भाररूप हैं ।
कुलपति ने श्रमण महावीर को कहा—'कुमारवर ! यहाँ ऋषियों का मठ है ।'
सौमित्रि राम को प्रणाम करता है ।
मुनि आहार के लिए सभी कुलों में जाते हैं ।
महावीर ग्रीष्म के दूसरे महीने चौथे पक्ष में बुद्ध बने ।
सुप्रसन्न मुनि क्रोधदर्शी नहीं होते ।
यह भिक्षु सेठ के कुल का था ।
हे भिक्षु ! मेरे घर में दूध नहीं, घी नहीं लेकिन पानी है ।
इस गृहस्थ के दो बालक थे ।

उन्होंने हाथ से पिंजरा फेंक दिया।
किस को आँखें नहीं है ?
पक्षी पिंजरे में कांपा और हिला (सरका)।
सेठ ने राजा को और राजा ने गणपति को नमस्कार किया।
तुम पानी पीना चाहते हो ?
मुनियों का पति महावीर राजगृह में विहार किया।

वाक्य (प्राकृत)

मुणिणो सया जागरंति, अमुणिणो सया सुत्ता संति।
'घयं पिवामि' त्ति साहुस्स णो भवइ[1]।
पक्खीसु वा उत्तमे गुरुले विराजइ।
मच्चू नरं णेइ हु अंतकाले।
गहवइ मुणिणो वुड्ढं दिज्ज।
भूवइ, घरवइ य दोवि गुरुं वंदंति।
महरिसी ! तं पूजयामु।
न मुणी रण्णवासेण किंतु णाणेण मुणी होइ।
नमो भूमिवइ कयावि न चडालियं कासी।
भिक्खू धम्मं आइक्खेज्जा।
लोहेण जंतुणो दुक्खाणि जायंति।
सिसुणो किं किं न छिंदिरे ?
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे इसीण सेट्ठे तह वद्धमाणे।
एगे भिक्खुणो उदगेण मोक्खं पवयंति।
सउणी पंजरंसि उट्टेइ।
ते उवासगा भिक्खुं निमंतयंति।

---

१. 'भवइ' अर्थात् योग्य होता है।

सहवे गहवइणो भिक्खुं वदते ।
अन्ने मुणिणो हुएण मोक्ख उदाहरंति ।
भिक्खू सव्वसगे महासवे परिजाणीअ ।
भोगिणो ससारे भमोअ, अमोगी चयइ रयं ।
हत्थीसु एरावणमाहु सेट्ठं ।
एगया पाडलिपुत्तस्स नरवइ महाविआ होत्था ।
महप्पसाया इसिणो हवंति ।
न हु मुणा कोववरा हवंति ।
महासवं ससारहेउ वयंति बुद्धा ।
बुद्धो मय मच्चु च तरीअ ।
गणवइ हत्थिस्स सिसु रक्खीअ ।

●

तेरहवाँ पाठ

भविष्यत्कालिक प्रत्यय*

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	स्सामि[1] (ष्यामि)	स्सामो[1] (ष्यामः)
	हामि[2]	हामो[2]
	हिमि[3]	हिमो[3]
	स्सं[4]	

---

*. पालि में भविष्यत्काल के प्रत्यय :—

परस्मैपद

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	स्सामि	स्साम
म०पु०	स्ससि	स्सथ
तृ०पु०	स्सति	स्संति
प्र०पु०	हामि	हाम
म०पु०	हिसि	हित्थ
तृ०पु०	हिति	हिन्ति
प्र०पु०	हिस्सामि	हिस्साम
म०पु०	हिस्ससि	हिस्सथ
तृ०पु०	हिस्सति	हिस्सन्ति

म०पु०	स्ससि (ष्यसि)	स्सह (ष्यथ)
	स्ससे (ष्यसे)	स्सथ
	हिसि	हित्था
	हिस	हिह (ष्यध्वे)

आत्मनेपद

प्र०पु०	स्सं	स्साम्हे
म०पु०	स्ससे	स्सव्हे
तृ०पु०	स्सते	स्सन्ते

प्राकृत भाषा के भविष्यत्काल के 'हिति' वगैरह हकारादि प्रत्यय व्यापक हैं, परन्तु पालिभाषा में ये हकारादि प्रत्यय व्यापक नहीं हैं।

शौरसेनी तथा मागधी में भविष्यत्काल के प्रत्यय —

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	स्सं, स्सिमि	स्सिमो, स्सिमु, स्सिम
म०पु०	स्सिसि, स्सिसे	स्सिह, स्सिध, स्सिइत्था
तृ०पु०	स्सिदि, स्सिदे	स्सिंति, स्सिते, स्सिइरे

इन्हीं प्रत्ययों में 'स' के स्थान में 'श' करने से मागधी के प्रत्यय हो जाते हैं।

शौरसेनी रूप :—

प्र०पु०	भणिस्सं, भणिस्सिमि	भणिस्सिमो, भणिस्सिमु, भणिस्सिम
म०पु०	भणिस्सिसि, भणिस्सिसे	भणिस्सिह, भणिस्सिध, भणिस्सिइत्था
तृ०पु०	भणिस्सिदि, भणिस्सिदे	भणिस्सिंति, भणिस्सिन्ते, भणिस्सिइरे

तृ०पु०	स्सइ	(ष्यति)	स्संति	(ष्यन्ति)
	स्सति		स्संते	(ष्यन्ते)
	स्सए	(ष्यते)		
	स्सते			
	हिइ		हिंति	
	हिति		हिंते	
	हिए		हिइरे	
	हिते			

मागधी रूप :—

प्र०पु० भणिश्शं, भणिश्शिमि,

म०पु० भणिश्शिशि, भणिश्शिशे

तृ०पु० भणिश्शिदि, भणिश्शिदे इत्यादि रूप मागधी भाषा के परिवर्तन-नियमानुसार होंगे ।

पैशाची रूप बनाने के लिए तृतीय पुरुष के एकवचन में केवल 'एय्य' प्रत्यय लगाना चाहिए । जैसे, हुव्-एय्य=हुवेय्य (भविष्यति); बाकी रूप शौरसेनी की तरह या प्राकृत की तरह होंगे । (देखिये—हे० प्रा० व्या० ८।४।३२० ।)

अपभ्रंश में भविष्यत्काल के प्रत्यय :—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	सउं, स्सिउं, समि, स्सिमि	सहुं, स्सिहुं
		समो, स्सिमो
		समु, स्सिमु
		सम, स्सिम
म०पु०	सहि, स्सिहि	सहु, स्सिहु, सधु, सिधु
	ससि, स्सिसि	सह, स्सिह
	ससे, स्सिसे	सध, स्सिध
		सइत्था, स्सिइत्था

सर्वपुरुष-सर्ववचन —ज्ज, ज्जा[५]

भविष्यतकाल के प्रत्यय लगाने से पूर्व धातु के अग के अन्तिम 'अ' को 'ए' और 'इ' होते हैं[६]।

भण् + अ = भण + स्सामि = भणेस्सामि, भणिस्सामि इत्यादि।

तृ॰पु॰	सदि, सदे	सहि, सति
	स्सिदि, स्सिदे	सते, सइरे
	सइ, सए	स्सिहि, स्सिति
	स्सिइ, स्सिए	स्सिते, स्सिइरे

अपभ्रंश में 'भण' धातु के रूप —

एकव॰

प्र॰पु॰ भणिसउ, भणेसउ
भणिस्सिउ, भणेस्सिउं
भणिसमि, भणेसमि
भणिस्सिमि, भणेस्सिमि

म॰पु॰ भणिसहि, भणेसहि
भणिस्सिहि, भणेस्सिहि
भणिससि, भणेससि, भणिस्सिसि, भणेस्सिसि
भणिसस, भणेससे, भणिस्सिसे, भणेस्सिसे

तृ॰पु॰ भणिसदि, भणेसदि
भणिसदे, भणेसदे
भणिस्सिदि, भणेस्सिदि
भणिस्सिदे, भणेस्सिदे
भणिसइ, भणेसइ, भणिसए, भणेसए
भणिस्सिइ, भणेस्सिए
भणेस्सिइ, भणेस्सिए

भण (भण्) धातु (= कहना, पढ़ना)

भविष्यत्काल में रूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	भणिस्सामि, भणेस्सामि	भणिस्सामो, भणेस्सामो
	भणिहामि, भणेहामि	भणिस्सामु[1], भणेस्सामु
	भणिहिमि, भणेहिमि	भणिस्साम[1], भणेस्साम
	भणिस्सं, भणेस्सं	भणिहामो, भणेहामो
		भणिहामु[1], भणेहामु
		भणिहाम[1], भणेहाम
		भणिहिमो, भणेहिमो
		भणिहिमु[1], भणेहिमु
		भणिहिम[1], भणेहिम

इसी प्रकार सब पुरुषों में बहुवचन के भी रूप होंगे।

प्राचीन गुजराती के भणेश, करेश, (प्रथमपुरुष) वगैरह रूप इन रूपों के साथ तुलनीय है। १. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६७। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६६। ५. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७७। ६. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७।

१. बारहवें पाठ में भविष्यत्काल–प्रथमपुरुष के बहुवचन में जो 'स्सामो', 'हामो' और 'हिमो' तीन प्रत्यय बताए हैं उनके अतिरिक्त 'स्सामु, स्साम, हामु, हाम, हिमु, हिम' आदि प्रत्यय भी उपलब्ध होते हैं। अतएव उन प्रत्ययों वाले रूप भी ऊपर बता दिये गये हैं।

म० पु०	मणिस्सि, मणेस्सि	मणिस्सह, मणेस्सह
	मणिस्सं, मणेस्से	मणिस्सथ, मणेस्सथ
	मणिहिसि, मणेहिसि	मणिहित्था, मणेहित्था
	मणिहिसे, मणेहिसे	मणिहिह, मणेहिह
तृ० पु०	मणिस्सइ, मणेस्सइ	मणिस्संति, मणेस्संति
	मणिस्सति, मणेस्सति	मणिस्सते, मणेस्संते
	मणिस्सए, मणेस्सए	मणिहिंति, मणेहिंति
	मणिस्सते, मणेस्सते	मणिहिंते, मणेहिंते
	मणिहिइ, मणेहिइ	मणिहिइरे, मणेहिइरे
	मणिहिति, मणेहिति	
	मणिहिए, मणेहिए	
	मणिहिते, मणेहिते	

सर्वपुरुष सर्ववचन { मणिज्ज, मणिज्जा
मणेज्ज, मणेज्जा

इकारान्त और उकारान्त शब्द

अग्गि[1] (अग्नि) = अग्नि, आग, वह्नि ।

गणि (गणिन्) = गण-समूह की रक्षा-देख-भाल करनेवाला आचार्य।

गिहि (गृहिन्) = गृहस्थ।

मणि (मणि) = मणि ।

सव्वण्णु (सर्वज्ञ) = सर्वज्ञ , सब कुछ जाननेवाला ।

किसाणु (कृशानु) = अग्नि ।

जण्हु (जह्नु) = सगर के पुत्र का नाम।

भिक्खु (भिक्षु) = भिक्षु ।

---

१. अग्गि, अगिणि, गिनि । —दे० पा० प्र० पृ० ७ ।

उच्छु (इक्षु) = इक्षु—गन्ना, ईख, उख (भोजपुरी में) ।

महेसि (महा + ऋषि) = महर्षि—व्यासादि महर्षि ।

मेहावि (मेधाविन्) = मेधावी, बुद्धिमान् ।

वणप्फइ, वणस्सइ (वनस्पति) = वनस्पति ।

करेणु (करेणु) = हाथी ।

कुंथु (कुन्थु) = 'कुंथुवा' इस नाम का कोई छोटा त्रीन्द्रिय जीव ।

रायरिसि (राज + ऋषि = राजर्षि) = राजर्षि—जनक आदि ।

जीवाउ (जीवातु) = जीवन की औषध ।

कवि (कवि) = कवि, कविता रचनेवाला ।

कवि (कपि) = कपि, बन्दर, वानर ।

चाइ (त्यागिन्) = त्यागी ।

नमि (नमि) = 'नमि' इस नाम का एक राजर्षि ।

पाणि (पाणि) = पाणि, हाथ, हस्त ।

पाणि (प्राणिन्) = प्राणी, जीव ।

बंभयारि (ब्रह्मचारिन्) = ब्रह्मचारी ।

कमंडलु (कमण्डलु) = कमण्डलु ।

मंतु (मन्तु) = अपराध ।

जंबु (जम्बु) = जामुन का वृक्ष ।

विडवि (विटपिन्) = शाखा—डाल वाला पेड़, वृक्ष ।

साणु (सानु) = शिखर ।

बंधु (बन्धु) = बन्धु, भाई, सगा-सम्बन्धी ।

पीलु (पीलु) = पीलु का वृक्ष ।

ऊरु (ऊरु) = जंघा ।

पावासु (प्रवासिन्) = प्रवासी ।

विशेषण

कयण्णु (कृतज्ञ) = कृतज्ञ, कदरदान, कदर करनेवाला ।

गुरु (गुरु) = गुरु—भारी, बड़ा।
लहु (लघु) = लघु, हलका, छोटा।
मिउ (मृदु) = मृदु, कोमल, नरम।
दुहि (दु खिन्) = दु
दुग्गंधि (दुर्गन्धिन्) = दुर्गन्धवाला, दुर्गन्धित, दुर्गंधि।
चारु (चारु) = चारु, सुन्दर।
सुहि (सुखिन्) = सुखी।
साउ (स्वादु) = स्वादु, स्वादिष्ट।
दिग्घाउ (दीर्घायुष्) = दीर्घायु, दीर्घ आयुष्य वाला।
सुइ (शुचि) = शुचि, पवित्र।
सुगंधि (सुगन्धिन्) = सुगन्धित, सुन्दर गन्ध वाला।
बहु (बहु) = बहुत।
गामणि (ग्रामणी) = गाँव का मुखिया, ग्राम का अग्रणी—नेता।

सामान्य शब्द (पुँल्लिंग)

जर (ज्वर) = ज्वर, बुखार, जर (भोजपुरी में)।
अंब (आम्र) = आम।
कोविल, कोइल (कोकिल) = कोयल, कोइल (भोजपुरी में)।
तिल (तिल) = तिल।
वाणिज्जार (वाणिज्यकार) = वाणिज्यकार, व्यापारी, वनिजारा।
कावलिअ (काम्बलिक) = कम्बला को बेचनेवाला या ओढ़नेवाला।
मोचिअ (मौचिक) = मोची, जूता सीने-बनाने वाला।
कुडुंबि (कुटुंबिन्) = कुटुम्बी।
कोडुंबिअ (कौटुम्बिक) = कुटुम्बी, राजा का काम-काज करनेवाला।
साड (शाट) = साड़ी, धोती।
साडय (शाटक) = साड़ी, धोती।

सोरहिअ (सौरभिक) = सुगन्धित वस्तुएँ—तैलादि वेचनेवाला ।
कस (कश) = चावुक, कोड़ा ।
लोहार (लोहकार) = लोहार ।
सोवण्णिय (सौवर्णिक) = सुनार, सोनार ।
गंधिअ (गान्धिक) = गन्ध वाली वस्तुएँ वेचनेवाला, गंधी, गांधी ।
सुत्तहार (सूत्रहार) = तरखान, नाटक का मुख्य पात्र, वढ़ई ।
तेलिअ (तैलिक) = तेली, तेल वेचने वाला ।
मालिअ (मालिक) = माली, माला वेचने वाला ।
दोसिअ (दौष्यिक) = दोशी, दूष्य—रेशमी वस्त्र वेचनेवाला ।
उण्हाण (ऊष्णकाल) = ग्रीष्म काल ।
सीआल (शीतकाल) = शीतकाल, ठंढ का समय ।
तंवोलिअ (ताम्बूलिक) = तंवोली, ताम्वुल–पान वेचने वाला ।
दण्ट (दण्ड) = दण्ड; लाठी–लकड़ी या वाँस का टण्टा ।
जोइसिअ (ज्योतिषिक = ज्योतिषी (जोशी) ।
साटवि, सालवि (शाटविन्) = साड़ी वुननेवाला ।
मणिआर (मणिकार) = जौहरी, मणियार—काँच का माम वेचनेवाला, मनिहार।

सामान्य शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

लोह (लोह) = लोहा ।
वाणिज्ज (वाणिज्य) = व्यापार ।
तेल (तैल) = तेल ।
तंवोल (तावूल) = ताम्वूल, नागर वेल का पत्ता, पान (खानेवाला पान) ।
मलीर (मलयचीर) = मलय देशका कोमल और वारीक वस्त्र ।
पगरक्ख (पदकरक्ष) = पगरखा, पैर की रक्षा करनेवाला जूता-चप्पल आदि ।

वत्थ (वस्त्र) = वस्त्र ।
पट्टोल (पट्टकूल) = पटोल, वस्त्र-विशेष, पटोर (भोजपुरी में) ।
खित्त, खेत्त (क्षेत्र) = क्षेत्र, खेत ।
महिलानयर (मिथिला नगर) = मिथिला नगरी ।
घरचाल (गृहचोल) = घरचोला (घर में पहनने की गुजरात की धोती विशेष) ।
पम्हपट (पक्ष्मपट) = पक्ष्म—बरौनी के जैसा बारीक वस्त्र ।
कटयरक्ख (कण्टकरक्ष) = कण्टकों—काटा से रक्षा करनेवाला—जूता ।
कंबल (कम्बल) = कम्बल ।
चेल (चेल) = चेल, वस्त्र ।
बीअ (बीज) = बीज ।
जीवण (जीवन) = जीवन, जिन्दगी ।
पायत्ताण (पादत्राण) = पादत्राण, जूता ।
वित्त, वेत्त (वेत्र) = बेंत, नेत्तर की लाठी (बेंत) ।
सुवण्ण (सुवर्ण) = सुवर्ण, सोना ।
रयय (रजत) = रजत, चाँदी ।
रुप्प (रुक्म) = रूपा, चाँदी ।
रुप्प (रौप्य) = रूपा का, चाँदी का ।
लोमपट (लामपट, रोमपट) = रोओं का वस्त्र, लोई ।
पम्ह (पक्ष्मन्) = आँख की बरौनी, पलक की कोर के बाल ।
नेड्ड, णेड्ड (नीड) = नीड, निलय, घोंसला ।

सामान्य शब्द (विशेषण)

घट्ठ (घृष्ट) = घिसा हुआ, प्रमार्जित किया हुआ, कोमल और मुलायम किया हुआ ।
मट्ठ (मृष्ट) = माँजा हुआ, शुद्ध ।

अंतिअ (अन्तिक) = अन्तिक, नजदीक, पास ।
चंड (चण्ड) = प्रचण्ड, क्रोधी ।
लहुअ, हलुअ (लघुक) = लघु, हलका, छोटा ।
नाय (ज्ञात) = ज्ञात, प्रसिद्ध ।
अम्हारिस (अस्मादृश) = हमारे जैसा ।
सचेलय (सचेलक) = वस्त्र वाला, वस्त्रधारी ।
अचेलय, अएलय (अचेलक) = बिना वस्त्र का, नग्न, दिगम्बर ।

अव्यय

सव्वत्थ (सर्वत्र) = सर्वत्र, सब स्थानों में ।
मज्झे (मध्ये) = मध्य में, बीच में, में ।
जं (यत्) = जो ।
सक्खं (साक्षात्) = साक्षात्, प्रत्यक्ष ।
सययं (सततम्) = सतत, निरन्तर ।
अह (अथ) = प्रारम्भ सूचक अव्यय, शुरू ।
मणा, मणयं (मनाक्) = थोड़ा, इषत्, न्यूनता सूचक ।
सइ (सदा) = सदा, हमेशा ।
अभिक्खणं (अभिक्षणम्) = क्षण-क्षण, बारंबार ।
अहुणा (अधुना) = अब, अभी ।

धातुएँ

जुंज् (युञ्ज्) = जोड़ना, संयुक्त करना, सम्बन्धित करना ।
सोह् (शोध्) = सोधना, शुद्ध करना ।
सिव्व् (सीव्य) = सीना ।
हण् (हन्) = मारना ।
मन्न् (मन्) = मानना, स्वीकार करना ।

ओप्प् (अर्प) = पॉलिश करना, पानी चढाना, चमक देना ।
पवस् (प्र + वस्) = प्रवास करना ।
उवचिट्ठ (उप + तिष्ठ) = उपस्थित रहना, सेवा में हाज़िर रहना ।
ताव (ताप्) = तपना, तप्त करना ।
विक्के (वि + क्री) = बेचना, विक्रय करना ।
अप्प, आप्प् (अर्पय्) = अर्पण करना, देना ।
पील्, पीड् (पीड्) = पाडना, पोलना, पेरना ।
फल् (फल्) = फलना, फुलना ।
चिंत् (चिन्त्) = चिन्ता करना ।
वीसर् (वि + स्मर्) = विस्मरण करना, भूल जाना ।
सहर् (स + स्मर्) = स्मरण करना, याद करना ।
खण् (खन्) = खोदना ।
पाव् (प्र + आप्) = प्राप्त करना, पाना ।
वक्खाण् (वि + आ + ख्यान) = व्याख्यान करना, विस्तार से कहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना ।
अणुसास् (अनु + शास्) = शिक्षा देना, समझाना ।
संबुज्झ (सं + बुध्य) = समझना, बोध प्राप्त करना ।
वण् (वन) = बुनना ।
कूज्, कूअ (कूज्) = कुहू कुहू करना, कूँजना ।

वाक्य (हिन्दी)

कुम्हार का कुल भी उत्तम होगा ।
व्यापारी गाँव-गाँव में प्रवास करेगा और वस्तुएँ बेचेगा ।
बढ़ई लकड़ियाँ छीलेगा और तत्पश्चात् गढ़ेगा ।
गृहस्थ ब्राह्मणों और साधुओं को अन्न देंगे ।
श्रमण महावीर कुम्हार और मोचो को धर्म समझायेंगे ।

सुगन्वित वस्तुएँ वेचनेवाला सुगन्वित वस्तुओं की प्रशंसा करेगा।
मोची मेरे लिए जूता सीयेगा।
कुशल तैराक अपने दोनों हाथों से तालाब को तैरेगा (पार करेगा)।
कम्बल वेचनेवाले के शरीर के ऊपर कम्बल और लोई शोभेगी।
ग्रीष्म के दिनों में आम के पेड़ पर कोयल कुहूकुहू करेगी।
गुरु विद्यार्थियों को उनका पाठ समझायेंगे।
तेली तिलों को पेरेंगे और तेल वेचेंगे।
सुनार सोना और चाँदी के आभूपण गढ़ेगा और उनको साफ करेगा।
लुहार लोहे को गढ़ेगा।
नमि विद्यार्थियों और ऋपियों को मुद्ग (मूँगी) देगा।
साड़ियाँ वेचनेवाला पटोलां, मलोर और घरचोला वेचेगा।
घर्म मेरे दुःखी जीवन का औषघ वनेगा।
मैं चन्द्रमा को पर्वत के शिखर पर से देखूँगा।
वन्दर आम के वृक्ष पर कूदेंगे।
ग्रीष्म में सूर्य का तेज प्रचण्ड होगा।
तमोली पान वेचेगा और हम खायेंगे।
आचार्य विद्यार्थियों के वीच शोभा पायेगा।
यह आम का वृक्ष शीतकाल में फलेगा।
तुम दोनों दयालु और कृतज्ञ होगे।
ऋपि कमण्डलु से शोभते हैं।
जो अपने भोगों को त्याग देंगे, लोग उनको त्यागी कहेंगे।
सुनार मेरे आभूपणों पर पालिश करेगा।
कितनी ही वनस्पतियाँ ग्रीष्म में फलेंगी उनको तू खायेगा।
किसान खेत को वारंवार खोदेगा (जोतेगा या कोड़ेगा)।
अव मैं पान खाऊँगा, वह अपना पाठ समझेगा और तुम पानी पीओगे।

वाक्य (प्राकृत)

विज्जत्थो भिक्खू य सया गुरु उवचिट्ठिस्सइ ।
गुरुणमतिए सीसो उद्दणा सह उरु न जुजिस्सइ ।
भिउ पि गुरु सीसा चण्ड पकरति ।
हत्थीसु एरावण नायमाहु ।
मच्चू णर णेइ हु अन्तकाले ।
रिसी रायरिसि इम वयणमब्बवी ।
सव्वे साहुणो, गुरुणो अनुमासण कल्लाण मन्निस्सति ।
'अह अचेलए सचेलए वा' इइ भिक्खू न चितिस्सइ ।
सव्वे जणा अवस्स तरु वक्खाणिस्सति ।
मज्झे मज्झे तु बालिस्सदि ।
तुमे नचिस्सहु, सा य गाइस्सनि ।
वाणिज्जारा अम्हे गामे गामे वाणिज्ज करहामो वत्थूइ च विक्केहिमु ।
अम्हे लोहारा लोह साविस्सामु तस्स च सत्थाणि घडेहिमो ।
माहणा पाणिणो पाणे न हणिस्सति ।
अह अम्हे समण वा माहण वा निमतिस्सामो ।
सा सव्व मूढा किमवि न मुबुज्झिहिइ ।
तुम वत्थ सिव्विस्ससि, अह च पट्टाल वणिस्स ।
अह सोवण्णिओ सुवण्ण सोहिहामि तस्स च आभरणाइ घडिहिमि ।
आसी भिक्खू जिइन्दियो ।
दण्डहि, वित्तेहि, कसहि चेव अणारिया त रिसि तालयति ।
ताहे सो कुलवतो समण महावीर अणुसासति, भणति य कुमारवर !
सउणी ताव अप्पणिय नेड्डु रक्खति ।
रायरिसिम्मि, नमिम्मि निक्खत मिहिलानयर सव्वत्थ सागो आसी ।

●

चौदहवाँ पाठ

भविष्यत्काल

स्वरान्त धातु के भविष्यत्काल के रूप साधने के लिए तृतीय पाठ में केवल स्वरान्त धातु के लिए जो विशेष साधनिका बताई है उसी का उपयोग करना चाहिए।

अंगों की समझ

विकरणविहीन	विकरणयुक्त
हो*	होअ
पा	पाअ
ने	नेअ

हो, पा, ने का रूप (उदाहरण)

प्र० पु०	होस्सं	होइस्स	होएस्सं
,, ,,	पास्सं	पाइस्सं	पाएस्सं
,, ,,	नेस्सं	नेइस्सं	नेएस्सं

कुछ अनियमित रूप

कर्

भविष्यत्काल में 'कर्' के बदले 'का' भी प्रयुक्त होता है और

---

* पालि भाषा में 'हू (भू) धातु के हू, हे, हो—ये तीन रूप होते हैं, प्राकृत में 'हे' नहीं होता (देखिए, पा० प्र० पृ० २०५)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१४।

उसके सभी रूप स्वरान्त धातु के समान होते हैं। प्रथम पुरुष के एकवचन में[1] उसका 'काह' रूप भी होता है। जैसे—

तृ०पु० काहिइ, द्वि०पु० काहिसि, प्र०पु० काहिमि, 'काहं' इत्यादि (पालि—काहिति, काहति—देखिए पा० प्र० पृ० २०६।)।

दा

'दा' धातु के भविष्यत्काल सम्बन्धी सभी रूप स्वरान्त धातु की भाँति होते हैं। केवल प्रथमपुरुष के एकवचन में[2] 'दाहं' रूप अधिक बनता है। जैसे—

तृ०पु० दाहिइ, द्वि०पु० दाहिसि, प्र०पु० दाहिमि, 'दाहं' आदि।

सोच्छ[3] (श्रोष्य) = सुनना।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७०।

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७०। पालि—दस्सति। ददिस्सति, दज्जिस्सति इत्यादि 'दा' के रूप—पा० प्र० पृ० २०४।

३. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७२। पालि—

दिस (दृश्)—	जा (ज्ञा)—
दक्खति	जस्सति
दक्खिस्सति	जानिस्सति
दक्खति	जि—
पस्सिस्सति	जेस्सति
सक (शक्)—	जिनिस्सति
सक्खिस्सति	की (क्री)—
वच—	केस्सति
वक्खति	किणिस्सति

रोच्छ (रोत्स्य) = रोना ।
मोच्छ (मोक्ष्य) = छोड़ना, मुक्त करना ।

मुच—
मोक्खति
भुज—
भोक्खति
वस—
वच्छति
रुद—
रुच्छति
रोदिस्सति
लभ—
लच्छति
लभिस्सति
गम—
गच्छिस्सति
गमिस्सति
छिद—
छेच्छति
छिन्दिस्सति
रुध—
रुन्धिस्सति
जन—
जायिस्सति
जनिस्सति

सु (श्रु)—
सोस्सति
सुणिस्सति
गह (ग्रह)—
गहिस्सति
गहेस्सति
गण्हिस्सति
इत्यादि ।
—देखिए पा० प्र० पृ० २०६–२०९ ।

भोच्छ (भोक्ष्य) = भोजन करना, भोगना।

वोच्छ (वक्ष्य) = कहना, बोलना।

वेच्छ (वेत्स्य) = जानना, अनुभव करना।

भेच्छ (भेत्स्य) = भेदना, टुकड़ा करना।

छेच्छ (छेत्स्य) = छेदना।

दच्छ (द्रक्ष्य) = देखना।

गच्छ (गंस्य) = जाना, प्राप्त करना।

केवल उपर्युक्त दस धातुओं में 'हि' आदि (हिमि, हिसि, हिमो, हिम, हिइ आदि) प्रत्यय लगाने से पूर्व उनके आदि का 'हि' विकल्प से लुप्त हो जाता है। जैसे—

सोच्छ + हिमि = सोच्छिमि, सोच्छेमि, सोच्छिहिमि, सोच्छेहिमि आदि।

इन दस धातुओं के प्रथम पुरुष एकवचन में अनुस्वार वाला एक रूप अधिक होता है। जैसे—

सोच्छं, वेच्छं, दच्छं।

सोच्छिस्सं, वेच्छिस्सं, दच्छिस्सं आदि।

शेष सबकी साधनिका 'भण' धातु के समान है।

'सोच्छ' का रूप (उदाहरण)

केवल एकवचन में

प्र० पु०	सोच्छं	सोच्छिमि	सोच्छिस्सामि
	सोच्छिस्सं	सोच्छेमि	सोच्छेस्सामि
	सोच्छेस्सं	सोच्छिहिमि	सोच्छिहामि
		सोच्छेहिमि	सोच्छेहामि
म० पु०	सोच्छिसि	सोच्छेसि	सोच्छिहिसि	सोच्छेहिसि
	सोच्छिसे	सोच्छेसे	सोच्छिहिसे	सोच्छेहिसे

तृ० पु०	सोच्छिइ	सोच्छेइ	सोच्छिहिइ	सोच्छेहिइ
	सोच्छिए	सोच्छेए	सोच्छिहिए	सोच्छेहिए इत्यादि।

आर्ष प्राकृत में उपलब्ध कुछ अन्य अनियमित रूप—

(मोक्ष्यामः)—मोक्खामो।
(भविष्यति)—भविस्सइ।
(करिष्यति)—करिस्सइ।
(चरिष्यति)—चरिस्सइ।
(भविष्यामि)—भविस्सामि।
(भू—भो + ष्यामि)—होक्खामि।

अमु (अदस् = यह) शब्द के रूप (पुल्लिंग)

	एकव०		बहुव०	
प्र०	अह[1], अमू[2], असो[3]	(असौ)	अमुणो, अमू	(अमी)
द्वि०	अमुं	(अमुम्)	अमुणो, अमू	अमून्
स०	अयम्मि[4], इअम्मि, अमुम्मि	(अमुष्मिन्)	अमूसु, अमूसुं	(अमीषु)

शेष सभी रूप 'भाणु' शब्द की भाँति चलेंगे।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।८७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।८८।
३. सं० 'असौ' रूप के अन्त्य 'औ' को 'ओ' करने से यह रूप बनता है।
४. हे० प्रा० व्या० ८।३।८९।

अमु (अदस् = यह) शब्द के रूप (नपुंसकलिङ्ग)

	एकव०	बहुव०
प्र०	अह, अमु (अद)	अमूणि, अमूइं, अमूइँ (अमूनि)
द्वि०	,, ,, (,,)	,, ,, ,, (,,)

शेष रूप 'अमु' शब्द की भाँति होंगे।

इकारान्त और उकारान्त शब्द (पुंल्लिङ्ग)

सारहि (सारथि) = सारथि, रथ चलानेवाला।

वरदंसि (वरदर्शिन) = श्रेष्ठ रीति से देखनेवाला।

मारामिसंकि (मारामिशङ्किन) = मार-तृष्णा से शङ्कित-भयभीत रहनेवाला, दूर रहनेवाला।

वाहि (व्याधि) = व्याधि, रोग।

महासड्ढि (महाश्रद्धिन्) = महती श्रद्धा वाला, अचल श्रद्धावान्।

तवस्सि (तपस्विन्) = तपस्वी।

उवाहि (उपाधि) = उपाधि, प्रपञ्च, जञ्जाल।

जन्तु (जन्तु) = जन्तु, प्राणी, जीव-जन्तु।

जोगि (योगिन्) = योगी।

केसरि (केसरिन्) = केसरी, सिंह।

मंति (मन्त्रिन्) = मन्त्री।

चक्कवट्टि (चक्रवर्तिन्) = चक्रवर्ती, राजा।

पवासि (प्रवासिन्) = प्रवास करने वाला, प्रवासी, यात्री।

पहु (प्रभु) प्रभु, प्रभावशाली, समर्थ।

तंतु (तन्तु) = तन्तु, धागा।

महातवस्सि (महातपस्विन्) = महातपस्वी।

समत्तदंसि (सम्यक्त्वदर्शिन्) = सत्य को देखने, समझने और आचरण करनेवाला।

पसु (पशु) = पशु ।
विहु (विधु) = विधु, चन्द्र ।
वसु (वसु) = वसु, धन, पवित्र मनुष्य ।
संभु (शम्भु) = शंभु, सुखका स्थान, महादेव ।
संकु (शङ्कु) = शंकु—कीला, खीला ।

सामान्य शब्द (पुंल्लिङ्ग)

मग्ग (मार्ग) = मार्ग, रास्ता ।
मार (मार) = मारनेवाली—तृष्णा ।
दुस्सीस, दुस्सिस्स (दुश्शिष्य) = दुष्ट शिष्य, दुष्ट विद्यार्थी ।
ववहारिअ (व्यावहारिक) = व्यापारी ।
थेर (स्थविर) = स्थिर बुद्धि वाला, वयोवृद्ध सन्त ।
गग्ग (गार्ग्य) = गर्ग का पुत्र—गार्ग्य—एक ऋषि ।
वेवाहिअ (वैवाहिक) = लड़के अथवा लड़की के ससुरालवाले ।
ववहार (व्यवहार) = व्यवहार ।
कंसआर, कंसार (कांस्यकार) = कसेरा, ठठेरा, वर्तन वेचनेवाला ।
लेहसालिअ (लेखशालिक) = पाठशाला में पढनेवाला विद्यार्थी ।
सुमिण, सिमिण, सुविण, सिविण (स्वप्न) = स्वप्न ।
गणहर, गणधर (गणधर) = गणधर, गण—समूह की व्यवस्था करने वाला आचार्य ।
अणागम, अनागम (अन् + आगम) = न आना, अनागम ।
कण्ण (कर्ण) = कर्ण, कान ।
विराग (विराग) = वैराग्य, अनासक्ति, उदासीन वृत्ति ।
विप्परियास (विपर्यास) = विपर्यास, भ्रान्ति, विपरीतता ।
सढ (शठ) = शठ, धूर्त ।

सामान्य शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

रूप (रूप) = रूप–वस्तु–पदार्थ ।
कम्म (कर्मन्) = कर्म—पाप-पुण्य की प्रवृत्ति ।
जाण (यान) = यान, वाहन, गाडा ।
मच्चुमुह (मृत्युमुख) = मृत्यु-मुख, मौत का मुँह ।
जुम्म, जुग्म (युग्म) = युग्म, जोडा, जुगल ।
छणपञ, छणपय (क्षणपद) = हिंसा का स्थान ।
मरण (मरण) = मृत्यु, मौत ।
धम्मजाण (धर्मयान) = धर्मरूपी वाहन ।
महब्भय (महाभय) = महाभय ।
पुच्छ (पुच्छ) = पूँछ ।

विशेषण

तिम्म, तिग्ग (तिग्म) = तीक्ष्ण, तेज ।
पुण्ण (पुण्य) = पुण्य, पवित्र काम ।
पंत (प्रान्त) = अन्त का, शेष, बचा हुआ ।
विब्भल, विहल (विह्वल) = विह्वल, घबराया हुआ ।
जोइअ, जोइय (योजित) = जुडा हुआ, जोडा हुआ
डज्झमाण (दह्यमान) = जला हुआ ।
पुण्ण (पूर्ण) = पूर्ण, भरा हुआ, सम्पत्ति वाला ।
तुच्छ (तुच्छ) = तुच्छ, रक, अधूरा ।
पन्नत्त (प्रज्ञप्त), प्रज्ञप्त, बताया हुआ, कहा हुआ ।
लुक्ख, लूह (रुक्ष) = रूखा, बिना आसक्ति का ।
सीलभूअ (शीलभूत) = शीलभूत, सदाचाररूप, सदाचारी ।

अव्यय

इत्थं (इत्थम्)=इस प्रकार ।
तु (तु)=तो ।
इह (इह)=यहाँ ।
दाणि, दाणिं, इयाणि, इयाणिं (इदानीम्)=अब, इस समय, आजकल ।
ईसि, ईसिं (ईषत्)=ईषत्, थोड़ा, संकेतमात्र ।
एअं (एतत्)=यह ।
उप्पिं, अवरिं, उवरिं, उवरि (उपरि)=ऊपर ।

धातुएँ

वि+हर् (वि+हर्)=विहार करना, घूमना, पर्यटन करना ।
डस् (दंश्)=डसना, दंश मारना ।
प्र+गब्भ (प्र+गल्भ)=प्रगल्भ होना, शेखी मारना, बढ़-बढ़ कर बात करना ।
अमराय, अमरा (अमराय)=अमर—देव की भाँति रहना, अपने को अमर समझना ।
अइ+वाअ (अति+पात)=अतिपात करना, नाश करना ।
वि+सीअ (वि+षीद)=विषाद पाना, खेद करना, खिन्न होना ।
कत्थ (कत्थ)=कहना ।
फुट्ट (स्फुट)=स्फुट होना, खिलना ।
वि+चिन्त् (वि+चिन्त)=चिन्तन करना, सोचना ।
विध् (विव्य)=बींधना, छेदना, भेदन करना ।
उ+क्कुद्द (उत्+कूर्द)=ऊँचा कूदना ।
भज्ज्, भंज् (भञ्ज)=भाँगना, तोड़ना, फोड़ना ।

अव + सीअ (अव + सीद) = अवसाद पाना, खेद पाना ।
लिम्प् (लिम्प) = लेप करना ।
सं + जम् (सं + यम) = संयम करना ।
पडि + कूल (प्रति + कूल) = प्रतिकूल, विपरीत होना ।
सर् (स्मर्) = स्मरण करना ।
प + मुच्च (प्र + मुच्य) = प्रमुक्त होना, बिलकुल छूट जाना ।
सेव् (सेव्) = सेवन करना ।
विज्ज् (विज्ज्) = विद्यमान रहना, उपस्थित होना ।
हिंस् (हिंस्) = हिंसा करना, जीव मारना ।
उव + इ (उप + इ) = पास जाना, प्राप्त करना ।

वाक्य (हिन्दी)

पण्डितजन हर्षित नहीं होंगे और कोप भी नहीं करेंगे।
हम दोनों आचार्य से इस प्रकार बारम्बार कहेंगे।
यह विद्यार्थी बड़ाई नहीं करेगा अपितु संयम रखेगा।
मैं यह सत्य कह दूँगा।
गाड़ीवान बैलों को सम्भालेगा और गाड़ी में जोतेगा।
तपस्वी योगी व्याधियों से नहीं डरेगा।
गार्ग्य मुनि गणधर बनेगा।
वन का सिंह जंगली हाथी के मस्तक को छेदेगा।
आचार्य पुर्ण और तुच्छ दोनों को धर्म कहेगा।
'सभी को जीवन प्रिय है' ऐसा कौन अनुभव नहीं करेगा?
दुष्ट शिष्य नहीं पढ़ेंगे अपितु निरंतर अपनी बड़ाई करेंगे और कूदेंगे।

वाक्य (प्राकृत)

समणे महावीरे जहा पुण्णस्स कत्थिहिइ तहा तुच्छस्स कत्थिहिइ।
धम्मं वेच्छ।

सुवं भोच्छं ।
एगे डसइ पुच्छम्मि, एगे विंधइ अभिक्खणं ।
दुक्खं महब्भयं ति वोच्छं ।
जिणस्स वयणाइं कण्णेहिं सोच्छं ।
दाणं दाहं, पुण्णं काहं ततो य दुक्खं छेच्छं ।
रूवेसु विरागं गच्छं ।
धम्मेण मरणाओ मोच्छं ।
जेहिं अहं विसीएस्सामि तेहिं कयावि सुविणे वि न रोच्छं ।
सीलभूओ मुणी जगे विहरिस्सइ ।
अह सो सारही विचिंतेहिइ ।
वीरो भडो जुद्धं काहिइ ।
रायगिहं गच्छं, महावीरं वंदिस्सं ।
गुरुणो सच्चमाहसु ।
अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ ।
तुमं किं किं पावं, पुण्णं च कासी ।
सढे उक्कुट्टिहिए पगब्भिस्सति य ।
तस्स मुहं दच्छं तेण य सुहं पाविस्सं ।
वीरे छणपएण ईसिमवि न लिप्पिहिइ ।
जं वोच्छं तं सोच्छिसे ।
नाऽणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि ।
तवेण पावाइं भेच्छं ।
महासीइढ अमरायइ ।

०

पन्द्रहवाँ पाठ

ऋकारान्त शब्द

ऋकारान्त शब्दों (नामों) के दो प्रकार हैं। उनमें कुछ ऋकारान्त शब्द सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप हैं तथा कुछ केवल विशेषणरूप हैं। सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप—जामातृ, पितृ, भ्रातृ आदि। केवल विशेषण-रूप—कर्तृ, दातृ, भर्तृ आदि।

ऋकारान्त (सम्बन्धसूचक-विशेष्यरूप) शब्द

१. प्रथमा और द्वितीया के एकवचन को छोडकर सब विभक्तियों में सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप ऋकारान्त शब्द के अन्त्य 'ऋ' को विकल्प से 'उ' होता है (देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।४४।)। जैसे—पितृ = पितु, पिउ। जामातृ = जामातु, जामाउ। भ्रातृ = भातु, भाउ।

२. सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप ऋकारान्त शब्द के अन्त्य 'ऋ' को सब विभक्तियों में 'अर' होता है (देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।४७)। जैसे—पितृ = पितर, पियर। जामातृ = जामातर, जामायर। भ्रातृ = भातर, भायर।

३. केवल प्रथमा के एकवचन में उक्त शब्द के अन्त्य 'ऋ' को 'आ' विकल्प से होता है (देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।४८)। जैसे—पितृ = पिता, पिया। जामातृ = जामाता, जामाया। भ्रातृ=भाता, भाया।

४. केवल सम्बोधन के एकवचन में इन शब्दों (नामों) के अन्त्य 'ऋ' को 'अ' और 'अर' दोनों विकल्प से होते हैं। जैसे—पितृ = पित ! पितर ! पितरो ! पितरा ! पिय ! पियर ! पियरो ! पियरा !

जामातृ = जामात ! जामातरं ! जामातरो ! जामातरा !
जामाय ! जामायरं ! जामायरो ! जामायरा !

मातृ = मात ! मातरं ! मातरो ! मातरा !
माय ! मायरं ! मायरो ! मायरा ।

ऋकारान्त विशेषण-सूचक

१. सम्बन्धसूचक विशेष्यरूप ऋकारान्त शब्दों मे पहला और तीसरा नियम लगता है, विशेषणरूप ऋकारान्त शब्द मे भी वही लगता है। जैसे—दातृ = दातु, दाउ, कर्तृ = कत्तु, भर्तृ = भत्तु इत्यादि प्रथम नियम के अनुसार ।

दाता, दाया; कत्ता, भत्ता दूसरे नियम के अनुसार ;

२. विशेषणरूप ऋकारान्त शब्द के अन्त्य 'ऋ' को सभी विभक्तियों में 'आर' होता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।४५) । जैसे—दातृ = दातार, दायार, कर्तृ = कत्तार, भर्तृ = भत्तार ।

३. केवल सम्बोधन के एकवचन में विशेषणरूप ऋकारान्त शब्दों के 'ऋ' को 'अ' विकल्प से होता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।३९)। जैसे—
दातृ = दाय ! दायार ! दायारो ! दायारा !
कर्तृ = कत्त ! कत्तार ! कत्तारो ! कत्तारा !
भर्तृ = भत्त ! भत्तार ! भत्तारो ! भत्तारा !

उक्त दोनों प्रकार के ऋकारान्त शब्द उपर्युक्त साधनिका के अनुसार प्रथमा से सप्तमी पर्यन्त सभी विभक्तियों मे अकारान्त और उकारान्त बनते है। अतः इसके अकारान्त अंग के रूप 'वीर' शब्द की भांति और उकारान्त अंग के रूप 'भाणु' शब्द की भांति होंगे ।

पिउ, पितु[1], पिअर, पितर (पितृ = पिता) शब्द के रूप*

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	पिअरो, पिआ (पिता)	पिअरा, पितरा (पितर)
	पितरो	पितुणो, पिउणो, पिअवो, पिअओ
		पिअउ, पिऊ, पितू

---

१. 'पितु' के रूप 'पिउ' के समान होंगे तथा 'पितर' के रूप 'पिअर' के समान चलेंगे।

*पितु शब्द के पालि भाषा में रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	पिता	पितरा
द्वि०	पितरं	पितरा, पितरे
तृ०	पितरा,	पितरेहि, पितरेभि
	पितुना (पित्या, पेत्या)	पितूहि, पितूभि
च०	पितु, पितुनो,	पितरान, पितानं
	पितुस्स	पितून, पितुन्नं
पं०	पितरा,	पितरेहि, पितरेभि
	पितुना	पितूहि, पितूभि
ष०	पितु, पितुनो,	पितरान, पितानं
	पितुस्स	पितूनं, पितुन्नं
स०	पितरि	पितरेसु, पितूसु, पितुसु
सं०	पित! पिता!	पितरो!

—देखिए पा० प्र० पृ० ९४

द्वि०	पिअरं, पितरं (पितरं)	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिउ (पितॄन्)
तृ०	पिअरेण, पिअरेणं, पितरेण, पितरेणं पिउणा, पितुना (पित्रा)	पिअरेहि, पिअरेहिं, पिअरेहिँ पिऊहि, पिऊहिं, पिऊहिँ (पितृभिः)
च०	पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स (पित्रे)	पिअराण, पिअराणं पिऊण, पिऊणं (पितृभ्यः)
पं०	पिअराओ, पिअराउ पिअरा, पिउणो पिऊओ, पिऊउ (पितृतः पितुः)	पिअराओ, पिअराउ पिअराहि, पिअरेहि पिअराहिंतो, पिअरेहिंतो पिअरासुंतो, पिअरेसुंतो पिऊओ, पिऊउ पिऊहिंतो पिऊसुंतो (पितृभ्यः, पितृतः)
ष०	पिअरस्स, पिउणो, पिउस्स, (पितुः)	पिअराण, पिअराणं पिऊण, पिऊणं (पितॄणाम्)
स०	पिअरंसि, पिअरम्मि, पिअरे, पिउंसि, पिउंम्मि (पितरि)	पिअरेसु, पिअरेसुं पिऊसु, पिऊसुं (पितृषु)
सं०	पिअरं ! पिअ ! (पितः) पिअरो ! पिअरा ! पिअर !	पिउणो ! पिअवो ! पिअओ ! पिअउ, पिऊ

दाउ, दायार* (दातृ = दाता) शब्द के रूप (पुल्लिंग)

प्र०	दायारो, दातारो, दाया (दाता)	दायारा, दाउणो, दायत्रो, दायओ, दाऊ (दातार)
द्वि०	दायार दातार (दातारम्)	दायारे, दायारा, दाउणो, दाऊ, (दातॄन्)
तृ०	दायारेण, दायारेणं, दातारेण, दाउणा दातुणा (दात्रा)	दायारेहि, दायारेहिं, दायारेहिँ दाऊहि, दाऊहिं, दाऊहिँ (दातृभिः)
च०	दायारस्स दाउणो, दाउस्स (दात्रे)	दायाराण दायाराणं दाऊण, दाऊणं (दातृभ्यः)

दातु शब्द के पालि रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	दाता	दातारो
द्वि०	दातारं	दातारो, दातारे
तृ०	दातारा, दातुना	दातारेहि, दातारेभि
च०	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं, दातूनं
पं०	दातारा	दातारेहि, दातारेभि
ष०	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारान, दातानं, दातून
स०	दातरि	दातारेसु, दातूसु
सं०	दात, दाता !	दातारो !

—देखिए पा० प्र० पृ० ९६

* प्राकृत मे 'दातार' शब्द के भी रूप 'दायार' के समान होते है तथा 'दातृ' शब्द के भी रूप 'दाउ' के समान होते है ।

पं०	दायराओ, दायाराउ दायरा दाऊणो, दाऊओ, दाऊउ (दातृतः दातुः)	दायाराओ, दायाराउ दायाराहि, दायारेहि दायाराहिंतो, दायारेहिंतो दायारासुंतो, दयारेसुंतो दाऊणो, दाऊउ (दातृतः) दाउहिंतो, दाऊसुंतो (दातृभ्यः)
प०	दायारस्स, दाउणो दाउस्स (दातुः)	दायाराण, दायाराणं दाऊण, दाऊणं (दातॄणाम्)
स०	दायारंमि, दायारम्मि दायारे (दातरि) दाउंसि, दाउम्मि	दायारेसु, दायारेसुं दाऊसु, दाऊसुं (दातृषु)
सं०	दायार ! दाय ! (दातः) दायारो ! दायारा !	दायारा ! (दातारः) दाउणो, दायवो, दायओ दायउ, दाऊ

(पिआ, पिअरं आदि रूपों में 'आ' तथा 'अ' के स्थान में 'या' और 'य' भी उपलब्ध होता है। जैसे—पिआ, पिया, पिअरं, पियरं, पिअरे, पियरे इत्यादि।)

सम्बन्धवाचक ऋकारान्त (पुंलिङ्ग) अंग

भाउ, भायर (भ्रातृ) = भाई पिउ, पियर (पितृ) = पिता

जामाउ, जामायर (जामातृ) = जामाता

विशेषणवाचक ऋकारान्त (पुलिङ्ग) अंग

दाउ, दायार (दातृ) = दाता, दातार

भत्तु, भत्तार (भर्तृ) = भर्ता—भरण-पोषण करनेवाला, भर्तार

कत्तु, कत्तार (कर्तृ) = कर्ता, करनेवाला।

ऋकारान्त (नपुंसकलिङ्ग) अंग

ऋकारान्त के 'कत्तार' इत्यादि आकारान्त अंग के रूप प्रथमा और द्वितीया विभक्तियों में 'कमल' की भाँति तथा 'कत्तु' आदि उकारान्त अंग के रूप केवल प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में 'महु' की भाँति होते हैं, शेष सम्बोधनसहित सभी रूप पुल्लिङ्ग रूपों के समान समझें। जैसे—

अकारान्त अंग-दायार के रूप

प्र०	दायार	दायाराणि, दायाराइ, दायाराइँ
द्वि०	दायारं	दायाराणि ,, ,,
सं०	दाय ! दायार !	,, ,, ,,

शेष सभी पुंलिङ्ग रूपों की भाँति होंगे।

उकारान्त अंग एकवचन में प्रयुक्त नहीं होता।

(देखिए पाठ १५ वाँ, नि० १)

प्र०-द्वि० } दाऊणि, दाऊइं, दाऊइँ, दातूणि, दातूइ, दातूइँ (दातृणि)
सं० }

अकारान्त अंग—सुपिअर (= सुपितृ) शब्द के रूप

प्र०	सुपिअर, सुपितरं	सुपिअराणि, सुपिअराइं, सुपिअराइँ सुपितराणि, सुपितराइ, सुपितराइँ
द्वि०	सुपिअरं, सुपितरं	,, ,, ,,
सं०	सुपिअरं ! सुपिअर ! सुपिअ !	,, ,, ,,

उकारान्त अंग-सुपिउ (= सुपितृ) के रूप

प्र०-द्वि० } सुपिऊणि, सुपिऊइ, सुपिऊइँ, सुपितूणि (सुपितृणि)
सं० }

सामान्य शब्द (पुलिङ्ग)

कुक्खि, कुच्छि (कुक्षि) = कुक्षि, कोख ।
वाणिअ (वाणिज) = वैश्य, वनिया ।
वणि (वनिन्) = धनपति, धनी ।
वहिणीवइ (भगिनिपति) = भगिनिपति, वहन का पति, जीजा, वहनोई ।
आस (अश्व) = अश्व, घोड़ा ।
पोट्ठिय (पृष्ठिक) = पीठ ऊपर वहन करनेवाला महादेव का नन्दी ।
कवड्ड (कपर्द) = कोड़ी ।
गड्डह, गद्दह (गर्दभ) = गर्दभ, गधा ।
उट्ट (उष्ट्र) = ऊँट ।
वच्छ (वत्स) = वत्स, गाय का वछड़ा, वेटा ।
वच्छयर (वत्सतर) = घोड़े का वच्चा, वछेड़ा ।
अंव, अंवल (अम्ब) = अम्बा ।
देवर (देवर) = देवर ।
जेट्ठ (ज्येष्ठ) = ज्येष्ठ ।
रुक्ख (वृक्ष) = वृक्ष, रुख ।
अग्गि (अग्नि) = अग्नि ।
रस्सि (रश्मि) = लगाम, रश्मि, सूर्य की किरण ।
झुणि (ध्वनि) = ध्वनि, आवाज़ ।
अच्चि (अर्चिस्) = अग्नि की ज्वाला ।
मरहट्ठ (महाराष्ट्र) = महाराष्ट्र, दक्षिण भारत का एक देश, मराठा ।
मरहट्ठीअ (महाराष्ट्रीय) = महाराष्ट्र का निवासी ।
मूअ (मूक) = गूँगा ।
घोडअ (घोडक) = घोड़ा ।

तुरंगम (तुरंगम)=घोड़ा ।
अक्क (अर्क)=सूर्य, आक का झाड़, अक्वन ।
नग्ग (नग्न)=नग्न, नगा, बदमाश, निलज्ज ।
सुरट्ठ (सुराष्ट्र)=सोरठ देश ।
सुरट्टीअ, सोरट्टीअ (सुराष्ट्रीय)=सोरठ देश का निवासी ।

सामान्य शब्द (नपुंसकलिङ्ग)

अंसु (अश्रु)=आँसू ।
लोहिअ (लोहित)=लाल, रक्त ।
सत्थिल्ल, सत्थि (सक्थि)=जघा ।
तालु (तालु)=तालु ।
दारु (दारु)=लकड़ी ।
दुवार, बार (द्वार)=द्वार, दरवाजा ।
णडाल (ललाट) ललाट, मस्तक ।
भाल (मस्तक)=भाल, ललाट, मस्तक ।
वरिस (वर्ष)=वर्ष ।
दिण (दिन)=दिन ।
जोव्वण (यौवन)=यौवन ।
दीवेल्ल, दीवतेल्ल (दीपतैल)=दीपक जलाने का तेल ।
कोहल (कूष्माण्ड)=पेठा ।
दहण (दहन)=अग्नि ।
धन्न (धान्य)=धान्य ।
तेल्ल (तैल)=तेल ।
तंब=(ताम्र)=ताम्बा, एक धातु ।
कंजिय (काञ्जिक)=कांजी ।

संख्यासूचक विशेषण

पढम (प्रथम) = प्रथम, पहला ।
विइय, विइज्ज, दुइय, दुइज्ज (द्वितीय) = द्वितीय, दूसरा ।
तइय, तइज्ज (तृतीय) = तृतीय, तीसरा ।
चउत्थ (चतुर्थ) = चतुर्थ, चौथा ।
पञ्चम (पञ्चम) = पाँचवाँ ।
छट्ठ (षष्ठ) = छठा ।
सत्तम (सप्तम) = सातवाँ ।
अट्ठम (अष्टम) = आठवाँ ।
नवम (नवम) = नवाँ ।
दसम (दशम) = दसवाँ ।
सवाय (सपाद) = सवाया, सवा ।
दियड्ढ, दिवड्ढ (द्वितीयार्ध) = डेढ़, एक और आधा ।
अड्ढीय, अड्ढाइअ, अड्ढाइज्ज (अर्धतृतीय) = ढाई, दो और आधा।
अद्धुट्ठ (अर्धचतुर्थ) = ऊंठ, ऊँठा—साढ़े तीन, तीन और आधा ।
पाय (पाद) = पाव–चौथा भाग, चौथाई, चतुर्थांश ।
अद्ध, अड्ढ (अर्ध) = अर्ध, आधा ।
पाऊण (पादोन) = पौन, $\frac{3}{4}$ पौन भाग ।

अव्यय

अहव[1], अहवा (अथवा) = अथवा ।
अवस्सं (अवश्यम्) = अवश्य, जरूर ।

---

१. उपयोग—'एत्थ तुमं अहवा सो आगच्छउ' अर्थात् यहाँ तू अथवा वह आवे ।

अत्थ (अस्तम्) = अस्त होना, छिपना, लोप होना ।
एगया (एकदा) = एकदा, एक बार ।
कहि, कहिं (कुत्र) = कहाँ ।
आम (आम) = आम, 'हाँ' सूचक अव्यय ।
अंतो (अन्तर) = अभ्यन्तर, अन्दर ।
इओ (इत) = इससे, यहाँ से वाक्य, का आरम्भ ।
केवल (केवलम्) = केवल, सिर्फ ।
तहि, तहिं (तत्र) = वहाँ ।

धातुएँ

अच्चे (अति + इ) = अतीत, व्यतीत होना, पार पाना ।
पडि + वज्ज् (प्रति + पद्य) = पाना, स्वीकार करना ।
कोव (कोप्) = क्रोध करना, कराना ।
आ + गम् (आ + गम्) = आना ।
अहि + ट्ठ (अधि + स्था) = अधिष्ठान पाना, ऊपरी स्थान प्राप्त करना ।
एस् (एष) = एषणा करना, शोधना ।
पार + व्वय् (परि + व्रय्) = परिव्रज्या लेना, बन्धनरहित होकर चारों ओर पर्यटन करना ।
स + प + आउण् (सम् + प्र + आप् + नु) = सम्यक् प्रकार से पाना ।
आ + यय् (आ + दय) = आदान करना, ग्रहण करना ।
परि + दव् (परि + दिव) = खेद करना ।
वि + हड् } (वि + घट) = विगडना, छिन्न-भिन्न होना, नाश होना ।
वि + घड् }
प + क्खाल (प्र + क्षाल) = प्रक्षालन करना, धोना ।
सम् + आ = समा + रभ (सम् + आ + रम्भ) = समारम्भ करना, मारना ।
णि + व्विज्ज् (निर् + वेद्) = निर्वेद पाना, विरक्त होना ।

वाक्य (हिन्दी)

उनका गधा रंगा हुआ है ।
घोड़ा, बैल (नंदी) और ऊँट धान्य खायेंगे ।
हमारे बहनोई का लड़का प्रतिवर्ष धन पायेगा ।
तुम्हारे भाई ने अपने जामाता को सवाई भाग दिया ।
अढ़ाई वर्ष साढ़े तीन मास डेढ़ दिन में हम आयेंगे ।
तुम्हारा जामाता दिन-प्रतिदिन विरक्त होता जाता है इसलिए तुम्हारा कुटुम्ब खेद पाता है ।
वह पाँचवें अथवा आठवें दिन जायेगा ।
मुनि ने मृत्यु को पार किया ।
हम पिता जी को कुपित नहीं करेंगे ।
चौथे के अन्दर साढ़े तीन हैं ।
हम शब्द बोलेंगे ।
अग्नि की ज्वाला में तेल गिरेगा ।
सातवें वर्ष उस दाता ने सारा धन दे दिया ।

वाक्य (प्राकृत)

सुरट्ठीआ कोहं न काहिति ।
तुम्हें सोरट्ठीए घोडए वक्खाणेह ।
सोवण्णिओ दहणंसि तंबं खिविरत्था ।
भूओ केवलं कंजिअं पाहिइ ।
दुवारंसि कोहलं पडिहिइ ।
गड्डहो तुरंगमो य दोन्नि भायरा संति ।
दिणे दिणे तुमं आसं च पक्खालिस्सं ।
तेल्लेण दीवा दीवेहिंति ।

सो तुज्झ माया तस्स जामाऊहि सह गच्छीअ।
तस्स पिउणो भाउणो य जोव्वणं विघडाअ।
मरहट्ठीआ लोह चयंति।
सत्तमास वरिससि आगमिस्स।
मम भाउणो माल विसालमत्थि।
तस्स छट्ठो भायरो न परिव्वयिहिए।
अह बिइज्जे दिणे दीवेल्ल पाएहिमि।
मम बहीणीवई एगया धण सपाउणित्था।
पिअ ! मम वयण न सुणिहिसि ?

सोलहवाँ पाठ

आज्ञार्थक प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र० पु०	मु	मो
म० पु०	सु, हि (स्व, हि) इज्जसु, इज्जहि, इज्जे	ह (ध्वम्)
तृ० पु०	उ, तु (तु)	न्तु (अन्तु)

पालि भाषा में आज्ञार्थक को 'पंचमी' के नाम से पहिचानते हैं*। संस्कृत में श्री हेमचन्द्राचार्य ने भी यही नाम स्वीकार किये हैं परन्तु पाणिनीय व्याकरण में आज्ञार्थ को 'लोट्' कहते हैं। परन्तु प्राकृत में ये ही प्रत्यय आज्ञार्थ में तथा विध्यर्थ में समान रीति से उपयोग में आते हैं (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।२।१७३ तथा १७६; हे० प्रा० व्या० ८।३।१७५)।

---

* पालि में 'पंचमी' के प्रत्यय :—

परस्मैपद

	एकवच०	बहुव०
प्र० पु०	मि	म
म० पु०	हि	थ
तृ० पु०	तु	अंतु

आत्मनेपद

प्र० पु०	ए	आमसे
म० पु०	स्सु	व्हो
तृ० पु०	तं	अंतं

इच्छा सूचन, विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, अधीष्ट, सप्रश्न, प्रार्थना, प्रैष, अनुज्ञा, अवसर और अधीष्टि—इन अर्थों को सूचित करने के लिए विध्यर्थक और आशार्थक प्रत्ययों का प्रयोग होता है। ये प्रयोग निम्नोक्त प्रकार से हैं—

१ इच्छा सूचन—मैं चाहता हूँ वह भोजन करें—
'इच्छामि स भुञ्जउ'

'भू' धातु के रूप—

परस्मैपद

प्र०पु०	भवामि	भवाम
म०पु०	भव, भवाहि	भवथ
तृ०पु०	भवतु	भवतु

'भू' धातु के रूप:—

आत्मनपद

प्र०पु०	भवे	भवामसे
म०पु०	भवस्सु	भवह्वा
तृ०पु०	भवत	भवत

'अस्' धातु के रूप :—

प्र०पु०	अस्मि, अम्हि	अस्म, अम्ह
म०पु०	आहि	
तृ०पु०	अत्थु	सतु

—देखिए पा० प्र० पृ० १६१, १६२।

शौरसेनी प्रत्यय की विशेषता —

'तु' के स्थान में 'दु' का प्रयोग होता है। जैसे —जीव + दु = जीवदु, मर + दु = मरदु। अन्य सब प्रत्यय प्राकृत के समान हैं। परन्तु प्राकृत

२. विधि—किसी को प्रेरणा करना। जैसे—वह वस्त्र सीए 'सो वत्थं सिव्वउ"।

३. निमन्त्रण—प्रेरणा करने पर भी प्रवृत्ति न करने वाला—दोष का

प्रत्ययों में जहाँ 'ह' है वहाँ शौरसेनी में 'ध' कर देना चाहिए। जैसे—'हसहि'—शौरसेनी हसधि; 'हसह'—शौरसेनी 'हसध' इत्यादि।

अपभ्रंश भाषा के सब प्रत्यय शौरसेनी के समान हैं परन्तु मध्यम पुरुष के एकवचन में जो प्रत्यय अधिक हैं वे इस प्रकार हैं :—

इ, उ, ए, सु।

अपभ्रंश के रूप :—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	हरिसमु, हरिसामु, हरिसेमु	हरिसमो, हरिसामो, हरिसेमो
म०पु०	हरिससु, हरिसेसु	हरिसह, हरिसहे
	हरिसिज्जसु, हरिसेज्जसु	हरिसध, हरिसधे
	हरिसिज्जहि, हरिसेज्जेहि	
	हरिसाहि, हरिसहि	
	हरिसिज्जे, हरिसेज्जे	
	हरिस, हरिसि, हरिसु, हरिसे	
तृ०पु०	हरिसदु, हरिसदे, हरिसउ, हरिसेउ	हरिसंतु, हरिसेंतु, हरिसितु

प्राकृत के हरिसिज्जसु, हरिसिज्जहि, हरिसिज्जे प्रयोगों का मागधी रूप बनाने पर 'हरिस्' का 'हलिश्' हो जाएगा तथा इज्जसु, इज्जहि, इज्जे प्रत्यय का इय्यसु, इय्यधि, इय्ये—ऐसा परिवर्तन हो जाएगा (देखिए पृ० ३४ तथा पृ० ६६ नि० ५)। प्राकृत रूपों में मागधी भाषा के नियमानुसार परिवर्तन करके सब रूप बना लें।

भागीदार हो ऐसी प्रेरणा—निमन्त्रण—होता है। जैसे—दो बार सन्ध्या करो "दुवेलं संझं कुणउ"।

४. आमन्त्रण—प्रेरणा करने पर भी प्रवृत्ति करना या न करना उसकी इच्छा पर निर्भर रहे ऐसी प्रेरणा। यहाँ बैठो "एत्थ उवविसउ"।

५. अधीष्ट—आदर प्रेरणा—व्रत का पालन करो "वयं पालउ"।

६. संप्रश्न—एक प्रकार की धारणा। जैसे—क्या मैं व्याकरण पढूँ अथवा आगम "किं अहं वागरणं पढामु उअ आगमं पढामु"।

७. प्रार्थना—याचना, प्रार्थना—मेरी प्रार्थना है मैं आगम पढूँ "पत्थणा मम आगमं पढामु"।

८. प्रैष—तिरस्कारपूर्वक प्रेरणा—घड़ा बनाओ "घडं कुणउ"।

९. अनुज्ञा—नियुक्त करना—तुम को नियुक्त किया है, घड़ा बनाओ "भवं हि अणुन्नाओ घडं कुणउ"।

१०. अवसर—समय—तुम्हारे काम का समय हो गया है इसलिए घड़ा बनाओ "भवओ अवसरो घडं कुणउ"।

११. अधीष्टि—सम्मानपूर्वक प्रेरणा—तुम पण्डित हो, व्रत की रक्षा करो "भवं पण्डिओ वयं रक्खउ"।

धातुएँ

वज्ज (वर्ज्) = वर्जना, त्याग देना, निरोध करना।

छिंद (छिन्द्) = छेदना, छिन्न करना, अलग करना।

लभ (लभ्) = पाना, प्राप्त करना।

गवेस् (गवेष्) = गवेषणा करना, शोधना, खोज करना।

वि + किर्, वि + इर् (वि + किर) = बिखेरना, फैलाना, छिटना।

वि + प्प + जह (वि + प्र + जहा) = त्याग करना, दूर करना।

कुव्व् (कुर) = करना, बनाना।

पमस्, पास् (दृश्—पश्य) = देखना।

सं + जल् (सं + ज्वल) = जलना, क्रोध करना ।
उव + आस (उव + आस) = उपासना करना ।
भा (भी) = डरना, भयभीत होना ।
खल् + (स्खल्) = स्खलित होना, अपने स्थान से भ्रष्ट होना ।
नि + द्धुण् (निर् + धूना) = झाड़ना, झपटना ।
वस् (वस्) = रहना, बसना ।
प + माय (प्र + माद्य) = प्रमाद करना, आलस्य करना ।
वि + णस्स् (वि + नश्य) = नष्ट होना, नाश होना, विगड़ना ।
आ + लोट्ट् (आ + लुट्य) = आलोटना, लोटना ।

१. उपर्युक्त सभी प्रत्यय लगाने से पूर्व धातु के अकारान्त अंग के अन्त्य 'अ' को 'ए' विकल्प से होता है । जैसे—

हस् + उ—हस् + अ + उ = हसेउ, हसउ
हस् + मो—हस् + अ + मो = हसेमो, हसमो
('अ' विकरण के लिए देखिए पाठ १, नि० १) ।

२. प्रथम पुरुष के प्रत्यय लगाने से पूर्व धातु के अकारान्त अंग के अन्त्य 'अ' को 'आ' तथा 'इ' विकल्प से होती है । जैसे—

हस् + मु – हस् + अ + मु = हसामु, हसिमु, हसमु, ।

३. अकारान्त अंग में लगने वाले 'हि' प्रत्यय का प्रायः लोप[1] होता है और कहीं-कहीं इस अंग के अन्त्य 'अ' को 'आ' भी होता है । जैसे—

हस् + अ + हि = हस, गच्छ् + अ + हि = गच्छाहि ।

४. कहीं-कहीं तृतीय पुरुष के एकवचन 'उ' अथवा 'तु' प्रत्यय

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१७५।

लगने से पूर्व धातु के अंग अन्त्य 'अ' को 'आ' भी उपलब्ध होता है। जैसे—

सुण् + अ + उ = सुणाउ, सुणउ, सुणेउ।

५. जिस धातु के अन्त में आ, इ वगैरह स्वर हों उसको इज्जसु, इज्जहि, और इज्जे प्रत्यय नहीं लगते। जैसे—
ठा, री वगैरह धातु में ये प्रत्यय नहीं लगाते परन्तु जब विकरण 'अ' लगने से ठाअ, रीअ होगा तब उनमें ये प्रत्यय लगते हैं।

'हस' धातु के रूप

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	हसमु, हसामु	हसमो, हसामो
	हसिमु, हसेमु	हसिमो, हसेमो
म०पु०	हससु, हसेसु, हसेज्जसु	हसह, हमेह
	हसाहि, हसहि, हसेज्जहि	
	हमेज्जे, हस	
तृ०पु०	हसउ, हमेउ	हसंतु, हसेंतु हसितु
	हसतु, हसेतु	

सर्वपुरुष-सर्ववचन } हसेज्ज, हसेज्जा (ज्ज, ज्जा के लिए देखिए पाठ ३)

१४वें पाठ में बताये हुए नियम के अनुसार प्रत्येक स्वरान्त धातु के विकरण वाले तथा बिना विकरण के अंग बनाने के लिए और तैयार हुए अंगो द्वारा प्रस्तुत विध्यर्थ तथा आज्ञार्थ के रूप साध लेना चाहिए। जैसे—

हो (विकरणरहित रूप)

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	होमु	होमो

होअ (विकरणवाले रूप)

प्र० पु०	होअमु	होअमो
	होआमु	होआमो
	होइमु	होइमो
	होएमु	होएमो
म० पु०	होअसु	होअह
	होएसु	होएह
	होएज्जसु	
	होआहि	
	होअहि	
	होएज्जहि	
	होएज्जे	
	होअ	

इस प्रकार 'हो' इत्यादि सभी स्वरान्त धातुओं के अंग बनाकर 'विध्यर्थ' और 'आज्ञार्थ' सभी रूप साध लें।

सामान्य शब्द (पुंल्लिङ्ग)

आयरिय (आचार्य) = आचार्य, धर्मगुरु, विद्यागुरु।
पाण (प्राण) = प्राण।
पाणि (प्राणिन्) = प्राणी, जीवधारी।
असंजम (असंयम) = असंयम।
अप्प (आत्मन्) = आत्मा, स्वयं, आप।
चित्त (चित्र) = एक सारथि का नाम।
वोज्झ (वह्य) = भार, वोझा।
भारय (भारक) = भार उठाने वाला।

हरिण (हरिण) = मृग, हिरण।
दाडिम (दाडिम) = अनार।
तिल (तिल) = तिल।
छेअ (छेद) = छिद्र, (अन्त, सिरा)।
बोक्कड (बर्कर) = बकरा।
गब्भ (गर्भ) = गर्भ—मध्य भाग।
पायय (पादक) = पाया—नींव।
वसअ (वशक) = बाँस, वश, बाँसुरी।

नपुंसकलिङ्ग

सावज्ज (सावद्य) = पाप प्रवृत्ति।
सासुरय (श्वाशुरक) = ससुराल।
निवाण (निपान) = जलाशय।
विहाण (विभान) = प्रात काल प्रभात।
अडय (अण्डक) = अण्डा।
पल्लाण (पर्याण) = पलान।
सल्ल (शल्य) = शल्य।
चउप्पट्टय (चतुवर्त्मक) = चौक, चौरस्ता।
चेण्ह (चिह्न) = चिह्न।
छिद्दय (छिद्रक) छिद्र, विवर।
मोत्तिय (मौक्तिक) = मुक्ता, मोती।
अमिअ (अमृत) = अमृत।
घय (घृत) = घी।
लण्ह (श्लक्ष्ण) = छोटा, सूक्ष्म।
पोअ (प्रोत) = पिरोया हुआ, प्रोत।
पत्त (प्राप्त) = प्राप्त।

चउरंस, चउरस्स (चतुरस्र) = चौरस, चतुष्कोण ।
नेहालु (स्नेहालु) = स्नेही, स्नेहवाला ।
छाहिल्ल, छायालु (छायालु) = छाया वाला ।
जडालु (जटाल) = जटा वाला, जटाधारी ।
रसाल, रसालु (रसालु) = रसाल, रस वाला ।
रत्त (रक्त) = रक्त, लाल, रंगा हुआ ।
ठड्ढ (स्तब्ध) = स्तब्ध, स्तम्भित, ठंढा ।
तिण्ह (तीक्ष्ण) = तीक्ष्ण, तेज ।
अहिनव (अभिनव) = अभिनव, नया ।
उच्चिट्ठ (उच्छिष्ट) = जूठा ।
तंस (त्र्यस्र) = त्रिकोण ।

अव्यय

णवर (केवल) = केवल ।
णाणा (नाना) = नाना प्रकार, विविध ।
बहिद्धा (बहिर्वा) = बाहर ।
तहिं (तत्र) = वहाँ ।
जहिं (यत्र) = जहाँ ।
कहिं (कुत्र) = कहाँ ।

वाक्य (हिन्दी)

अण्डे को मत खाओ ।
वह पाप प्रवृत्ति न करे ।
हे चित्र ! जाओ और मृग को खोजो ।
मुनि असंयम से विरत रहे ।
तू चौक में जा और अनार ला ।

स्वय अपने का खोज, बाहर मत घूम।
उसके सभी शल्य नाश हो जायं।
हे ब्राह्मण ! बकरे का होम न कर तिल का होम कर।
सब जीवों क साथ प्रेम करो।
प्राणी के प्राण मत हरो।
घोड़ के ऊपर जीन रख।

वाक्य (प्राकृत)

सावज्जं वज्जउ मुणा ।
ण कोवउ आयरियं।
न हण पाणिणो पाणे।
सनिहिं न कुणउ माहणो।
सबुद्धो निद्धुणाउ पावस्स रज।
सव्व गंथ कलह च विप्पजहाहि भिक्खू !
किं नाम होउज त कम्मय जेणाहं णाणा दुक्ख न गच्छेज्जा।
गच्छाहि ण तुम चित्ता !
वित्तेण ताण न लहे पमत्ते।
उत्तमट्ठ गवेसउ।
वसामु गुरुकुले निच्च।
असजम णवर न सेवेज्जा।
भिक्खू न कमवि छिदेह।
बालस्य बाल्त्त पस्स।
बालाण मरण असइ भवेज्ज।
सुय अहिट्ठिज्जा।
गोयम ! समय मा पमायउ।
अवि एय विणस्सउ अन्नपाण।
न य, ण दाहामु तुमं नियठा।

सत्रहवाँ पाठ

निम्नलिखित प्रत्यय भी विशेषतः विध्यर्थ के हैं[1]।

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	ज्जामि	ज्जामो
म०पु०	ज्जासि, ज्जसि	ज्जाह

1. पालिभाषा में विध्यर्थ को सप्तमी कहते हैं और संस्कृत में भी आचार्य हेमचन्द्र ने 'सप्तमी' नाम को स्वीकार किया है। पाणिनीय व्याकरण में सप्तमी को विधिलिङ् कहते हैं।

पालि में सप्तमी—विध्यर्थ—के प्रत्यय :—

परस्मैपद

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	एय्यामि, ए	एय्याम
म०पु०	एय्यासि, ए	एय्याथ
तृ०पु०	एय्य, ए	एय्युं

आत्मनेपद

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	एय्यं, ए—	एय्याम्हे
म०पु०	एथो	एय्यव्हो
तृ०पु०	एथ	एरं

'अस्' धातु के विध्यर्थ रूप—

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	अस्सं	अस्साम
म०पु०	अस्स	अस्सथ
तृ०पु०	अस्स, सिया	अस्सु, सियुं

१६वें पाठ में अपभ्रंश के आज्ञार्थ प्रत्यय बताए हैं वही प्रत्यय विध्यर्थ में भी उपयोग में आते हैं और धातु के रूप भी वैसे ही होते हैं (दे० पृ० २८८।)

तृ०पु० ज्जए, ए, एय, ज्ज, ज्जा, ज्ज, ज्जा

सर्वपुरुष
सर्ववचन } ज्जइ

'ज्ज' अथवा 'ज्जा' प्रत्ययों से पूर्व धातु के अन्त्य 'अ' को 'इ' और 'ए' होता है। जैसे—

'हस्' धातु का रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	हसिज्जामि, हसेज्जामि	हसिज्जामो, हसेज्जामो
म०पु०	हसिज्जासि, हसेज्जासि, हसिज्जसि, हसेज्जसि	हसिज्जाह, हसेज्जाह
तृ०पु०	हसिज्जए, हसे, हसेय, हसिज्ज, हसेज्ज हसिज्जा, हसेज्जा	हसिज्ज, हसेज्ज, हसिज्जा, हसेज्जा
सर्वपुरुष सर्ववचन	हसिज्जइ, हसेज्जइ	

'हो' धातु का विकरणवाला 'होअ' रूप (अंग) बनता है और उसके रूप 'हस्' धातु के समान ही होते हैं। इसी प्रकार विकरणवाले सभी स्वरान्त धातु के रूप समझ लेने चाहिए।

विकरण रहित 'हो' धातु के रूप—

प्र०पु०	होज्जामि	होज्जामो
म०पु०	होज्जासि, होज्जसि	होज्जाह
तृ०पु०	होज्जए, होए, होएय, होज्ज, होज्जा	होज्ज, होज्जा
सर्वपुरुष सर्ववचन	होज्जइ, होएज्जइ, होइज्जइ (विकरणवाले)	

आर्ष प्राकृत में प्रयुक्त कुछ अन्य अनियमित रूप—

(कुर्यात्, कुर्याः)—कुज्जा ।

(निदध्यात्)—निहे ।

(अभितापयेत्)—अभितावे ।

(अभिभाषेत)—अभिभासे ।

(लभेत)—लहे ।

(स्यात्)—सिया, सिआ

(आच्छिन्द्यात्)—अच्छे

(आभिन्द्यात्)—अब्भे

(हन्यात्)—हणिया ।

यदि क्रियापद के साथ निम्नलिखित शब्दों का सम्बन्ध हो तो इस पाठ में बताये विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग हो सकता है । जैसे—

उअ } (अव्यय)—उअ कुज्जा = चाहता हूँ वह करे ।
अवि } अवि भुंजिज्ज = खाय भी ।

श्रद्धा अथवा सम्भावना अर्थ वाले धातु का प्रयोग :—

सद्दह (धातु)–'सद्दहामि सो पाढं पढिज्ज'–श्रद्धा रखता हूँ वह पाठ पढ़े ।

'सम्भावेमि तुमं न जुज्झिज्जसि'—सम्भावना करता हूँ तू नहीं लड़े ।

'जं' के साथ कालवाचक कोई भी शब्द हो तो वहाँ विध्यर्थक प्रत्ययों का प्रयोग होता है । जैसे—

'कालो जं भणिज्जामि'—समय है मैं पढ़ूँ ।

'वेला जं गाएज्जसि'—समय है तू गा ।

जहाँ एक क्रिया दूसरी क्रिया का कारण हो वहाँ भी इस पाठ में बताए विध्यर्थ प्रत्ययों का प्रयोग होता है । जैसे—

'जई गुरुं उवासेय सत्यन्तं गच्छेय'—"यदि गुरु की उपासना करे तो शास्त्र का अन्त पावे" ।

धातुएँ

उव + णी (उप + नी)—पास ले जाना।

पच्च + प्पिण् (प्रति + अर्पण=प्रत्यर्पण)—वापिस देना, लौटाना, अर्पण करना।

पटि + नी, पटि + णी (प्रति + नी)—वापस देना, बदले में देना।

वर् (वृ)—स्वीकार करना, वरदान लेना।

वाद् (वाप्)—बोना, वपन करवाना।

तुर् (त्वर्)—जल्दी करना, त्वरा करना।

सं + दिस् (सम् + दिश्)—सदेशा देना, सूचना करना।

उव + दस् (उप + दर्श)—दिखाना, पास जाकर बताना।

अणु + जाण्, अनु + जाणा (अनु + जाना)—अनुज्ञा देना, सम्मति देना।

सं + वड्ढ् (सम् + वर्ध्)—संवर्धन करना, पोषण करना, सम्भालना।

चिण (चिन्)—चुनना, इकट्ठा करना।

क्रियातिपत्ति

परस्पर सांकेतिक दो वाक्यों का जब एक संयुक्त वाक्य बना हो और दोनों क्रियाओं में कोई केवल सांकेतिक क्रिया जैसी अशक्य-सी प्रतीत होती

---

१. क्रियातिपत्ति को पालि में कालातिपत्ति कहते हैं। पालि में क्रियातिपत्ति के प्रत्यय इस प्रकार हैं—

	परस्मैपद		आत्मनेपद	
	एकव०	बहुव०	एकव०	बहुव०
प्र०पु०	स्सं	स्साम्हा	स्सं	स्साम्हसे
म०पु०	स्से	स्सथ	स्ससे	स्सव्हे
तृ०पु०	स्सा	स्ससु	स्सथ	स्सिसु

हो तो वहाँ क्रियातिपत्ति का प्रयोग होता है। क्रियतिपत्ति याने क्रिया की अतिपत्ति—असंभवितता को ही सूचित करने के लिए क्रियातिपत्ति का उपयोग होता है।

प्रत्यय

सर्वपुरुष, सर्ववचन } न्तो, माणो, ज्ज, ज्जा।
(देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१७९ तथा १८०)।

पुंलिंग उदाहरण

एकवचन	बहुवचन
भण्—भणंतो, भणमाणो	भणंता, भणमाणा
हो—होअंतो, होअमाणो	होअंता, होअमाणा
होंतो, होमाणो	

पालिमें 'अंभवि' तथा 'भवि' धातु के रूप :—

प्र०पु०	अभविस्सं	अभविस्सम्हा, अभविस्सम्ह
म०पु०	अभविस्से, भविस्स	अभविस्स, अभविस्सथ
तृ०पु०	अभविस्सा, अभविस्स	अभविस्संसु, भविस्संसु

इसी प्रकार 'अभवि' अथवा 'भवि' धातु से आत्मनेपद के प्रत्ययों को लगाकर रूप बना लें।

शौरसेनी, मागधी तथा अपभ्रंश के रूप प्राकृत के समान होंगे। शौरसेनी में तथा मागधी वगैरह में :—

	पुं०	स्त्री०	नपुं०
	होन्दो	होन्दी	होन्दं इत्यादि रूप होंगे।
पैशाची में—	होन्तो	होन्ती	होन्तं

इत्यादि रूप बनेंगे।

स्त्रीलिंग	नपुंसक
भणंती, भणता	भणंतं, भणमाणं
भणमाणी, भमाणा	होअंतं, होंतं
होअंती, होअता, होंती, होता	होअमाणं, होमाणं
होअमाणी, होअमाणा, होमाणी, होमाणा	
भण्—भणेज्ज, भणेज्जा	
हो—होएज्ज, होएज्जा, होज्ज, होज्जा	

स्त्रीलिंग में 'न्ती', 'न्ता' तथा माणी' और 'माणा' प्रत्यय लगाये जाते हैं। इस प्रकार के क्रियातिपत्ति के बहुवचनीय प्रयाग बहुत कम उपलब्ध होते हैं तथा प्रथमा विभक्ति में ही इनका प्रयोग होता है, अन्य विभक्तियों में नहीं।

वाक्य (हिन्दी)

मुनि पाप को बरजे।
आचार्य को कुपित मत करो।
खेत में बीज बोओ।
धार्मिक काम के लिए जल्दी कर।
चाहता हूँ, वह धर्म के लिए धन का प्रयोग करे।
पुत्र पढ़े तो पण्डित बने (क्रियातिपत्ति)।
श्रद्धा रखता हूँ वह सत्य वचन बोले।
समय है मैं धन इकट्ठा करूँ।
चाहता हूँ तू अच्छे काम के लिए सम्मति दे।
गुरु के पास शिष्य को ले जा।
तुम को व्रत के लिए सूचित करूँ?

वाक्य (प्राकृत)

वत्तेण ताणं न लभे पमत्ते ।

वसे गुरुकुले निच्चं ।

उत्तमट्ठं गवेसए ।

गोयमा ! समयं मा पमायए ।

न कोवए आयरियं ।

संनिहिं न कुव्विज्जा ।

संवुडो निद्‌वुणे पावस्स मलं ।

वालाणं मरणं असइं भवे ।

सावज्जं वज्जए मुणी ।

दीवो होंतो तथा अंधयारो नस्संतो ।

सव्वं गंथं कलहं च विप्पजहेय भिक्खू ।

रावणो सीलं रक्खंतो तया रामो तं रक्खंतो ।

अठारहवाँ पाठ

अकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त और ऊकारान्त शब्द
(स्त्रीलिङ्ग)

प्राकृत में आकारान्त शब्द (नाम) दो प्रकार के हैं। कुछ आकारान्त शब्दों का मूलरूप अकारान्त होता है, लेकिन स्त्रीलिंग के कारण आकारान्त हो जाता है। जबकि कुछ आकारान्त शब्दों का मूलरूप प्रकृति से आकारान्त नहीं होता, परन्तु व्याकरण के किसी विशेष नियम के कारण आकारान्त हो जाता है।

नीचे दोनों प्रकार के आकारान्त शब्दों के रूप दिए गए हैं। जो शब्द मूलत अकारान्त नहीं हैं, उसका सम्बोधन का एकवचन प्रथमा विभक्ति जैसा ही होता है। लेकिन जो मूल से अकारान्त हैं उनके सम्बोधन के एकवचन में अन्त्य 'आ' को 'ए' हो जाता है (देखिए, हे० प्रा० व्या० ८।३।४१)। इन दोनों प्रकार के शब्दों के रूपों में दूसरा कोई भेद नहीं है। जैसे—

	ननान्दृ	णणंदा	हे णणंदा !
	अप्सरस्	अच्छरसा	हे अच्छरसा !
	सरित्	सरिया	हे सरिया !
		सरिआ	हे सरिआ !
	वाच्	वाया	हे वाया !
मूल अकारान्त	माल	माला	हे माले ! हे माला !
	रम	रमा	हे रमे ! हे रमा !
	कान्त	कान्ता	हे कान्ते ! हे कान्ता !
	देवत	देवता	हे देवते ! हे देवता !
	मेघ	मेघा	हे मेहे ! हे मेघा !

*माला (मूल अकारान्त) शब्द के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	माला = माला (माला)	माला[1] + उ = मालाउ
		माला + ओ = मालाओ
		माला[1] = माला (मालाः)
द्वि०	माला + म् = मालं[2] (मालाम्)	माला + उ = मालाउ
		माला + ओ = मालाओ
		माला = माला (मालाः)
तृ०	माला[3] + अ = मालाअ	माला + हि=मालाहि(मालाभिः
	माला + इ = मालाइ	माला + हिं = मालाहिं
	माला + ए = मालाए (मालया)	माला + हिँ = मालाहिँ

*पालि में माला के रूप—

	एकव०	वहुव०
प्र०	माला	माला, मालायो
द्वि०	मालं	,, ,,
तृ०, च०, पं०, प०, स०	मालाय	मालाहि, मालाभि (तृ०) मालानं (च० प०) मालाहि, मालाभि (पं०)
स०	मालायं	मालासु
सं०	माले !	माला, मालायो !

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।३६ तथा ८।३।५। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९।

च०	माला + अ = मालाअ	माला + ण = मालाण (मालाभ्य)
	माला + इ = मालाइ	माला + ण = मालाण
	माला + ए = मालाए (मालायै)	
प०	[1]माला + अ = मालाअ (मालाया)	
	माला + इ = मालाइ	
	माला + ए = मालाए	
	माला + हिंतो = मालाहिंतो	माला + हिंतो = मालाहिंतो (मालाभ्य)
		माला + सुंतो = मालासुंतो
ष०	माला + अ = मालाअ	माला + ण = मालाण (मालानाम्)
	माला + इ = मालाइ (मालाया)	माला + ण = मालाण
	माला + ए = मालाए	
स०	माला + अ = मालाअ (मालायाम्)	माला + सु = मालासु
	माला + इ = मालाइ	माला + सु = मालासु
	माला + ए = मालाए	(मालासु)
सं०	माला = माले ! (हे माले !)	माला + उ = मालाउ !
	माला = माला !	माला + ओ = मालाओ !
		माला = माला ! (माला)

---

१. पञ्चमी विभक्ति में अकारान्त शब्द में लगने वाले 'उ ओ, तो और त्तो' प्रत्यय यहाँ पर बराबर सभी नामों में भी लगते हैं। जैसे— मालाउ, मालाओ, मालाना, मालत्तो।

'वाया' (वाक्) मूल अकारान्त नहीं है) शब्द के सभी रूप माला जैसे ही होते हैं। इसकी विशेषता केवल सम्बोधन में ही है। "हे वाया !" ऐसा एक ही रूप बनता है। 'वाये !' 'वाया !' ऐसे दो रूप नहीं।

*इकारान्त 'बुद्धि' शब्द के रूप

प्र०	वुद्धी (वुद्धिः)	वुद्धि + उ = वुद्धीउ[1] वुद्धि + ओ = वुद्धीओ (वुद्धयः) वुद्धि = वुद्धी
द्वि०	वुद्धिं (वुद्धिम्)	वुद्धि + उ = वुद्धीउ वुद्धि + ओ = वुद्धीओ वुद्धि = वुद्धी (वुद्धीः)
तृ०	वुद्धीअ[4] वुद्धि + आ = वुद्धीआ (वुद्धया) वुद्धीइ, वुद्धीए	वुद्धीहि वुद्धीहिं, वुद्धीहिँ (वुद्धिभिः)

---

* पालि में ह्रस्व इकारान्त रत्ति (रात्रि) का रूप—

प्र०	रत्ति	रत्ती, रत्तियो
द्वि०	रत्तिं	,, ,,
तृ०, च०, पं०, ष०, स०	रत्तिया	रत्तीहि, रत्तीभि (तृ० पं०) रत्तीनं (च० ष०)
स०	रत्तियं	रत्तीसु
सं०	रत्ति !	रत्ती, रत्तियो !

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।५।
३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९।

च०	वुड्ढीअ, वुड्ढीआ वुड्ढीइ (वृद्धयै) वुड्ढीए (वृद्धये)	वुड्ढीण, वुड्ढीण (वृद्धिभ्य)
प०	वुड्ढाअ[1] वुड्ढीआ (वृद्धया) वुड्ढाइ वुड्ढाए (वृद्धे) वुड्ढाहितो	वुड्ढाहिंता, वुड्ढीसुंतो (वृद्धिभ्य)
ष०	वुड्ढाअ, वुड्ढाआ (वृद्धया) वुड्ढाइ, वुड्ढाए (वृद्धेः)	वुड्ढीण, वुड्ढीण (वृद्धीनाम्)
स०	वुड्ढाअ, वुड्ढीआ (वृद्धयाम्) वुड्ढाइ, वुड्ढीए (वृद्धौ)	वुड्ढासु, वुड्ढीसु (वृद्धिषु)
सं०	वुड्ढी, वुड्ढि ! (वृद्धेः !)	वुड्ढीउ, वुड्ढीओ, वुड्ढी ! (वृद्धय)

*ईकारान्त 'नदी' शब्द के रूप

प्र०	नदी (नदी)	नदी + आ = नदीआ[2] नदीउ[3], नदीओ नदी, (नद्य)

---

१ देखिए पृ० ३०५, टिप्पणी १—वुड्ढीउ, वुड्ढीओ, वुड्ढित्तो।

* पालि में दीर्घ ईकारान्त 'नदी' शब्द के रूप—

	एकव०	बहुव०
प्र०	नदी	नदी, नदियो, नज्जो
द्वि०	नदिं, नदियं	,, ,, ,,

द्वि०	नदिं[८] (नदीम्)	नदीआ, नदीउ नदीओ, नदी (नदीः)
तृ०	नदीअ[५], नदीआ (नद्या) नदीइ, नदीए	नदीहि, नदीहिं, नदीहिँ (नदीभिः)
च०	नदीअ, नदीआ नदीइ, नदीए (नद्यै)	नदीण, नदीणं (नदीभ्यः)
पं०	नदीअ[६], नदीआ नदीइ, नदीए, नदीहिंतो (नद्याः)	नदीहिंतो, नदीसुंतो (नदीभ्यः)
ष०	नदीअ, नदीआ (नद्याः) नदीइ, नदीए	नदीण, नदीणं (नदीनाम्)

तृ०, च०, पं०, ष०, स०	नदिया, नज्जा	नदीहि, नदीभि (तृ० पं०) नदीनं (च० ष०)
स०	नज्जं	नदीसु
सं०	नदि !	नदी, नदियो, नज्जो !

२. हे० प्रा० व्या० ८।३।२८ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७ ।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।३६ तथा ८।३।५ ।

५. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९ ।

६. देखिए पृ० ३०५ टिप्पण—१ नदीउ, नदीओ, नदित्तो ।

स०	नदीअ, नदीआ नदीइ, नदीए (नद्याम्)	नदीसु, नदीसु (नदीषु)
स०	नदि[1] ! (नदि !)	नदीआ, नदीउ नदीओ, नदी ! (नद्य)

उकारान्त 'घेणु' (धेनु) शब्द के रूप*

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	धेणू (धेनु)	घेणूउ[2], धेणूओ धेणू (धेनव)
द्वि०	धेणु[3] (घेनुम्)	घेणूउ[3], घेणूओ धेणू (धेनू)
तृ०	घेणूअ[4], घेणूआ घेणूइ, घेणूए (धेन्वा)	घेणूहि, घेणूहिँ घेणूहिं (घेनुभि)

1. हे० प्रा० व्या० ८।३।४२।

*पालि मे ह्रस्व उकारान्त 'घेनु' शब्द के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	धेनु	धेनू, घेनुया
द्वि०	धेनु	,, ,,
तृ०, च०, प०, ष०, स०	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि (तृ०पं०) धेनून (च०ष०) धेनूसु (स०)
स०	धेनु !	धेनू घेनुयो !

2. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। 3. हे० प्रा० व्या० ८।३।५।
4. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९।

च०	वेणूअ, वेणूआ वेणूइ, वेणूए (धेनवे, धेन्वै)	वेणूण, वेणूणं (धेनुभ्यः)
पं०	वेणूअ, वेणूआ (धेन्वाः, धेनोः) वेणूइ, वेणूए वेणूउ[1], वेणूओ वेणुत्तो, वेणूहिंतो	वेणूहिंतो, वेणुसुंतो (धेनुभ्यः)
ष०	वेणूअ, वेणूआ वेणूइ, (धेन्वाः, धेनोः) वेणूए	वेणूण, वेणूणं (धेनूनाम्)
स०	वेणूअ, वेणूआ वेणूइ, वेणूए (धेन्वाम्, धेनौ)	वेणूसु, वेणूसुं (धेनुषु)
सं०	वेणू[2], वेणु (धेनो !)	वेणूउ, वेणूओ, वेणू (धेनवः)

ऊकारान्त 'वहू' (वधू) शब्द के रूप*

प्र०	वहू[3] (वधूः)	वहूउ, वहूओ[4] वहू (वध्वः)

---

१. देखिए पृ० ३०५ टि० १ । २. हे० प्रा० व्या० ८।३।३८ ।

*पालि में दीर्घ ऊकारान्त 'वधू' के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	वधू	वधू, वधुयो
द्वि०	वधुं	,, ,,

द्वि०	वहू[5] (वधूम्)	वहूउ, वहूओ[6], वहू (वधू)
तृ०	वहूअ[7], वहूआ	वहूहि, वहूहिं
	वहूइ, वहूए	वहूहिँ, (वधूभि)
च०	वहूअ, वहूआ	वहूण, वहूणं (वधूभ्य)
	वहूइ वहूए (वध्वै)	
प०	वहूअ, वहूआ	
	वहूइ, वहूए	
	वहूउ[8] वहूओ	
	वहूत्तो, वहूहितो	वहूहितो, वहूसुतो (वधूभ्यः)

तृ०, च०, प०, ष०, स०	वधुया	वधूहि, वधूभि (तृ०) वधून (च०प०) वधूसु (स०)
स०	वधु !	वधू, वधुयो !

पालि भाषा में इत्थी (स्त्री), मातु (मातृ) धीतु (दुहितृ), गावी (गो) वगैरह स्त्रीलिंगी शब्दों के विशेष रूप होते हैं (देखिए पा० प्र० पृ० १०५, १०८ ११०)।

'गा' शब्द के प्राकृत भाषा में 'गउ' तथा 'गाअ' जैसे दो रूप होते हैं (हे०प्रा० व्या० ८।१।१५८)। उसमें 'गउ' का पुलिंग में 'भाणु' जैसे रूप होते हैं, स्त्रीलिंग में 'धेणु' जैसे रूप होंगे। 'गाअ' का पुलिंग में 'वीर' जैसे रूप बनेंगे तथा स्त्रीलिंग में 'गाअ' का 'गाई' अथवा 'गाआ' परिवर्तन होगा, 'गाई' का नदी जैसे रूप समझें तथा 'गाआ' का 'माला' जैसे रूप बना लें।

३ हे० प्रा० व्या० ८।१।११।

४. हे० प्रा० व्या० ८।३।२७। ५ हे० प्रा० व्या० ८।३।३६ तथा ५।

६. हे० प्रा० व्या० ८।३।५। ७. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९।

८ देखिए पृ० ३०५ टि० १।

प०	वहूअ, वहूआ वहूइ, वहूए (वध्वाः)	वहूण, वहूणं (वधूनान्)
स०	वहूअ, वहूआ वहूइ, वहूए (वध्वाम्)	वहूसु, वहूसुं (वधूषु)
सं०	[1]वहु ! (वधु !)	वहूओ, वहूउ, वहू ! (वध्वः)

शब्द का अंग और प्रत्यय का अंश दोनों पृथक्-पृथक् करके बता दिये हैं तथा उससे साधित प्रत्येक रूप भी अलग-अलग बताये गये हैं।

आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त स्त्रीलिंग-वाचक शब्दों के सभी रूप एक जैसे हैं। उनमें भेद नहींवत् है। अतः मूल अंग और प्रत्ययों के विभाग की पद्धति एक ही स्थान पर समझा दी है।

दीर्घ ईकारान्त शब्दों की प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के बहुवचन में केवल एक "आ" प्रत्यय ही विशेष—नया प्रयुक्त होता है। आकारान्त को छोड़ उक्त सभी शब्दों को तृतीया से सप्तमी पर्यन्त एकवचन में 'आ' प्रत्यय अधिक लगता है। उक्त रूप ही इस परिवर्तन का साक्षी है।

यद्यपि इन चारों प्रकार के शब्दों के सभी रूप एक समान है तथापि संस्कृत रूपों के साथ तुलना करने के लिए तथा विशेष स्पष्ट करने के लिए उनके सभी रूप (कोष्ठक चिह्न में) बता दिये है। इन रूपों से प्रचलित भाषा के रूपों की भी समानता का भान हो जाता है।

१. 'त्तो' और 'म्' प्रत्ययों के सिवाय अन्य सभी प्रत्ययों के परे रहते शब्द के अंग का स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे—'वुद्धिओ', 'वेणूओ'।

२. 'म्' प्रत्यय परे रहते अंग का पूर्व स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—'नदिं', 'वहुं'।

३. जहाँ केवल मूल अंग का ही प्रयोग करना हो वहाँ उसे दीर्घ करके प्रयुक्त करना चाहिए। जैसे—'वुद्धी', 'वेणू'।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।४२।

४ इकारान्त तथा उकारान्त के सम्बोधन के एकवचन में विकल्प से दीर्घ होता है। जैसे—'बुद्धि !' 'बुद्धी !' 'धेणु !' 'धेणू !'

५. ईकारान्त तथा ऊकारान्त के सम्बोधन के एकवचन में ह्रस्व होता है। जैसे—'नदि !' 'वहु !'

आकारान्त शब्द

सद्धा (श्रद्धा) = श्रद्धा विश्वास।
मेहा (मेधा) = मेधा-धारणा शक्तिवाली बुद्धि।
पण्णा (प्रज्ञा) = प्रज्ञा-बुद्धि।
सण्णा (संज्ञा) = संज्ञा, नाम।
संझा (सन्ध्या) = सन्ध्या, सायंकाल।
वंझा (वन्ध्या) = वन्ध्या, अपत्यहीन।
भुक्खा (बुभुक्षा) = भूख।
तिसा (तृषा) = प्यास, लालच।
तण्हा (तृष्णा) = तृष्णा।
सुण्हा, ण्हुसा (स्नुषा) = स्नुषा-पुत्रवधू।
पुच्छा (पृच्छा) = प्रश्न।
चिन्ता (चिन्ता) = चिन्ता।
आणा (आज्ञा) = आज्ञा।
छुहा[1] (क्षुधा) = भूख।
कउहा[2] (ककुभा) = दिशा।
निसा (निशा) = निशा, रात्रि।
दिसा[3] (दिशा) = दिशा।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१७। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२१।
३. हे० प्रा० व्या० ८।१।१९।

नावा (नौका) = नौका, नाव ।
गउआ (गौका) = गाय ।
सलाया (शलाका) = सलाई, शलाका ।
मट्टिया (मृत्तिका) = मिट्टी ।
मच्छिआ, मक्खिआ (मक्षिका) = मक्षिका, मक्खी, मछली ।
कलिआ (कलिका) = कली ।
विज्जुला (विद्युत्) = बिजली ।
जिब्भा, जीहा (जिह्वा) = जिह्वा, जीभ ।
अच्छरसा[1] (अप्सरस्) = अप्सरा ।
आसिसा[2] (आशिष्) = आशीर्वाद ।
धूआ[3] (दुहिता) = दुहिता, पुत्री, लड़की ।
णणंदा[4] (ननान्दृ) = ननन्द, पति की बहिन, ननद
पिउच्छा[5], पिउसिआ (पितृष्वसा) = फूआ, पिता की बहिन ।
माउच्छा[5], माउसिआ (मातृष्वसा) = माशी, मौसी, माता की बहन ।
बाहा[6] (बाहु) = बाहु, हाथ ।
माआ[7] (मातृ) = माता, जननी ।
माअरा[7], मायरा (मातृ) = देवी, माता ।
ससा (स्वसृ) = बहिन ।
वाया[8] (वाच्) = वाचा, वाणी ।
सरिआ[8], सरिया (सरित्) = सरिता, नदी ।
पाडिवआ[8], पाडिवया (प्रतिपदा) = प्रतिपदा, एकम ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।२० । २. हे० प्रा० व्या० ८।३।३५ ।
३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१२६ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।३५ ।
५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४२ । ६. हे० प्रा० व्या० ८।१।३६ ।
७. हे० प्रा० व्या० ८।३।४६ । ८. हे० प्रा० व्या० ८।१।१५ ।

गिरा[१] (गिर्) = गिरा, वाणी ।
पुरा[१] (पुर्) = पुरी—नगर, नगरी ।
सपया, सपआ (सपदा) = सम्पत्ति ।
चदिआ, चद्रिका (चद्रिका) = चाँदनी, चन्द्रमा की ज्योति, चाँदी ।
चन्दिमा (चन्द्रिका) = चन्द्र की चाँदनी ।
रच्छा (रथ्या) = रथ चलने योग्य मार्ग, गली, बाजार ।
[निर्देश—'अच्छरसा' से लेकर 'सपआ' पर्यन्त शब्दों का मूल आकारान्त नहीं है । इसका ध्यान विशेष रखें ।]
जुत्ति (युक्ति) = युक्ति—योजना ।
रत्ति (रात्रि) = रात्रि, रात ।
माइ (मातृ) = माता ।
भूमि (भूमि) = भूमि, पृथ्वी ।
जुवइ (युवति) = युवति, जवान स्त्री ।
धूलि (धूलि) = धूल ।
रइ (रति) = रति, प्रेम, राग ।
मइ (मति) = मति, बुद्धि ।
दिहि, धिइ (धृति) = धृति, धैर्य ।
सिप्पि (शुक्ति) = सीप ।
सत्ति (शक्ति) = शक्ति, बल ।
सति (स्मृति) = स्मृति याद ।
दित्ति (दीप्ति) = दीप्ति—तेज ।
पति (पङ्क्ति) = पंक्ति, कतार, लाइन ।
थुइ (स्तुति) = स्तुति ।
कयली (कदली) = केला ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।१।१६ ।

नारी (नारी) = नारी, स्त्री ।

रयणी (रजनी) = रात्रि ।

राई (रात्री) = रात्रि ।

धाई (धात्री) = धात्री, धाया, दाई ।

कुमारी (कुमारी) = कुमारी, कुंवारी ।

तरुणी (तरुणी) = तरुण स्त्री ।

समणी (श्रमणी) = साध्वी ।

साहुवी, साहुणी = (साध्वी) साध्वी ।

तणुवी (तन्वी) = पतली स्त्री ।

इत्थी, थी (स्त्री) = स्त्री ।

कित्ति (कीर्ति) = कीर्ति, यश ।

सिद्धि (सिद्धि) = सिद्धि ।

रिद्धि (ऋद्धि) = ऋद्धि, संपत्ति ।

संति (शान्ति) = शान्ति ।

कंति (कान्ति) = कान्ति, तेज ।

खंति (क्षान्ति) = क्षमा ।

कंति (कान्ति) = इच्छा, अभिलाषा ।

गउ (गो) = गाय ।

कच्छु (कच्छू) = खुजली, खाज, रोग विशेष ।

विज्जु (विद्युत्) = बिजली ।

उज्जु (ऋजु) = ऋजु, सरल ।

माउ (मातृ) = माता ।

दद्दु (दद्रु) = दाद, क्षुद्र कुष्ठरोग ।

चंचु (चञ्चु) = चोंच ।

गाई (गो) = गाय ।

वावी (वापी) = बावली ।

बहिणी (भगिनी) = भगिनी, बहिन ।
वाराणसी, वाणारसी (वाराणसी) = वाराणसी, बनारस नगर ।
पिच्छी (पृथ्वी) = पृथ्वी ।
पुहवी (पृथ्वी) = पृथ्वी ।
साढी (शाटी) = साडी ।
मित्ता (मैत्री) = मित्रता ।
अज्जू (आर्या) = सास ।
करेणू (करणु) = हस्तिनी, हथिनी, मादा हाथी ।
कक्कंधू (कर्कन्धू) = बेर ।
अलाऊ, लाऊ (अलाबू) = तुम्बडी, लौकी, लडकी ।
वहू (वधू) = वधू, बहू ।

वाक्य (हिन्दी)

उसकी जीह्वा पर अमृत है और तेरी जीह्वा पर गरल ।
उसकी सास मुझे आशीर्वाद देगी कि तुम्हारा कल्याण हो ।
गाय और हथिनी फूलों की माला से शोभेगी ।
कीर्ति और कार्य की सिद्धि के लिए प्रयत्न करो ।
जो विवेक नहीं जानता वह पशु है ।
हे भगिनि! तू इस ढंग से बैठ कि सलाई तेरी ननद की आँख को न लगे ।
आज प्रतिपदा है अतः ब्राह्मण नहीं पढ़ेंगे ।
पुत्र पढ़े तो पण्डित बने (क्रियातिपत्ति) ।
ज्योतिषी ने कहा "अभी आकाश में बिजली चमकेगी ।

वाक्य (प्राकृत)

अच्चेइ कालो तूरंति राईओ वरेहि वर ।
हे पुत्त ! जहेव देवस्स वट्टिज्जासि तहेव पइणा वट्टिज्जासि ।

खमह जं मए अवरद्धं ।

दीवो होंतो तया अंधयारो नस्संतो ।

वच्च, देहि से संदेसं, मा रुयह ।

गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ।

आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं ।

समणो गिहाइं न कुव्विज्जा ।

खंति सेवेज्ज पंडिए ।

मिअं कालेण भक्खए ।

तुम्हे गच्छंतो तया अम्हे गच्छमाणा ।

तओ तस्स मा माहि ।

उट्ठेह, वच्चामो ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह ।

पवहणं जुत्तमेव उवणेहि ।

संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हाणं कज्जं ।

●

उन्नीसवाँ पाठ

प्रेरक प्रत्यय के भेद*

प्रत्यय

अ, ए (अय) आव, आवे (आपय)।

मूल धातु में 'अ', 'ए', 'आव' और 'आवे' प्रत्यय लगाने से प्रेरक अंग बनता है। जैसे—

---

* पालिभाषा में प्राकृत के समान प्रेरक प्रत्यय लगाते हैं, विशेषता यह है कि 'आव' के स्थान में 'आप' तथा 'आवे' के स्थान में 'आपे' प्रयय लगते हैं।

पालि रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०पु०	कारेमि	कारेम
म०पु०	कारेसि	कारेथ
तृ०पु०	कारेति	कारेंति

अथवा

प्र०पु०	कारयामि	कारयाम
म०पु०	कारयसि	कारयथ
तृ०पु०	कारयति	कारयन्ति

अथवा

प्र०पु०	कारापेमि	कारापेम
म०पु०	कारापेसि	कारापेथ
तृ०पु०	कारापेति	कारापेंति

कर् + अ = कार　　　　　　　　कर् + आव = कराव

कर् + ए = कारे　　　　　　　　कर् + आवे = करावे

१. मूल धातु की उपधा के—उपान्त्य के—इकार को प्रायः 'ए' और उकार को 'ओ' हो जाता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।४।२३७)। जैसे—

विस् + वेस् = वेसइ, वेसेइ, वेसावइ, वेसावेइ।

दुह् + दोह् = दोहइ, दोहेइ, दोहावहि, दोहावेइ।

२. उपधा में गुरु या दीर्घ स्वर वाले धातु हों तो उसमें उपर्युक्त प्रत्ययों के अतिरिक्त 'अवि' प्रत्यय भी लगता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१५०)। जैसे—

चूष् + अ = चूसइ, चूसेइ, चूसावइ, चूसावेइ, चूसविइ।

तूस्—तूसविअं, तासिअं (तोषितम्)।

३. 'अ' और 'ए' प्रत्यय परे रहते धातु के उपान्त्य 'अ' को 'आ' होता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१५३।)। जैसे—

खम्	खाम	खामइ
खम्	खामे	खामेइ

अथवा

प्र०पु०	कारापयामि	कारापयाम
म०पु०	कारापयसि	कारापयथ
तृ०पु०	कारापयति	कारापयंति

गुह का गूहयति इत्यादि

दुस का दूसयति　　,,

हन का घातयति, प्रा० घातेति

—देखिए पा० प्र० पृ० २२६—२२९

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१४९।

४. केवल 'भम' धातु का प्रेरक अंग 'भमाड' (भम् + आड) बनता है (देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१५१)। जैसे—

भम् + अ = भामइ, भम् + ए = भामेइ
भम् + आव = भमावइ भम् + आवे = भमावेइ
भम् + अड = भमाडइ, भमाडेइ

५. आर्ष प्राकृत में कहीं-कहीं प्रेरणासूचक 'अवे' प्रत्यय का प्रयोग भी उपलब्ध होता है। 'अवे' प्रत्यय परे रहते धातु के उपान्त्य 'अ' को 'आ' होता है। जैसे—

कर् + अवे = कारवे (कारय)—कारवेइ (कारयति)

इस प्रकार धातु मात्र में प्रेरक अंग लगाकर उसके साथ अमुक काल और अमुक पुरुष-बोधक प्रत्यय लगाने से उनके हर प्रकार के रूप तैयार होते हैं। इन रूपों को सिद्ध करने की प्रक्रिया पिछले पाठों में बताई गयी है तथापि यहाँ उदाहरण रूप से एक-एक रूप बता दिया गया है।

प्रेरक अंग के वर्तमानकालिक रूप—

एकवचन	बहुवचन
खाम—खाममि	खाममो, खामामो
खामामि	खामिमो
खामेमि	खामेमो
खामे—खामेमि	खामेमो
खमाव—खमावमि, खमावामि	खमावमो, खमावामो
खमावेमि	खमाविमो, खमावेमो
	इत्यादि।

सर्वपुरुष } खामेज्ज, खामेज्जा
सर्ववचन } खमावेज्ज, खमावेज्जा

भूतकालिक रूप—

खामसी, खामही, खामहीअ　　खामंसु, खामिसु, खामित्थ

खामेसी, खामेही, खामेहीअ

खमावसी, खमावही, खमावहीअ　　खमावंसु, खमाविसु, खमावित्थ

खमावेसी, खमावेही, खमावेहीअ

(ये सभी रूप सर्वपुरुष-सर्ववचन मे प्रयुक्त होते है ।)

भविष्यत्काल में केवल एकवचन के रूप—

खाम—खामिस्सं खामेस्सं

खामिस्सामि, खामेस्सामि

खामिहामि, खामेहामि

खामे—खामेस्सं, खामेस्सामि, खामेहामि, खामेहिमि

खमाव—खमाविस्सं, खमावेस्सं

खमाविस्सामि, खमावेस्सामि,

खमाविहामि, खमावेहामि

खमाविहिमि, खमावेहिमि

खमावे—खमावेस्सं, खमावेस्सामि

खमावेहामि, खमावेहिमि

सर्वपुरुष } खाम—खामेज्ज, खामेज्जा
सर्ववचन } खमाव—खमावेज्ज, खमावेज्जा ।

आज्ञार्थ

खाम—खमसु, खामामु, खामिमु, खामेमु

खामे—खामेसु, खामेहि, खामे

खमाव—खमावउ, खमावतु

खमावे—खमावेउ, खमावेतु

विध्यर्थ

खाम—खामिज्जामि, खामेज्जामि

खामे—खामेज्जसि, खामिज्जसि

खमाव—खमाविज्जइ, खमावेज्जइ

खमावे—खमावेज्जइ, खमाविज्जइ

खाम—खामिज्जइ, खामेज्जइ (सर्वपुरुष-सर्ववचन)।

क्रियातिपत्ति

खाम—खामतो, खामेंतो, खामितो[1]

खाममाणो, खामेमाणो

खामे—खामेंतो, खामितो, खामेमाणो

खमाव—खमावतो, खमावेंतो, खमाविंतो, खमावमाणो, खमावेमाणो

खमावे—खमावेंतो, खमाविंतो, खमावेमाणो

इस प्रकार प्रत्येक प्रेरक अंग में सब प्रकार के पुरुषबोधक प्रत्यय लगाकर उनके विविध रूप सिद्ध कर लेना चाहिए।

प्रेरक सह्यभेद तथा सब प्रकार के प्रेरक कृदन्त बनाने हो तब भी *प्रेरक अंग में ही ततत् सह्यभेदों और कृदन्त के प्रत्यय जोडकर रूप सिद्ध* करें। सह्यभेद आदि के प्रत्ययों की प्रक्रिया अगले पाठों में आनेवाली है।

धातुएँ

उव + दंस् (उप + दर्शय) = *दिखाना, पास जाकर बताना।*

अ + सार् (आ + सृ, सार) = इधर-उधर फैलाना, ले जाना।

अ + क्खोड् (आ + खोद्) = खोदना, काटना।

अ + ल्लव् (उद् + लप्) = बोलना।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।३२ के अनुसार स्त्रीलिंग में 'खामंती', खाममाणी रूप होते हैं।

कील् (क्रीड्)=क्रीडा करना, खेलना ।
छोल्ल् (तक्ष्)=छीलना, छोलना, लकड़ी आदि के ऊपरी अंश (खुरदुरा अंश) छीलना, चिकना करना ।
ताव् (तापय्)=तपाना ।
झाम् (दह्) जलाना, दाह देना, दग्घ करना ।
किण् (क्री) खरीदना ।
आ+ढा (आ+दृ) आदर करना, मानना ।
प+न्नव् (प्र+ज्ञापय्) प्रज्ञापित करना, बताना ।
सं+घ् (कथ्) कहना ।
पज्जर् (प्र+उत्+चर्=प्रोच्चर, कथय्)=कहना ।
वज्जर् (वि+उत्+चर्=व्युच्चर्, कथय्)=कहना ।
चव् (वच्)=कहना ।
जंप् (जल्प्)=जल्पना, बकवास करना, बोलना, कहना ।
पिसुण् (पिसुनय)=चुगली करना, निन्दा करना ।
मुण् (ज्ञा, मुण्)=जानना ।
पिज्ज् (पा)=पीना ।
उंघ् (उद्+घ्रा, नि+द्रा)=निद्रा लेना, ऊँघना, झपकी लेना, नींद में इस तरह साँस लेना कि नाक से घर-घर की ध्वनि हो ।
अब्भुत्त् (अवभृथ)=स्नान करना ।
उ+ट्ठ (उत्+स्था) उठना ।
छाय, छाअ (छाद्)=ढाँपना, ढकना, छिपाना ।
मेलव् (मेलय्)=मिलाना, एक में करना ।
जाव् (याप्)=व्यतीत करना, यापन करना ।
आ+भोय (आ+भोगय्)=ध्यानपूर्वक देखना, जानना ।
परि+णि+व्वा (परि+निर्+वा)=शान्त होना ।
अग्घ (अर्घ)=मूल्य करवाना ।

दक्खव् (दृश्) = दिखाना, कहकर बताना ।
प + णाम् (प्र + णाम्) = देना, सेवा में अर्ज करना ।
ओ + ग्गाल् (उद् + गार) = उगलना, लोहा तथा सोना चाँदी को प्रवाही करना—ओगालना।
आ + रोव् (आ + रोप) = आरोपित करना ।
मर, मल् (स्मर्) = स्मरण करना ।
चय् (शक्) = सकना, खाना ।
जीह् (जिह्री) = लज्जित करना ।
वण्ह् (अश्ना) = अशन करना, मोजन करना, खाना ।
आ + ढव् (आ + रभ्) = आरम्भ करना ।
चुक्क् (च्युतक) = चूकना, भ्रष्ट होना ।
पुलोअ, पुलअ (प्र + लोक्) प्रलोकना, देखना ।
पुलआअ (पुलकाय) = पुलकित होना ।
वलग्ग (विलग्न) = चिपक जाना, लिपट जाना ।
प + क्खाल् (प + क्षाल्) = प्रक्षालन करना, धोना ।
सिह् (स्पृह) = चाहना, स्पृहा करना ।
प + ट्ठव् (प्र + स्थाप्) = प्रस्थान करवाना, भेजना ।
वि + ण्णव् (वि + ज्ञप्) = विज्ञापन करना, आज्ञा देना ।
अल्लिव् (अर्पय्) = अर्पण करना ।
ओम्वाल् (उत् + प्लाव)=प्लावित करना ।
वग्गोल (रोमन्थय्, वि + उद् + गार) = व्युद्गार, जुगाली करना ।
परि + आल् (परि + वार्) = परिवृत्त करना, लपेटना ।
पयल्ल (प्र + सर) = फैलना ।
नी + हर् (निर् + सर्)=निकलना ।
समार् (सम् + आ + रच्) = सँवारना, शुद्ध करना ।
सूड्, सूर् (सूद्) = सूदना, नाश करना ।

गढ (घट) = गढ़ना ।

जम्भा (जृम्भ) = जँभाई या उवासी लेना ।

तुवर् (त्वर्) = त्वरा करना, जल्दी करना ।

पेच्छ् (प्र + ईक्ष) = देखना ।

चोप्पड् (म्रक्ष्) = चोपड़ना, घी, तेल वगैरह लगाना ।

अहि + लंख् } (अभि + लप) = अभिलाषा करना, इच्छा करना ।
अहि + लंघ }

चड् (चट्) = चढ़ना, वृक्ष पर चढ़ना, ऊपर चढ़ना ।

नि + क्खाल् } (नि + क्षाल्)=निखारना, साफ करना, कपड़े आदि धोना ।
नि + क्खार् }

वि + च्छल् (वि + क्षल) = धोना ।

सामान्य शब्द (पुंल्लिङ्ग)

खग्ग (खड्ग) = खड्ग, तलवार ।

उप्पाअ (उत्पाद) = उत्पादन, उत्पत्ति ।

रस्सि (रश्मि) = घोड़े की लगाम ।

मुइंग, मिइंग (मृदङ्ग) = मृदंग ।

विंचुअ (वृश्चिक) = विच्छू ।

भिंग (भृङ्ग) = भृंग, भ्रमर ।

सिंगार (शृङ्गार) = शृंगार ।

निव (नृप) = नृप, राजा ।

छप्पअ, छप्पय (षट्पद) = भ्रमर, भँवरा ।

जामाउअ (जामातृक) = जामाता, लड़की का पति ।

मग्गु (मद्गु) = एक प्रकार की मछली ।

सज्ज (षड्ज) = षड्ज—स्वर विशेष, संगीत के सात स्वरों में एक स्वर ।

इसि (ऋषि) = ऋषि ।
थव (स्तव) = स्तुति, स्तवन ।
नेह (स्नेह) = स्नेह, प्रीति ।
सर (स्मर) = स्मर, कामदेव ।
पाउस (प्रावृष)=वर्षा ऋतु, बरसात ।
वुत्तत (वृत्तान्त) = वृत्तान्त, समाचार ।
नत्तुअ, नत्तिअ (नप्तृक) = नप्तृक, नाती, लड़की का लड़का ।
वुड्ढ (वृद्ध) = वृद्ध, बूढा व्यक्ति ।
कंद (स्कन्द) = स्कन्द, कार्तिकेय ।
हरिअंद (हरिश्चन्द्र) = हरिश्चन्द्र राजा ।

नपुंसकलिङ्ग

दुद्ध (दुग्ध) = दूध ।
सित्थ (सिक्थ) = एक कण मात्र ।
आमलय (आमलक) = आँवला ।
बिंबय (बिम्बक) = प्रतिबिंब ।
कुंडलय (कुण्डलक) = कुण्डल ।
उप्पल (उत्पल) = उत्पल, कमल ।
मसाण (श्मशान) = श्मशान, मसान ।
अहिन्नाण (अभिज्ञान) = अभिज्ञान, निशानी, वह चिन्ह जिसे देखकर पूर्व की घटना का स्मरण होता, स्मृति-चिन्ह ।
चम्म (चर्मन्) = चमड़ा, चाम ।
पुट्ठय (पृष्ठक) = पीठ अथवा पूठा ।

स्त्रीलिंग

गोट्ठी (गोष्ठी) = गोष्ठी ।
विट्ठि, वेट्ठि (विष्टि) = बेगार उतारना, अभिरुचि से काम न करना ।

धत्ती (धात्री) = धात्री, धाय ।

किवा (कृपा) = कृपा ।

घिणा (घृणा) = घृणा ।

सामा (श्यामा) = श्यामा नायिका, युवती स्त्री ।

गोरी (गौरी) = गौरी, पार्वती, गोरी स्त्री ।

रेखा, रेहा, लेहा (रेखा) = रेखा—लकीर ।

किया (क्रिया) = क्रिया—विधि-विधान ।

किसरा (कृसरा) = खिचड़ी ।

समिद्धि (समृद्धि) = समृद्धि ।

विशेषण

मुत्त (मुक्त) = मुक्त, स्वतन्त्र, बंधनहीन ।

सत्त (शक्त) = शक्त, समर्थ, शक्तिमान् ।

भुत्त (भुक्त) = भुक्त—उपभुक्त ।

नग्ग (नग्न) = नग्न, नंगा ।

निठुर (निष्ठुर) = निष्ठुर, कठोर, निर्दयी ।

छट्ठ (षष्ठ) = छठा ।

सत्त (सक्त) = सक्त, आसक्त ।

किलिन्न (क्लृन्न) = भीगा हुआ, आर्द्र ।

निच्चल (निश्चल) = निश्चल ।

गुत्त (गुप्त) = गुप्त, सुरक्षित ।

सुत्त (सुप्त) = सोया हुआ ।

मुद्ध (मुग्ध) = मुग्ध ।

वाक्य (हिन्दी)

दुर्जन पुरुष स्त्री को भ्रष्ट करवाता है ।

माता ने बालक को स्नान करवाया ।

नौकर बच्चों को खेलायेंगे।
बढ़ई लकड़ी को छीलते तो चिकनी होती।
राजा ने घी खरीदवाया।
गोपाल पशु को पानी पिलाए।
भाई बहिन को ससुराल भेजता है।
माता पुत्री के लिए आभूषण गढ़वायेगी।
वह अच्छे-अच्छे कार्यों से कीर्ति फैलाता है।
सेठ चौमासा (चतुर्मास) के पहले घर को साफ करवायेंगे।

वाक्य (प्राकृत)

सेट्ठी सरीरम्मि तेल्ल चोप्पडावइ।
निवो कुमारं हत्थिम्मि चडाविहिइ।
भिच्चो भिक्खूणं दाण अल्लिवावसी।
इत्थीओ वेज्जस्स सरीर देक्खावंति।
माया पुत्त मिट्ठ किसर अण्हावेहिइ।
णणदा पुत्ति उधावंती[1] तया पुत्ती न रुवंती।
विज्जत्थी अज्ज विज्जत्थि विहाणम्मि उट्ठावेइ।
गुरू सीस पणामावइ।
महावीरो गोयम सरावइ।
गोयमो लोगे धम्म सुणावइ।

●

---

१. क्रियातिपत्ति का स्त्रीलिङ्गी रूप है।

वीसहाँ पाठ

भावे तथा कर्मणि-प्रयोग के प्रत्यय*—

ईअ, ईय, इज्ज (य)—(देखिए हे० प्रा० व्या० ८।३।१६०)।

---

* पालिभाषा में भावे तथा कर्मणि प्रयोग के प्रत्यय इस प्रकार हैं—

य, इय, ईय।

इन प्रत्ययों के लगने के बाद 'ति' 'ते' आदि पुरुषबोधक प्रत्यय लगाने से निम्नोक्त रूप बनते हैं। 'य' लगाने के बाद अक्षरपरिवर्तन के नियमानुसार 'य' का लोप होता है और शेष व्यंजन का द्विर्भाव होता है।

तुस्—तुस्यते—तुस्सते, तुसियति

पुच्छ्—पुच्छ्यते—पुच्छते, पुच्छियति

मह्—महीयति

मथ्—मथीयति—देखिए पा० प्र० पृ० २३४।

पैशाची भाषा में कर्म में तथा भाव में 'इय्य' प्रत्यय लगता है।

—देखिए हे० प्रा० व्या० ८।४।३१५।

गा + इय्य + ते = गिय्यते (गीयते)।

दा + इय्य + ते = दिय्यते (दीयते)।

रम् + इय्य + ते = रमिय्यते (रम्यते)।

पठ् + इय्य + ते = पठिय्यते (पठ्यते)।

मात्र 'कृ' धातु को 'ईर' प्रत्यय लगता है—

कृ + ईर + ते = कीरते।

कृ + ईर + माणो = कीरमाणो।

—देखिए हे० प्रा० व्या० ८।४।३१६।

किसी भी धातु का भावप्रधान अथवा कर्म-प्रधान अंग बनाना हो तो उसके साथ *'ईअ', 'ईय'* और *'इज्ज'* इन तीन प्रत्ययों में से कोई एक प्रत्यय लगाना चाहिए।

ये तीनों प्रत्यय केवल वर्तमानकाल, विध्यर्थ, आज्ञार्थ और ह्यस्तन-भूतकाल में ही प्रयुक्त हो सकते हैं। अत भविष्यत्काल तथा क्रियातिपत्ति आदि अर्थ में भावे और कर्मणि प्रयोग, कर्तरि-प्रयोग की भाँति ही समझने चाहिए।

भाव—याने क्रिया, जो प्रयोग मुख्यत क्रिया को ही बताता है वह भावेप्रयोग होता है।

भावेप्रयोग अकर्मक धातुओं से बनता है। हिन्दी व्याकरण में 'रोना, पैदा होना, सोना, ऊंघना, लज्जित होना' आदि धातुएँ ही अकर्मक रूप से प्रसिद्ध हैं। जबकि यहाँ जिस धातु के प्रयोग में कर्म न हो अथवा अध्याहार *में कर्म हो, वह सकर्मक धातु भी अकर्मक माना जाता है।* इसीलिए खाना, पीना देखना, गढना, करना आदि सकर्मक धातुएँ भी कर्म की अविवक्षा की अपेक्षा से अकर्मक रूप से प्रयुक्त होते हैं। इन दोनों प्रकार के अकर्मक धातुओं का भावेप्रयोग होता है।

जिसे कर्ता क्रिया द्वारा विशेष रूप से चाहता है वह कर्म—छोटी-बडी सभी क्रियाओं का फल। जो प्रयोग कर्म को ही सूचित करता है वह कर्मणि-प्रयोग कहलाता है।

भावे और कर्मणि प्रयोग के अंग—

भावसूचक अंग

बोह्—बोहीअ, बोहिज्ज	*सा—साईअ, साइज्ज*
उंघ्—उंघीअ, उंघिज्ज	*लज्ज—लज्जीअ, लज्जिज्ज*
कह्—कहीअ, कहिज्ज	*बुड्ड—बुड्डीअ, बुड्डिज्ज*
बोल्ल—बोल्लीअ, बोल्लिज्ज	*हो—होईअ, होइज्ज।*

कर्मसूचक अंग

पा—पाईअ, पाइज्ज ।
दा—दाईअ, दाइज्ज ।
झा—झाईअ, झाइज्ज ।
ला—लाईय, लाइज्ज ।
पढ्—पढीय, पढिज्ज ।
कड्ढ—कड्ढीअ, कढ्ढिज्ज ।
घड्—घडीय, घडिज्ज ।
खा—खाइय, खाइज्ज ।
कह्—कहीय, कहिज्ज ।
बोल्ल्—बोलीय, बोल्लिज्ज ।

इस प्रकार धातुमात्र के भाववाची और कर्मवाची अंग बना लेने चाहिए और तैयार हुए इस अंग में वर्तमान आदि कालवाचक तथा पुरुष-बोधक प्रत्यय लगाकर उसके रूप सिद्ध कर लें ।

वर्तमानकालिक

भावप्रधान (उदाहरण)

बीहीअइ, बीहिज्जइ (भीयते) ।
बीह् + ईअ + इ = बीही-अइ, एइ, अए, एए ।
बीह् + इज्ज + इ = बीही,-ज्जइ, ज्जेइ, ज्जए, ज्जेए ।
बीहीएज्ज, बीहीएज्जा } सर्वपुरुष-सर्ववचन में ।
बीहिज्जेज्ज, बीहिज्जेज्जा }

भावप्रधान प्रयोगों में भाव—क्रिया ही मुख्य होती है । प्रथम अथवा द्वितीय पुरुष का प्रयोग इसमें सम्भव नहीं है । इसी प्रकार दो-तीन अथवा इससे अधिक संख्या का प्रयोग भी इसमें नहीं होता । अतः साधारणतः भावेप्रयोग तीसरे पुरुष के एकवचन द्वारा व्यवहार में आता है ।

कर्मप्रधान

भणीयइ, भणिज्जइ गंथो (भण्यते ग्रन्थः) ।
भण् + ईअ + इ = भणी-अइ, एइ, अए, एए ।
भण् + इज्ज + इ = भणि-ज्जइ, ज्जए, ज्जेए ।

मणीयन्ति गया (भण्यन्ते ग्रन्थाः)

मणिज्जन्ति ।

मण् + ईय + न्ति = मणी-यन्ति, येंति, यन्ते, येंत, यइरे, येइरे

मण् + इज्ज + न्ति=मणि-ज्जन्ति, ज्जेंन्ति, -ज्जन्ते, ज्जेंते, ज्जइरे, ज्जेइरे ।

सर्वपुरुष } मणीएज्ज, मणिज्जेज्ज।
सर्ववचन }

पुच्छीयसि तुम (पृच्छयसे त्वम्) ।

पुच्छिज्जसि

पुच्छ् + ईय + सि = पुच्छी-यसि, येसि, यसे, येसे ।

पुच्छ् + इज्ज + सि=पुच्छि-ज्जसि, ज्जेसि, ज्जसे ।

पुच्छीयामि । पुच्छिज्जामि अह (पृच्छये अहम्) ।

पुच्छ् + ईय + मि = पुच्छी-यमि, यामि, येमि ।

पुच्छ + इज्ज + मि = पुच्छि-ज्जमि, ज्जामि, ज्जेमि ।

सर्वपुरुष } पुच्छीयेज्ज, पुच्छीयेज्जा
सर्ववचन } पुच्छिज्जेज्ज, पुच्छिज्जेज्जा ।

आज्ञार्थ

पुच्छी-यउ, येउ, पुच्छि-ज्जउ, ज्जेउ ।

पुच्छी-यंतु, येंतु, पुच्छि-ज्जंतु, ज्जेंतु ।

विध्यर्थ

पुच्छ् + ईय = पुच्छीयिज्जामि, पुच्छीयेज्जामि (अह पृच्छयेय) ।

पुच्छीयिज्जामो, पुच्छीयेज्जामो (वय पृच्छयेमहि) ।

ह्यस्तनभूतकाल

मण्—मणीअसी, मणीअही, मणीअहीअ, मणीयइत्था, मणीयइत्थ, मणीइसु, मणीअंसु, मणिज्जसी, मणिज्जही, मणिज्जहीअ, मणिज्जइत्था, मणिज्जइत्थ, मणिंज्जिसु, मणिज्जंसु ।

अद्यतनभूतकाल

भणीअ, भणित्था, भणित्थ, भणिसु, भणंसु ।

भविष्यत्काल

भणिस्सं, भणेस्सं, भणिस्सामि, भणेस्सामि, भणिहामि, भणेहामि, भणिहिमि, भणेहिमि आदि सभी रूप कर्तरिवाच्य के समान समझें (देखो पाठ १३) ।

क्रियातिपत्ति

भणंतो, भणमाणो, भणेज्ज, भणेज्जा (पुंलिग) ।

भणंती, भणमाणी (स्त्रीलिंग) ।

भणंता, भणमाणा (,,) ।

प्रेरक भावेप्रयोग और कर्मणिप्रयोग—

१. धातु का प्रेरक भावे अथवा कर्मणिप्रयोगी रूप बनाना हो तो मूलधातु के प्रेरणासूचक एकमात्र 'आवि' प्रत्यय लगाकर उस अंग में भावे और कर्मणि प्रयोग के सूचक उक्त ईअ, ईय, अथवा इज्ज प्रत्यय पूर्वोक्त प्रक्रिया के अनुसार लगा लेने चाहिए ।

अथवा

२. प्रेरणासूचक कोई भी प्रत्यय न लगाकर केवल मूलधातु के उपान्त्य 'अ' को 'आ' करके उसके पीछे उक्त ईअ, ईय अथवा इज्ज प्रत्यय पूर्व की भाँति लगा लें । इस प्रकार भी प्रेरक भावे और प्रेरक कर्मणि-प्रयोग के रूप बन सकते है । इसके सिवाय अन्य किसी भी रीति से प्रेरकभावे अथवा प्रेरककर्मणि प्रयोग के अंग नहीं बन सकते ।

'कर्' अंग के रूप

करावीअइ (काराप्यते) ।

कर् + आवि = करावि + ईअ = करावीअ, करावी-अइ, अए, असि, असे इत्यादि ।

कर्—कार + ईअ = कारीअ–कारी-अइ, अए (कार्यते) ।
कारी-असि, कारी-असे (कार्यसे) ।

कर् + आवि = करावि + इज्ज = कराविज्ज–ज्जइ, ज्जए (काराप्यते)।

कर् + कार—इज्ज = कारिज्ज–कारि–ज्जइ, ज्जए (कार्यते) ।
कारि–ज्जसि, ज्जसे (कार्यसे) ।

इस प्रकार धातुमात्र से प्रेरकभावे और प्रेरककर्मणि के अंग बनाकर सर्वकाल के रूप उक्त प्रक्रिया से तैयार कर लेने चाहिए ।

भविष्यत्काल

कराविहिइ, कराविहिए, करावित्सते (कारापयिष्यते)
(देखिए पाठ तेरहवाँ)

कराविहिसि, कराविहिसे (कारापयिष्यसे)

करावित्सामि, कराविहामि, करावित्स (कारापयिष्ये)

कारिस्सते, कारिहिए (कारयिष्यते) इत्यादि ।

कुछ अनियमित अंग तथा उसके रूप (उदाहरण)

मूलधातु—भा० क० का अंग ।

दरिस्—दीस्[1]—दीसइ (दृश्यते), दीसउ, दीससी, दीसिज्जइ, दीसिज्जउ ।

वच्—वुच्च–वुच्चइ (उच्यते), वुच्चउ, वुच्चसी, वुच्चिज्जइ, वुच्चिज्जउ ।

चिण्—{ चिम्व[2]–चिव्वइ (चीयते), प्रे० चिव्वाविइ, चिव्वाविहिइ, चिम्म–चिम्मइ, प्रे० चिम्माविइ, चिम्माविहिइ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१६१ । दीस और वुच्च ये दोनों अंग केवल वर्तमान, विध्यर्थ, आज्ञार्थ और ह्यस्तनभूत में ही प्रयुक्त होते हैं ।

२. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४२–२४३ । चिव्व से लेकर वुव्व पर्यंत के *अंग सह्यभेद के सिवाय कहीं भी प्रयुक्त नहीं होते ।*

हण्[1]—हम्म–हम्मइ (हन्यते), हम्माविइ, हम्माविहिइ ।

खण्—खम्म–खम्मए (खन्यते), खम्माविइ, खम्माविहिइ ।

दुह्[2]—दुब्भ–दुब्भते (दुह्यते), दुब्भाविइ, दुब्भाविहिइ ।

लिह्[2]—लिब्भ–लिब्भए (लिह्यते), लिब्भाविइ, लिब्भाविहिइ ।

वह्[2]—वुब्भ–वुब्भए (उह्यते), वुब्भाविइ, वुब्भाविहिइ ।

रुंभ्[2]—रुब्भ–रुब्भए (रुध्यते), रुब्भाविइ, रुब्भाविहिइ ।

डह्[3]—डज्झ–डज्झए (दह्यते), डज्झाविइ, डज्झाविहिइ ।

वंध्[4]—वज्झ–वज्झए (बध्यते), वज्झाविइ, वज्झाविहिइ ।

सं[5] + रुध्—संरुज्झ–संरुज्झए (संरुध्यते), संरुज्झाविइ, संरुज्झाविहिइ ।

अणु + रुध्—अणुरुज्झ–अणुरुज्झए (अनुरुध्यते), अणुरुज्झाविइ, अणुरुज्झाविहिइ ।

उव + रुध्—उवरुज्झ–उवरुज्झए (उपरुध्यते), उवरुज्झाविइ, उवरुज्झाविहिइ ।

गम्[6]—गम्म–गम्मए (गम्यते), गम्माविइ, गम्माविहिइ ।

हस्—हस्स–हस्सते (हस्यते), हस्साविइ, हस्साविहिइ ।

भण्—भण्ण–भण्णते (भण्यते), भण्णाविइ, भण्णाविहिइ ।

छुप्, छुव्—छुप्प–छुप्पते (छुप्यते=स्पृश्यते), छुप्पाविइ, छुप्पाविहिइ ।

रुव्—रुव्व–रुव्वए (रुद्यते), रुव्वाविइ, रुव्वाविहिइ ।

लभ्—लब्भ–लब्भए (लभ्यते), लब्भाविइ, लब्भाविहिइ ।

कथ्—कत्थ–कत्थते (कथ्यते), कत्थाविइ, कत्थाविहिइ ।

भुंज्—भुज्ज–भुज्जते (भुज्यते), भुज्जाविइ, भुज्जाविहिइ ।

हर्[7]—हीर–हीरते (ह्रियते), हीराविइ, हीराविहिइ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४४। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४५।

३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४६। ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४७।

५. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४८। ६. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४९।

७. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५०।

तर्—तीर्–तीरते (तीर्यते) तीराविइ, तीराविहिइ ।
कर्—कीर्–कीरते (क्रियते) कीराविइ, कीराविहिइ ।
जर्—जीर्–जीरते (जीर्यते) जीराविइ, जीराविहिइ ।
अज्ज्[1]—विढप्प–विढप्पते (अज्यते) विढप्पाविइ, विढप्पाविहिइ ।
जाण्[2]—णज्ज—णज्जत (ज्ञायते) णज्जाविइ, णज्जाविहिइ ।
णव्व —(णव्वते) णव्वाविइ, णव्वाविहिइ ।
[3]वि + आ + हर्—वाहर्—वाहिप्पते (व्याह्रियते) वाहिप्पाविइ, वाहिप्पाविहिइ ।
गह्[4]—घेप्प–घेप्पते (गृह्यते) घेप्पाविइ, घेप्पाविहिइ ।
छिव्[5]—छिप्प–छिप्पते (स्पृश्यते) छिप्पाविइ, छिप्पाविहिइ ।
सिच्[6]—सिप्प–सिप्पते (सिच्यते) सिप्पाविइ, सिप्पाविहिइ ।
निह्—„ „ (स्निह्यते)
जिण्[8]—जिव्व–जिव्वते (जीयते) जिव्वाविइ, जिव्वाविहिइ ।
सुण्—सुव्व–सुव्वते (श्रूयते) सुव्वाविइ, सुव्वाविहिइ ।
हुण्—हुव्व–हुव्वते (हूयते) हुव्वाविइ, हुव्वाविहिइ ।
थुण्—थुव्व–थुव्वते (स्तूयते) थुव्वाविइ, थुव्वाविहिइ ।
लुण्—लुव्व–लुव्वते (लूयते) लुव्वाविइ, लुव्वाविहिइ ।
धुण्—धुव्व–धुव्वते (धूयते) धुव्वाविइ, धुव्वाविहिइ ।
पुण्—पुव्व–पुव्वते (पूयते) पुव्वाविइ, पुव्वाविहिइ ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५१ । 'विढप्प' यह अंग 'अर्ज' धातु के अर्थ में प्रयुक्त होता है लेकिन उसका मूलस्वरूप 'अज' में नहीं, 'अज्'—'अज्ज' और विढप्प में परस्पर कोई समानता नहीं उपलब्ध होती ।
२. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५२ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५३ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।४।२५६ । ५ हे० प्रा० व्या० ८।४।२५७। ६ हे० प्रा० व्या० ८।४।२५५ । ७ हे० प्रा० व्या० ८।४।२५४ । ८. हे० प्रा० व्या० ८।४।२४२ ।

*स्त्रीलिङ्ग सर्वादि शब्द

'सव्वी' 'सव्वा' 'ती' 'ता' 'जी' 'जा' 'की' 'का' 'इमी' 'इमा' 'एई' 'एआ' और 'अमु' इत्यादि स्त्रीलिंगी सर्वादि शब्दों के रूप 'माला', 'नदी' (? धेणु) की भाँति होते हैं।

विशेषता यह है।

ती, ता
णी, णा } (तत् का स्त्री० ता) शब्द के रूप

प्र० सा (सा) तीआ, तीउ, तीओ, ती।
ताउ, ताओ, ता (ताः)

द्वि० तं (ताम्) तीआ, तीउ, तीओ, ती
णं ताउ, ताओ, ता (ताः)

तृ० तीअ, तीआ[1] तीई, तीए, तीहि, तीहिं, तीहिँ।
ताअ, ताई, ताए, (तया) ताहि, ताहिं, ताहिँ।

च०
प० } से[2] सि[3]
तास, तिस्सा, तीसे
(तस्यै, तस्याः)
तीअ, तीआ, तीइ, तीए तेसिं (तासाम्)
ताअ, ताइ, ताए ताण, ताणं (तानाम् ?)

स० ताहि[4] (तस्याम्) तासु, तासुं (तासु)
तीअ, तीआ, तीइ, तीए।
ताअ, ताइ, ताए।

'णी' और 'णा' के रूप भी 'ती' और 'ता' के समान ही होते हैं।

---

* स्त्रीलिंगी 'सर्व' आदि शब्दों के पालिरूप के लिए देखिए पा० प्र० पृ० १४०, १४३, १४५, १४७, १५० वगैरह।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।२९। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।६२।६४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।३।८१। ४. हे० प्रा० व्या० ८।३।६०।

जो, जा (यत् का स्त्री० या) शब्द के रूप

प्र० जा (या) जोआ, जोउ, जोओ, जो ।

जाउ, जाओ, जा (याः)

द्वि० जं (याम्) ,, ,, ,, (,,)

च० } जास, जिस्सा, जीसे जाण, जाणं (यासाम्)
ष० } (यस्यै, यस्याः) (यासाम् ?)

जीअ, जोआ, जीइ, जीए ।

जाअ, जाइ, जाए ।

स० जाहि (यस्याम्) जासु (यासु)

जीअ, जोआ, जीइ, जीए, जासुं

जाअ, जाइ, जाए ।

की, का (किम् का स्त्री० का) शब्द के रूप

प्र० का (का) कीआ, कीउ, कीओ, की ।

काउ, काओ, का (काः)

द्वि० कं (काम्) ,, ,, ,, (,,)

च० } किस्सा, कीसे, कास
ष० } (कस्यै, कस्याः) काण, काणं (काभ्यः, कासाम्)

कीअ, कीआ, कीइ, कीए ।

काअ, काइ, काए ।

स० काहि कीसु, कीसुं

कीअ, कीआ, कीइ, कीए कासु, कासुं (कासु)

काअ, काइ, काए (कस्याम्)

अमु (अदस्) शब्द के रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	अह[1], अमू	अमुउ, अमूओ, अमू (अमूः)

शेष रूप 'धेणु' की भाँति होंगे।

सामान्य शब्द

केवट्ट (कैवर्त) = केवट, खेवट, नौका चलानेवाला।
जट्ट (जर्त)) = एक जाति, जाट, कृषक, किसान जाति के लोग।
धुत्त (धूर्त) = धूर्त, शठ, वंचक।
मुहुत्त (मुहूर्त) = मुहूर्त।
सज्झ (सह्य) = सह्याद्रि, एक पर्वत विशेष।
गुज्झ (गुह्य) = गुह्यक—यक्ष, गुह्य—गुप्त, गूढ।
सव्वज्ज (सर्वज्ञ) = सर्वज्ञ, सब को जाननेवाला।
देवज्ज (दैवज्ञ) = दैव—भाग्य को जाननेवाला।
किलेस (क्लेश) = क्लेश, कलह।
पिलोस (प्लोष) = प्लोष—दाह, दहन।
कलाव (कलाप) = कलाप—समूह।
साव (शाप) = श्राप, शाप।
सवह (शपथ) = शपथ, सौगन्ध।
पल्हाअ (प्रह्लाद) = 'प्रह्लाद' नामक एक राजकुमार।
आल्हाअ, आल्हाद (आह्लाद) = आह्लाद, आनन्द।
पज्ज (प्राज्ञ) = प्राज्ञ, बुद्धिमान्।
सिलोग, सिलोअ (श्लोक) = श्लोक, कीर्ति।
सिलिम्ह (श्लेष्मन्) = श्लेष्म, कफ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।८७।८८।८९।

कासव (काश्यप) = कश्यप गोत्र का ऋषि-ऋषभदेव अथवा महावीर स्वामी।

कविल (कपिल) = कपिल ऋषि।

वाक्य (हिन्दी)

केवट से सरोवर तिरा जाता है।

पिता द्वारा प्रह्लाद बांधा जाता है।

कश्यप द्वारा चण्डाल स्पर्श किया जाता है।

राजा द्वारा कीर्ति इकट्ठी की जाती है।

कपिल द्वारा तत्त्व कहा जाता है।

ऋषभदेव द्वारा धर्म कहा जाता है।

सर्वज्ञ द्वारा क्लेश जीते जाते हैं।

उसके द्वारा शास्त्र सुनाया जाता है।

जिसके द्वारा बकरा होमा जाता है उसके द्वारा धर्म नही जाना जाता।

वाक्य (प्राकृत)

निवेण सत्तुणो जिव्वंति।

गोवालेण गउओ दुब्भते।

भारवहेहि भारो वुब्भए।

दायारेण दाणेण पुण्णाइ लब्भंते।

मुणिणा संजमो घप्पते।

मालाआरेण जलेण उज्जाणाणि सिप्पंते।

कसिवलेण तणाइं लूव्वंति।

सोयारेहि मत्थयाइं धुव्वंते।

वद्धमाणेण मम घरं पुव्वते।

वालेण गामो गम्मइ।

वालेहि हस्सइ।

इक्कीसवाँ पाठ

व्यञ्जनान्त शब्द

प्राकृत में रूपाख्यान के समय कोई भी शब्द व्यञ्जनान्त नहीं रहता। अतः सभी के रूप स्वरान्त की भाँति समझने चाहिए। 'अत्' और 'अन्' अन्त वाले नामों (शब्दों) के रूप में जो विशेषता है वह इस प्रकार है:—

नाम के अन्त में वर्तमान कृदन्त-सूचक 'अत्'[1] प्रत्यय के स्थान में 'अंत' तथा मत्वर्थीय 'मत्' प्रत्यय के स्थान में 'मंत'[2] अथवा 'वंत'[2] का व्यवहार होता है।

अत्—भवत्—भवंत।

गच्छत्—गच्छंत।

नयत्—नयंत, नेंत।

गमिष्यत्—गमिस्संत।

भविष्यत्—भविस्संत।

मत्—भगवत्—भगवंत।

गुणवत्—गुणवंत।

धनवत्—धणवंत।

ज्ञानवत्—णाणवंत, नाणवंत।

नीतिमत्—नीइमंत, णीइमंत।

ऋद्धिमत्—रिद्धिमंत।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१८१। २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५९।

'अन्त' प्रत्ययान्त नामों के सभी रूप अकारान्त नाम (शब्द) की भाँति होते हैं :—

भगवंतो, भगवंतं, भगवंतेण इत्यादि रूप 'वीर' की भाँति समझने चाहिए।

'अत्' प्रत्ययान्त नामों के कुछ अनियमित रूप

भगवत्

प्र० ए० भगवं[1] (भगवान्)
प्र० व० भगवंतो (भगवन्तः)
तृ० ए० भगवता, भगवया (भगवता)
प० ए० भगवतो, भगवओ (भगवतः)
सं० ए० भगवं[2] !, भयवं !, भयव ! (हे भगवन् !)

भवत्

प्र० ए० भवं[3] (भवान्)
प्र० व० भवंतो (भवन्तः)
द्वि० ए० भवंतं (भवन्तम्)
द्वि० व० भवतो, भवओ (भवतः)
तृ० ए० भवता, भवया (भवता)
प० व० भवतो (भवतः), भवओ (,,)
प० व० भवयाण (भवताम्)

'अन्' प्रत्ययान्त नामों के 'अन्' को विकल्प से 'आण' होता है (हे० प्रा० व्या० ८।३।५६।) । जैसे—

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५ । २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६४।
३. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६५ ।

अध्वन्—[अध्द् + अन् = अद्ध + आण = अद्धाण] अद्धाण अद्ध।

आत्मन्—अप्पाण, अप्प अत्ताण, अत्त।

उक्षन्—उच्छाण उच्छ उक्खाण उक्ख।

ग्रावन्—गावाण, गाव।

युवन्—जुवाण, जुव।

तक्षन्—तच्छाण, तच्छ तक्खाण तक्ख।

पूषन्—पूसाण, पूस।

ब्रह्मन्—बम्हाण, बम्ह।

मघवन्—मघवाण, मघव।

मूर्धन्—मुद्धाण, मुद्ध।

राजन्—रायाण, राय।

श्वन्—साण, स।

सुकर्मन्—सुकम्माण, सुकम्म।

इन सब नामों के रूप अकारान्त नाम की भाँति बना लेना चाहिए —

अद्धाणो, अद्धाण, अद्धाणण।

अद्धो, अद्ध, अद्धेण।

साणो, साण, साणण।

सो, स, सेण।

रायाणो, रायाण, रायाणण।

रायो, राय, रायण इत्यादि।

जब नाम (शब्द) के अन्तिम 'अन्' को 'आण' नहीं होता तब उनके कुछ अन्य रूप भी बनते हैं।

*'राय' (राजन्) शब्द के रूप

	एकव०	बहुव०
प्र०	÷राया[1] (राजा)	राइणो[2], रायाणो[3] (राजानः)
द्वि०	राइणं[4] (राजानं)	,, ,, रण्णो[5] (राज्ञः)

* पालि भाषा में राजन् वगैरह शब्दों के रूप थोड़े भिन्न होते हैं। जैसे—प्राकृत में 'राय' शब्द है वैसे पालि में 'राज' शब्द है। पालि में 'राज' शब्द के रूप अकारान्त के समान होते हैं।

राजा	राजानो
राजानं, राजं	राजानो
राजेन	राजेभि, राजेहि इत्यादि।

प्राकृत में जहाँ 'रण्णा' जैसे दो णकारवाले रूप होते हैं वहाँ पालि में रञ्ञा, रञ्ञो ऐसे दो 'ञ्ञ' कार वाले रूप होंगे और प्राकृत में जहाँ राइणा, राइणो इत्यादिक 'इ' कार वाले रूप होते है वहाँ पालि में राजिना, राजिनो इत्यादि रूप बनेंगे और तृ० बहु० राजूभि तथा च०-प० बहुवचन में राजूनं, रञ्ञं सप्तमी के एकवचन में राजिनि, बहुव० में राजुसु इत्यादिक रूप होते हैं (देखिए पा० प्र० पृ० १२३)।

पालि में अत्त, अत्तन, अत्तान (आत्मन्) के रूप अकारान्त 'बुद्ध' के समान होते हैं। विशेषता यह है कि द्वि० व० अत्तानो, तृ० ए० अत्तना, च०-प० ए० अत्तनो, च०-प० व० अत्तानं, स० ए० अत्तनि ऐसे रूप भी होते है।

ब्रह्म, ब्रह्मु (ब्रह्मन्) के रूप :—

प्र० ब्रह्मा, ब्रह्मानो

द्वि० ब्रह्मानं ,,

तृ० ब्रह्मुना इत्यादि होते है।

पालि में 'ब्रह्मु' के रूप उकारान्त की तरह होंगे।

तृ०	राइणा[३], रण्णा (राज्ञा)	राईहि[७], राईहिं, राईहिँ (राजभि)
च०	राइणो[८], रण्णो + (राज्ञ)	राईण[१], राईणं, राइण[१] (राज्ञाम्)
प०	राइणो[८], रण्णो (राज्ञ)	राइत्तो[१०], राईतो, राईओ राईउ (राजत) राईहि, राईहिंतो (राजभ्य)
ष०	राइणो, रण्णो (राज्ञ)	राईण[१], राईणं, (राज्ञाम्) राइण[१]

अद्ध, अद्धु (अध्वन्) के रूप पालि में ब्रह्म, ब्रह्मु की तरह समझें।

इसी प्रकार युवान, युव (युवन्), स, सान (श्वन्) के रूपों के लिए पा० प्र० पृ० १२५ से १२७ तक देख लें और पुम, पुमु (पुमन्) के रूप के लिए भी देखिए पा० प्र० पृ० १३०–१३१।

— मागधी में 'लाया', 'लाइणो', 'लायाणो' इत्यादि रूप होंगे।

+ पैशाची में 'रण्णा' के स्थान में 'राचिञा', 'रण्णो' के स्थान में राचिञो' रूप भी होता है (हे० प्रा० व्या० ८।४।३०४) और प्राकृत में जहाँ 'ण्ण'—दो ण कारयुक्त रूप है वहाँ पैशाची में 'ञ्ञ'—दो ञकार युक्त रूप होता है (हे० प्रा० व्या० ८।४।३०३)।

१ हे० प्रा० व्या० ८।३।४६। २. हे० प्रा० व्या० ८।३।५०।५२। ३. हे० प्रा० व्या० ८।३।५०। ४ हे० प्रा० व्या० ८।३।५३। ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।४२। तथा ८।१।३७। यह 'रण्णो' रूप 'राज' शब्द से सिद्ध करना। ६ हे० प्रा० व्या० ८।३।५१।५२ तथा ५५। ७ हे० प्रा० व्या० ८।३।५४। ८. हे० प्रा० व्या० ८।३।५०।५२ तथा ५५। ९ हे० प्रा० व्या० ८।३।५४। तथा ५३। १० हे० प्रा० व्या० ८।३।५४।

स०	राइंसि[11], राइम्मि (राज्ञि)	राइसु[12], राईसुं (राजसु)
सं०	हे राया ! (हे राजन् !)	राइणो, रायाणो (राजानः)

अत्त अथवा अप्प (आत्मन्=आत्मा) शब्द के रूप

प्र०	अप्पा[13], अत्ता (आत्मा)	अप्पाणो (आत्मानः)
द्वि०	अप्पिणं[14], अत्ताणं (आत्मानम्)	,, (,,)
तृ०	अप्पणिआ[15], अप्पणइआ अप्पणा, (आत्मना) अत्तणा	अप्पेहि, अप्पेहिँ, अप्पेहिं (आत्मभिः)
च० } प० }	अप्पाणो (आत्मनः) अत्तणो	अप्पिणं (आत्मनाम्)
पं०	अप्पाणो (आत्मनः)	अप्पत्तो, अप्पतो (आत्मतः)

इत्यादि ।

'पूस' (पूषन्=इन्द्र, सूर्य) शब्द के रूप

प्र०	पूसा (पूषा)	पूसाणो (पूषणः)
द्वि०	पूसिणं (पूषणं)	,, (पूष्णः)
तृ०	पूसणा (पूष्णा)	पूसहि, पूसहिँ, पूसहिं (पूषभिः)
च० } प० }	पूसाणो (पूष्णः)	पूसिणं (पूष्णाम्)
पं०	,, ,,	पूसत्तो, पूसतो (पूषतः)

इत्यादि ।

---

११. हे० प्रा० व्या० ८।३।५२ । १२. हे० प्रा० व्या० ८।३।५४ ।
१३. हे० प्रा० व्या० ८।३।४९ । १४. हे० प्रा० व्या० ८।३।५३ ।
१५. हे० प्रा० व्या० ८।३।५७ ।

मघव, महव (मघवन्) शब्द के रूप

प्र० मघव[1], मघवा (मघवा) मघवाणो (मघवन्त)
इत्यादि 'पूसा' की भाँति ।

रूप की प्रक्रिया

प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	+	णो
द्वि०	इण	
तृ०	णा	
च० } प० }	णो	इण
ष०	णो	
स०	+	णो

+ इस चिह्न वाले अर्थात् प्रथमा और सम्बोधन के एकवचन में राय, पूस, मघव, आदि नामो के अन्त्य स्वर को दीर्घ होता है —

राय = राया, मघव = मघवा, पूस = पूसा ।

'णा' प्रत्यय को छोड 'ण'कारादि प्रत्यय पर रहने पर पूस आदि शब्दो के अन्त्य स्वर को दीर्घ होता है —

पूस + णो = पूसाणो, राय + णो = रायाणो।

अपवाद

प्रथमा और सम्बोधन के सिवाय णकारादि प्रत्यय परे रहने पर 'राय के स्थान में 'राइ' और 'रण्' का उपयोग होता है । जैसे—

राय + णा = राइणा, रण्णा ।

राय + णो = राइणो, रण्णो ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।४।२६४ ।

प्रथमा और सम्बोधन के बहुवचन में 'णो' प्रत्यय लगने पर 'राय' के स्थान में केवल 'राइ' का ही उपयोग होता है।

'इणं' प्रत्यय परे रहने पर 'राय' के 'य' कार का लोप हो जाता है। जैसे—

राय + इणं = राइणं (राजानम्)

राय + इणं = राइणं (राज्ञाम्)

संकेत :—राइ + ण = राईण, राईणं इन रूपों में 'इणं' प्रत्यय नहीं है बल्कि षष्ठी बहुवचन का 'ण' प्रत्यय है।

'अन्' प्रत्ययान्त किसी-किसी शब्द को तृतीया के एकवचन में 'उणा' और पञ्चमी तथा षष्ठी के एकवचन में 'उणो' प्रत्यय लगता है। जैसे :—

कम्म (कर्मन्)

कम्म + उणा = कम्मुणा (कर्मणः)।

कम्म + उणो = कम्मुणो (कर्मणः)।

कुछ अनियमित रूप

मणसा (मनसा)
मणसो (मनसः)
मणसि (मनसि)
मणसि (मनसि)
वयसा (वचसा)
सिरसा (शिरसा)
कायसा (कायेन)
कालधम्मुणा (कालधर्मेण)

*'तद्धित' प्रत्ययों का उदाहरण

१ *'उसका यह'—इस अर्थ में 'केर' प्रत्यय लगता है। जैसे—*

अम्ह + केर = अम्हकेर[1] (अस्माक इदम्—अस्मदीयम्)=हमारा।

तुम्ह + केर = तुम्हकेर (युष्माकम्-इदम्=युष्मदीयम्) = तुम्हारा।

पर + केर=परकेर (परस्य इदम्=परकीयम्) = पराया।

राय + केर = रायकेर (राज्ञ इदम् = राजकीयम्) = राजा का।

२. 'तत्र भव'—'उसमें होने वाला' अर्थ में 'इल्ल' और 'उल्ल' प्रत्ययों का उपयोग होता है। जैसे—

गाम + इल्ल = गामिल्ल[2] (ग्रामे भव) = ग्राम में होनेवाला।

घर + इल्ल = घरिल्ल (गृहे भव) = घरेलू, घर में होने वाला।

अप्प + उल्ल = अप्पुल्ल (आत्मनि भव) = आत्मा में होनेवाला।

नयर + उल्ल = नयरुल्ल (नगरे भव) = नगर में होनेवाला।

३ 'इव'—'उसके जैसा' अर्थ में 'व्व'[3] प्रत्यय का उपयोग होता है। यथा :—

महुर व्व पाडलिपुत्ते पासाया (मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादा)।

४. 'इमा'[4], 'त्त', 'त्तण' प्रत्यय 'भाव'* अर्थ का सूचक है। जैसे—

पीणा + इमा = पीणिमा (पीनिमा-पीनत्वम्)=पीनत्व, पीनता, मोटापा, मोटापन।

---

* पालि भाषा में तद्धित प्रत्ययों को समझ के लिए सकोर्णकल्प में आया हुआ 'तद्धित' का प्रकरण देखना चाहिए (देखिए पा० प्र० पृ० २५९-२६१)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४७। २ हे० प्रा० व्या० ८।२।१६३।
३ ८।२।१५०। ४ हे० प्रा० व्या० ८।२।१५४।

* 'भाव' अर्थ में पालि में भी 'त्तन' प्रत्यय होता है।

देव + त्त = देवत्तं (देवत्वम्) = देवपना, देवत्व ।

वाल + त्तण = वालत्तणं (वालत्वं) = बचपन, शिशुत्व, वालत्व ।

५. 'वार'* अर्थ को बताने के लिए 'हुत्तं'[1] और 'खुत्तो' प्रत्यय का उपयोग होता है। जैसे :—

एग + हुत्तं = एगहुत्तं (एककृत्वः–एकवारम्) = एक वार ।
ति + हुत्तं = तिहुत्तं (त्रिकृत्वः–त्रिवारम्) = तीन वार ।
ति + खुत्तो = तिखुत्तो / तिक्खुत्तो } (त्रिकृत्वः ,,) ,,

६. आल[2], आलु, इत्त, इर, इल्ल, उल्ल', मण, मंत और वंत आदि प्रत्यय 'वाले' अर्थ को प्रकट करते हैं। जैसे :—

आल—रस + आल = रसाल (रसवान्) = रसवाला ।
जटा + आल = जटाल (जटावान्) = जटाओं वाला ।
आलु—दया + आलु = दयालु (दयालुः) = दयालु, दयावाला ।
लज्जा + आलु = लज्जालु (लज्जालुः) = लज्जावाला ।
इत्त — मान + इत्त = माणइत्तो (मानवान्) = मानवान, मानवाला ।
इर — रेहा + इर = रेहिरो (रेखावान्) = रेखावान, रेखावाला ।
गव्व + इर = गव्विरो (गर्ववान्) = गर्ववान, गर्ववाला ।
इल्ल—सोभा + इल्ल = सोभिल्लो (शोभावान्) = शोभावान् ।

---

*'वार' अर्थ में 'क्खत्तु'' प्रत्यय होता है जैसे—द्विक्खत्तु—दो वार । आर्ष प्राकृत में 'हुत्तं' का प्रयोग कम दीखता है परन्तु 'क्खुत्तो' का प्रयोग अधिक होता है। जैसे—दुक्खुत्तो (दो वार), तिक्खुत्तो (तीन वार) ऐसे रूप होते हैं।

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५८ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५९ ।

उल्ल—सद्द + उल्ल = सद्दल्लो (शब्दवान्) = शब्दवान्, शब्दवाला ।
मण—धण + मण = धणमणो (धनवान्) = धनवान ।
सोहा + मण = सोहामणो (शोभावान्) = सुहावना, शोभावान् ।
बीहा + मण = बीहामणो (भयवान्) = भयावना, भय वाला ।
मत—धी + मत = धीमता (धीमान्) = धीमत, बुद्धिमान् ।
वत—भत्ति + वत = भत्तिवतो (भक्तिमान्) = भक्तिवत ।

७ 'त्तो'[1] प्रत्यय पञ्चमी विभक्ति को सूचित करता है ।

सव्व + त्तो = सव्वत्तो (सर्वत) = सब प्रकार से, सब ओर से ।
क + त्तो = कत्तो (कुत) = कहाँ से, किससे ।
ज + त्तो = जत्तो (यत) = जहाँ से, जिससे ।
त + त्तो = तत्तो (तत) = वहाँ से, उससे ।
इ + त्तो = इत्तो (इत) = यहाँ से, इससे ।

८ 'हि'[2], 'ह' और 'त्थ' प्रत्यय सप्तमी के अर्थ सूचित करते हैं । जैसे :—

ज + हि = जहि (यत्र) = यहाँ ।
ज + ह = जह ,, ,,
ज + त्थ = जत्थ (यत्र) ,,
त + हि = तहि (तत्र) = वहाँ ।
त + ह = तह ,, ,,
त + त्थ = तत्थ ,, ,,
क + हि = कहि (कुत्र) = कहाँ ।
क + ह = कह ,, ,,
क + त्थ = कत्थ (कुत्र) ,,

---

१. हे० प्रा० व्या ८।२।१६० । २ हे० प्रा० व्या० ८।२।१६१ ।

९. 'उसका तेल'[1]—इस अर्थ में 'एल्ल' (तेल[2]) प्रत्यय का प्रयोग होता है। जैसे :—

कडुअ + एल्ल = कडुएल्लं (कटुकस्य तैलम्–कटुकतैलं) = कडुवा तेल, सरसों का तेल।

दीव + एल्ल = दीवेल्लं (दीपस्य तैलम्–दीपतैलम्) = दीपक का तेल।

एरंड + एल्ल = एरंडेल्लं (एरण्डस्य तैलम्–एरण्ड तैलम्) = एरण्डी–का तेल।

धूप + एल्ल = धूपेल्लं (धूपस्य तैलम्–धूपतैलम्) =धूपयुक्त तेल।

१०. 'स्वार्थ'[3] अर्थ को सूचित करने के लिए 'अ', 'इल्ल' और 'उल्ल' प्रत्यय का व्यवहार विकल्प से होता है। जैसे :—

चन्द्र + अ = चन्द्रओ, चन्द्रो (चन्द्रकः) = चाँद, चन्द्रमा।

पल्लव + इल्ल = पल्लविल्लो, पल्लवो (पल्लवकः) = पल्ला, किनारा।

हत्थ + उल्ल = हत्थुल्लो, हत्थो (हस्तकः) = हाथ।

११. कुछ अनियमित तद्धित :—

एक्क[4] + सि = एक्कसि
एक्क + सिअं = एक्कसिअं
एक्क + इआ = एक्कइआ
} (एकदा) = एक समय।

भ्रू[5] + मया = भुमया
भ्रू + मया = भमया
} (भ्रूः) = भौंह।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५५। २. दीपस्य तैलं—'दीपतैलं' शब्द में 'तैल' शब्द ही किसी समय अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व खोकर प्रत्यय बना होगा। इसीलिए भाषा में (गुजराती भाषा में) 'धूपेल' में तैल शब्द समा गया है तो भी 'धूपेल तेल' शब्द का व्यवहार होता है।

३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६४। ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६२। ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६७।

सण[1] + इअ = सणिअं (शनैः) = धीरे-धीरे ।
उवरि[2] + ल्ल = अवरिल्लो (उपरितनः) = ऊपर का ।

ज[3] + एत्तिअ = जेत्तिअ
ज + एत्तिल = जेत्तिलं } (यावत्) = जितना ।
ज + एद्दह = जेद्दहं

त + एत्तिअ = तेत्तिअं
त + एत्तिल = तेत्तिल } (तावत्) = उतना ।
त + एद्दह = तेद्दहं

क + एत्तिअ = केत्तिअ
क + एत्तिल = केत्तिल } (कियत्) = कितना ।
क + एद्दह = केद्दह

एत + एत्तिअ = एत्तिअ } (एतावत्) = इतना ।
एत + एत्तिल = एत्तिल्ल
एत + एद्दह = एद्दह } (इयत्) ,,

पर[4] + क्क = परक्क, पारक्क (परकीयम्) = पराया ।
राय + क्क = रायक्क (राजकीयम्) = राजा का, राज का ।
अम्ह[5] + एच्चय = अम्हेच्चय (अस्मदीयम्) = हमारा ।
तुम्ह + एच्चय = तुम्हेच्चय (युष्मदीयम्) = तुम्हारा ।
सव्वग[6] + इअ = सव्वगिअ (सर्वाङ्गीणम्) = सर्वाङ्गीण, सब अंगों में व्याप्त ।

पह[7] + इअ = पहिओ (पथिक.) = पथिक ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६८ । २ हे० प्रा० व्या० ८।२।१६६ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५७ ।
४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४८ । ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४९ । ६. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५१ । ७. हे० प्रा० ८।२।१५२ ।

अप्प[1] + णय = अप्पणयं (आत्मीयम्) = अपना ।

कुछ वैकल्पिक रूप

नव[2] + ल्ल = नवल्लो, नवो (नवकः) = नया, नवीन ।

एक + ल्ल + एकल्लो, एक्को (एककः) = एक, अकेला ।

मनाक्[3] + अयं = मणयं }
,, + इयं = मणियं } (मनाक्) = थोडा, इषत् ।

मिस्स[4] + आलिअ = मीसालिअं, मीसं (मिश्रम्) = मिश्र—मिला हुआ, ममाले वाला आदि ।

दीघ[5] + र = दीघरं, दीघं, दिग्घं, (दीर्घं) = दीर्घ, लम्बा ।

विज्जु[6] + ल = विज्जुला (विद्युत्) = विजली ।

पत्त + ल = पत्तलं, पत्त (पत्रम्) = पत्तल, पत्ता ।

पीत + ल = पीअलं, पीतलं, पीवलं, पीअं (पीतम्) = पीला ।

अन्ध + ल = अंधलो (अन्धः) = अन्धा ।

तद्धितान्त शब्द

धणि (धनिन्) = धनी, धनाढ्य, साहुकार, श्रीमंत ।

अत्थिअ (आर्थिक) = आर्थिक, अर्थ सम्बन्धी ।

आरिस (आर्ष) = ऋषिओं द्वारा भाषित, कहा हुआ ।

मईय (मदीय) = मेरा ।

कोसेय (कौशेय) = कौशेय, रेशमी वस्त्र ।

हेट्ठिल (अधस्तनः) = नीचे का ।

जया (यदा) = जब ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१५३ । २. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६५ । ३. हे० प्रा० व्या० ८।२।१६९ । ४. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७० । ५. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७१ । ६. हे० प्रा० व्या० ८।२।१७३ ।

अण्णया (अन्यदा) = अन्य समय में ।
तवस्सि (तपस्विन्) = तपस्वी ।
मणसि (मनस्विन्) = मनस्वी, बुद्धिमान ।
काणीण (कानीन) = कन्या का पुत्र—व्यास ऋषि ।
वम्मय (वाङ्मय) = वाङ्मय, शास्त्र ।
पिआमह (पितामह) = दादा, पिता का पिता ।
उवरिल्ल (उपरितन) = ऊपर का ।
कया (कदा) = कब ।
सव्वया (सर्वदा) = हमेशा, सर्वदा, सदैव ।
रायण्ण (राजन्य) = राजपुत्र, राजकुमार ।
अत्थिअ (आस्तिक) = आस्तिक, ईश्वर को माननेवाला ।
भिक्ख (भैच) = भिक्षा ।
नाहिअ, नत्थिअ (नाहिक—नास्तिक) = नास्तिक, पाप-पुण्य को नहीं माननेवाला ।
पीणया (पीनता) = पुष्टता, मोटापा ।
मायामह (मातामह) = नाना, माता का पिता ।
सव्वहा (सर्वथा) = सब प्रकार से ।
तया (तदा) = तब ।

वाक्य (हिन्दी)

प्रजा के दु ख से दुःखी राजा द्वारा एकबार भोजन किया जाता है ।
वहाँ पराये बालकों द्वारा रोया जाता है ।
घरेलू वस्तु आँखों द्वारा देखी जाती है ।
मुनि द्वारा मधु खाया नहीं जाता ।
वह मन, वचन और काया से किसी को नहीं मारता ।
जीव कर्म द्वारा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होता है ।

मेरे द्वारा रोया जाता है और तेरे द्वारा हँसा जाता है।
गुरु द्वारा शिष्य को ग्रन्थ पढ़ाया जाता है।
भील द्वारा पर्वत जलाया जाता है।
महावीर द्वारा समभाव के साथ धर्म कहा जाता है।

वाक्य (प्राकृत)

अप्पणा अप्पा लब्भई।
रण्णा रज्जं भुज्जइ।
राईहि पयाण दुहाणि लुब्बंति।
तीए पइणा सह खिप्पते।
मघवाणो बंभणेहि थुव्वंति।
अत्थिएण अत्थो चिम्मई।
आरिसाणि वयणाणि कविलेण वुच्चंति।
राइणा सहाए कोसेयं परिहिज्जइ।
इत्थीए मत्थयम्मि धूपेल्ल दोसइ।
सक्खं खु दोसइ तवविसेसो।
न दोसइ जाइविसेसो को वि।

बाइसवाँ पाठ

कुछ नाम धातुएँ

संस्कृत में प्रेरक प्रक्रिया के अतिरिक्त और भी अनेक प्रक्रियाएँ हैं। जैसे सनन्त[1], यङन्त, यङ्लुगन्त और नामधातु प्रक्रिया। परन्तु प्राकृत में इनके लिए कोई विशेष विधान नहीं है। आप प्राकृत में इन प्रक्रियाओं के कुछेक रूप अवश्य उपलब्ध होते हैं। अतः वर्ण विकार अथवा उच्चारण-भेद के नियमों द्वारा उन्हें सिद्ध कर लेना चाहिए।

सनन्त—सुस्सूसइ (शुश्रूषति)=सुनने की इच्छा करता है, शुश्रूषा—सेवा करता है।

वीमंसा (मीमांसा) =विचार करना।

यङन्त—लालप्पइ (लालप्यते) = लप-लप करता है, बकवास करता है।

यङलुगन्त—चंकमइ (चङ्क्रमीति) = चंक्रमण करता है, घूमता रहता है।

चंकमण (चङ्क्रमणम्) = चंक्रमण-घूमा घूमा करता है।

नाम धातु—गरुआइ (गुरुकायते) = गुरु की भाँति रहता है।

गरुआअइ (,,) = गुरु के जैसा दिखावा करता है।

अमराइ, अमराअइ (अमरायते) = अमर-देववत् आचरण करता है, अपने आपको देव समझता है।

तमाइ, तमाअइ (तमायते) = तम-अँधेरा जैसा है, अँधेरा करता है।

---

१. पालि में भी सनंत, यङंत, यङ्लुगंत तथा नामधातु के रूपों के लिए देखिए पा० प्र० पृ० २२९–२३३।

धूमाइ } (धूमायते) = धूआँ निकालता है, धुएँ
धूमाअइ } का उद्गमन करता है।

सुहाइ } (सुखायते) = सुख का अनुभव होता है,
सुहाअइ } अच्छा लगता है।

सद्दाइ } (शब्दायते) = शब्द करता है।
सद्दाअइ }

नामधातु के उक्त संस्कृत रूपों में जो 'य' दिखाई देता है प्राकृत में उसका विकल्प से लोप हो जाता है। यह नियम केवल नामधातु में ही लगता है।

कृदन्त

हेत्वर्थ[1] कृदन्त*

मूल धातु में 'तुं' और 'त्तए'[2] प्रत्यय लगाने पर हेत्वर्थ कृदन्त§ रूप बनते हैं।

---

१. हे० प्रा० व्या ८।३।१२८।

* पालि में धातु को 'तुं' तथा 'तवे' प्रत्यय लगाने से हेत्वर्थ कृदन्त बनते हैं (देखिए पा० प्र० पृ० २५७)। जैसे—

पा० कत्तुं प्रा० कातुं

पा० कत्तवे प्रा० करित्तए इत्यादि।

हेत्वर्थ कृदन्त के 'तुं' प्रत्यय के स्थान में शौरसेनी और मागधी में 'दुं' प्रत्यय होता है तथा पैशाची में तो 'तुं' प्रत्यय ही लगता है। जैसे :—

शौरसेनी—हस् = + दुं = हसिदुं

मागधी—हश् + दुं = हशिदुं

पैशाची—हस् + तुं = हसितुं।

२. हेत्वर्थ कृदन्त बनाने के लिए वैदिक संस्कृत में 'तवे' प्रत्यय का उपयोग होता है। प्राकृत का 'त्तए' और वैदिक 'तवे' प्रत्यय बिल्कुल समान है। 'त्तए' प्रत्यय वाले रूप आर्ष प्राकृत में विशेषतः उपलब्ध होते हैं।

'तु' और 'सए' प्रत्यय परे रहने पर पूर्व के 'अ' को 'इ' अथवा 'ए' होता है।

तु—

भण् + तुं— { भणितु,[2] भणेतु / भणिउ, भणेउ, } (भणितु) = पढने के लिए।

हो + तु— { होतु, हाइउं / होउ, हाएउ } (भवितुं) = होने के लिए।

---

§ अपभ्रंश भाषा में धातु को एव, अण, अणहं, अणहि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु इसमें से कोई प्रत्यय लगाने से हेत्वर्थ कृदन्त बनते हैं। जैसे—

चय् + एवं = चयेवं (त्यक्तुम्)
दा + एव = देवं (दातुम्)
भुज् + अण = भुजण (भोक्तुम्)
कर् + अण = करण (कर्तुम्)
सेव् + अणहुं = सेवणहं (सेवितुम्)
भुज् + अणहं = भुजणह (भोक्तुम्)
मुच् + अणहिं = मुचणहिं (मोक्तुम्)
सुव् + अणहिं = सुवणहि (स्वप्तुम्)
कर् + एप्पि = करेप्पि (कर्तुम्)
जि + एप्पि = जेप्प (जेतुम्)
कर् + एप्पिणु = करेप्पिणु (कर्तुम्)
बोल्ल + एप्पिणु = बोल्लेप्पिणु (वक्तुम्)
चर् + एवि = चरेवि (चरितुम्)
पा (+ एवि = पालेवि (पालयितुम्)

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७। २. व्यंजनान्त धातु के अन्त में 'अ' हमेशा होता है और स्वरान्त धातु के अन्त में 'अ' विकल्प से होता है। यह एक साधारण नियम है। जैसे—

प्रेरक हेत्वर्थ कृदन्त

(मूलधातु के प्रेरक अंग बनाने के लिए देखिए पाठ १९वां)

भण्—भणावि + तुं = भणावितुं } (भणापयितुम्) = पढ़ाने के लिए।
भणाविउ }

त्तए—

कर् + त्तए = करित्तए, करेत्तए (कर्तवे–कर्तुम्) = करने के लिए।

गम् + त्तए = गमित्तए, गमेत्तए (गन्तवे, गन्तुम्) = जाने के लिए।

आहर् + त्तए = आहरित्तए, आहरेत्तए (आहर्तवे, आहर्तुम्) = आहार करने के लिए।

दल् + त्तए = दलइत्तए, दलएत्तए (दातवे–दातुम्) = देने के लिए।

(आहरित्तए के बदले 'आहारित्तए' रूप भी उपलब्ध होता है और 'दल + त्तए' में 'अइ' का आगम होता है।)

हो + त्तए = होइत्तए, होएत्तए (भवितवे–भवितुं) = होने के लिए।

हो + त्तए = होत्तए (भवितवे–भवितुं) = होने के लिए।

सुस्सूस + त्तए = सुस्सूसित्तए, सुस्सूसेत्तए (शुश्रूषितवे–शुश्रूषितुम्)= शुश्रूषा करने के लिए।

चंकम + त्तए = चंकमित्तए } (चंक्रमितवे–चङ्क्रमितुम्)=चंक्रमण
चंकमेत्तए } करने के लिए।

भण्—भणावि + त्तए = भणावित्तए } (भणापयितवे–भणापयितुम्)= पढ़ाने के लिए।

अनियमित हेत्वर्थ कृदन्त

कर् + तुं = कातुं, काउं, कट्टुं, कट्टु (कर्तुम्) = करने के लिए।

भण् + तुं – भण + तुं = भणितुं, भणेतुं

हो + तुं—होअ + तुं = होइतुं, होएतुं

हो + तुं— होतुं

गेण्ह् + तु = घेत्तु (ग्रहीतु) = ग्रहण करने लिए।
दरिस् + तु = दट्ठु (द्रष्टुम्) = देखने के लिए।
भुज् + तु = भात्तु (भोक्तुम्) = भागने के लिए, खाने के लिए।
मुञ्च् + तु = मात्तु (मोक्तुम्) = मुक्त होन के लिए, छूटने के लिए।
रुद् + तु = रोत्तु (रोदितुम्) = रोने के लिए।
वच् + तु = वात्तु (वक्तुम) = बोलने के लिए।
लह् + तु = लद्धु (लब्धुम्) = लेने के लिए प्राप्त करने के लिए।
रुध् + तु = रोद्धु (रोद्धुम्) = रोकने के लिए, निरोध करने के लिए।
युध् + तु = योधु, जोद्धु } (योद्धुम्) = युद्ध करने के लिए।

सम्बन्धक भूतकृदन्त*

मूल धातु में तु, तूण, तुआण, अ, इत्तु इत्ताण, आए और आए (इन आठ प्रत्ययों में से कोई एक) प्रत्यय लगाने पर सम्बन्धक भूतकृदन्त

---

* पालि में धातु को 'त्वा', त्वान' तथा 'तून' प्रत्यय तथा 'य'—प्रत्यय लगाने से सम्बन्धक भूतकृदन्त के रूप बनते हैं। जैसे—

पालि—करित्वा प्रा० करित्ता।

पालि—हसित्वान प्रा० हसित्ताण।

,, कत्तून प्रा० कातून।

,, आदाय प्रा० आदाय (देखिए पा० प्र० पृ० २५५ से २५६)।

शौरसेनी तथा मागधी भाषा में सम्बन्धक भूतकृदन्त के सूचक 'इय,' और 'दूण' प्रत्यय हैं। जैसे—

हो + इय = होविय प्रा० होत्ता स० भूत्वा
हो + दूण = होदूण ,, ,,
पढ + इय = पढिय पढित्ता सं० पठित्वा
पढ + दूण = पढिदूण ,,

बनता है। 'तुं' इत्यादि पहले चार प्रत्यय परे रहने पर पूर्व के 'अ' को 'इ' और 'ए' विकल्प से होते है।

'तूण', 'तुआण' और 'इत्ताण' प्रत्यय के 'ण' के ऊपर अनुस्वार विकल्प[२] से होता है। जैसे—तूण, तूणं, तुआण, तुआणं, इत्ताण, इत्ताणं।

तुं—

हस् + तुं— { हसितुं, हसेतुं / हसिउं, हसेउं } (हसित्वा) = हंसकर।

हो + अ + तुं – { होइतुं, होएतुं / होइउं, होएउं } (भूत्वा) = होकर।

हो + तुं – होतुं, होउं (भूत्वा) = होकर।

तूण—

हस् + तूण – { हसितूण, हसेतूण / हसिऊण, हसेऊण } (हसित्वा) = हँसकर।

---

* पालि में सम्बन्ध भूतकृदन्त के उदाहरण—

रम् + इय = रमिय प्रा० रंता सं० रन्त्वा

रम् + दूण = रंदूण ,, ,,

पैशाची भाषा में 'दूण' के स्थान पर 'तून' प्रत्यय होता है। जैसे—

गम् + तून = गंतून (गत्वा)

हस् + तून = हसितून (हसित्वा)

पढ् + तून = पढितून (पठित्वा)

अपभ्रंश भाषा में इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु इनमें से कोई भी प्रत्यय लगाने से सम्बन्धक भूतकृदन्त बनता है। जैसे—

लह् + इ = लहि (लब्ध्वा)

कर् + इउ = करिउ (कृत्वा)

हो + अ + तूण = होइतूण होएतूण }
हाइऊण, होएऊण } (भूत्वा) = होकर

हो + तूण = होतूण, होतूण }
होऊण, होऊण } (भूत्वा) = होकर

तुआण—

हस् + तुआण = हसितुआण, हसेतुआण }
हसिउआण, हसेउआण } (हसित्वा) = हँसकर

कर् + इवि = करिवि (,,)
कर् + अवि = करवि (,,)
कर + एप्पि = करेप्पि (,,)
कर् + एप्पिणु = करेप्पिणु (,,)
कर् + एवि = करेवि (,,)
कर् + एविणु = करेविणु (,,)

अपवाद—

शौरसेनी में सिर्फ 'कृ' धातु का तथा 'गम्' धातु का सम्बन्धक भूतकृदन्त 'कडुअ' तथा 'गडुअ' होता है।

संस्कृत में जहाँ 'ष्ट्वा' होता है तो वहाँ पैशाची में ड्डून तथा त्थून प्रत्यय होता है। जैसे—

नष्ट्वा पैशाची—नद्धून, नत्थून
तष्ट्वा ,, —तद्धून, तत्थून।

अपभ्रंश में केवल 'गम्' धातु का सम्बन्धक भूतकृदन्त का रूप 'गम्प्पि' और 'गम्पिणु' भी होते हैं।

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४६। २. हे० प्रा० व्या० ८।१।२७।

हो + अ + तुआण = होइतुआण, होएतुआण
होइउआण, होएउआण } (भूत्वा) = होकर

हो + तुआण = होतुआण, होउआण (भूत्वा) = होकर

अ—

हस् + अ = हसिअ, हसेअ (हसित्वा) = हँसकर

हो + अ + अ = होइअ, होएअ (भूत्वा) = होकर

हो + अ = होअ ,, ,,

इत्ता—

हस् + इत्ता = हसित्ता, हसेत्ता (हसित्वा) = हँसकर

इत्ताण—

हस् + इत्ताण = हसित्ताण, हसेत्ताण (हसित्वा) = हँसकर

आय—

गह् + आय = गहाय (गृहीत्वा) = ग्रहण करके

आए—

आय + आए = आयाए (आदाय) = ग्रहण करके

संपेह + आए = संपेहाए (संप्रेक्ष्य) = खूब विचार करके

('आय' और 'आए' प्रत्यय का उपयोग जैन आगमों की भाषा में प्रायः उपलब्ध होता है ।)

इसी प्रकार सुस्सूसितुं, सुस्सूसितूण, सुस्सूसितुआण, सुस्सूसिअ, सुस्सूसित्ता, सुस्सूसित्ताण (शुश्रूषित्वा = शुश्रूषा करके); चंकमि + तुं—मितूण–मितुआण, मिअ, मित्ता, मित्ताण (चंक्रमित्वा = चंक्रमण करके) इत्यादि रूप भी समझ लें ।

प्रेरक सम्बन्धक भूतकृदन्त

भणावि + तुं—वितूण–वितुआण, विअ, वित्ता–वित्ताण (भणापयित्वा) = पढ़वा कर

हासि + तुं = सितूण, सितुआण, सिअ, सित्ता, सित्ताण (हासयित्वा) = हँसा कर

अनियमित सम्बन्धक भूतकृदन्त

कर् + तु = कातु[1], काउ, कट्टु कर् + तूण = कातूण, काऊण कर् + तुआण = कातुआण, कातुआण	(कृत्वा) = करके
गह् + तु = घेत्तु[2] ,, + तूण = घेत्तूण, घेत्तूण ,, + तुआण = घेत्तुआण, घेत्तुआण	(गृहीत्वा) = ग्रहण करके
दरिस + तु = दट्ठु[3], दट्ठु ,, तूण = दट्ठूण, दट्ठूण ,, तुआण = दट्ठुआण, दट्ठुआण	(दृष्ट्वा) = देखकर
भुञ्ज् + तु = भोत्तु[4] ,, तूण = भोत्तूण, मोत्तूण ,, तुआण = भोत्तुआण, मोत्तुआण	(भुक्त्वा) = भोजन करके, खा कर, भोग कर।
मुञ्च् + तु = मोत्तु ,, तूण = मोत्तूण, मोत्तूण ,, तुआण = मोत्तुआण, मोत्तुआण	(मुक्त्वा) = छोड़कर, त्याग कर।

इसी प्रकार—

'रुद्' ऊपर से रोत्-रोत्तु, रोत्तूण, रोत्तुआण, (रुदित्वा) = रोकर, 'वच्' धातु से वोत्—वोत्तु, वोत्तूण, वोत्तुआण (उक्त्वा) = बोल कर; 'वद्' धातु से वंदितु, वंदित्तु[5] (वन्दित्वा) = वन्दना करके, 'कर्' से कट्टु, कट्टु (कृत्वा) = करके।

(निर्देश —'वंदित्तु' और 'कट्टु' में 'तु' के ऊपर का अनुस्वार लोप भी हो जाता है।)

---

१ हे० प्रा० व्या० ८।४।२१४। २. हे० प्रा० व्या० ८।४।२१०। ३ हे० प्रा० व्या० ८।४।२१३। ४ हे० प्रा० व्या० ८।४।२१२। ५ हे० प्रा० व्या० ८।२।१४६।

आयाय (आदाय) = ग्रहण करके

गच्चा, गत्ता (गत्वा) = जाकर

किच्चा, किच्चाण (कृत्वा) = करके

नच्चा, नच्चाण (ज्ञात्वा) = जान कर

नत्ता (नत्वा)= नम कर, झुककर

बुज्झा (बुद्ध्वा) = जान कर

भोच्चा (भुक्त्वा) = खा कर, भोग कर

मत्ता, मच्चा (मत्वा) = मान कर

वंदित्ता (वन्दित्वा) = वन्दना करके

विप्पजहाय (विप्रजहाय, विप्रहाय) = त्याग कर, छोड़कर

सोच्चा (श्रुत्वा) = सुनकर

सुत्ता (सुप्त्वा) = सोकर

आहच्च (आहत्य) = आघात करके, पछाड़कर

साहट्टु (संहृत्य) = संहार करके, बलात्कार करके

हंता (हत्वा) = मार कर

आहट्टु (आहृत्य) = आहार करके

परिन्नाय (परिज्ञाय) = जानकर

चिच्चा, चेच्चा, चइत्ता (त्यक्त्वा) = छोड़कर

निहाय (निधाय) = स्थापित कर

पिहाय (पिधाय) = ढाँक कर

परिच्चज्ज (परित्यज्य) = परित्याग करके, छोड़कर

अभिभूय (अभिभूय) = अभिभव करके, तिरस्कार करके

पडिबुज्झ (प्रतिबुध्य) = प्रतिबोध पाकर।

उच्चारणभेद से उत्पन्न इन सभी अनियमित रूपों को सार्वनिक -संस्कृत रूपों द्वारा ही समझी जा सकती है। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक अनियमित रूप भी संस्कृत की तरह समझ लें।

तेइसवाँ पाठ

विध्यर्थ कृदन्त* के उदाहरण

मूलधातु में †तव्व, अणीअ, अथवा अणिज्ज प्रत्यय लगाने से विध्यर्थ कृदन्त बनते हैं। तव्व प्रत्यय के पूर्व 'अ' को 'इ' और 'ए'[1] होता है।

तव्व—

हस् + तव्व—हसितव्वं, हसेतव्वं
हसिअव्वं, हसेअव्वं } (हसितव्यम्) = हंसना चाहिए, हंसने योग्य।

हो + तव्व—होइतव्वं, होएतव्वं
होइअव्वं, होएअव्वं
होतव्वं, होयव्व, होअव्वं } (भवितव्यम्) = होने योग्य, होना चाहिए।

ना + तव्व — नातव्वं, नायव्वं (ज्ञातव्यम्) = जानने योग्य, जानना चाहिए।

---

*पालि भाषा में तव्व, अनीय और 'य' प्रत्यय लग कर धातु का कृत्य प्रत्ययांत रूप बनता है। जैसे, भवितव्वं। सयनीयं। कारियं। तथा देय्य, मेय्यं, मेतव्वं, मातव्वं, कच्चं (कृत्यम्), भच्चो (भृत्य) वगैरह रूप होते हैं (दे० पा० प्र० पृ० २५४)। †अपभ्रंश भाषा में 'तव्व' के स्थान में 'इएव्वउं', 'एव्वउ' तथा 'एवा' प्रत्यय का उपयोग होता है। जैसे—

कर + इएव्वउं—करिएव्वउ (कर्तव्यम्), सह + एव्वउं—सहेव्वउं (सोढव्यम्), जग्ग + एवा—जग्गेवा (जागरितव्यम्)।

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५७।

चिव्व + तव्व—चिव्वितव्वं, चिव्वेतव्वं ⎫ (चेतव्यम्) = इकट्ठा करने
चिव्विअव्वं, चिव्वेअव्वं ⎭ योग्य, इकट्ठा करना चाहिए।

अणीअ, अणिअ—

हस् + अणीअ—हसणीअं, हसणीयं ⎫ (हसनीयम्) = हँसने योग्य,
हस् + अणिअ—हसणिज्जं ⎭ हँसना चाहिये।

प्रेरक विध्यर्थ कृदन्त

हसावि + तव्व—हसावितव्वं ⎫
हसाविअव्वं ⎬ (हसावयितव्यम्) = हँसाने योग्य, हँसाना चाहिए।
हसावियव्वं ⎭

हसावि + अणीअ ⎫ हसावणीअं, हसावणीयं ⎫ (हसापनीयम्)
हसावि + अणिज्ज ⎭ हसावणिज्जं ⎭

इसी प्रकार वयणीयं, वयणिज्जं, करणीयं, करणिज्जं, मुस्मूसितव्वं, चंकमितव्वं, सुस्सूसणिज्जं, सुस्मूसणीयं इत्यादि रूप समझ लेना चाहिये।

अनियमित विध्यर्थ कृदन्त

कज्जं (कार्यम्) = करने योग्य।

किच्चं (कृत्यम्) = कृत्य।

गेज्झं (ग्राह्यम्) = ग्रहण करने योग्य।

गुज्झं (गुह्यम्) = छुपाने योग्य, गुप्त रखने योग्य।

वज्जं (वर्ज्यम्) = वर्जने योग्य, निरोध करने योग्य।

अवज्जं (अवद्यम्) = नहीं बोलने योग्य, पाप।

वच्चं (वाच्यम्) = बोलने योग्य।

वक्क (वाक्यम्) = कहने योग्य, वाक्य।

कातव्वं ⎫
कावंव्य ⎬ (कर्तव्यम्) = कर्तव्य, करने योग्य।
काअव्वं ⎭

जन्न (जन्यम्) = जन्य, पैदा होने योग्य।

भिच्चो (भृत्य) = भृत्य, नौकर ।
भज्जा (भार्या) = भार्या, भरण-पोषण करने योग्य स्त्री ।
अज्जो (अर्य) = अर्य — वैश्य — स्वामी ।
अज्जो (आर्य.) = आर्य ।
पच्च (पाच्यम्) = पचने योग्य ।
भव्वं (भव्यम् = होने योग्य ।
घेतव्व (ग्रहीतव्यम्) = ग्रहण करने योग्य ।
वोत्तव्वं (वक्तव्यम्) = कहने योग्य ।
रोत्तव्व (रुदितव्यम्) = रुदन करने योग्य, रोने योग्य ।
भोत्तव्वं (भोक्तव्यम्) = भोजन करने योग्य, भोगने योग्य ।
मोत्तव्व (मोक्तव्यम्) = छोड़ने योग्य ।
दट्ठव्व (द्रष्टव्यम्) = देखने योग्य ।

चौबीसवाँ पाठ

वर्तमान कृदन्त

मूल धातु में 'न्त'[1], 'माण' और 'ई' प्रत्यय लगाने से उसके वर्तमान कृदन्त रूप बनते हैं। परन्तु 'ई' प्रत्यय केवल स्त्रीलिङ्ग में ही प्रयुक्त होता है। 'न्त', 'माण' और 'ई' प्रत्यय परे रहते पूर्व के 'अ' को विकल्प से 'ए' होता है।

न्त—

भण् + न्त—भणंतो, भणेंतो, भणितो, (भणन्) = पढ़ता हुआ।
भणंत, भणेंतं, भणितं (भणन्) = पढ़ता हुआ।
भणंती[1], भणेंती, भणिती, (भणन्ती) = पढ़ती हुई।
भणंता, भणेंता, भणिता[1] (भणन्ती) = „ „

हो + अ + न्त—होअंतो, होएंतो, होइंतो (भवन्) = होता हुआ।
होंतो, हुंतो
होअंतं, होएंतं, होइंतं (भवत्) = होता हुआ।
होंतं, हुंतं
होअंती, होएंती, होइंती (भवन्ती) = होती हुई।
होअंता, होएंता, होइता („) = „
होंती, होंता
हुती, हुता

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१८१। तथा १८२।

माण—

भण् = माण—भणमाणो, भणेमाणो (भणमान) = पढता हुआ ।

भणमाण, भणेमाण (भणमानम्) = पढता हुआ ।

भणमाणी, भणेमाणी (भणमाना) = पढती हुई ।

भणमाणा, भणेमाणा

हो + अ + माण—होअमाणो, होएमाणो, (भवमानः) = होता हुआ ।

होमाणो

होअमाणं, होएमाणं, (भवमानम्) = होता हुआ ।

होमाण

होअमाणी, होएमाणी
होअमाणा, होएमाणा
होमाणी, होमाणा } (भवमाना) = होती हुई ।

ई—

भण् + ई—भणई, भणेई (भणन्ती) = पढती हुई ।

हो + अ—ई—होअई, होएई, होई (भवन्ती) = होती हुई ।

इसी प्रकार कर्तरि प्रेरक अंग, सामान्य भावे अंग, सामान्य कर्मणि अंग तथा प्रेरक भावे और कर्मणि अंग को उक्त तीनों प्रत्ययों में से एक लगाने से उसके वर्तमान कृदन्त बनते हैं ।

कर्तरि प्रेरक वर्तमान कृदन्त—

करावि + अ + न्त—करावंतो, करावेंतो (कारापयन्) = करवाता हुआ ।

कार + न्त—कारंतो, कारेंतो (कारयन्) = ,,

करावि + क + माण—करावमाणो, करावेमाणो (कारापयमाण) ,,

कार + माण—कारमाणो, कारेमाणो (कार्यमाण) ,,

भणाविज्जई

भणावीग्रई, इत्यादि ।

इसी प्रकार —

सुस्सूसतो (शुश्रूषन्), चकमतो (चङ्क्रमन्,

सुस्सूसमाणो (शुश्रूषमाण), चंकममाणो (चङ्क्रममाण),

सुस्सूसिज्जन्तो
सुस्सूसिज्जमाणो
सुस्सूसीग्रतो
सुस्सूसीग्रमाणो } (शुश्रूष्यमाण)

चकमिज्जतो
चकमिज्जमाणो
चकमीग्रतो
चंकमीग्रमाणो } (चङ्क्रम्यमाण)

इत्यादि रूप समझ लेना चाहिये ।

पच्चीसवाँ पाठ

संख्यावाचक शब्द

जिन शब्दों द्वारा संख्या का बोध होता है वे संख्यावाचक शब्द कहे जाते हैं। ऐसे शब्द अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त और उकारान्त भी होते हैं। विशेषण रूप होने से इन शब्दों का लिङ्ग निश्चित नहीं होता। इसलिए इन शब्दों के लिङ्ग, वचन और विभक्ति विशेष्य के अनुसार होते हैं। संख्यावाचक अकारान्त, इकारान्त, और उकारान्त नामों के रूप आगे बतायी गयी रीति के अनुसार समझ लें। तथा यह भी ध्यान रहे कि 'दु' शब्द से लेकर 'अट्ठारस' शब्द तक के सब शब्द के रूप बहु-वचन में होते हैं। खास विशेषता इस प्रकार है:—

'एक' से लेकर 'अट्ठारस' (अष्टादश) पर्यन्त संख्यावाचक शब्दों के षष्ठी के बहुवचन में 'ण्ह'[1] और 'ण्हं' प्रत्यय क्रमशः लगते हैं :—

एग + ण्ह = एगण्ह,	एग + ण्हं = एगण्हं।
उभय + ण्ह = उभयण्ह,	उभय + ण्हं = उभयण्हं।
ति + ण्ह = तिण्ह,	ति + ण्हं = तिण्हं।
दु + ण्ह = दुण्ह,	दु + ण्हं = दुण्हं।
कति + ण्ह—कतिण्ह,	कति + ण्हं = कतिण्हं।

इक्क, एक्क, एग, एअ (एक) शब्दों के पुल्लिग रूप 'सव्व' की भाँति होते हैं। स्त्रीलिग के रूप 'सव्वा' की भाँति और नपुंसकलिग रूप नपुंसकलिङ्गी 'सव्व' की भाँति होते हैं।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१२३। पालि में 'न्नं' प्रत्यय लगता है देखिए—पा० प्र० पृ० १५५।

'सव्व' के षष्ठी के बहुवचन की भाँति इसमें (एग शब्द में) भी 'एसिं' प्रत्यय लगता है।

एग + एसिं = एगेसिं इत्यादि।

उभ, उह (उभ) शब्द के रूप बहुवचन में ही होते हैं और वे सभी रूप 'सव्व' की भाँति होंगे।

'उभ' शब्द के रूप

प्र० उभे[1]।

द्वि० उभे, उभा।

तृ० उभेहि, उभेहिं, उभेहिँ।

च०-ष० उभण्ह, उभण्हं।

पं० उभत्तो, उभाओ, उभाउ

उभाहि, उभेहि

उभाहिंतो, उभेहिंतो

उभासुंतो, उभेसुंतो

स० उभेसुं, उभेसु

दु[2] (द्वि) के तीनों लिङ्गों में रूप

प्र०-द्वि० दुवे, दोण्णि, दुण्णि।

---

१. पालि में 'उभ' शब्द के रूप :—

प्र०-द्वि० उभो, उभे।

तृ०-पं० उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि।

च०-ष० उभिन्नं।

स० उभोसु, उभेसु।

—दे० पा० प्र० पृ० १९५ संख्या शब्द।

२. पालि भाषा में 'द्वि' वगैरह संख्यावाचक शब्दों के रूप थोड़े जुदे-जुदे होते हैं। जैसे—

वेरिण, विरिण।

दो, वे अथवा वे।

तृ० दोहि, दोहिं, दोहिँ

वेहि, वेहिं, वेहिँ अथवा

वेहि, वेहिं, वेहिँ।

च०—प० दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं

[1]वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं

द्वि—बहुवचन

प्र०—द्वि०	दुवे, द्वे
तृ०—पं०	द्वीहि, द्वीभि
च०—प०	दुविन्नं, द्विन्नं
स०	द्वीसु

ति (त्रि)

	पुंलिग	स्त्रीलिंग	नपुंसक लिंग
प्र०—द्वि०	तयो	तिस्सो	तीणि
तृ०—पं०	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि
च०—प०	तिण्णं, तिण्णन्नं	तिस्सन्नं	तिण्णं, तिण्णन्नं
स०	तीसु	तीसु	तीसु

चतु (चतुर्)

प्र०—द्वि०	चत्तारो, चतुरो	चतस्सो	चत्तारि
तृ०—पं०	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि
च०—प०	चतुन्नं	चतस्सन्नं	चतून्नं
स०	चतूसु	चतूसु	चतूसु

१. इन रूपों में 'व' के स्थान में 'ब' भी बोला जाता है।

पं० दुत्तो, दोश्रो, दोउ, दोहितो, दोसुंतो
बित्तो, बेश्रो, बेउ, बेहितो, बेसुंतो
स० दोसु, दोसुं, बेसु, बेसुं।

'ति' (त्रि) तीनों लिङ्गों के रूप

प्र०-द्वि० तिण्णि
च० तथा ष० तिण्ह, तिण्हं
शेष रूप 'रिसि' शब्द के बहुवचन के रूपों की भाँति समझ लें।

'चउ' (चतुर्) तीनों लिङ्गों में रूप

प्र०-द्वि चत्तारो (चत्वार), चउरो (चतुर), चत्तारि (चत्वारि)
तृ०— चऊहिँ, चऊहि, चऊहिं
चउहि, चउहि, चउहिँ
च०—ष० चउण्ह, चउण्हं
शेष सभी रूप 'माणु' शब्द की भाँति होंगे।

'पंच' (पञ्चन्) तीनों लिङ्गों में रूप

प्र०-द्वि० पंच
तृ०— पचेहि, पंचेहि, पंचेहिँ
पचहि, पंचहि, पचहिँ
च० तथा ष०-पंचण्ह, पंचण्हं (पालि-पचन्नं)
शेष सभी रूप 'वीर' शब्द के बहुवचन के रूपों जैसे हैं।

इसी प्रकार निम्नलिखित सभी शब्दों के रूप 'पञ्च' शब्द की भाँति होंगे--

छ (षट्) = छ.
सत्त (सप्तन्) = सात-सप्त
अट्ठ (अष्टन्) = आठ-अष्ट
नव (नवन्) = नव

दह, दस (दशन्) = दस

एआरह, एगारह, एआरस (एकादश) = एकादश, ग्यारह

दुवालस, वारस, वारह (द्वादश) = वारह, द्वादश

तेरस, तेरह (त्रयोदश) = तेरह, त्रयोदश

चोद्दस, चोद्दह, चउद्दस, चउद्दह (चतुर्दश) = चौदह, चतुर्दश

पण्णरस, पण्णरह (पञ्चदश) = पन्द्रह, पञ्चदश

सोलस, सोलह (षोडश) = षोडश, सोलह

सत्तरस, सत्तरह (सप्तदश) = सत्रह, सप्तदश

अट्ठारस, अट्ठारह (अष्टादश) = अठारह, अष्टादश।

'कइ' (कति = कितना) शब्द के रूप

प्र०–द्वि—कई, कइणो इत्यादि

च० तथा प०—कइण्ह, कइण्हं

शेष रूप 'रिसि' के बहुवचन की भाँति होते हैं। नीचे बताये गये शब्दों में आकारान्त शब्द के रूप 'माला' की भाँति और इकारान्त शब्द के रूप 'बुद्धि' की भाँति होते हैं।

एगूणवीसा (एकोनविंशति) = उन्नीस।

वीसा (विंशति) = बीस।

एगवीसा
इक्क वीसा, एक्कवीसा } (एकविंशति) = इक्कीस (एक-बीस)।

बावीसा (द्वाविंशति) = बाईस (बावीस)।

तेवीसा (त्रयोविंशति) = तेइस (तेवीस)।

चउवीसा
चोवीसा } (चतुर्विंशति) = चौवीस।

पणवीसा (पञ्चविंशति) = पच्चीस।

छव्वीसा (षड्विंशति) = छब्बीस।

सत्तावीसा (सप्तविंशति) = सत्ताईस
अट्ठावीसा, अट्ठवीसा, अडवीसा (अष्टविंशति) = अट्ठाइस
एगूणतीसा (एकोनत्रिंशत्) = उन्तीस
तीसा (त्रिंशत्) = तीस
एगतीसा, एक्कतीसा, इक्कतीसा (एकत्रिंशत्) = एकतीस
बत्तीसा (द्वात्रिंशत्) = बत्तीस
तेत्तीसा, तित्तीसा (त्रयस्त्रिंशत्) = तैत्तीस
चउत्तीसा, चोत्तीसा (चतुस्त्रिंशत्) = चउत्तीस, चौतीस
पणतीसा (पञ्चत्रिंशत्) = पैंतीस
छत्तीसा पट्त्रिंशत्) = छत्तीस
सत्ततीसा (सप्तत्रिंशत्) = सैंतीस
अट्ठतीसा, अडतीसा (अष्टत्रिंशत्) = अडतीस
एगूणचत्तालिसा (एकोनचत्वारिंशत्) = उन्तालिस (ऊनचालीस)
चत्तालिसा, चत्ताला (चत्वारिंशत्) = चालीस
एगचत्तालिसा, इक्कचत्तालिसा, एक्कचत्तालिसा, इगयाला (एकचत्वारिंशत्) = इकतालीस (एकतालीस)
बेग्रालिसा, बेग्राला, दुचत्तालिसा (द्विचत्वारिंशत्) = बेयालीस
तिचत्तालिसा, तेग्रालिसा, तेग्राला (त्रिचत्वारिंशत्) = तैंतालीस
चउचत्तालिसा, चोग्रालिसा, चोग्राला, चउग्राला (चतुश्चत्वारिंशत्) = चौवालीस
पणचत्तालिसा, पणयाला (पञ्चचत्वारिंशत्) = पैंतालिस
छचत्तालिसा, छायाला (षट्चत्वारिंशत्) = छियालीस
सत्तचत्तालिसा, सगयाला (सप्तचत्वारिंशत्) = सैंतालीस
अट्ठचत्तालिसा, अडयाला (अष्टचत्वारिंशत्) = अडतालीस
एगूणपण्णासा (एकोनचत्वारिंशत्) = उनचास
पण्णासा (पञ्चाशत्) = पचास

एगपएणासा, इक्कपएणासा, एक्कपएणासा (एकपञ्चाशत्)

एगावएणा (एकपञ्चाशत्)=एक्यावन

वावएणा
दुपंएणासा } (द्विपञ्चाशत्)=बावन

तेवएणा, तिपएणासा (त्रिपञ्चाशत्)=त्रिपन

चोवएणा, चउपएणासा (चतुष्पञ्चाशत्)=चौवन

पणपएणा, पणपएणासा, पञ्चावएणा (पञ्चपञ्चाशत्)=पचपन

छप्पएणा, छप्पएणासा (षट्पञ्चाशत्)=छप्पन

सत्तावन्ना, सत्तपएणासा (सप्तपञ्चाशत्)=सत्तावन

अट्ठावन्ना, अडवन्ना, अट्ठपएणासा (अष्टपञ्चाशत्)=अट्ठावन

एगूणसट्ठि (एकोनषष्टि)=उनसठ

सट्ठि (षष्टि)=साठ

एगसट्ठि, इगसट्ठि (एकषष्टि)=इकसठ

वासट्ठि, विसट्ठि (द्वि-षष्टि)=बासठ

तेसट्ठि (त्रिषष्टि)=त्रेसठ, त्रिसठ

चउसट्ठि, चोसट्ठि (चतुष्षष्टि)=चौसठ

पणसट्ठि (पञ्चषष्टि)=पैंसठ

छासट्ठि (षट्षष्टि)=छिआसठ

सत्तसट्ठि (सप्तसष्टि)=सड़सठ

अडसट्ठि, अट्ठसट्ठि (अष्टषष्टि)=अड़सठ

एगूणसत्तरि (एकोनसप्तति)=उनहत्तर

सत्तरि (सप्तति)=सत्तर

इक्कसत्तरि, इक्कहत्तरि (एकसप्तति)=इकहत्तर, एकहत्तर

वा (वि) स (ह) त्तरि
वावत्तरि } (द्विसप्तति)=बहत्तर

तिसत्तरि (त्रिसप्तति)=तिहत्तर, तेहत्तर

चोसत्तरि, चउसत्तरि (चतुस्सप्तति) = चौहत्तर, चोहत्तर
पण्णसत्तरि, पणसत्तरि (पञ्चसप्तति) = पचहत्तर
छसत्तरि (षट्सप्तति) = छेहत्तर, छिहत्तर
सत्तसत्तरि (सप्तसप्तति) = सतहत्तर
अट्ठसत्तरि, अडहत्तरि (अष्टसप्तति) = अठहत्तर
एगूणासीइ (एकोनाशीति) = उन्नासी
असीइ (अशीति) = अस्सी
एगासीइ (एकाशीति) = इक्यासी
बासीइ (द्वयाशीति) = बयासी
तेसीइ
तेरासीइ } (त्र्यशीति) = तिरासी
चउरासीइ, चोरासीइ (चतुरशीति) = चौरासी
पणसीइ, पञ्चासीइ (पञ्चाशीति) = पचासी
छासीइ (षडशीति) = छियासी
सत्तासीइ (सप्ताशीति) = सत्तासी
अट्ठासीइ (अष्टाशीति) = अट्ठासी
नवासीइ (नवाशीति) = नवासी
एगूणनवइ (एकोननवति) = नवासी
नवइ, णवइ (नवति) = नब्बे
एगणवइ, इगणवइ (एकनवति) = इक्यानवे
बाणवइ ,द्विनवति) = बानवे
तेणवइ (त्रिनवति) = तिरानबे
चउणवइ, चोणवइ (चतुर्नवति) = चौरानवे
पंचणवइ, पण्णणवइ (पञ्चनवति) = पंचानवे
छण्णवइ (षण्णवति) = छियानवे
सत्त(त्ता,णवइ (सप्तनवति) = सत्तानबे

अट्ठणवइ, अडणवइ (अष्टनवति) = अट्ठानवे

ण न)वणवइ (नवनवति) = निन्यानवे

एगूणसय (एकोनशत) ,,

सय (शत) = एक सौ

दुसय (द्विशत) = दो सौ

तिसय (त्रिशत) तीन सौ

वे सयाइं (द्वे शते) = दो सौ

तिण्णि सयाइं (त्रीणि शतानि) = तीन सौ

चत्तारि सयाइं (चत्वारि शतानि) = चार सौ

सहस्स (सहस्र) = हजार

वे सहस्साइं (द्वे सहस्रे) = दो हजार

तिण्णि सहस्साइं (त्रीणि सहस्राणि) = तीन हजार

चत्तारि सहस्साइं (चत्वारिसहस्राणि) = चार हजार

दह सहस्स (दश सहस्र) = दस हजार

अयुअ, अयुत (अयुत) = अयुत, दस हजार

लक्ख (लक्ष) = लाख

दस लक्ख, दह लक्ख (दशलक्ष) = दस लाख

पउअ, पउत, पयुअ (प्रयुत) = प्रयुत, दस लाख

कोडि (कोटि) = कोटि, करोड़

कोडाकोडि (कोटाकोटि) = काटोकोटि, करोड़ को करोड़ से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह ।

उपर्युक्त सभी शब्द सामान्यतः एकवचन में प्रयुक्त होते हैं उनके उपयोग की दो रीतियाँ इस प्रकार है :—जब 'वीस मनुष्य ऐसा कहना होता है तब 'वीसं मणुस्सा' अथवा 'वीसा मणुस्साणं' अर्थात् 'वीस मनुष्य', 'मनुष्यों की वीस संख्या' इस प्रकार इसके दो प्रकार के प्रयोग होते हैं ।

जब उपर्युक्त संख्यावाचक शब्द 'बीस', अथवा 'पचास' ऐसे अपनी-अपनी मात्र एकसंख्या सूचित करते हों तो वे एकवचन में प्रयुक्त होते हैं और जब 'बहुत बीस', 'बहुत पचास', इस प्रकार अपनी अनेकता बताते हों तब बहुवचन में आते हैं ।

वाक्य (हिन्दी)

उस आचार्य के छप्पन शिष्य हैं लेकिन उनमें एक अथवा दो ही अच्छे हैं ।
चन्द्र सोलह कलाओं से शोभित होता है ।
प्राचीन काल में पुरुष बहत्तर कलाएँ और स्त्री चौसठ कलाएँ सीखती थीं ।
उसने गुरु से पन्द्रह प्रश्न पूछे ।
तुमने अठत्तर ब्राह्मणों को धन दिया ।
आजकल श्रावक और साधु बारह अङ्गों को पढते हैं ।
ब्राह्मणों से चौदह विद्याएँ सीखी जाती हैं ।
महीने में तीस दिन होते हैं ।
पाँच मनुष्यों में (पञ्चों में) परमेश्वर वास करता है ।
मैंने निन्यानबे मुनियों को वन्दन किया ।

वाक्य (प्राकृत)

पंचण्हं वयाणं पढम वयं (व्रतम्) पसंसिज्जइ ।
चत्तारो कसाया दुक्खाइं देंति ।
दस बाला निसाए पढंति ।
बारह इत्थीओ वत्थाइं निक्खारंति ।
अट्ठारस जणा छत्तीसाहितो चोरेहितो न बीहेंति ।
पणुरस कोडीए वि न सन्तोसो होइ ।

तस्स घरे पोत्थयाणं सत्तरी दीसइ ।

सयेण दुसयं विढविज्जइ ।

एगोऽहं नत्थि मे कोऽवि ।

सव्वे संतु निरामया ।

सव्वे सुहिणो होंतु ।

सव्वे भद्दाइं पासन्तु ।

न होत्था को वि दुहिओ ।

छत्तीसवाँ पाठ

भूत कृदन्त

मूल धातु में 'त' अथवा 'अ' और शौरसेनी तथा मागधी में 'द' प्रत्यय लगाने पर भूत कृदन्त रूप बनते हैं। इन दोनों प्रत्ययों के परे रहने पर पूर्व के 'अ' को 'इ' होता[1] है। जैसे—

गम् + अ + त = गमितो } (गत) = गया हुआ।
गम् + अ + अ = गमिओ (शौ० मा० गमिदो) }

भावे—

गमिनं गमिअं, (गतम्) = गति, जाना।

कर्मणि—

गमितो गामो }
गमिओ गामो } (गत· ग्राम) = गया हुआ गाँव।

प्रेरक—

करावितो (शौ० मा० कराविदो) (कारापित) } = करवाया हुआ
कारिओ (शौ० मा० कारिदो) (कारित) }

अनियमित भूत कृदन्त

गयं[1] (गतम्) = गया हुआ, जाना।

मयं (मतम्) = माना हुआ, मानना, मत, अभिप्राय।

कडं (कृतम्) = किया हुआ, करना।

हडं (हृतम्) = हरण किया हुआ, हरण करना।

मडं (मृतम्) = मरा हुआ, मरना।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।३।१५६।

जिग्रं (जितम्) = जीता हुआ, जीतना ।

तत्तं (तप्तम्) = तपा हुआ, तपना

कयं (कृतम्) = किया हुआ, करना ।

दट्ठं
दिट्ठं } (दृष्टम्) = देखा हुआ, देखना ।

मिलाणं, मिलानं (म्लानम्) = कुम्हलाया हुआ, म्लान हुआ, म्लान ।

अक्खायं (आख्यातम्) = कहा हुआ, कहना ।

निहियं (निहितम्) = स्थापित किया हुआ, स्थापित करना ।

आणत्तं (आज्ञप्तम्) = आज्ञा किया हुआ, आज्ञा ।

संखयं (संस्कृतम्) = संस्कार, संस्कृत किया हुआ ।

सक्कयं (संस्कृतम्) = संस्कृत ।

आकुट्ठं (आक्रुष्टम्) = आक्रोश किया हुआ, आक्रोश ।

विणट्ठं (विनष्टम्) = विनष्ट, विनाश ।

पणट्ठं (प्रणष्टम्) = प्रनष्ट, नाश ।

मट्ठं (मृष्टम्) = शुद्ध, शोधन

हयं (हतम्) = हत हुआ, मारना ।

जायं (जातम्) = पैदा हुआ, होना ।

गिलाणं, गिलानं (ग्लानम्) = ग्लान हुआ, ग्लान ।

परूविग्रं (प्ररूपितम्) = प्ररूपित किया हुआ, प्ररूपण करना ।

ठियं (स्थितम्) = स्थित, स्थान ।

पिहियं (पिहितम्) = ढका हुआ, ढंकना ।

पण्णत्तं, पन्नत्तं (प्रज्ञपितम्) प्रज्ञापित, प्रज्ञापन करना ।
पन्नवियं (प्रज्ञपितम्)

किलिट्ठं (क्लिष्टम्) = क्लेश युक्त, क्लिष्ट ।

सुयं (स्मृतम्) = स्मरण किया हुआ, स्मरण ।

सुयं (श्रुतम्) = सुना हुआ सुनना ।

संसट्ठं (संसृष्टम्) = संसर्ग युक्त, संसर्ग ।

घट्ठं (घृष्टम्)=घिसा हुआ, घिसना।

उच्चारण भेद से बने हुए इन अनेक रूपों की साधनिका वर्णविकार नियम द्वारा समझ लें।

भविष्यत्कृदन्त

धातु में 'स्सन्त' अथवा 'स्सत' तथा 'इस्सन्त' अथवा 'इस्सत' लगाने से भविष्यत्कृदंत रूप बनते हैं। इसी प्रकार 'स्समाण' और 'इस्समाण' प्रत्यय लगाने से भविष्यत्कृदंत रूप बनते हैं—ऐसे अकारात नामों के रूप पुंलिंग में 'वीर' के समान होते हैं तथा नपुंसकलिंग में 'फल' के समान रूप बनते हैं।

धातु में 'स्सई' तथा 'इस्सई' प्रत्यय लगाने से तथा 'स्सन्त' अथवा 'स्संत' प्रत्यय का 'स्सन्ता' तथा 'स्सन्ती' बनाने से अथवा 'स्संता' तथा 'स्संती' बनाने से स्त्रीलिंगी भविष्यत्कृदंत बनते हैं। इसी प्रकार 'इस्संतो' तथा 'इस्संता' वगैरह प्रत्यय भी होते हैं तथा 'स्समाणा', 'स्समाणी', 'इस्समाणा', 'इस्समाणी' प्रत्यय भी बनते हैं।

उक्त प्रत्ययों में जो प्रत्यय आकारांत हैं उससे युक्त नामों के रूप 'माला' जैसे समझ लें तथा जो प्रत्यय ईकारांत हैं उससे युक्त नामों के रूप 'नदी' जैसे समझ लें।

उदाहरण—हो धातु—

पुंलिंग—होस्संतो, होस्समाणो } (भविष्यन्) = होता होगा

नपुंसकलिंग—होस्संत, होस्समाण } (भविष्यन्) ,,

स्त्रीलिंग—होस्सई, होईस्सई, होस्सन्ती, होस्सन्ता, होस्समाणी, होस्समाणा } (भविष्यन्ती) = होती होगी

कर् धातु—

पुं०—करिस्संतो (करिष्यन्:) = करता होगा ।

करिस्समाणो (करिष्यमाणः) ,,

नपुं०—करिस्संतं (करिष्यत्) ,,

करिस्समाणं (करिष्यमाणम्) ,,

स्त्री०—करिस्सई, करिस्संती, करिस्संता } (करिष्यन्ती) = करती होगी ।

करिस्समाणी, करिस्समाणा } (करिष्यमाणा) ,,

इत्यादि सब रूप समझ लेवें ।

प्रेरक भविष्यत्कृदन्त

पुं०—कराविस्संतो (कारापयिष्यन्) = करवाता होगा ।

,, —कराविस्समाणो (कारापयिष्यमाणः) ,,

नपुं०—कराविस्संतं (कारापयिष्यत्) ,,

कराविस्समाणं (कारापयिष्यमाणम्) ,,

स्त्री०—कराविस्सई, कराविस्संती } (कारापयिष्यन्ती) = करवाती होगी ।

कराविस्समाणा (कारापयिष्यमाणा)

इत्यादिक रूप भी समझ लेवें ।

कर्तृदर्शक कृदन्त

मूल धातु में 'इर'[1] प्रत्यय लगाने पर कर्तृदर्शक कृदन्त बनते हैं । जैसे—

हस् + इर—हसिरो (हसनशीलः) = हँसने वाला ।

---

१. हे० प्रा० व्या० ८।२।१४५ ।

नव् + इर—नविरो (नम्र —नमनशीलः) = झुकने वाला नमन शील,
हसिरा, हसिरी (हसनशीला) = हँसनेवाली ।
नविरा, नविरी, इत्यादि (नम्रा—नमनशीला) = नमनशीला ।
इसी प्रकार नपुं० हसिर, नविर रूप भी समझ लवें।

अनियमित कर्तृदर्शक कृदन्त

पायगो, पायओ (पाचक) = पकाने वाला, रसोइया।
नायगो, नायओ (नायक) = नायक, नेता, नेतृत्व करने वाला।
नेआ, नेता (नेता) = ,, ,,
विज्जं (विद्वान्) = विद्वान् ।
कत्ता (कर्ता) = कर्ता ।
विकत्ता (विकर्ता) = विकार करने वाला ।
वत्ता (वक्ता) = वक्ता—बोलने वाला ।
हता (हन्ता) = हन्ता, मारने वाला ।
छेत्ता (छेत्ता) = छेदन करने वाला ।
भेत्ता (भेत्ता) = भेदन करने वाला ।
कुम्भआरो (कुम्भकारः) = कुम्हार ।
कम्मगरो (कर्मकर) = काम करने वाला, श्रमिक ।
भारहरो (भारहर) = भार उठाने वाला, मजदूर ।
थणधयो (स्तनधय) = बालक, मा के स्तन से दूध पीने वाला बच्चा, छोटा बच्चा।
परंतवो (परतप) = शत्रु को तपाने वाला प्रतापी ।
लेहओ (लेखक) = लेखक, इत्यादि ।

अव्यय

अग्गे (अग्रे) = आगे, पूर्व ।
अकट्टु (अकृत्वा) = न करके ।
अईव, अतीव (अतीव) = अतीव-विशेष ।
अग्गओ (अग्रत:) = आगे से ।
अओ, अतो (अत:) = अत:, इस लिए
अण्णमण्णं (अन्योऽन्यम्) = परस्पर ।
अत्थं (अस्तम्) = अस्त होना ।
अत्थु (अस्तु) = हो ।
अद्धा (अद्धा) = समय ।
अण (नञ्-अन) = निषेध, विपरीत ।
अण्णहा (अन्यथा) = अन्यथा, नहीं तो ।
अणंतरं (अनन्तरम्) = इसके बाद, अन्तर रहित-तुरंत ।
अदुवा, अदुव (अथवा) = अथवा ।
अहुणा (अधुना) = अब, अभी ।
अप्पेव (अप्येव) = संशय ।
अभितो (अभित:) = चारों ओर ।
अम्मो (आश्चर्यम्) = आश्चर्य ।
अलं (अलम्) = अलं, बस, प्रर्याप्त, निषेध ।
अवस्सं (अवश्यम्) = अवश्य ।
असइं (असकृत्) = अनेक बार, बारम्बार ।
उप्पि, अवरिं, उवरि (उपरि) = ऊपर ।
अहत्ता (अधस्तात्) = नीचे ।
आहच्च (आहत्य) = बलात्कार ।
इओ, इतो (इत:) = इस तरफ, इधर से ।

इहरा (इतरथा) = अन्यथा, नहीं तो।
ईसिं (ईषत्) = थोड़ा।
उत्तरसुवे (उत्तरश्व) = भावि, परसों, आगामी दिन के बाद का दिन।
एगया (एकदा) = एक बार—एक समय।
एगतओ (एकान्तत) = एकान्त रूप से अथवा एक पक्षीय।
एत्थ (अत्र) = अत्र, यहाँ, इधर।
कल्लं (कल्यम्) = कल।
कह, कहं (कथम्) = किस प्रकार, क्यों ?
कालाओ (कालतः) = काल से, समय से।
केवच्चिरं (कियच्चिरम् = कितने लम्बे काल तक।
केवच्चिरेण (कियच्चिरेण) = कितने लम्बे समय से।

वाक्य (हिन्दी)

मूर्ख मनुष्य बडबड (लबलब) करता है।
राजा ने हंस कर लोगों को नमन किया।
मैं पापों का निरोध करने लिए उतावला हुआ।
महावीर को देखने के लिए लोगों द्वारा दौड़ा जाता है।
भोगों को भोग-भोग कर उनके द्वारा खेद पाया जाता है।
तत्त्व को जानकर विद्वान् द्वारा मुक्त हुआ जाता है।
प्रह्लादकुमार प्रजा के दु खों को समझ कर उनका सेवक हुआ।
जगत् में सभी (सब कुछ) हंसने जैसा है और रोने जैसा भी।
पुण्य इकट्ठा करने योग्य है और पाप जलाने योग्य है।
वह पढ़ता-पढ़ता सोता है।
पढ़ाया जाता हुआ प ठ उसके द्वारा सुना जाता है।

वाक्य (प्राकृत)

सज्जणो सच्चवयणं सोच्चा सद्दहइ।

मणूसा पुण्णं किच्चा देवा होंति ।
पावं परिच्चज्ज साहू हि सव्वं कीरइ ।
इंदो महावीरं वंदित्ता थुणइ ।
अवस्सं वोत्तव्वं वयंति महाणुभावा ।
दट्ठव्वं पासंति देक्खिरा नरा ।
नविरो बालो पियरं पणमइ ।
पायमेण ईसि अन्नं पत्थिज्जइ ।
एगया एवं मए सुयं जं, महावीरेण एवं कहिग्रं ।
पयाणं पालणेण पावं पिणट्ठं पुण्णं च जायं ।

॥ समत्तं इणं पोत्थयं ॥

प्राकृत शब्दों की सूची

इ

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
उवज्झाय=उपाध्याय		६७, ८३, १७५
उवट्ठिअ=उपस्थित–हाजिर		७१
उवणिअ=उपनीत–समीप में लाया हुआ		२४
उवणी (धा०)		२६६
उवणीअ=समीप में लाया हुआ		२४
उवदस् (धा०)		२६६, ३२३
उवदिस् (धा०)		२६६
उवमा=उपमा–तुलना		४०
उवरिं=ऊपर		२४, २१२, २७०
उवरि	,,	८७, २७०, ३६२
उवरिल्ल		३५७
उवलभामह=उपलभे अहम्–मैं पाता हूँ		६५
उवसग्ग=उपसर्ग–क्रियापद के सहायक शब्द		४०, १६२
उवस्तिद (मा०)=उपस्थित–हाजिर		७१
उवह=उभय–दोनों		८३
उवास् (धा०)		२६०
उवासग=उपासक–श्रावक, उपासना करने वाला		४४, २४२
उवाहि		२४०, २६७
उव्विग्ग=उद्वेग युक्त		५६, ६०
उव्विण्ण=उद्वेग युक्त		६०
उव्वीढ=धारण किया हुआ–पहना हुआ		२६
उव्वूढ	,,	२६
उश्चलदि (मा० क्रि०)=उछलता है		६५
उसभ=बैल अथवा ऋषभदेव		११८
उसभमजिअ=ऋषभ और अजित नाम के तीर्थंकर		६७
उसह=ऋषभदेव अथवा बैल		२८
उस्मा (मा०)=उष्मा–गरमी		६३
उस्साह (पालि)=उत्साह		७६

ऊ

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
ऊज्झाय–उपाध्याय		८३
ऊज्झायो		१६५
ऊरु=जंघा–जाघ		२५४
ऊर्ध (सं०)		१३२
ऊसव		२२६
ऊसार=वेग से जलवृष्टि		११

ॠ

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
ॠफिल (सं०)=विशेष सज्ञा		१३०

ए

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
एअ		२७०
एअ=एक		८१, १६६, ३७६
एआरस=एकादश–ग्यारह		५४, ३८०
एआरह	,,	४८, ५४, ३८०
एक–एक		८१, १६६, ३७६
एकचत्तालिस		३८१

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक

ओ

क

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
कसट (पै०)=कष्ट	९८
कसण=काला रंग	८६
कसाय=क्रोध, लोभ, वगैरह कषाय	४३
कसिन=काला रंग	८६
कसिवल	२००
कस्ट (मा०)=कष्ट	९३
कहं=किस प्रकार, क्यों	९८, ३९३
कह= ,,	९८, ३३२, ३९३
कहंपि=कथमपि—किसी भी प्रकार से	९६
कहमवि= ,,	९६
कहा=कथा-वार्ता	३७
कहि	२८३
कहिं	२८३, २९४
कहिअ=कथित—कहा हुआ	३४
कह् (धा०)	१५६, ३३२
काअ=काक—काग—कौआ	९२
काअव्वं	३७०
काउँअ=कामुक—लंपट	५०
कांबलिअ	२५५
काढ (चू० पै०)=गाढ—गाढ़ा	३८
कागीण	३५७
कातव्वं	३७०
काम	१८७
काय	१८९
कायव्वं	३७०
कारण	२११

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
काल	२१०
कालअ=काला	२०
कालाओ	३९३
कालायस=काला लोहा	५५
कालास= ,,	५१
कास=कांस्य—कांसा धातु विशेष	९८
कासा=कृश—दुर्बल स्त्री	२७
कासी=काशी—बनारस	१३०
काहल=कायर	४७
काहावण=कार्षापण—सुवर्ण का सिक्का	८१
काहिइ(क्रि०)=करेगा	९३
काही= ,,	९३
किं=क्या, क्यों	९७, १८९
किं एअं=क्या यह	८७
किं णेदं (शौ०)= ,,	८७
किं पि=कुछ भी	९६
किंसुअ=पलाश का फूल अथवा वृक्ष	२२, ९८
कि=क्या, क्यों	९७
किच्चं	३७०
किच्चा=कृत्वा—करके	९४, ३९८
किच्चाण	३९८
किच्ची=चमड़ा	७६
किटि (सं०)=सूअर	५२
किडि=सूअर	५२
कित्ति=कीर्ति	९७, ३१६
किण् (धा०)	३३४

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
कुत्तो	२०२
कुदाल (सं०)=कुद्दाल	१३१
कुदो (शौ०)=कहाँ से	६२
कुद्द् (धा०)	१६६
कुप्प् (धा०)	१४६
कुमर=कुमार, कुंवारा	२०, ४१, १९६
कुमारवर=उत्तम कुमार	२४२
कुमारी	३१६
कुम्पल	१८७
कुम्भार=कुम्हार	९३, १८२
कुल=कुल	४२, २४२
कुलवइ=कुलपति–गुरुकुल का आचार्य	२४०
कुवँर (अप०)=कुमार	४१
कुव्व् (धा०)	२८९
कुसग्गपुर=राजगृह का दूसरा नाम	२२७
कुसल	२१३
कुसुमपयर=फूलों का समूह	८२
कुसुमप्पयर= ,,	८१
कुह (वै०)=कहाँ	१२५
कुह् (धा०)	१५६
कूअ	२५९
कूज् (धा०)	२५९
कूर=ईषत्–थोड़ा	८३
केढव=कैटभ नाम का राक्षस	४५, ५०

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
केणवि=किसी भी प्रकार से	९६
केणावि= ,,	९६
केरिस=कैसा	८५, २२८
केल=केला का फल	८२, ११९
केलास=कैलास	३०
केली=केला का गाछ–पेड़	८२
केवच्चिरं	३९३
केवच्चिरेण	३९३
केवट्ट=मच्छीमार, मछलीमार	६७
केवलं	२८३
केसरि	२६७
केसाकेसी=एक दूसरे के बालों को खींच-खींच कर लड़ना	१०१
केसुअ=पलाश का–केसुड़ा का–फूल वा वृक्ष	२२, ९८
केह (अप०)=कैसा	८५
कोइ	१६५
कोउहल=कुतूहल	२५, २६, ८१
कोउहल्ल= ,,	८१
कोऊहल= ,,	२६
कोकिल=कोयल	२५५
कोच्छेअय=तलवार	३२
कोट्ठागार=कोठार	६८
कोडाकोडि	३८४
कोडि	३८४
कोडुंबिअ	२५५

घ

शब्द अर्थ पृष्ठांक

जेह् (अप०)=जैसा ८५
जोअ=द्योत-प्रकाश ६६
जोइअ २०९
जोइसिअ २५६
जोगि २६७
जोण्हा=ज्योत्स्ना-चद्र की चद्रिका ६९
जोत् (धा०)=प्रकाश करना १५४
जोव्वण=यौवन-जवानी २८१

झ

झज्झर=झर्झर-घड़ा, झझर ३८
झडिल=जटावाला ४५
झल्री (स०)=झालर १३२
झषोद्र=मछली के समान चम-
कीले पेटवाला १०१
झा (धा०) १५०
झाण=ध्यान ६७
झाम् (धा०) ३२४
झायइ (क्रि०)=ध्यान करता है ६७
झिज्जइ (क्रि०)=क्षय पाता है ६७
झीण=क्षीण-क्षय पाया हुआ ६७
झुणि=ध्वनि-शब्द १८, २८०

ट

टगर=तगर का सुगधी काष्ठ ४६
टमरुक (चू० पै०)= ड॰ ३८

शब्द अर्थ पृष्ठांक

टसर=एक प्रकार का सूत ४६
टूवर=दाढी-मूँछ न हो वैसा ४६

ठ

ठभ=स्तम-थभा ७७
ठभइ (क्रि०)=वह स्तब्ध होता
है-गति रहित है ७७
ठभिज्जइ (क्रि०)=गति रहित
होना ७७
ठम् (धा०)=गति न करना-
खड़ा रहना ७७
ठक्का (चू० पै०)=ढका-डका-
नगाड़ा ७७, ७८
ठड्ढ=ठाढ़ा-खड़ा २६४
ठद्ध=ठाढ़ा-खड़ा ५८, ७०
ठा (धा०) १५०
ठीण=जमा हुआ घी २०, ७७

ड

डड=दड-डडा ४८, ११८
डम=दम-कपट ४८, ११८
डस् (धा०)=डँसना ४८
डक्क=डँसा हुआ ७५
डज्झमाण २६९
डट्ठ=डसा हुआ ४८

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
णेइ क्रि०)=ले जाता है	४०
णेउ	२५७
णेय=जानने योग्य	६१
ण्हाअ=न्हाया हुआ	६६, ७०
ण्हारु=स्नायु-शरीर के स्नायु	५१
ण्हाविअ=नापित-स्नापित-स्नान कराने वाला-हजाम	४६, २४२
ण्हुसा=पुत्रवधू	७०, ८७, ३१३

त

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
तअ	२०६
तइअ=तीसरा	५१
तइज्ज=तीसरा	५१, २८२
तइय= ,,	२८२
तईया=तीसरी	१०३
तओ=ततः-बाद से-तब से	३४, ६२
त=तत्-वह	९७
तउ=तन्तु-सूत	२६७
तंब=ताम्र	७०, ११६, २८१
तंबोल=ताम्बूल-तबोल-पान	२५६
तंबोलिअ=तंबोली-तमोली-तबोल-पान बेचने वाला	२५६
तंस=त्र्यस्र-तिन कोण वाला	८२, ८७, २६४
त	१९६
तगर=तगर का सुगंधी काष्ठ	४६
तच्च=तथ्य-सच्चा	७६
तच्छ= ,,	७६
तच्छ् (धा०)	२१४
तटाक (चू० पै०)=तलाव	३८
तट्ठ (स०)=त्रस्त-त्रास पाया हुआ	८३
तडाक (स०)=तलाव	१२८
तडाग (पै०)= ,,	३८
तडाय= ,,	३८
तण=तृण-घास	२४३
तणुवी=पतली-कृश	७४, ११७, २१६
तण्हा	३१३
ततो=तत.-तब से-बाद से	६२
तत्तो	१८६, २१२
तत्थ=तहा	८३, १९३
तदो (शौ०)=तत'-तब से	३४, ६२
तदो तदो (शौ०)=ततः तत.	६२
तप (स०)=तप-तपश्चर्या	१२७
तप्पुरिस=तत्पुरुप-समास	१०२
तम=अंधेरा	३२, ११३, १२७
तम्ब=ताम्बा	८०
तम्बा (स०)=गउ-गौ-गाय	१२९
तम्मसहर-तम्मि+असहर=उसमें भाग लेने वाला	९५
तया	३५७
तरणि=सूरज	८९
तरणी= ,,	८९

शब्द अर्थ	पृष्ठांक
दिण	२८१
दिणयर	२००
दिणेस=सूर्य	९६
दिण्ण=दिना–दिया हुआ	१८, ७८
दित्ति	२१५
दिप्प् (धा०)	१४६
दियड्ढ=डेढ़–१॥ संख्या	२८२
दिवड्ढ= ,,	२८२
दिवस=दिवस	५४
दिवह=दिह–दिवस	५४
दिविदिवि (अप०)=रोजरोज–नित्य	१२५
दिव्व् (धा०)	१५४
दिसट (पै०)=देखा हुआ	६८
दिसा=दिशा	८३, ३१३
दिहि=धैर्य–धृति	८४, ३१५
दीवतेल्ल	२८१
दीवेल्ल	२८१
दीव् (धा०)	१४६
दीह=दीर्घ–लंबा	८१
दीहा (अप०)=दीर्घ	१७
दु=दो–२ संख्या	२२, १६३, ३१७
दुअल्ल=दुकूल–कपडा	२५
दुआइ=द्विजाति–ब्राह्मण	६०
दुआर=दार–द्वार–दरवाजा	८७
दुइअ=दूसरा	२२
दुइज्ज=दूसरा	२८२
दुइय= ,,	२३, २८२
दुउण=द्विगुण–दुगुना	२२
दुऊल=कपडा	२५
दुक्कड=दुष्कृत–पाप	४७
दुक्कय= ,,	४७
दुक्काल	२२६
दुक्ख	८१, १८८
दुक्खदंसि	२४०
दुक्खिअ=दुःखी	५६, ८१
दुगुल्ल=कपड़ा	४४
दुग्गंधि	२५५
दुग्गच्छइ	१६३
दुग्गाएवी=दुर्गा देवी	५५
दुग्गादेवी= ,,	५५
दुग्गावी= ,,	५५, ११७
दुचत्तालिसा	३८१
दुट्ठु	२२८
दुण्णि	११४
दुद्ध=दूध	५७, २२७, ३२७
दुपण्णासा	३८२
दुप्पूरिय	२१३
दुम=वृक्ष	६१, २०६
दुरइक्कम=नहीं टाला जा सके ऐसा	६६
दुरणुचर	२१२
दुरतिक्कम	२१३

न

प

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
पउट्ट	=हाथ का पहुँचा—कलाई और केहुनी के वीच का भाग	४४
पउत		३८४
पउम	=पद्म—कमल	८७
पउर	=प्रचुर—अधिक	३१
पंक	=पंक—कादव, कांदो	६८
पंगुरण	=प्रावरण—वस्त्र	८२
पंच		३७६
पंचणवइ		३८३
पंचम		२८२
पंचमी	=पांचवीं	१०३
पंचावण्णा		३८२
पंचासीइ		३८३
पंजर		२४२
पंजल	=सरल	६६
पंडिअ		१८८
पंत		२६६
पंति		३१५
पंथ	=पंथ—रास्ता	६८, १२६
पंथव (चू० पै०)	=बांधव—भाई	३५, ३८
पंसु	=परशु—फरसा—फरसी	८७
पंसु	=धूल	६८
पक्क	=पका हुआ	१८, ५८
पक्ख		२४२
पक्खंदे	=गिरे—प्रवेश करे	६३

शब्द	अर्थ	पृष्ठांक
पक्खलइ (क्रि०)	=वह स्खलित होता है	६४
पक्खाल् (धा०)		२८३, ३२५
पक्खि		२४१
पङ्क	=पंक—कादव	६८
पगरक्ख		२५६
पच्चं	=पकाने योग्य	३७१
पचप्पिण् (धा०)		२६६
पचय	-विश्वास	६४
पच्चूस	=प्रातःकाल	५४
पच्चूह	= ,,	५४, ६४
पच्छ	=पथ्य	६५, २२८
पच्छा	=पीछे	६५, २२८
पच्छिम	=पश्चिम—अंतिम	६५
पजान (पालि)	=विशेष ज्ञान	६१
पज्जंत	=पर्यंत	८०
पज्जत्त	=पूरा	६६
पज्जर् (धा०)		३२४
पज्जा	=प्रज्ञा—बुद्धि	६१
पज्जुण्ण	=प्रद्युम्न—कृष्ण का पुत्र	६६, २२६
पज्झीण	=प्रक्षीण—विशेष क्षीण	६७
पञ्जर		१८७
पञ्जल (मा०)	=सरल—निष्कपट	६६
पञ्ञा (मा० तथा पै०)	=प्रज्ञा—बुद्धि	६६

—

—

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
बारस	३८०
बारह=गणनात्मक-संख्या विशेष	४८, ३८०
बालअ=बालक	३५
बालिश (स०)=मूर्ख	१२८
बालो वरऽभइ=बालक अपराध करता है	६५
बावण्णा	३८२
बावत्तरि	३८२
बावीसा	३८०
बासट्ठि	३८२
बासत्तरि	३८२
बासीइ	३८३
बाह=आसू	८१
बाहा	३१४
बाहिं=बाहर	८४
बाहिर= ,,	८४
बाहु	२४१
बाह् (धा०)	१५६
बिइअ=दूसरा	२२, ६२
बिइज्ज-बीजा-दूसरा	५१, २८२
बिइय= ,,	२८२
बिईय= ,,	५६
बिईया=दूसरी	१०३
बिउण-द्विगुण-दुगुना	२२, ५६
बिंदु=बिंदु-बिंदी	२४०
बिन्दु=बिंदी	६०
बिब्भल=विह्वल-व्याकुल	७२, ११५
बिभीतक (स०)=बहेड़ा का फल या वृक्ष	४७
बिलाल (स०)=बिलाव-बिल्ली	१२८
बिसट्ठि	३८२
बिसिनी=कमल की लता	५०
बिहत्तरि	३८२
बिहप्फइ=बृहस्पति-बीफे	२७, ७२
बीअ=बीज	२४७
बीअ=दूसरा	६३
बीलिअ	२२८
बीह् (धा०)	१५८
बुध=वृक्ष के नीचे का भाग-थड	८७
बुब्भा	२६८
बुद्ध	१७५, २८१, २४३
बुह	१७५
बुहप्पइ=बृहस्पति	७१, ७२
बुहप्फइ= ,,	२८, ६४, ७२
बुहस्पदि (मा०)= ,,	६४
बू	१५०
बेआला	३८१
बेआलिसा	३८१
बेइल्ल=बेल की लता-मोगरे की लता	८१, ८३
बेलगाँव=वेणुग्राम-जहाँ बाँस अधिक होते हैं वह गाँव	४६

शब्द अर्थ	पृष्ठाङ्क
मिलाण=कुम्हलाया हुआ–मुरझाया हुआ	७३
मिलिच्छ	२२५
मिहिलानयर	२५७
मुइग	३२६
मुच्	१६६
मुढ=मूर्धा–मस्तक–सिर	८७
मुढा= ”	७८
मुकुतिक (स०)=मौक्तिक–मोती	१३५
मुक्क=मुक्त–मुका हुआ–छुटा हुआ	७५
मुक्क=मूक–मूगा–गूगा	८१
मुक्ख=मूर्ख	८७
मुग्गर=मोगरे का फूल	५७
मुग्ग=मूग नाम का धान्य	५७
मुट्ठि=मूठी	६८
मुणि	२६६
मुणियर (मुणि+इयर)=मुनि से जुदा मनुष्य	६४
मुण् (धा०)=जानना–मानना	३२४
मुत्त=मुक्त–छुटा हुआ	५६, ७५, ३२८
मुत्ताहल=मोती	४१
मुत्ति=मूर्ति–प्रतिबिंब	६७
मुद्दा=माया	७८, ८७
मुध्ध=मुग्ध–मोह युक्त	५७, ३२८
मुरुक्ख=मूर्ख	८७
मुषल (स०)=मुसल	१३५
मुस	२१२
मुसल=मूसल	२५
मुसा=असत्य	२८, २१२
मुसान (पालि)–श्मशान	८४
मुह–मुख–वदन	३७, १८१
मुहल=वाचाल–बकनेवाला	५१
मुहल=मुसल	५२
मुहुत्त	६७, २१०
मुहेर (स०)=मूर्ख	१२६
मूअ=गूगा	८१, २८०
मूढ	१८८
मूसअ	२२६
मूसय	२२६
मूसा=असत्य–मृषा	२८, २१२
मेख (चू० पै०)=मेघ	३८
मेघ (पै०)=मेघ	३८, ३०२
मेघ=मेघ	३७
मेढि=आधाररूप	४८
मेत्त=मात्र–केवल	२१
मेथि आधाररूप	४८
मेरा=मर्यादा	२२
मेलव् (धा०)	३२४
मेह=मेघ	३७, ३८, १७५
मेहा	३१३
मेहावि	२५६
मोक्ख	१८६

शब्द	अर्थ	पृष्ठाङ्क
ल~कश=(मा०)=राक्षस		६३
लक्ख		२६६, ३८४
लक्खण=लक्षण		६२, १८८
लग्ग=लगा हुआ		५८
लघुक		८८
लघुवी		७४, ११७
लङ्गल		५३
लच्छण=लक्षण		१८८
लट्टि=लाठी		५१, ६८
लण्ह=लघु–बहुत छोटा		१३८
लभ्=(धा०)		२८९
लवण=नमक–नोन–नून		८३
लविअ=बोला हुआ		३३
लव्=(धा०)		१४६
लहु		२५५
लहुअ=छोटा		८८, २५८
लहुवी=छोटी		७४
लहे (क्रि०)=पाया जाय		२९८
लह् (धा०)		१५६
लाऊ=लौकी		१६, ३१७
लाक्षा (सं०)		१३०
लाखा (पालि०)=लाख		६४
लाञ्छन=लांछन–चिह्न, कलंक		११३
लाभ		२०९
लायण्ण=लावण्य		३७, ११६, १८७
लावण्ण= ,,		१८७
लावू=लौकी		१२६
लाह		२०९
लाहल=विशेष प्रकार का म्लेच्छ		५३
लाहालाहा=लाभ और अलाभ		१०२
लिंब=नीम का पेड़		४९
लिच्छइ=(क्रि०)=लाभ पाना चाहता है		६५
लिच्छा=लाभ पाने की इच्छा		६५
लिप्प् (धा०)		२७१
लिवि=लिपि–अक्षर		१२६
लिह्=(धा०)		१५६
लुक्क=बीमार		५२, ७५
लुग्ग=बीमार		७५
लुण् (धा०)		१६६
लुद्धअ=लालची–लंपट		५८
लुट्ट् (धा०)		१४६
लूह		२६९
लूफिड (सं०)=विशेष नाम		१२७
लेहसालिअ		२६८
लेहा		३२८
लोअ		३३, ६२, ११६, २१०
लोग		४४, २१०
लोद्धअ=लालची–लंपट		५८
लोण=नमक–नून–नोन		८३
लोणीअ=मक्खन		८३
लोम (सं०)=रोम		१२०

विशेष शब्दों की सूची

(१) शुद्धि-पत्रक

१. कुछ स्थान पर धातु व्यञ्जनान्त नहीं छपे हैं; वहाँ धातु को व्यञ्जनान्त समझ लेना चाहिए।

२. पुलिङ्ग को सब जगह पुलिङ्ग समझना चाहिए।

३. पुस्तक में अनेक स्थान पर अनुस्वार स्पष्ट रूप से नहीं छपे हैं।

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
२ दूसरा टिप्पण	याने 'ए'	यह 'ऐ'
३ नंबर (८)	ल	ळ
५ नंबर (१२)	बुद्ध	बुद्ध
७ नंबर (२३)	तथ	तथा
७ शब्दविभाग	हैं।	हैं
९	गड्ढा	गड्ढा
१०	एली, बरसाती कीड़ा	एली–निरन्तर बरसात
१०		जिन नियमों के साथ इत्यादि से लेकर समझना चाहिए। यहाँ तक का भाग निकाल दें।
११	ह्रस्व से दीर्घ	(१) ह्रस्व से दीर्घ
१७ १.	पुना	पुणा
२५	यास्फ	यास्क
२६	'ऊ' को 'ए'	'ऊ' को 'ए' तथा 'इ'
२६	नूउर	नूउर, निउर
३३	विजण,	व्यजन,
३६	पृ० ५५, ५७	पृ० ५६, ५७
३९	में भी	में

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
४३	'ल'	'ळ'
४४	खुज्ज	खुज्ज* *जब 'कुब्ज' शब्द 'पुष्प' वाचक हो तब उसका 'कुज्ज' रूप बनाना। ऐसा टिप्पण बढ़ाना।
४४	चिलाअ याने	चिलाअ=
४८ नियम ११	दह्	÷दह्
,, ,,	दम्भ। दृष्ट —	दम्भ। 8 दर–डर। दृष्ट– 8 भय अर्थ में ही 'डर' रूप बनता है। ऐसा टिप्पण बढ़ाना।
४८ टिप्पण में	समझना	समझने
५८	(नि० २६)	(नि० २५)
५९	धात्री-धाती	धात्री–धती–धत्ती
६१	प्राकृत भाषा में पिया	प्राकृत भाषा में पिय। पालि भाषा में ऐसे होने वाले रूपांतरों के लिए देखिए—पालिप्रकाश पृ० ३०, ३१ (नि० ३६, ३७); पृ० ३२, ३३ (नि० ३८, ३९); पृ० ३५ (नि० ४२); पृ० १० (नि० १२); पृ० १२, १३ (नि० १५, १६)।
	अः को ओ[२]	अः को ओ[२]
६६	करेज्जहि	करेज्जहि
७७	वट्टि।)	वट्टि।)

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
७७	ठड्ढ। (याने	ठड्ढ=निरपद
७७	हिन्दी में खडा)	व्यापक हिन्दी में ठाढ़ा-खड़ा)
८२	में द्विर्भाव	में वैकल्पिक द्विर्भाव
८२	कुसुप्पयर,	कुसुमप्पयर,
८२	कमल-केल, कमल।	कदल-केल, कयल।
८३ नि० २८	विविध	सर्वथा
८३	तिरिया	तिरिय
८३	तिरिच्छि	तिरिच्छि
८४	मसाण[१]।	मसाण[१]। (देखिए-पा० प्र० से मुसान) तक का सारा उल्लेख। इसके बाद अलग पैरेग्राफ में होना चाहिए — [२]अपभ्रंश भाषा में
	[२]अपभ्रंश भाषा में	
८६	स्वप्न-	स्वप्न-
८७	अइमुत्तय,	अइमुतय,
८७	मणसि।	मणसि।
९१	पिट्ठी	पिट्ठी
९४	मुणियर।	मुणीयर।
९६ नि० १२	केह +	कह +
९६ नि० १७	'अ' का	'म्' का
९७	वणमि,	वणमि,
९८ नि० २३	एग्गमेग।	एगमेग।
९८	आल	अल
९८ ,,	तुहमाल	तुहमल
१०७	नहोमोहो	नहमोहो
११०	पाणिनिकाल से	पाणिनि के काल से
१११	इच्छाति	इच्छति
१२०	चतुखन	चतुरत

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१२२ नि० ३२	संज्ञा	कितनेक
१३६	वैदिक पांडतोने	वैदिक पंडितों ने
१३७	महर्षि पणिनि	महर्षि पाणिनि
१४०	उतावला करना	उतावला होना
	जलदी करना	जल्दी करना
१४०	पूजना, अर्चना	पूजना—अर्चना—अर्चन करना
१४०	काढना	निकालना—काढना,
	खींचना	खींचना, खेडना
१४२	तू उतावला करता	तू उतावला होता
१४४	दूसरी भाषा में	भाषा में
१४६	तेपना, संतान	तपना, संताप
१४६	खिव् (त्तृप्)	खिव् (त्तिप्)
१४६	दीव	दीव्
१४६	लुह (लुप्य)	लुट्ट् (लुट्य्)
१४६	बेदुवचनीय	बहुवचनीय
१४७	हम लोटते	हम आलोटते
१४७	जाप कहते	जाप करते
१४७	तू लोटता	तू आलोटता
१४८	जीवमो	जविमो
१५२	वेजामो	वे जामो
१५४	नि + प्वज्ज	नि + प्वज्ज्
१५४	धोतित होना	द्योतित होना
१५६	पाचवा	पाँचवाँ
१५६	छिलाह	छिलाह्
१५९	सूस	सूस्

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१५६	सुस्स	सुस्स्
१५६	नस्स	नस्स्
१५६	रूस	रूस्
१५६	रूस्स	रूस्स्
१६३	सामने जाता है।	सामने बोलता है।
१६६	(वीरं)	(वीरम्)
१७२	वीर+ओ=वीरो	वीर+ओ=वीरो, वीर+ए= वीर
१७२	वीर+म्=वीर (वीर।	वार+म्=वीरं (वीर)
१७३	'हि' प्रत्यय परे रहने पर	'हि' प्रत्यय को
१७४	छान्दस नियम की तरह चतुर्थी	छान्दस भाषा की तरह प्राकृत भाषा में भी चतुर्थी
१७४	उपभोग	उपयोग
१७८	(कसल !)	(कमल !)
१७८	१०, 'णि' 'इ'	१०, 'णि', 'इ'
१७९	महु+इ=महूइ	महु+इँ=महूइँ
१८२	अजिन	अजिण
१८३	वह्	वध्
१८५	मायणम्मि	मायणम्मि
१८५	कुम्मारो	कुम्भारो
१८५	मरथयेण	मरथएण
१८५	कुप्पई।	कुप्पइ।
१८५	कुत्	कुन
१८८	पतित, तोता, शुक पक्षी।	तोता पण्डित।
१८६	सोभ्	सोध्
१९१	······पढिता।	·····पंडिता?

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१९४	प्र० सव्वे	प्र० सव्वो, सव्वे
१९५	च० सव्वाअ	च० सव्वाण
१९७	ते)	तेषाम्)
१९९	एण, इक्क	एग, इक्क
२००	प्रसाद, महल	प्रासाद, महल
२००	ब्राह्मण।	ब्राह्मण।
२०४	शव्वेसिं पाणाणं	सव्वेसिं पाणाणं
२०४	भाणवाण	माणवाण
२०५	(त्वाम्), वो (वः)	(त्वाम्)
२०५	तुम्हे, तुब्भे, (युष्मान्)	तुम्हे, तुब्भे (युष्मान्), वो (वः)
२०६	प्र० अहं	प्र० हं, अहं
२१७	वीराणं भग्गो	वीराणं मग्गो
२१७	न हणेज्जा पुरसा।	न हणेज्जा।
२१७	तुममेव तुमं	पुरिसा। तुममेव तुमं
२१७	कडेहिन्तो कम्मेहिंतो	कडेहिंतो कम्मेहिंतो
२१७	'मोयणं मे'	'भोयणं मे'
२१८	...भाणवाणं...खलु आउ	...माणवाणं...खलु आउयं।
२१८	पवड्ढ	पवड्ढइ।
२१९	हियतनी	हीयत्तनी
२३१	वयगो वयासी।	वयणं वयासी।
२४२	मार (मार) = मार।	भार (भार) = भार।
२४४	अपमान कर	अपमान करना।
२४६	मुनियो का पति महावीर	मुनियों के पति महावीर ने
२४६	...बुद्धं दिज्ज।	...दुद्धं दिज्ज।
२४७	गणवइ	गणवई

पृष्ठ		अशुद्ध	शुद्ध
२५५		दुहि (दुःखिन्) = दु	दुहि (दु खिन्)=दु.खी ।
२५५		कु दुंबि	कुडुंबि
२५५		कोटुंबिअ (कौटुम्बिक) कुटुम्बी	कोडुंबिअ (कौटुम्बिक)= कुटुम्बी
२५६		सुत्तहार (सूत्रहार)	सुत्तहार (सूत्रधार)
२५७		पट्टोल (पट्टकूल)=पटोल	पट्टोल (पट्टकूल) पटोला नाम का कपडा
२५७		महिलानयर	मिहिला नयर
२५७		रूप्प	रुप्प
२५७		रूप्प	रुप्प
२५८		अचेल्य, अएल्य (अचेलक)=बिना वस्त्र का	अचेल्य, अएल्य (अचेलक)=ऐलक, बिना वस्त्र का
२५८		थोडा, इषत्	थोड़ा, ईषत्
२६०		मुद्ग (मूँगी)	मुद्ग (मूँग)
२६०		तमोली पान ..	तम्बोली पान
२६१		गुरुण्मतिए	गुरूणमतिए .
२६१		मक्चू ..	मच्चू..
२६१		गुरुणो अनुसासण ..	गुरुणो अणुसासणं.
२६१		तुमे नचिरस्सह...	तुमे नच्चिरस्सइ ..
२६३		'काहें' इत्यादि	'काह' इत्यादि
२६३	टिप्पण, ३	दिस (दश)	दिस दश)
"	"	जा (इया)	जा (या)
"	"	जानिस्सति	जाइस्सति
२६७		द्वि० अह, अमु	द्वि० अह, अमु
२६७		माराभिशकिं	माराभिसंकि
२६९		रूप	रूव
२६९		डज्झमाण (दह्यमान)= जला हुआ ।	डज्झमाण (दह्यमान)= जलता हुआ ।

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
२६९	लक्ख, लूह (रुक्ष)	लुक्ख, लूह (रूक्ष)
२७०	प्र + गब्भ	प + गब्भ
२७०	विंध् (विंध्य)	विंध् (विध्य)
२७०	उप्पि	उप्पिं
२७१	पुर्ण	पूर्ण
२७२	सुवं भोच्छं।	सुहं भोच्छं।
२७२	गुरुणो सच्चमाहसु ।	गुरुणो सच्चमाहंसु ।
२७२	तवेण पावाइं भंच्छं।	तवेण पावाइं भेच्छं।
२७२	महासीड्ढ···।	महाघड्ढी···।
२७८	दायरा	दायारा
२८०	पुलिङ्ग	पुंलिङ्ग
२८१	(सुराष्ट्रीय)	(सौराष्ट्रीय)
२८१	कोहल (कूष्माण्ड)= पेठा	कोहल (कूष्माण्ड)= कोहँड़ा
२८३	यहाँ से वाक्य, का आरंभ	यहाँ से, वाक्य का आरंभ
२८३	(परि + व्यय्)	(परि + व्रज्)
२८४	१८४	२८४
२८५	मम वहीणीवई···	मम वहिणीवई···
२८६	आज्ञार्थक प्रत्यय	विध्यर्थ और आज्ञार्थक प्रत्यय
२८६	पुरन्त	परन्तु
२८९	···छिटना।	···छिटना।
२८९	पसस्	पस्स्
९३	छेअ (छेद)=छिद्र (अन्त, सिरा)	छेअ (छेद)=अन्त
२९४	अहिनव	अहिणव
२९८	सद्दह	सद्दह्
२९९	उव + दस्	उव + ˚स्

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
३०१	वरजे।	वर्जे।
३०१	तुझ को···	तुझे···
३०२	वत्तेग	वित्तेग
३०२	तथा	तया
३०३	अकारान्त	आकारान्त
३०३	हे मेघा!	हे मेहा!
३०६	(वाक्) मूल अकारान्त नहीं है)	(वाक्-मूल आकारान्त नहीं है)
३१२	बुढिओ	बुड्ढीओ
३१४	फूआ	फूफी
३१६	कति	कंति
३१६	कच्छु (कच्छू)	कच्छु (कच्छु)
३१६	वावली	वावडी
३१८	खति	खंति
३१६	मूल धातु में	मूल धातु को
३२०, २.	'अ' जौर	'अ' और
३२१	'भम' धातु का	'भम्' धातु का
३२३	आ+सार् (आ+स्-सार)	आ+सार् (आ+सार)
३२३	अ+ल्लव्	उ+ल्लव्
३२४	झाम् (दह्)	झाम् (ध्मा ?, दह्)
३२४	स+घ् (कथ्)	स+घ् (कथ्)
३२५	लज्जित करना	लज्जित होना
३२५	वलग्ग (बिलग्न)	वलग्ग् (वि+लग्न)
३२५	(प्र+सर)	(प्र+सर्)
३२७	(हरिश्चन्द)	(हरिश्चन्द्र)
३३०	बीसहाँ	बीसवाँ

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
३३१	व्याकरण में 'रीना'	व्याकरण में 'रोना'
३३१	लज्जि	लज्जिवा
३३२	पाइच्च ।	पाइज्ज ।
३३७	णव्व-(णव्वते)	णव्व-णव्वते
३३८	मिच्	सिच्
३४२	ल्ब्वंति ।	लुव्वंति ।
३४२	घुव्वंते	धुव्वंते
३४३	नयत	नयंत
३४८	राइसु	राईसु
३५३	सद्दल्लो	सद्दुल्लो
३५५	सण[१] + इअ=सणिअं	सण[१] + इअं=सणिअं
३५६	हेट्ठिल	हेट्ठिल्ल
३५९	घूमा-घूमा करता है ।	घूम-घूम करता है ।
३५९	अपने आपकी···	अपने आपको···
३६३	गेण्ह + तुं=वेतुं	गेण्ह + तुं=घेत्तुं
३६३	मुञ्च् + तुं=मात्तुं	मुञ्च् + तुं=मोत्तुं
३६८	वंदिता	वंदित्ता
,,	पृष्ठ ३५३ से ३६८ दूसरी दफे छपा है ।	यहाँ ३६९ से ३८४ समझना ।
३७०	हसणोयं	हसणीयं
३७०	कावंव्य	कायव्वं
३७१	घेतव्वं	घेत्तव्वं
३७२	मूल धातु में	मूल धातु को
३७२	होइता	होइंता
३७२	हुती, हुता	हुंती, हुंता
३७३	करावि + क + माण	करावि + अ + माण

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
३७४	मणज्जणमाल	मणिज्जमाण
३७८	म णीअमण	मणीअमाण
३७४	पढा जाता हुआ,	पढा जाता हुआ,
३८०	दुवासल	दुवालस
३८०	इक्क वीसा	इक्कवीसा
३८२	दुपण्णासा	दुपण्णासा
३८२	त्रिपन	त्रेपन
३८४	सहस्स सहस्र)	सहस्स (सहस्र)
३८४	प्रयुक्त' होते हैं	प्रयुक्त होते हैं।
३९४	पायमेणा इसि अन्न	पायगेण इसि अन्न
	परिथज्जइ।	पयिज्जइ।
३९४	···पिणट्ठ···	···विणट्ठ

(२) शब्दकोश का शुद्धि-पत्रक

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१	अइमुनय	अइमुत्तय
१	अतर अतर	अतर=अतर
१	अजलो	अजली
३	अगुजाण्	अणुजाण्
३	अण्इ	अण्ह(धा०)
४	अनुजाण्गा (धा०)	अणुजाण् (धा०)
४	अन्तिका=अत्तिका	अन्तिका, अत्तिका (स०)-
४	अथवा अ लस्त	अथवा अलस्त
४	अब्बा=अबा	अम्बा, अम्बा (स०)-
६	अहिनव	अहिणव
१०	उप्पि	उप्पि
१०	उब्भ=ऊर्व	उब्भ=ऊर्ध्व

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१०	उम्बुरक=	उम्बुरक (सं)=
१३	कइ	कति
१३	कैंसा	कैसा
१४	वहुत में–से	वहुत में से
१५	कररूह	कररुह
१६	कर्पापण	कार्पापण
१७	किलमत	क्लिमंत
१७	कृ्अ	कृ्अ (धा०)
	५४	४५
२२	गोलोर्चा=गिलोई	गोलोची (पालि)=गिलोई
२७	जुगुच= (धा०)	जुगुच्छ (धा०)
२७	जुंज	जुंज्
२७	जुत्तति	जुत्तंति
२९	टमरुक (चू० पै०)=ड	टमरुक (चू० पै०)=डमरू
३१	तओं	तओ
३३	तिरिया (पालि)	तिरिंय (पालि)
३५	दाढिका	दाढ़िका (सं०)=
३५	दिट्ट+इति	दिट्ठ+इति
३७	देवत	देवता
३९	नवफलिका	नवफलिका (सं०)=
३९	नाली	नाली (सं०)=
४०	निप्पुंसण=पोछना	निप्पुंसण=पोंछना
४१	नोहलिया······८२	नोहलिया······८३
४२	पक्खाल (धा०)	पक्खाल् (धा०)
४३	पट्टोल=वस्त्र	पट्टोल=एक प्रकार का वस्त्र, पटोला
४३	डंमुआ	पडंमुआ

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
४३	पपडिवज्ज् (धा०)	पडिवज्ज् (धा०)
४७	हड	पिहड
४८	पुल्पि (स०)	पुप्प (स०)
५०	बमचेर	बमचेर
५१	बु	बु (धा०)
५२	बेसायाइ	बे सयाइ
५२	बेसहस्साइ	बे सहस्साइ
५२	बोल्ल्	बोल्ल् (धा०)
५२	भग्नी (स०	भग्नी (स०)
५२	भणिता	भणिता (स०)
५२	भएय	भयए
५२	भागिनी=स्त्री	भागिनी (स०)=स्त्री
५४	पीछ	पीछे
५६	मिइग	मिइग
५७	मुइग	मुइग
५८	रमस	रमस (पै०)
५८	रम्मा	रम्मा (स०)
५६	लघण	लषण
५६	रीय् ६२	रीय्=२२६
६१	गोलकार	गोलाकार
६३	वावण	वावड
६४	विशेष दाप्ति	विशेष दीप्ति
६५	वीसर	वीसर् (धा०)
६७	सढ	सढ
६७	सट्टि	सट्ठि

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
६७	सढा=जटा अथवा केसर-सिंह आदि के गर्दन की बाल	सढा=जटा अथवा सिंह आदि की केसरा-गर्दन के बाल
६८	समत्तदंसि=शबर-किरात-भील-अनार्य जाति का मनुष्य	समत्तदंसि २६७ समर=शबर-किरात-भील-अनार्य जाति का मनुष्य ५३
७१	राज·कर	राजकर
७२	सुदारसण	सुदरिसण
७२	सुभासए	सुभासए (क्रि०)
७३	सुह	सुहि
७३	सूसासे	सूसास
७३	सोरद्वीअ	सोरट्ठीअ
७४	साहण	सोहण
७४	हतव्व	हंतव्व
७४	हश	हंश
७४	हस	हंस
७४	हरक्खद	हरक्खद
७४	हरिअद	हरिअंद

(३) विशेष शब्दों की सूची का शुद्धि-पत्रक

७८	कठ	कंठ
७८	कुदत	कुदंत
८०	हियतनी	हीयत्तनी